९००००० २००००००

पाथोजा नवलक्षकास्तु गणिता वृक्षाः पुनर्विंशतिः

४००००० १००००००

चत्वारो मनुजा निविच्य कथिताः द्विजाश्चादिग्लक्षकाः ॥

११००००० ३००००००

भूतरा: कृमिजन्तवस्तु पशवोलक्षाश्च त्रिंशन्मताः

८४०००००

योनीनां गणितास्तु लक्ष निगमाशीतिश्च विह्वज्जनैः ॥ १

नवैव लक्षाणि जलोद्भवानि वृक्षाः पनर्विंशतिलक्षकाहि

भूतेशलक्षाः कृमियोनयोऽपि त्रिंशच लक्षाः पशुयोनयोऽपि

विहंगमानां दशलक्षकानि सप्त लक्षाः नरयोनयोऽपि

प्रह्लादस्यपितुर्वधश्शनाधरे नेत्रेऽब्धिर्भारतम् ।

तार्तीयेदिवसेसमुद्रमथनं कृष्णोद्भवश्चार्णवे ॥

रुक्मिण्यारतुशैरविवाहकर्मतौवागीशशिष्यागमः ।

सप्ताहस्यसमाप्तिरेव तुमुनौकार्यामुदाकोविदैः १

आदौहिरण्याक्षवधः द्वितीयेभरतावधिः ।

तृतीयेक्षीरमथनं चतुर्थेकृष्णजन्मतः १

पंचमेरुक्मिण्याहः षष्ठेतुचोद्धवागतः ॥

सप्तमेह्निसमाप्तःस्यात् सप्ताहस्यअयंक्रमः २



श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्लोक ॥

श्रीमद्रमारमणशेषविरञ्चिमुख्यैर्वाणीरमामुनिसुरे
शचराचराद्यैः सम्यङ्नुतम्भ्रमनिवारणमञ्जरीयं सन्न
म्यशम्भुपदपंकजमाशुमूर्ध्ना १ संरच्यतेमुनिकृत
स्यमयातिप्रीत्या सम्यग्विचार्यखलुभागवतस्यशास्त्रा

शोभायमानविष्णु तथा ब्रह्मा शेष आदिलेके तथा लक्ष्मी
मुनि इन्द्रचराचरजीव आदिलेकै तीनलोक चौदहभुवन इनसब
करिकै बहुत प्रकार नमस्कार किया जो शंकर को कमलसरिस
चरण तिन चरणोंको अपनी मस्तक करिकै मैंने नमस्कार करिकै
भागवत में जो शंका है तिसको निवारण करने वास्ते यह मंजरी
कहे अमृत की धारा मैं रचताहूं १ कैसा भागवत है व्यास मुनिको
बनाया है कैसामैंहूं शिवसहाय मेरा नाम है शंकरको पूजन
करताहूं ऐसो जो मैं सो अनेक शास्त्रों को विचारि कै बड़ीप्रीति

न् । पूर्वोपयुक्तशिवशब्दसहायनाम्ना श्रीमद्गिरीश तनयेशपदार्चकेन २ तत्रादौप्रथमस्कंधशंकाम्पृच्छन्तिवाचकम् । श्रोतारोविनयेनैवशंकयाविष्टचेतसाः ३ दयायुक्तस्सुशीलाश्च कथाश्रवणकौशलाः । बद्धहस्तपुटाःसर्वेनमंस्तत्पादपंकजम् ४ कृतश्रमंशब्दशास्त्रेसर्वशास्त्रविशारदं । विद्याविनोदवार्तायां प्रोत्फुल्लमुखपंकजम् ५ श्रोतार ऊचुः ॥ भगवन्हृदयेऽस्माकं श्रीमद्भागवतंप्रति । शंकामहीयसीनित्यंवर्ततेभ्रांतिवर्द्धिनी ६ न्यूनेष्वपिमहाराज पुराणेस्तोत्रसंचये । कविभिर्यैकृताग्रन्था न्यूनान्यूनतराअपि ७ व्यासेनापि महाबुद्धे विस्तृतानांतुकाकथा । मंगलाचरणाश्श्लो

करिकै भागवत के शंकाकी मंजरी वनाताहूं श्लोक दो को अर्थ मिला है युग्महै २ शंका करिकै युक्त चित्त तथा दयायुक्त तथा शीलवान तथा अनेक शास्त्रों के श्रवण में चतुर ऐसे जो श्रोता हैं सो हस्त जोड़िकै कथा वांचनेवाले के चरणों को नमस्कार करिकै ३ वहुत विनती करिकै पहिले प्रथमस्कंधकी शंका वाचकसे पूछतभये दोश्लोकों को अर्थ मिलाहै युग्महै ४ कैसे कथा वाँचनेवाले हैं व्याकरण पढ़ेहैं तथा सव शास्त्र में चतुर हैं शास्त्र में कोई शंका पूछता है तो वहुत खुशी होते हैं ५ श्रोता पूछते हैं हे महाराज श्रीमद्भागवत में हमारे लोगों की हृदय में बड़ी शंका है सोई शंका हमारे सवके मनमें भ्रांति को वढ़ायदिया है जिस कारणसे भागवत सुनते हैं खरीपण विश्वास कथामें नहीं आता६ हे महाराज कवियोंने छोटेसे भी छोटा ग्रंथ वनाए तथा वड़ाभी वनाए पण छोटेमेंभी वड़ेमेंभी मंगल होने वास्ते वहुत से श्लोक पहिले वनाये हैं ७ व्यास

काःकविभिर्बहवःकृताः ८ विघ्नबाधाविनाशायचादौ मंगलदाःप्रभो । श्रीमद्भागवतंशास्त्रं सर्वार्थपरिबृंहितम् ९ महापुराणमुनिभिःकथितम्मोक्षदायकम्। तस्यादौमंगलन्नास्ति गणेशगुरुवन्दनम् १० केवलम्ब्रह्मणोध्यानं निस्पृहेनैवसंकृतम् । तथापिश्लोकबहुलैःकृतञ्चेत्तस्यवंदनम् ११ नवर्ततेतदाशंका हृदिनो महतीप्रभो । छिंध्येनांशास्त्रखड्गेनकपोलोद्गतेनवै १२

वाचकउवाच ॥ यूयम्वैसज्जनाःसर्वे वोधन्यापितरस्सदा। धृतंजन्मकुलेयेषां भवद्भिर्हरिवल्लभैः १३ शंकेयन्निश्चलाजाता युष्माकंमहतीहृदि । ममानन्दकरीश्रेष्ठा

व्यासजीभी छोटे स्तोत्र में मंगलाचरणश्लोक बनाये हैं और बड़े ग्रंथमें तो बनौवैकिये हैं युग्मश्लोक हैं ८ विघ्न के दुःखको नाश होनेवास्ते कवियोंने ग्रंथकी आदि में मंगल को देनेवाला श्लोकबनाते हैं पण श्रीमद्भागवत शास्त्र सब अर्थ करिके युक्त है ९ मुनिलोग भागवत को महापुराण कहते हैं तथा मोक्षको देनेवालाभी कहते हैं पण भागवतकी आदि में गणेशकी तथा कविके गुरुकी वंदनारूप मंगल नहीं किया है १० केवल बिनाप्रीति सरीके ब्रह्मको ध्यान व्यासने किया जो तदापि ब्रह्मको ध्यानभी बहुतसे श्लोकमें प्रीतिसे करते११तौ हमारे सबके मनमें बड़ीशंका न होती अब इसवड़ी शंका को शास्त्रकी तरवारिसे काटोअपनी इच्छासे बातबनायकेमति हो१२वाचकबोले हे श्रोतालोगो तुमसवबड़े सज्जनहोतुमारे लोगोके पितरोंकोधन्यहै भगवान्केप्यारे तुमसव जिसके कुलमें जन्मतेभये१३हे श्रोताहो तुमारीसवकी हृदयमें यह शंकानिश्चलउत्पत्तिभईहै सोहम को भी आनन्ददेतीहै तिस्का कारण

श्रोतारस्तान्निबाधत १४ यदाव्यासोमहाबुद्धि. ... न्दशसप्तच। नानेतिहासशास्त्राणि ... न्त प्र वै १५ तदोपदिष्टोमुनिना नारदेनापिदुःखितः। ... लीलानुकथनेमग्नोऽभूद्धर्षवारिधौ १६ ... यथानारीं निर्द्धनश्चयथाधनम्। ... थाभून्मुनिसत्तमः १७ शीघ्रंरचितुकामोसौ ... स्यबहुमंगलम्। केवलंब्रह्मणोध्यानं कृत्वैकेनमहातुर. १८ श्रीमद्भागवतंशास्त्रं शीघ्रंरचितुमुद्यतः। एतद थैंचश्रोतारो नचक्रेबहुमंगलम् १९॥

इति श्रीभागवतशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहायबुधविरचितायांप्रथमस्कंधेप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी॥ १॥

सुनो १४ जबबड़ेबुद्धिमान् व्यासजीने अठारह पुराण अनेक शास्त्रतथाइतिहास बनायके संतोषको नहींप्राप्तिभये १५ तब भगवान्केचरित्र गानकरने वास्ते नारदमुनिने ... देशकिया तबहर्षरूप समुद्रमें व्यास मग्न होगये १६ जैसाका मीप्राणी स्त्रीको पायकेसुखीहोताहै तैसा नारदको ... पायके व्यासजी सुखीभये १७ भागवतको बनानेवास्ते ... ने जल्दीकिया औरश्लोक मंगलदायक भूलिगये ए ... करिकेअकेले ब्रह्मको ध्यानकियाबड़ाआतुरहोकै१८श्रीमत्भाग वतको बनानेवास्ते बहुतजलदीसे प्रारंभकिया इसवास्तेबहु श्लोकमंगलदायकनहींबनाया॥ १९॥ इति श्रीभागवतशंक निवारणमंजर्य्यांशिवसहाय बुधविरचितायां सुधामयीटीका सहितायांप्रथमस्कंधप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी॥ १॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रथमेप्रथमेऽध्यायेव्यासोवाचेति नास्तिवै। द्वितीयाऽध्यायप्रारम्भे व्यासोवाचकथम्मुने १ वाचकउवाच। नारदेनोपसन्दिष्टो भगवद्वीर्यवर्णने। हर्षसागरसम्मग्नो बभूवमुनिसत्तमः २ प्रारम्भंकृतवाञ्छीघ्रं श्रीमद्भागवतस्यच। आतुरान्नैवसंचक्रे स्ववाक्यंमुनिसत्तमः ३ संस्मृत्योवाचपश्चाद्द्वितीयादौचकारसः ४ इतिश्रीभा० प्र० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णावतारम्पप्रच्छुरादौसूतम्मुनीश्वराः। तम्परित्यज्यसूतेनकथमुक्तंयथाक्रमम् १

श्रोताबोलतेभये प्रथमस्कंधकी पहिलीअध्यायके प्रारंभमें व्यासनहींबोले दूसरीअध्यायकी प्रारंभमें क्योंव्यासबोले १ वाचकबोले भगवानको चरित्रवर्णनकरनेवास्ते व्यासकोनारदजीनेआज्ञा दिया तबव्यासमुनि हर्षके समुद्रमें डूबिगये २ व्यासने बड़े हर्षसेभागवतबनानेको प्रारंभकिया पण आतुरपणले पाहिलेआपनी बचननहींलिखी ३ पीछेसे व्यासकोयादि भई कि प्रारंभकरतेवखतव्यासउवाच ऐसालिखना चाहतारहा है सोहम भूलिगये ऐसाविचारिकै दूसरीअध्यायकी आदिमें व्यासउवाचाकियाहै ४ इति भा० प्रथ० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभयेकि, प्रथम अध्यायमें श्लोक १२ में श्रीकृष्णके अवतारकीकथा सनकादिकोंने सूतसेपूछथे सूतनेकृष्णके चरित्रकीकथाको त्यागिकै आदिमें भगवान्को सब अवतार क्यों वर्णनकिये बड़ाभ्रमहोतीहै १॥

वाचकउवाच कृष्णवतारचरितं द्विधाभूतंविदृश्यते सत्संगिनाम्मोक्षरूपमज्ञानाम्विषयार्णवम् २ युगेयुगे भवत्तस्य प्रभावोबहुविस्तरः । श्रुत्वाद्दौकृष्णचरितं येऽपक्वहृदयानराः ३ तेपिकर्म्मप्रकुर्वन्ति कृष्णवच्चवि मोहिताः । मोक्षजारमुखम्मत्वा पतिष्यंति च रौरवे ४ मूर्खानैवविजानन्ति श्रीकृष्णचरितामृतम् । ज्ञानिनां मोक्षरूपं च तद्दीनानाम्भ्रमावहम् । एतदर्थंचश्रोतारो वर्णितंचयथाक्रमम् ५ इतिश्रीभा० प्र० तृतीया०तृती यवेणी ॥ ३ ॥

वाचक बोले श्रीकृष्ण को चरित्र दोप्रकार को संसार में देखि परता है सत्संग करनेवाले मनुष्य तो कृष्ण के चरित्र को मोक्ष रूप मानैंगे तथा मूर्खलोग विषयको समुद्र कृष्णके चरित्र को मानैंगे २ तथा युग युगमें श्रीकृष्ण को चरित्र बहुत वि- स्तार करिकै होता है यह विचार कियोंकि सनकादिक तौ परमहंस हैं कृष्णके चरित्र को सुनिकै मोक्षरूप मानैंगे परा पेस्तर कृष्णके चरित्र को मूर्खलोग सुनैंगे ३ वो मूर्खलोग श्रीकृष्णका चरित्र मोक्षरूप है तिसको जारको सुखमानिकै कृष्णसरी के परस्त्रियों के संगक्रीड़ा करैंगे रौरवनरक में परैंगे ४ पेस्तर वर्णन कृष्णको अमृतरूप चरित्र करैंगे तो मूर्खलोग कृष्णके चरित्ररूप अमृत को नहीं जानैंगे और जो पहिले सब अवतारको चरित्र वर्णन करैंगे तौ उस चरित्र को धीरे धीरे सुनिकै मूर्खभी ज्ञानी होजावैंगे पीछेसे कृष्णके चरित्र को सुनैंगे तो भ्रमनहीं मानैंगे मोक्षरूप मानैंगे इसवास्ते पे- स्तर कृष्ण को चरित्र सूतजीने नहीं वर्णन किया ॥ ५ ॥ इति भा० प्र० तृतीयाऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः। येषामुपरियोगीन्द्रो करोतिभूरिशः कृपाम्। सगोदोहनमात्रंहि तिष्ठते च तदाश्रमे १ अतिष्ठत्सप्तरात्र वै कथन्तत्रमहामुनिः। श्रावयामासराजानं श्रीमद्भागवतन्तदा २ वाचकउवाच। एकदागतवान्योगी गोलोकंस्वेच्छया मुनि। कृष्णेनपूजितस्तत्रगन्तुकामस्तपोधनः ३ प्रार्थितस्तत्रकृष्णेन परीक्षिन्मोक्षहेतवे। पांडवामेप्रियास्स्वामिन्तत्पौत्रोयन्नृपोमुने ४ दुर्गतिसर्पदंष्ट्रश्चे द्द्विजिष्टातिहिजेरितात्। तदाहास्यंभवेल्लोके ममभूरिक्षितौसदा ५ अतोयथेच्छाभवतस्तथा तारय तन्नृपम्। एतदर्थमुनिस्तस्थौ सप्तरात्रंनृपान्तके इति श्रीभा० प्र चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी॥ ४॥

श्रोता पूछते भये शुकजी जिस के ऊपर बड़ी कृपाकरते थे उस के मकानपर टिकतेथे कितनीदेर जितनी देर गायके दूहने में लागती है उतनी देरबड़ी कृपाकरें तो जराखड़े हो जातेथे १ सो शुकदेवजी गंगा के तटपर सातदिन क्यों टिकतेभये तथा टिकिके परीक्षित् को भागवत सुनाते भये २ वाचकबोले एकदिन अपनी इच्छासे शुकजी गोलोक को गये तब श्रीकृष्णने शुकको पूजन किया पूजन ग्रहण करिके शुकजी चलने लगे ३ तब परीक्षित् की मोक्षहोने वास्ते श्रीकृष्ण जीने शुक की प्रार्थना किया हेमुनिजी पांडव मेरे बड़े प्यारेथे तिन को यह परीक्षित् पोता है ४ ब्राह्मण के वचनते सर्पकरिके काटाहुआ परीक्षित् जब नरकको जावैगा तब तीनलोक में मेरी बड़ी हँसी होवैगी कि कृष्णके मित्रों का पोता नरकको जाता है देखो भाई ५ इसवास्ते जैसी आपकी इच्छा होवै उसी प्रकार से परीक्षित् को नरक से

श्रोतारऊचुः दुःखितान्नारदोदृष्ट्वा जनान्दुःखसमन्वितः। मूर्च्छितस्तत्क्षणे भूमौपतत्यत्यंतविह्वलः १ करोत्युपायानिबहूनिनारदस्तद्दुःखशान्त्येभगवत्प्रियोमुनिः। दुःखार्दितंसत्यवतीसुतंस्मितान्निरीक्ष्य चक्रेकथमाश्वयोग्यम् २ वाचकउवाच निवारितस्सत्यवतीसुतोऽनिशम्मावर्णयस्वान्निखिलार्थवाचनं। सुरर्षिणाप्रीतिभरेणमानितोहरेश्चरित्रम्वदसौख्यवारिधिम् ३ नकृतंम्वचन

उद्धार करो मेरेलोक में भेजदेवो हे श्रोताजन ऐसी कृष्ण की विनती से परीक्षित् के साथ सातदिन शुकदेवजी टिकतेभये ६ ॥ इति भा० प्र०चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥

तब श्रोता पूछते भये कि, हे मुनिजी तीनलोक में किसी जीवको दुःखी नारदने देखिके उसी वखत नारद पृथ्वी में पड़िजातेथे बहुत मूर्च्छा को प्राप्त होतेथे और बहुतविह्वलहोतेथे भगवान्के प्यारेजो नारदसो उस जीवके दुःखको नाशहोने वास्ते अनेक उपाय करतेथेकिजीवसुखी होवैतो आपुभीसुखी होवै ऐसे दयावान् व्यासमुनिकोदुःखीदेखिके मुस्किआने क्यों अयोग्यक्योंकि हे कि अपनास्वभावक्यों छोड़ै २ वाचकबोले नारदने बड़ी प्रीति करिके बड़ेआदरसे व्यासकोमनाकिहेकि हे व्यास संसारकोठगनेवाला ग्रंथ मतिबनावो जिसकेनामको ग्रंथउसकीतोतारीफदूसरेकीनिन्दा फिरदूसरेके नामकोग्रंथ उसकी तारीफ औरजिसकी तारीफकियाथा उसकीनिंदा दूसरेग्रंथमें लिखिदिया ऐसाशास्त्र मतिबनावो सुखकोसमुद्रऐसा जोभगवान्कोचारित्रसो वर्णनकरोऐसासिखावनवारंवारनारद व्यासकोदेतेभये ३ व्यासजी बडेअभिमानसे नारदकीवाक्य को नहींमाने अनेकप्रकार के ग्रंथबनाये उनग्रंथोंकरिकै व्यास

न्तस्यतेनमानाःतिवेगतः। प्रापपश्चान्महादुःखन्तंविलो
क्यमुनिस्तदा।कृपांकृत्वास्मितञ्चक्रेतत्रासार्थनमानतः
४ इतिश्रीभा० प्रथमस्कं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनुग्रहीतामुनिभिर्नारदस्यप्रसूर्गुरो।
कथम्मृतासर्पदंष्ट्राशंकेयम्महतीहि नः १ वाचकउवाच
मुनीन्जिगमिषून्ज्ञात्वासुतंज्ञानरतन्तथा। इंद्रियान्प्र
बलान्मत्वाप्रार्थयामाससाहरिम् २ शूद्रस्रोनौसमुत्पन्ना

कोकुछभीसुखनहींभया ग्रंथवनाये पीछे वडे दुःखको व्यासप्रा
सभये तब व्यासकोदुःखी नारदमुनिने देखिके व्यासकेऊपर
कृपाकरिकै तथाव्यासको त्रासदेनेवास्ते मुस्किआतेभये अभि
मानतेनिर्दयीहोकेनहींमुस्किआते तवज्ञानदेके व्यासकेदुःखको
हरते भये ऐसीकृपाकरतेभये ॥४॥ इति० भा० प्र०पंचमेऽध्याये
पंचमवेणी ॥ ५ ॥श्लोक १ ॥

नारदकी माताके ऊपर मुनि लोगों की कृपा बहुतथी
क्योंकि जो कृपा नहीं करते तो मुनियोंके सकाशते नारदको
जन्म उस दासी में क्यों होता ऐसी मुनियों की कृपासे युक्त
नारदकी माता सर्प के काटे से क्यों मृत्युको प्राप्त हुई खोटी
मृत्यु नारदकी माताकी सुनिकै हमारे लोगों को वड़ी शंका
आती भई १ वाचकबोले नारदकी माताने मुनियों को तीर्थ
करने वास्ते जाता जानिकै तथा अपना पुत्र जो नारद तिस
को ज्ञानमें रमित जानि कै तथा इंद्रियों को वड़ी वलवान
जानिकै भगवान् की प्रार्थना करती भई बिचार किया कि
मेरे को मुनिजन त्यागिकै जाते हैं और पुत्र मेरा ज्ञानमें मस्त
है अब मेरी रक्षा कौन करेगा इंद्रियतो अपनी अपनी तरफ
को मेरे जीवको दुःख देवैंगी २ नारदकी माताने विचार किया

शूद्रसंगतिकारिणी । केनचित्कर्मयोगेनमुनीनामपिसंगतिम् ३ तथाप्यपक्कहृदयाज्ञानध्यानविवर्जिता । तयार्थितोरमानाथोनिमित्तेनाहिनाप्रभुः । दंशयित्वातिशीघ्रंवैस्थापयामासस्वान्तिके ४ इति भा० प्रथमस्कं०षष्ठऽध्यायेषष्ठवेणी ॥६ ॥ श्लोक ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भक्तिःप्रवर्द्धतेकृष्णेश्रीमद्भागवतेश्रुते। अनेनज्ञायतेब्रह्मन्नत्वनेकतनौहरेः।सूतेनोक्तंकथमिदंछिधिशंकाम्महीयसीम् १ वाचकउवाच ॥ व्यासोऽपिकथ्यतेकृष्णोमुनिभिश्चादरेणहि। कृष्णोविष्णुर्जगन्नाथो

शूद्रके कुलमें मेरा जन्म हुआ शूद्रों की मैंने संगति की किसी सुन्दर कर्मके प्रभावते मेरेको मुनियों की संगति प्राप्ति भई है ३ तथा ज्ञानध्यान से हीनहूं मेरे हृदयमें कुछ भी ज्ञान नहीं है अब मैं निराधारहूं मेरा मरण जल्दी होना चाहिये ऐसी विनती भगवान्से करती भई भगवान् इसकी विनती मानिके जल्दी मरण होने वास्ते सर्प से कटायके मरण करिके अपने सामने नारदकी माको टिकाते भये इसवास्ते सर्पबाधा से मरण नारद की माको भया भगवान् अपने सामने टिकाते भये सांप काटे से मृत्यु होती है वह प्राणी दुर्गति को जाताहै नारद की मा मुनियों की कृपा से ईश्वर के सामने टिकती भई ४ इ० भा० प्र० षष्ठ ऽध्याये षष्ठ वेणी ॥६॥श्लोक६॥

श्रोता पूछतेभये सूतने ऐसा वचन क्यों कहे कि भागवत को सुनैगा तो कृष्ण में भक्ति होवेगी ऐसे वाक्य से क्या मालूम होता है किभागवत सुनने से कृष्ण अकेले में भक्ति होवेगी और जो भगवान् के अनन्त अवतार हैं तिन में भक्ति न होवैगी यह बड़ी शंका हमारे सबके मन में है तिसका आप छेदन

बहुनामाजगत्पतिः २ तथापिगुरुराचार्यस्सूतस्यमुनिना यकः। कृष्णेतिवल्लभन्तस्यसूतस्यसततंहृदि ३ एतदर्थं च कृष्णेवैभक्तिरुत्पद्यतेऽनिशम्। उक्तनतुविरोधेनसर्वं विष्णुमयंजगत् ४ इतिश्री भागवतेप्र०सप्तमेऽध्यायेस प्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्यक्तमात्रश्चब्रह्मास्त्रोभस्मकुर्य्याज्ज गत्त्रयं। उत्तरातनुलग्नश्च नददाहकथं त्वरः १ वाचक उवाच ॥ पतिहीनाचवैराटीश्रीकृष्णचरणद्वयम्। स्मरंती सततंभक्त्यानेत्राश्रुपरिमुंचती २ हरे कृष्ण हरे कृष्ण करो १ वाचक बोले मुनियों ने आदर करिके व्यास को भी कृष्ण कहा है क्योंकि भगवान् के अनन्तनाम हैं कृष्ण विष्णु जगन्नाथ इन को आदिले के तोभी व्यास जी सूतके गुरू हैं कृष्ण यह नाम सूतके हृदयमें सदा प्यारा लगताहै ३ इस वास्ते सूतने कहेकि भागवतके सुननेसे कृष्णजो व्यास तिन में भक्तिहोवेगी कुछ विरोधसे नहीं कहे क्योंकि सब संसार भगवान्को रूपहै भगवान्के एक रूपमें भक्तिहुई तो अनन्त रूप में होवेगी ईश्वरके रूपमें भेद नहींहै ४इ०भा०प्र० सप्तमे ऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ७ ॥

श्रोता पूछतेभये कि ब्रह्मअस्त्रको ऐसा प्रताप शास्त्रमेंलिखा है कि जिस वखत योधा लोग ब्रह्मअस्त्रको धनुषपरसे छोड़ैंगे तो जो कदापि तीनलोक भस्म करने वास्ते छोड़ैंगे तब धनुष से छूटिके उसी वखत तीन लोक को भस्म करि डरैगा पण उत्तराकी देहमें ब्रह्मास्त्र लगिके जल्दी उत्तराको भस्म क्यों नहीं किया १ वाचकबोले पतिसे हीनऐसी उत्तरा राति दिन बड़ी भक्ति से श्रीकृष्णके चरणका स्मरण करतीथीआंखों के

कृपालोभक्तरक्षकानमस्तुभ्यन्नमस्तुभ्यन्नमस्तुभ्यन्नमो नमः ३ इतिमंत्रंजपन्तीसातस्थौपांडववेश्मनि । अश्व त्थाम्नाविसृष्टश्चब्रह्मास्त्रः प्राप्यतत्तनुम् ४ बभूवशीतल श्शीघ्रंकृष्णस्मरणतेजसा । तथापिविह्वलाभूत्वाऽप्याजु हावयदूत्तमम् ५ इति० भा० प्र० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥श्लो० ८ ॥

श्रोतारऊचुः॥ भीष्मोमहात्मामुनिभिः कथितस्सत्स भासुच । सःकथंक्रूरवचनम्प्रोक्तवान्पांडवान्प्रति १ वाच कउवाच॥अज्ञानान्मत्तरूपांस्तान्ज्ञात्वामानविवर्द्धितान् तेषांमानविनाशायभीष्मेनोक्तमिदंवचः २ इति० भा० प्र० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥श्लो० १२ ॥

प्रेम के जल बहे जाते थे २ हे कृपा के स्थान हे भक्तों के रक्षक हे कृष्ण ३ हे हरे ३ आपको नमस्कार है३इसमंत्रको जप करती उत्तरा पांडवों के महल में टिकी थी उसी वखत अश्वत्थामा करिकै छोडा जो ब्रह्मास्त्र सो उत्तरा की देह में लागिकै ४ श्रीकृष्णके स्मरणके प्रभाव से ठंढा 'होगया' तो भी उत्तरा व्याकुल होके श्रीकृष्ण को पुकारती भई जो ईश्वर का भजन उत्तरा न करती तो उसी वखत भस्म करिदेता परन्तु भजनके प्रभाव सेनहीं जलाया ५ इ० भा०प्र० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो०८ ॥

श्रोता पूछतेभये भीस्मजीको ज्ञानियों की समाज मेंमुनियों महात्मा कहे थे सोई भीष्मजी मूर्खसरीके खोटे वचन पांडवों को क्यों कह १ वाचक बोलते भये भीष्मजीने पांडवों को वड़ा उन्मत्त वड़ा अभिमानी जानिकै पांडवों के ऊपर कृपा करिकै पांडवोंके अभिमानको नाश करनेवास्ते ऐसा क्रूरवाक्य

श्रोतारऊचुः॥पतिभीरहिताब्रह्मन्कुरुनार्य्योनिरीक्ष णम्।श्रीकृष्णस्यकथंचक्रुःप्रेमव्रीडास्मितेक्षणैः १ पतिव्रताःप्रकुर्वन्तिप्रेमव्रीडास्मितेक्षणम्। स्वपतौप्रीतिभावेनजारिण्योजारकर्तरि २ कुरुनार्य्यः कुलोत्पन्नाः कर्म्मणापतिवर्जिताः। कथंचक्रुश्शुभाचाराःप्रेमव्रीडास्मितेक्षणम् ३ भगवन्तंपरिज्ञाय चेद्यदाकुरुवल्लभाः चक्रुस्तदाप्ययोग्यंचतत्रयोग्याकरांजलिः ४ करुणाननंयोग्यमश्रुपातसमन्वितम्। अनयाशंकयास्माकंम

पांडवों को भीष्मबोलते भये इ० भा० प्र० नवमेऽध्याये नवमवेणी ६ श्लो०॥१२॥

श्रोतापूछते भये विधवा जो कुरुवंशियों की स्त्रियां थीं सो प्रेम करिकै लज्जाकरिकै मुस्किआइकै श्रीकृष्णको क्यों देखती भईं यह बड़ी शंका होतीहै१पतिव्रतास्त्री अपने पतिको प्रीति करिकै प्रेम में तथा लज्जामें तथा मुस्किआइकै देखतीहैं तथा जारिणी स्त्री व्यभिचारी पुरुषको इसी तरह देखती हैं२ कौरवों की स्त्री सब बड़ेबड़े कुलकी जन्मी हुईं बड़ी पतिव्रता शुद्धधर्म करने वाली ऐसीस्त्री किसी जन्मके पाप से विधवा होगईं तो कुछ चिंता नहीं परन्तु श्रीकृष्ण परपुरुषहैं तिनको प्रेमसे लज्जा से मुस्किआइकै क्यों देखती भईं३ जो कदापि कुरुवंशकी स्त्रियोंने श्रीकृष्णको भगवान् जानिकै प्रेम करिकै लज्जा करिकै मुस्किआइकै देखती भईं तो भी अयोग्यहै भगवान् जानिजिहीं कृष्णको तोभी हाथजोड़िकै नमस्कार करना चाहता रहा४अपनी गरीबी देखाय के कृष्णको तथा आंखोंसे अश्रुपड़िरहींहे इस प्रकार से नमस्कार करना योग्य रहा है

देवोरमाश्रयः।उत्पत्यवननाशानांकर्तृणांजगतः कदा २ उपमैतादृशीकेषांनदत्तानश्रुताचनः। सततम्भ्रामयत्ये षाशंकास्माकम्मनःप्रभो४वाचकउवाच॥कथितोनैवश्रो ताशेद्विजैरस्मिपितामहः। विधिर्गिरीशोनशिवोविष्णु नैवरमाश्रयः ५ पितामहाश्शिशोस्सर्वेपांडवाः पंचकी र्तिताः।तेषांसाम्येसमःप्रोक्तोनैवंविधिसमश्चतैः ६ यथा गिरीशोहिमवानचलोवर्ततेक्षितौ। तथाचलमतिश्चाय म्प्रसादेतत्समस्स्मृतः ७ रमादीप्तिस्समाख्यातासविता

वालक बड़ाबुद्धिमान् होवैगा तथा संसारको ब्रह्मासरीके एक दृष्टि देखैगा दान देने में शिवसरीके उदार होवैगा २ रमापति जो भगवान् तिससरीके सब प्राणियोंको मालिक होवैगा संसारकी उत्पात्ति पालन व नाशके करनेवाले जो तीन देवता तिनकी बरोबरि कभीभी ३ ब्राह्मणों ने तीन देवों की बरोबारि परीक्षित् की उपमा दिया परन्तु ऐसी उपमा संसारमें किसीकी भी नहीं दीगई तथा हम सब ने ऐसी उपमा कभीसुनी भीनहीं यहशंका नित्य हमारे सबके मनको भ्रमाती है ४ वाचक वोले हे श्रोता जनो पितामह (समस्साम्ये) इस श्लोक में ब्राह्मणों ने ब्रह्मा को पितामह नहीं कहेथे तथा शिव को गिरीश नहीं कहेथे तथा विष्णु को रमाश्रय नहीं कहेथे ५ पांच पांडव धर्मराज,भीम,अर्जुन, नकुल,सहदेव, वालक जो परीक्षित् तिस के पितामह दादा हैं तिन आपने पितामह जो दादा तिन की बरोबरि संसार को एकदृष्टि परीक्षित् देखैगा ऐसा मुनियों ने कहा है ब्रह्मा की बरोबरि नहीं कहें ६ जैसा भूमि में सुंदर कर्म में गिरीश कहे हिमवान् पर्वत चलायमान नहीं होता तथा दूसरे को वरदेने में बड़ा उदार

वतदाश्रयः । तस्माञ्चसर्वभूतानांशिशुस्तद्वत्समाहृतः ८इति०भा०प्र०द्वादशाऽध्यायेद्वादशवेणी१२श्लो० २३

श्रोतार ऊचुः॥ धृतराष्ट्रस्यपांडोश्चकथ्यते विदुरः कथम्। अनुजस्सर्वशास्त्रेषुभारतादिषुभोगुरो १ यस्स्व मातरिसञ्जातस्स्वजन्यादनुबालकः । सोनुजः कथ्य तेनान्योलौकिकेष्वपिनैवच २ वाचक उवाच ॥ उद्वाहे योविधिः प्रोक्तोवेदेषुलौकिकेष्वपि । चतुर्णांचैववर्णानां विधिःसाप्रथमास्मृता ३ द्वाभ्यांविरहितायाचसाविधि

है तैसा परीक्षित् भी गिरीश कहे हिमवान् सरी के दानदेने में उदार होवैगा ७ रमानाम रोशनी को है तिस रोशनी को मालिक सूर्य है इसीवास्ते सब प्राणियों को मालिक सूर्य है सूर्यविना जीव को निर्वाह नहीं होता मुनियों ने कहेथे कि जैसा सूर्य उदय होके संसार को आनंद देता है तैसा परीक्षित् भी राजा होके अपनी प्रजाको सुखदेवैगा ऐसा मुनियों ने कहेथे ईश्वर के बरोबरि नहीं कहेथे ॥ ८ ॥ इति भा० प्र० द्वादशाऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० २३ ॥

श्रोता पूछतेभये धृतराष्ट्र को तथा पांडुको छोटा भाई विदुर कैसे होते भये हे गुरुजी सब शास्त्रों में तथा भारतआदि इतिहासों में १ अपने जन्मभये पीछे अपनी माता में जो बालक जन्मता है उस को शास्त्र में और लोक में छोटा भाई कहते हैं दूसरी माता को जन्माया बालक लोक में और शास्त्र में छोटा भाई नहीं कहाता धृतराष्ट्रतथा पांडु ये क्षत्री के पुत्र और विदुरशूद्री के पुत्र धृतराष्ट्रका छोटाभाई विदुर क्यों भये यह बड़ी शंकाहोतीहै २वाचक बोले ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चारों वर्णों के विवाह होनेकी विधि शास्त्रमें तथा

श्रानुकथ्यते।तद्रूस्याजायतेयोवैसोऽनुजःकथ्यतेद्विजैः ४ अतोनामानुजस्तेषांविदुराणामितीरितम् । स्वमात रिचयोजातस्स्वजन्यादनुबालकः। अनुजस्सोपिविख्या तः शास्त्रलोकद्वयोरपि ५ अर्थप्रतीतिंसंवीक्ष्ययत्रया यत्प्रतीयते । तदर्थस्तत्रकर्तव्यश्शब्दार्थश्चापिभूरिशः ६ इ० भा० प्र० त्रयोदशाऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सप्तद्वीपाधिपेनैवधर्मराजेनवैकथम्। चाराद्वापत्रद्वाराद्वानज्ञातायादवामृताः १ महदाश्चर्य लोकमें कही है सोई विधि श्रेष्ठ है तथा प्रथम है ३ शास्त्रसे तथा लोक से रहित जो विवाह की विधि है उस को अनुकहते हैं शास्त्र में उस अनुकी विधि माने अन्याय करिकै जो जन्म लेवै उस को अनुज मुनिजन कहते हैं ॥ ४ ॥ इसी वास्ते विदुर लोगों का नाम अनुज है विदुर कहे वर्ण- संकर तथा आपने जन्मभये के पीछे अपनी माता में जो जन्मलेवै उसको भी शास्त्र में लोक में अनुज कहते हैं ५ शब्दके अर्थ अनेक प्रकारके हैं परन्त जो अर्थ जिस जगह जैसा घटि जावै अयोग्य न मालूम परै सोई अर्थ उसजगह करना चाहिये जैसा पय जल को कहतेहैं और पय दूध कोभी कहते हैं गोधेनु को नाम गोभूमि गोजल गो इन्द्री गो वाक्- स्थान देखिके अर्थ करना इसीवास्ते(विदुरेणानुजेन) ऐसा वचन व्यासजीने कहा धृतराष्ट्रको छोटाभाई नहीं कहा ॥ ६॥ इति भा०प्र०त्रयोदशाऽध्याये त्रयोदशवेणी॥१३॥श्लो०२॥७॥

श्रोता पूछते भये सातद्वीप पृथ्वी को राजा युधिष्ठिर तिनको चिट्ठी से तथा दूतसे यह बात क्यों न मालूमपरी कि

मेतद्विन्यनराज्ञापिज्ञायते । स्वराज्यसकलावार्ताशंके यन्नोगरीयसी २ वाचक उवाच ॥ अर्जुनागमनात्पूर्वं न्दिवसेदशमेश्रुताः। चारैर्निवेदितोराज्ञेयादवास्सुखिनो ऽनिशम् ३ विप्रशापेनतेनाशंक्षणेनैवप्रपेदिरे । कर्मकृत्वासमायातस्सप्तमेदिवसेऽर्जुनः ४ इतिश्री भा० प्र० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कुरुक्षेत्रेमृतास्सर्वेक्षत्रियायेसमागताः। त्रयोवसिष्टाः कुरुपुसप्तैवपांडवेषुच १ कथंधनंजयेनोक्तमेकोहम्पारगोऽभवम्। कुरुसैन्यार्णवंविप्रमहत्कौतूहलन्त्विदम् २ वाचक उवाच ॥ नकुरुक्षेत्रवार्तैयमर्जुने सबयदुवंशी मरिगये१हमारे सबके यह बड़ा आश्चर्य तथा बड़ी शंका होती है कि छोटाभी राजा होता है सोभी आपने राजका सब हाल मालूम करिलेता है और धर्मराज सातद्वीप को राजा उनको नहीं मालूम पराकि यदुवंशका नाशहोगया यदुवंशी भी छोटेनहीं बड़े आदमीथे२ वाचकबोले जिसदिन द्वारिका से अर्जुन युधिष्ठिरके पास आया उसके दशदिन पेश्तर दूतों करिके धर्मराज सुनेथेकि वारंवार यदुवंशी आनंद करिरहेहें३हे श्रोताजनो कालकीगति कठिन है ब्राह्मणके शाप करिके एक क्षणमें यदुवंश को नाश होगया तब सब को मृतक कर्म करिके सातवेंदिन अर्जुन युधिष्ठिरके पास आया ४॥इति भा० प्र०चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी॥१४॥श्लोक॥२५

कुरुक्षेत्र में जो क्षत्रिय आयेथे सो सब मरिगये कौरव में तीनबचे पांडव में सातबचे १ फिरि अर्जुन क्यों कहे युधिष्ठिर से जिस भगवानूकी कृपासेती कौरव की समुद्ररूप सेनाको में अकेला पारगया २ वाचकबोले युधिष्ठिर से अर्जुन कहेकि

नैनैवभाषिता। विराटनगरस्यैषावार्तागोग्रहणोद्भवा
कृतेगोग्रहणेतत्रकौरवैर्भीष्मप्रेरितैः। पार्थ[illegible]
नूकृत्वासर्वेषाम्मुकुटानिवै। [illegible]
प्रदत्तवान् ४ इति० भा० प्र० पंचदशेऽध्याये
दशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ परीक्षितिनृपेब्रह्मन्यातेर्विणां
तदा। गानञ्चक्रुश्चकेतत्र पाण्डवानाम्
वाचक उवाच ॥ दुष्टभीताश्चमुनयोगानवैकथम्।

जिस भगवान् की कृपासेती कौरवकी समुद्रमहदाश्चर्य
में अकेला पारगया यह बात कुरुक्षेत्र की पास्रसे तथा
कौरवोंने विराटकी गौवों को हरतेभये उहांकी वनुकहते हैं
भीष्मकी आज्ञाको पायके जब कौरवोंने विराट जो जन्म
को हरतेभये तब अर्जुन नें सब कौरवोंको मूर्छित ॥ इसी
समस्त कौरवकी फौज में बड़े बड़े योधारहैं तिन्हकहे वर्ण-
लेके जल्दी विराट नगरको गया तथा विराट राजा से जो
वोंको मुकुट देताभया तबकी बात धर्मराज से अर्जु हैं ५
है ॥ ४ ॥ इति श्री भा० प्र० पंचदशेऽध्याये पंचदशगह
१५ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥ गह

श्रोता पूछतेभये कि परीक्षित्राजा दिग्विजयकोगया तभी
वोंको वड़ायश मनुष्यगानकरतेभये तवराजा [illegible]
जगहसो यशगान करनेवाले मनुष्य कौनहैं १वाचकवोले
जुआरीचोर व्यभिचारी ठग इनको आदिलेके और [illegible]
हैं तिन्हों करिकै डरेहैंजो मुनिजनसो सब [illegible]
करिकै परीक्षित् को सुनाते भये कि राजा तेरेदादे लोग
भयेकि जिन्होंके राजमें हम सब आनन्द से तप करतेथे

भवन् । महाधनन्ददौतिभ्योनिर्भयंराजसत्तमः २ इति श्री भा० प्रथमस्कंधेषोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥१६॥ श्लो० १३।१५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ राज्ञापृष्टोयदाधर्म्मोनोवाचक्लेशदायकम् । जानन्नपिमहाशत्रुमात्मनः कथमुक्तवान्॥ चतुर्दशेऽध्य |श्चर्यमिदन्नोहदिवर्तते १ वाचक उवाच॥ श्रोतार हृदयेधर्म्मोनाकथयद्रिपुम् । पाण्डवेयोनृपो ताः ।त्रयोव |स्यातिचेतसा२स्वप्राणसंकटेचैवपरेषामपि येनोक्तमेकोह में दुष्ट दुःख देते हैं ऐसामुनियोंका वचनसुनिके तूहलन्विद उसी वखत दुष्टोंको नाशकरिकेमुनियोंको मि सवयदुवंशी डा धन देता भया २ इ० भा० प्र० षोडशेऽध्याये शंका होती ॥१६॥ श्लोक १३ से ॥ १५॥

राजका सबछते भये हे गुरुजी यह बडा आश्चर्य हमारे सवनके को रा कि वयजरूप धर्मसे राजा परीक्षित् पूछते भये वैल यदुवंशी मको जो प्राणी दुःख देताहै तिसको मुझे बतावो द्वारिका दुःखदेनेवाले प्राणीको मैं मारिडालूंगा तव धर्म अपने श्तर हुते वाले वैरीको जानतेथे कि कलियुग मेरेको दुःखदेता करिरहे क्यों नहीं राजासे बताये और झूठक्यों वोलेकि अप करिके दुःखदेनेवाले को मैं नहीं जानताहूं झूठबोलना धर्म का नहीं है १ वाचक बोलेकि धर्म अपने हृदयमें ऐसा विचा रके अपने वैरीको राजासे नहीं बताये क्याविचारे धर्म कि राजापरीक्षित् पांडवों का पोता है बड़ा बुद्धिमान्है अपने मन करिके सव संसार को चरित्र जाणि लेवेगा २ अपनाप्राण नष्टहोता होवे और झूठबोले से प्राण बचि जावे तथा दूसरे किसीको प्राणनष्टहोता होवै और झूठबोलेसे बचिजावैगातो

चानृतम् । सत्यम्भवतिवेदेषुचातोऽनृतमुदीरितम् ३ इति श्री भा० प्र० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७॥ श्लो० १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ राज्ञःपरीक्षितश्चैवंबुद्धिभ्रंशःकथं गुरो । योमृताहिंसमुद्धृत्यविप्रकंठे न्यवेशयत् १ मन्येकलिकृतंचेद्धैतथापिनचशोभते। नवर्तितव्यम्मत्क्षेत्रेकलिर्ज्ञप्तोनृपेनवै २ वाचकउवाच ॥ सप्तवर्षोयदा बालोबालक्रीडाकुतूहले। मुनिंसंतर्जयामाससूत्रसर्पेण झूठबोलना सत्य होता झूठनहीं कहाता वेदोंमें ऐसा लिखाहै धर्म विचारेकि जो अपने वैरीको बताऊँगा तो उसी वखत राजा मेरेवैरीको मारिडालैगा मेरे को पाप होवेगा अपने मन से मेरेवैरी को जानिकै जैसा चाहैगा वैसा करैगा। इसवास्ते धर्म झूठ बोले ३ इति० भा० प्र० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी। १७॥ श्लो ॥ १७ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी राजा परीक्षित् बडाबुद्धिमान् तिस्कीबुद्धि भ्रष्टक्यों होगई किबुद्धिभ्रष्ट होकै परीक्षित्मरेहुरे सांपको उठायकै मुनिके गलेमें पहिराय दिया यहक्या तमाशा किया वडा पागल होगा सो भी ऐसानहीं करैगा । जो कदापि ऐसा मानि लेवैं कि परीक्षित् की बुद्धि भ्रष्ट कलियुगने करिदिया तौभी शोभानहीं होती क्योंकि कलियुगको राजा परीक्षित् ने टिकाया तव कलियुगको राजाकहेथे कि हमारे राजमें तुम अपना पराक्रम मति करना ऐसी राजाकी तथा कलिकी बोली भईथीसो तुरन्तही कलि वाक्य अपना नहीं छोड़ैगा २ वाचकबोले राजापरीक्षित् सातवर्ष को बालक रहा तब बालकों के खेल खेलते २ पांडवों की सभामें

पावकम् ३ तेनशप्तस्सभास्थेनपांडवानान्निरीक्षताम्। तवापिमृत्युस्सर्पेणभवितादुष्टबालक ४ इति श्री भा० प्र०अष्टादशेऽध्याये अष्टादश वेणी॥१८॥श्लोक॥३० ॥

श्रोतार ऊचुः॥शापोदत्तश्चमुनिनानृपायसप्तमेऽहनि। सर्पेणास्यभवेन्मृत्युरितिवाक्यमुदीरितम् १ तत्कथंस प्तदिवसासर्वेकार्याःकृतागुरो ।श्रुत्वाशापंसुतेराज्यंदत्त्वा गाज्जाह्नवीतटं २ प्रयाणम्मुनिधीराणांशुकस्यागमना दिच । पूजानास्वासनंतेषांकथाप्रश्नः पुनः पुनः ३

जो पावक नाम मुनि तिनको सूतके सर्प करिकै डराता भया ३ तब सभा में टिके जो पावक मुनि हैं सो परीक्षित्को शाप देते भए पांडवोंके देखते देखते कि हे दुष्ट बालक हमकोसर्प करिकै तूने डरवायाहै इसवास्ते तेरीभी मृत्यु सर्प करिकैं होवे गी ऐसे मुनिके शाप करिकै राजाकी बुद्धि भ्रष्ट होगई तब ऐसा बड़ा पापपरीक्षित् करता भया ४ इ० भा० प्र० अष्टादशेऽ ध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतापूछते भये परीक्षित्को मुनिने शापदिया कि आजुके सातवेंदिन सर्प काटे से राजा की मृत्यु होवैगी१हे गुरुजी तब सातादिन में राजापरीक्षित् सब काम कैसा करता भया मुनि का शाप सुनिकै पुत्रको राज देके परीक्षित् गंगा के तटपर गया२ फिरि सातदिन में मुनियों का आना तथा मुक्तिकी रस्ता में चतुर जो प्राणी तिनका राजा के पास आना शुकदेवजी को राजाके पास आना आदि लेकै और अनेक प्रकार को काम जैसा गंगातटपर आये जो देवमुनि राजऋषि औरभी बहुत से प्राणी तिनको पूजन करना तथा सब को आदर करना तथा वारंवार कथा में प्रश्न करना ये सब सातदिन में कैसा

वाचक उवाच ॥ श्रुत्वाशापंद्विजराजाभूत्वाव्याकुलमानसः । श्रीकृष्णम्मनसाध्यात्वाचाश्रुपूर्णाक्षिविह्वलः ४ प्रमाणंसप्तदिवसांविज्ञायचिन्तितोहरिः । दिनानांवर्द्धनंचक्रेनृपेणयदुनंदनः ५ गोलोकस्थोजगत्स्वामी पांडवानांसुहृत्सखा ६ इतिश्रीभागवतेप्र०एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ ३७॥

करते भये ३ वाचकबोले परीक्षितुने ब्राह्मणों करिके अपने वास्ते मुनिके शापको सुनिकै व्याकुल होकै मनकरिकै श्रीकृष्ण को ध्यान करता भया परीक्षितुकी आखों से जलवहि रहा है ४ परीक्षित ने अपनी मृत्यु जानि कै विचार किया कि जिस दिन मेरे को शाप मुनिने दिया सो दिन आजु है क्योंकि कल मैंने मुनिका अपराध किया था आजु मेरेको शाप दिया आज से सातवें दिन मेरी मृत्यु होगी और काम मेरे को वहुत करना है ऐसा विचारि कै श्रीकृष्ण को चिंतवन किया तबकृष्णने सातदिनों को वढ़ाय देतेभए५ कैसे श्रीकृष्ण हैं गोलोक में टिके हैं पांडवों के मित्र हैं तथा वड़े प्यारे हैं इस प्रकार से दिन बड़े होगये तव राजा परीक्षितु सातदिन में सवकाम करिलेते भए ६ इतिश्री भा०प्रथमस्कंधे एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ ३७ ॥

इतिश्रीमद्भागवतप्रथमस्कंधशंकानिवारणमञ्जरीसुधामयीटीकासहितासमाप्ता श्रीरस्तुशुभम् ॥

—

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

द्वितीयस्कंधे ॥

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतारऊचुः॥शुकःप्रोवाचराजानम्पुराणम्ब्रह्मसम्मितम्। श्रीमद्भागवतन्तत्रलक्षणन्तन्नदृश्यते १ वाचकउवाच॥ इतिहासान्यनेकानिभूपानाञ्चरितानिच।श्रीमद्भागवतेशास्त्रेप्रोक्तानिमुनिनापुरा २ ब्रह्मज्ञाश्चैवजानन्तिसर्वंब्रह्ममयञ्जगत्। भेददृष्ट्यभिमानेनभूरिभावःप्रदृश्यते ३ ब्रह्मवेत्ताशुकोयोगीब्रह्मरूपंचराचरम्।

श्रोता पूछतेभये श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षित् से कहे के भगवान् नाम यह पुराणजो है सो ब्रह्मके गुणसे मिला है रण भागवत में ब्रह्मके लक्षण को वर्णन एक भी नहीं देखिरता १ वाचक बोले व्यासमुनि पाहिले भागवत में अनेक प्रकार को इतिहास तथा राजोंका चारित्र वर्णन किया है २ ब्रह्मज्ञानी मनुष्य सब भले बुरे संसार को ब्रह्मरूप जानते हैं तथा जोप्राणीब्रह्मज्ञानसे हीनहैं वोलोग अभिमान युक्तआंखों से बहुत प्रकार संसारको देखतेहैं भलाको भला बुराकोबुरा ३ शुकदेवजी ब्रह्मज्ञानी हैं चर अचर सबको ब्रह्मरूप जानते हैं

ज्ञात्वाऽतः प्रोक्तवान्प्रीत्यापुराणम्ब्रह्मसम्मितम् ४ इति भागवतशंका निवारण मजयाँ द्वितीयस्कंधेप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

द्वितीयस्यद्वितीयादौपुराब्रह्मनिरूपणम्। तत्पश्चाद्वि ष्णुभक्तिंचततश्चैवकथारतिं । मुनिनोक्तंकथन्त्वेतद्ब्रू तिंदवचनंगुरो १ वाचक उवाच ॥ कथायाश्श्रवणेनैव भक्तिरुत्पद्यतेसताम्। भक्त्याप्रवर्द्धतेज्ञानंज्ञानेनब्रह्मचि न्तनम् २ अतस्त्रीन्कारणानूचे मुनिर्ज्ञानविशारद

इतिहास पुराण राजों का चरित्र इनको भी ब्रह्मरूप जानिके भागवत को ब्रह्म सम्मिति कहे हैं ४ इति भागवतशंकानिवारण मंजर्य्यां बुधशिवसहाय विरचितायां सुधामयी टीका सहितायांद्वितीयस्कंधेप्रथमेध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥श्लोक॥८।

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी व्यास मुनिने यह शंका देने वाला वचन कैसे वर्णन किया है द्वितीय स्कंध के दूसरे अध्याय के आदि में पहिले तो ब्रह्म को वर्णन किया तिस के पीछे भगवान् की भक्तिको वर्णन किया तिसके पीछे भगवान् की कथा की प्रीति वर्णन किया इसमें शंका यह है कि पेश्तर कथा की प्रीति तब भक्ति तब ब्रह्म चिंतवन होना चाहिये १ वाचक बोलते हैं हे श्रोताजनो कथा सुनने से सज्जनों के हृदयमें भक्ति उत्पत्ति होतीहै भक्तिकरिके ज्ञानहोताहै ज्ञान करिके ब्रह्म को चिंतवन होता है २ इसी वास्ते ज्ञान में चतुर जो व्यास सो मुक्ति होने वास्ते तीनधर्म वर्णन किया है तथा ब्रह्म के ध्यान में मस्त जो योगी हैं तिनको ऐसा विचार नहीं रहता कि यह बात पेश्तर वर्णन करना चाहिये या पीछे वर्णन करना चाहिये इस वास्ते पेश्तर वर्णन करने वाले की

पूर्वापरविरोधश्चहृदिनैवप्रवर्तते । योगिनाम्ब्रह्मणोध्या नमग्नानान्नकदाप्यहो ३ इ० भा० द्वि० द्वितीयेऽध्या येद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १ से ३२ ब्रह्मनि० श्लो० ३३ भक्तिव० श्लो० ३६ हरिकथा ॥

श्रोतार ऊचुः । म्रियमाणेनकिंकार्यमितिपप्रच्छभूप तिः । अनापृष्टः कथंप्रोचेसर्वदेवसुरार्चनम् १ वाचक उवाच ॥ संसारिणांसुखाप्त्यर्थंविचार्य्यहृदयेमुनिः । अना पृष्टोपिराज्ञा च प्रोचेसर्वसुरार्चनम् २ मयोक्तेनवविधिना सुखंप्राप्स्यंतिमानवाः । स्वकार्य्यंवीक्ष्यहृदयेदेवान्सम्पू ज्यभिन्नशः ३इति०भा०द्वि०तृ०अ०तृ०वे०३श्लो०२

पीछे वर्णन किये हैं और पीछे वाले को पेश्तर वर्णन किये हैं इ० भा० द्वि० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १ से ३२ ब्रह्मनि श्लो० ३३ भक्तिव० श्लो० ३६ हरि कथा ॥

वाचक से श्रोता पूछते भये शुकजी से परीक्षित् पूछे कि महाराज मरने वाले मनुष्यों को क्या कर्म करना चाहिये सो प्रश्न को उत्तर मुनि जी पीछे दिहें पण राजा सर्वदेव को पूजन नहीं पूछा तो भी मुनि ने सब देवों को पूजन क्यों वर्णन किये हैं १ वाचक बोले शुकजी अपने हृदय में विचारे कि सब कामना सिद्धि होने के वास्ते जुदा २ देवतों के पूजन की विधि हम वर्णन करेंगे तब सब जीवों को सुख होवेगा ऐसा विचारि के राजा पूछा नहीं तौभी सब कामों के प्राप्ति होनेके वास्ते सब देवतों का पूजन जुदा २ कहे हैं २ शुक जी विचा रे कि सब मनुष्य अपने २ हृदय में अपने २ काम को देखिकै हमारी कही विधि करिकै देवतों को पूजन करिकै सुख को प्राप्त होवैंगे ३ इति भा० द्वि० तृतीयेध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ आदौद्वितीयस्कंधस्यशुकेनोक्तो नृपोत्तमः । भूपतेऽयंवरः प्रश्नोननेमेमुनिरीश्वरम् १ तृतीयाध्यायमुल्लंघ्यतेप्युक्ताविविधाः कथाः । बहुश्लोकैश्चतुर्थेचकथन्नेमेहरिंमुनिः २ वाचक उवाच ॥ श्रुता शुकेनबहुशः परीक्षिद्वैष्णवोत्तमः।नकदादर्शितस्तेननच सन्मानितः पुरा ३ नूतनांसंगतिम्वीक्ष्यवरम्प्रश्नमुवाच सः । पश्चात्प्रीतिन्निशम्यास्यजहर्षबहुशोमुनिः ४ सर्प्पत्राधाविनाशेचविधिलेखविभाज्जने ~। शक्तः प्राप यितुम्भूपंवैकुंठेमुनिसत्तमः ५ जगज्जबहुभिश्श्लोकैर्नमन्विष्णुपदांबुजम् ६ इति भा० द्वि० चतुर्थेध्यायेचतुर्थेवेणी ॥४ ॥ श्लो० १३ ॥

श्रोता पूछते भये द्वितीयस्कंधकी आदिमें शुकजी परीक्षित से कहेंकि राजा यह तुमारा प्रश्न श्रेष्ठहै पण मुनिने भगवान् को नमस्कार क्योंनहीं किए नमस्कार करना चाहता रहाहै १ तीन अध्यायको बिताय कै तथा तीनों अध्यायों में अनेक प्रकारकी कथा कहिकै तथापीछे से बहुत श्लोकों करिकै चौथे अध्याय में भगवान्को नमस्कार मुनिजी क्यों किए २ वाचक बोले अनेक दफे शुकजी सुनेथे कि राजा परीक्षित् बड़ा वैष्णव है पणकभी राजा को देखे नहीं थे तथा पेश्तर कभी परीक्षित् पूजन भी मुनिको नहीं कियाथा ३ शुकजी राजाकी नवीन संगति देखिकै तारीफ मात्र किया है राजा तुमारा प्रश्न अच्छा है क्योंकि नई मुलाकात में तुरंत मनप्रसन्न नहीं होता पीछे से भगवान् में परीक्षित् की प्रीति देखिकै मुनिजी बहुत खुशी भए४ शापकी भय नाश करने को तथा ब्रह्मको लेख उलटि देने में तथा परीक्षित् को वैकुंठ में प्राप्ति करनें में शुकजी

श्रोतार ऊचुः ॥ नारदोविष्णुभक्तश्चवैष्णवानांशि रोमणिः। विस्मृत्यकमलानाथमज्ञवच्चविधिंकथम् १ सम्मेनेईश्वरंज्ञानीदेवर्षिर्विष्णुवल्लभः। वाचक उवाच ॥ यत्रकुत्रमुनीन्दृष्ट्वामायामोहितचेतसः २ सर्वान्वदति देवर्षिः कीदृशीसाविमोहिनी। व्यतीतंचिरकालंवाएवं मानयुतेमुनौ ३ मायेशो मोहयामास मायाम्प्रेर्यमहा मुनिं।मायाग्रस्तश्चदेवर्षिम्मेनेब्रह्माणमच्युते ४इति भा० द्वि० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५॥ श्लोक १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चराचराणांसर्वेषाम्भगवान्वैपरा समर्थ हैं ५ इस वास्ते बहुत श्लोक करिकै भगवान् के च-रणों को नमस्कार करिकै गर्जते भए६ इति० भा० द्वि० च-तुर्थे ऽध्याये चतुर्थ वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता बोलते भए नारदमुनि भगवान् के बड़े भक्त तथा वैष्णवों में शिरोमणि हैं ऐसे नारद भगवान्को भूलिकै ब्रह्मा को ईश्वर क्यों मानते भए १ वाचक बोले जिस किसी स्था न पर मुनियों को भगवान् की माया करिकै मोहित भये दे खिकै माया से दुःख को प्राप्ति जो मुनिजन तिन सब से नारद अभिमान से कहते थे कि जो माया तुम सबको मोहि लिया वो कैसी है ऐसा अभिमान करते करते नारद को बहुत दिन बीति गये २ तब भगवान् नारदको उन्मत्त देखि कै मायाको आज्ञादेकै उसी माया करिकै बड़े मुनि जो नारद तिनको मोहित कराय दिया है तब माया से ग्र सित भए जो नारद सो पागल होगये ब्रह्मा को ईश्वर मानि लिया३।४इति० भा० द्वि० पंचमे ऽध्यायेपंचमवेणी॥५श्लो०१॥

श्रोता पूछते भये ईश्वर जो है सो तीन लोक चौदा भुवन

यणः।समेतवकुमाराणांभवस्यचपरस्यवै १ विज्ञानस्य चधर्म्मस्यकथमुक्तंपरायणम् । विधिनाभिन्नभावश्च वलात्कारः कथंकृतः २ वाचक उवाच ॥ संसारवाचक श्शब्दोभवशब्दोविकथ्यते। शिवश्चापिभवोज्ञेयश्शब्द शास्त्रानुमानतः ३ भवस्यमध्येयेजाताः चकारादनुमीय ते।जंगमस्थावराश्चैवप्राणिनस्सचराचराः। तेषाम्पराय णोविष्णुर्मदुक्तानांविशेषतः ४ इतिश्री० भा० द्वि० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ११ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मणोक्तमसन्मार्गेनपतन्तिममे न्द्रियाः। स्वात्मजांवीक्ष्यकामेनरन्तुंचक्रेकथम्मनः १ में संपूर्ण चराचर का मालिक है ऐसे भगवान् को नारद से ब्रह्मा ने क्यों कहा कि हमारा तुमारा तथा सनकादिक को स- हादेव को विष्णु को विज्ञान को धर्म को मालिक है १ ऐसा भिन्न भाव जबरदस्ती से ब्रह्मा क्यों करते भये श्लोक २ को अर्थ मिला है इसको युग्म कहते हैं व्याकरण के मत से भव संसार को नाम है तथा महादेव का भव नाम है ३ ब्रह्मा ऐसा कहैं कि (भवस्यच) इस श्लोक में चकार है उस चकार करिके इस श्लोक का यह अर्थ भया कि भव जो संसार ति- सके बीच में उत्पन्न जो चर अचर जंगम स्थावर प्राणी उन सब के मालिक भगवान् हैं पण हे नारद जिसको २ हम तुम से कहा है उनको तो विशेष से मालिक है ४ इतिश्रीभा० द्वि० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥६ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोता बोले कि नारद से ब्रह्मा कहे कि हमारी इन्द्रिय खो- टी रस्ता मे नहीं प्राप्त होती सोई ब्रह्मा अपनी लड़की को दे- खिकै उसी के संग रमण करने का मन क्यों किया महा-

वाचक उवाच ॥ एकदा च सुरैः सार्द्धंजग्मतुर्गिरिशाल यम् । विधिविष्णूमुनिगणैः सुमग्नौ दुःखसागरे २ तारकस्यवधार्थायप्रार्थितुंगिरिजापतिं । तस्थतुस्तौ शिवस्याग्रेविनयानतकन्धरौ ३ प्रार्थनांचक्रतुस्तस्यता रकस्यबधंप्रति । तत्त्वणेगरुडंवश्यंहंसीकामविमोहितं ४ दृष्ट्वामन्दस्मितञ्चक्रेविधिर्भूरिसभातले । विधेर्मानंच विज्ञायशशापगरुडोपितं ५ स्वजात्यांरन्तुकामोऽहंना ऽन्यायंपत्तिणाञ्चनः । भवान्स्वतनुजांवीक्ष्य रन्तुकामोभ विष्यति ६ एवंशापवशीभूतो तनुजांरन्तुमुद्यतः । नो

ण्डाल कर्म १ वाचक बोलते भये तारक नाम राक्षसको किया दुःख को समुद्र तिसमें डूबेहुये जो वृह्मा तथा विष्णु सो एक दिन देवतों को मुनियों को संगकेके वृह्मा तथा विष्णु कैला- स को जाते भये २ तारक नाम दैत्य के मारने वास्ते शिव जीकी प्रार्थना करनेवास्ते शिवके सामने वृह्मा विष्णु देव मुनि सहित टिकते भये वारंवार वृह्मा विष्णु शिव को नमस्कार करते भये ३ तारक को मारने वास्ते शिवकी प्रार्थना वृह्मा विष्णु करते भये उसी समय में बड़े जितेंद्रिय जो गरुड़ तिनको हंसीके कामकारिकै मोहित ४ वृह्मा देखिकै उसी शिव की सभा में मुस्कियाते भये वृह्मा के अभिमान को जानि कै गरुड़भी वृह्माको शाप देते भये ५ अपनी जाति के संग हमने क्रीड़ा करने को विचार किया है तथा हमसब पक्षियों को अन्याय यह कर्म नहीं है तौभी तुमने हमारी मस्करी कियाहै ऐसेही हमारे शापसे तुम अपनी कन्याको देखिकै उसी के संग रमण होनेको मन करोगे ६ इस प्रकार के शापवश वृह्मा होकै अपनी लड़की के संग रममाण

स्वेच्छया।विधिस्सुज्ञश्श्रोतारःकारणन्विदम् ७ इति भा० द्वि० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥७॥ श्लो०३२

श्रोतारऊचुः ॥ नकेष्वपिचशास्त्रेषु श्रुतंकैश्चापिसज्जनैः। दिधिक्षोस्त्रिपुरंशम्भोर्मार्गंसिंधुर्ददौकिल १ विधिनातत्रशमायसिंधुर्मार्गंददौतदा।पुरंदिधिक्षोश्शंभोरिवशंकामहीयसी २ वाचक उवाच ॥ स्याच्छंभुस्सर्वदमग्नोभक्तप्रेमपयोनिधौ । कदापिकुरुतेक्रोधंसिंधुर्मार्गं ददातिन ३ दिधक्षोस्त्रिपुरं शम्भोर्भक्तप्रेमौघवारिधिः

होनेको मन करता भया है श्रोताजन आपनीइच्छा से वृह्म नहीं ऐसा चंडालकर्म करनेलगा ॥ ७ ॥ इति भा० द्वि० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये किसी शास्त्र में भी कोई सज्जन भी नहीं सुने कि त्रिपुरासुर के पुरको जलाने की इच्छा शिवने किया तब शिवको पुरके साम्ने जानेवास्ते समुद्रने रस्तादिया १ तथा नारद से वृह्मा कहा कि, रामजी को लंकामें जानेवास्ते समुद्रनेरस्ता दिया जैसा तीनों पुरको जलाने की इच्छा किहे जो महादेव तिनको समुद्रने रस्तादिया यह बड़ीशंका है २ वाचक बोले हे श्रोता हो सुनो शंकरके चरणों में शंकर के भक्तों को बहुत प्रेमसोई समुद्र है उसी समुद्र में शिवसर्वकाल मस्तरहतहैं जबकभीभक्तोंके ऊपरशिवक्रोधकरते हैं तब प्रेमरूप समुद्र शिवके भक्तोंके पास जानेवास्तेक्रोध को रस्ता नहींदेता ३ जब तीन पुर जलाने के वास्ते विष्णु आदि सब देवतामहादेव की प्रार्थना किया तब शिव जी अपने हृदयमें थोरात्रिपुर जोभक्त तिसके ऊपर नाराजहोते भयेउस नाराज होने के कारण से प्रेम समुद्र ने रस्ता दिया रस्ता देना यह

निष्ठुरत्वाद्ददौमार्गं विधिनोक्तमतोवचः४इति० भा० द्वि० सप्तमेध्यायेऽष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥२४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ म्रियमाणस्स्वयंराजा कथम्पप्रच्छ सर्वशः। चराचराणांसर्वेषां कर्म्माणिविविधानिच १ वाचकउवाच॥ऋषिणानुगृहीतंचज्ञात्वात्मानन्नृपोत्तमः म्रियमाणोपिपप्रच्छ सर्वकर्मविनिर्णयम् २ इति० भा० द्वि० परीक्षित्प्रश्नेअष्ट०नवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिणाप्रेरितोब्रह्मा तपःकर्तुंसमुद्यतः। किन्नामसस्तपश्चक्रे संस्थितोजलजासने १ वाचकउवाच ॥ समागृह्यहरेराज्ञांसमाधायमनोविधिः । स

है कि त्रिपुर को जलाने वास्ते बिलकुल निश्चय शिव करिं लिहे इसी वास्ते ब्रह्मा ने कहा कि शिव को समुद्र ने रस्ता दिया ४ इति भा०द्वि०सप्तमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥८श्लो०॥२४॥

श्रोता पूछते भये परीक्षित् राजा मरवेयोग्य ही रहा है तो भी भगवान् कोचरित्र छोड़िके सब चराचर जीवों के कर्म को क्यों पूछता भया क्योंकि मरण समयमें तो मूर्ख भी जंजाल छोड़ि के ईश्वर में मन लगाता है और परीक्षित् तो बड़ा बुद्धिमान्था १ वाचक बोले परीक्षित्नेजाना कि मेरेऊपरशुक जीकीकृपाहोगई अबमेरीदुर्गति नहीं होगी ऐसाजानिकेमरवे योग्यहोगा तौभी सबकर्मोंके निर्णयको पूछता भयाकि संसार में यह सब कर्मों का निर्णय बना रहैगा २ इतिश्री भा० द्वितीयस्कंधे अष्टमेऽध्याये नवम वेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये भगवान् की आज्ञा को पायके ब्रह्मा कमल के फूल पर बैठि के तपस्या करते भये पण उस तपस्या को क्या नाम है तप तो गनती से हीन है इसवास्तेब्रह्माने कौन

नमोच्चारणंविष्णोस्तपश्चक्रेऽतिप्रेमतः २इति० भा० द्वि० नवमाऽध्याये शंकानि० मं० तपस्तपीयानित्यस्य शंकानिवृत्तौदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

श्रोतारऊचुः॥विपश्चितोनगृह्लंति मायासृष्टउभेपिच। शंकायुक्तमिदंवाक्यंलोकौब्रह्मन्वदस्वनः १वाचकउवाच संसारेऽव्याप्यब्रह्मांशोजीवरूपश्चराचरे।द्वितीयस्सगुणो देवस्सविरंचिमहेश्वरः । एतेचोभेनगृह्लंतिमायासृष्टविपश्चितः २ इति० भा० द्वि० उभेअपिनगृह्लंतीत्यस्यशंकानि० दशमेऽध्यायेएकादशवेणी॥११॥श्लो०॥३५॥

सा तप किया १ वाचक बोले भगवान् की आज्ञाको बृह्मा पायके अपने मन को हृदय में स्थिर करिके बड़े प्रेम से भगवान् के नाम का जप करते भये सोई तप बृह्मा किया २ इ० भा० द्वि० नवमेऽध्याये दशम वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछते भये शुकजी कहेंकि ज्ञानी प्राणी मायाकरिके रची हुई जो दोवस्तु तिसको नहींग्रहण करते हेबृह्मन् वोदो चीज क्या हैं सोहम लोगोंसे आपकहो १ वाचक बोले भगवान् को अंश जीव रूप होके चरअचर संसार में व्याप्त होरहा है एक जीव को ज्ञानी लोग नहीं मानते कि भगवान् का अंश भंगी आदि खोटी देहों में क्यों बसेगा तथा दूसरी चीज गुण सहित बिष्णु बृह्मा शिव इनको भी नहीं मानते कहते हैं कि येभी सुखी दुखी होते हैं तथा जन्मते मरतेहैं इस दोयचीजको ज्ञानीलोगनहीं ग्रहण करते ॥ २ ॥ इतिभागवतशंकानिवारण मंजर्य्यांद्वितीयस्कंधे दशमेऽध्यायेएकादशवेणी११श्लोक३५

समाप्ताचेयं श्रीमद्भागवत द्वितीयस्कंधशंकानिवारण मञ्जरी॥श्रीरस्तुशुभम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

तृतीयस्कंधे ॥

सुधामयी टीका साहती विरच्यते ॥

श्रोतारऊचुः ॥ निजराज्येसदाप्रीतिर्य्यमस्यहृदये गुरो । तद्रूपोविदुरोजातस्तीर्थसेवनसत्क्रियाः । कथंच कारसर्वेषांप्रकृतिर्दुस्त्यजासदा १ वाचकउवाच भव द्भिश्चैवसत्योक्तःप्राणिनाम्प्रकृतिस्सदा। दुस्त्यजाचैव सर्वेषांसद्गतिस्तद्विमार्ज्जिनी। वेदव्यासांशसम्भूतोयमः क्रूरप्रशासनः २ अतःक्रूरमतिन्त्यक्त्वा विदुरस्सत्क्रिया रतः। बभूवभगवद्भक्तो व्यासस्यकृपयानिशम् ३ इति

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी यमराजके हृदय में अपने राज में सदाप्रीतिवनी रहती है सोई यमराज बिदुरहोते भये तथा बिदुरहोके तीर्थसेवन आदिलेके सुंदरिक्रिया क्यों करतेभये यम को अकातिआर चलते तौ दूसराजीव भी सुंदर कर्म नहीं कर ने पावता आपु यम क्योंकिया तथा सवजीवभी जिसी योनिमें जाँयगे उसी योनि में प्रकृति बड़े दुःख से छुटैगी यम की प्रकृति क्यों छूटिगई कि तीर्थ करते भये१वाचक बोलते भये हे श्रोताहो तुम सबजन सत्य कहतेहो सव प्राणियों की प्रकृति बड़े दुःखसे छूटती है पण उसी बड़े दुःखसे छूटनेवाली प्रकृ- तिको साधु लोगों की संगति बुरी प्रकृति को सुंदरि प्रकृति

श्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंका निवारणमंजर्य्यांशिव सहायबुधवि०प्रथमाध्यायेप्रथमवेणी॥१॥श्लो०॥१७॥

श्रोतारऊचुः॥सर्वेषुविष्णुभक्तेषुसर्वशास्त्रेषुज्ञानिषु। उद्धवःकथितोऽत्यन्तम्भक्तज्ञानाशिरोमणिः १ बोधितोऽपिमहाबुद्धिःकृष्णेनापिकृपालुना। शुशोचविरहाक्रान्तस्स कथम्मूर्खवत्प्रभो २ वाचकउवाच॥विष्णोर्विरहजन्दुःखं कलौख्यापयितुंसुधीः। विष्णुभक्तोमहाज्ञानी चकारशुचमुद्धवः ३॥इति० भा० तृ० द्वितीयाऽध्याये द्वितीयवेणी॥२॥श्लो०॥१॥

करिदेती है दुष्ट जीवोंको त्रास करनेवाले यम हैं पण व्यास के अंशसे विदुर होके जन्मते भये हैं २ इस वास्ते यमराज विदुररूप होके दुष्टमति त्यागि के सुंदरि क्रिया करते भये व्यासकी कृपासे विदुर भगवान् के भक्त होते भये ३ इति श्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहायबुध विरचितायांसुधामयीटीकासहितायांप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी १॥ श्लोक॥१७॥

श्रोतावोलतेभये सवविष्णुकेभक्तों तथासवज्ञानियोंमेंतथा सवशास्त्रोंमें उद्धव वड़ाज्ञानी तथा वड़ेभक्त १कृपाकेसागर श्री कृष्णजीनेउद्धवको ज्ञानभीदिया ऐसेवड़ेज्ञानी उद्धव विदुरसे श्रीकृष्णवलदेव तथा सवयदुवंशियोंको नाशसुनिके मूर्खसरीके कैसाशोक करतेभये २ वाचक वोले उद्धवनेविचारकिहे जोमें भगवान् के विरहको सुनिके शोच करोंगा तोमेरा चरित सुनि के कलियुग में सवजीव भगवान् को विरह सुनिके शोचकरें गे प्रेमसे तव सवजीवोंको कलियुग में वैकुंठ मिलेगा इस ।.उद्धव ज्ञानी हैं विष्णुभक्त भी हैं तोभी शोच करते भये

श्रोतारऊचुः ॥ विदुरश्चोद्धवेनोक्तोब्रह्मविद्यामवाप्तवान् । सान्दीपनेश्चश्रीकृष्णस्तत्कथम्मुनिसत्तम १ वाचकउवाच॥चतुष्षष्टिकलाश्राप्तास्तस्मात्कृष्णेननिश्चितम् । सर्वंचराचरमिदम्ब्रह्मांशेनप्रकाशितम् २ दृश्यते नाणुमात्रंहितंविनायाद्विचेष्टितम् । अतोवाचोद्धवोधीमान्ब्रह्मविद्यामधीतवान् ३ इति० भा० तृ० तृतीयाऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उद्धवोविदुरम्प्रोचे महद्यंसभगवान्परः । प्रोवाचसाचकाब्रह्मन्नात्मनःपरमास्थितिम् १

कलियुग में जीवों को सुख होने के वास्ते ॥ ३ ॥ इतिश्रीभागवततृतीयस्कंधे द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २॥श्लोक ॥ १॥

श्रोता पूछतेभये हे मुनिसत्तमजी उद्धव विदुर से कहतेहैं कि सांदीपन नाम गुरु के पासते श्रीकृष्ण मोक्ष प्राप्त होनेकी विद्या प्राप्त होते भये सोमोक्ष विद्या प्राप्तहुये फिरिरागद्वेष क्यों जीवोंसे करते भये १ वाचक बोलतेभये सांदीपन गुरु से श्रीकृष्ण चौसठि कलोंको प्राप्त होतेभये पणतीनलोक चोदह भुवन ब्रह्मके अंश करिके प्रकाशमान होरहा है चरअचर चौसाठि कला भी २ ऐसी कोई संसार में वस्तु नहींहै कि,जो वस्तु ब्रह्मके अंशसे हीन होवे ऐसा ज्ञान चौसाठि कलाके मिस करिके कृष्ण सिखतेभये तब जिस जीव को जैसी इच्छा रही तिसके संग तैसी लीला किहें फिरि रागद्वेष कहांरहा इस वास्ते उद्धव ब्रह्मविद्या प्राप्ति होनेको कहते भये ३ इतिश्रीभा० तृ० तृतीयाऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पछतेभये हगुर जी उद्धव विदुर से कहेकि, हेविदुर भगवान् मेरे को वड़ी सुन्दर स्थिति आपनी वताते भये सो

वाचकउवाच ॥ भक्तौवसतिविश्वात्मा भगवान्जग दीश्वरः । परमास्थितिश्चसातस्यताम्प्रोवाचोद्धवाय सः २ इति० भा० तृ० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी४ श्लो १९

श्रोतार ऊचुः ॥ मैत्रेयोक्तमिदंवाक्यं वीर्यमाधत्तवी र्य्यवान् । स्वमायायांजगत्स्वामी स्वात्मरुद्धस्यतच्च किम् १ वाचकउवाच॥आधारपात्ररहितन्नच किंचिच्च राचरे । सृष्टिपात्रमतोमायां कृत्वात्रिभुवनेश्वरः २ त स्यामाधत्तस्वंवीर्यं मिच्छारूपंजगत्पतिः । नचात्रग्रहणं कार्य्यं रेतसोवीर्य्यशंकया ३ इति० भा० तृ० पंचमाऽध्या येपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

भगवान्की बड़ी सुंदर स्थिति टिकना क्या है १ वाचक बोले भगवान् की बड़ी सुंदर स्थिति भक्ति में है सबको त्यागिके भक्तिमें ईश्वरबसते हैं भगवान्की बड़ीस्थिति- सोई है उसीबड़ी अपनी स्थिति को भगवान् उद्धव से कहा तेभये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ १९ ॥

श्रोतापूछते भये कि, विदुर से मैत्रेय ऐसा वाक्य कहेकि अपनी माया में भगवान् वीर्य को स्थापना करते भये तब अपने शरीरमें सबवस्तु टिकाये जो भगवान् सोकभी शरीर के बाहेर किसी वस्तुको नहीं जानेदेते तौमायामें कैसावीर्य्य को धारण करते भये १ वाचक बोले हे श्रोताजनो तीनलोक चौदहभुवन में आधारके पात्रसे हीन कोईभी चीज नहीहै इसवास्ते ईश्वर सृष्टिको आधारको पात्रमायाको बनायके २ सृष्टि की रचना करनेको भगवान् की इच्छाहै सोई इच्छा रूप वीर्य माया में भगवान् धारणकरतेभयेइसवीर्य के धारण

श्रोतार ऊचुः।। मुनिःप्रोवाचविदुरम्भ्रातुः क्षेत्रेभुजिष्यया। जनितोसिमहाबाहो तस्यक्षेत्रंकथंचसा १ कदाप्युद्वाहिताशूद्री नक्षत्रेणश्रुताचनः। वाचक उवाच॥ अर्थोनैवात्रकर्तव्यो क्षेत्रशब्दस्यपौर्विकः २ क्षेत्रेधर्म्मावनेभ्रातुर्भुजिष्यागर्भसंभवः। बभूवविदुरोज्ञानी वंशेनष्टेऽनुजस्यच ३ इतिश्री भा० तृ० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥सृष्टिविस्तारप्रश्नेन किमापविदुरः

रूप मैत्रेय के वाक्य में बीर्य को ग्रहण नहीं करना जैसा जीवोंकोबीर्य होता है उसबीर्यकी शंकानहीं करना॥३॥इति० भा० तृ० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक॥२६॥

श्रोतापूछते भये मैत्रेय विदुरसे कहे कि हे विदुर व्यासके भाईको क्षेत्रजो दासी तिसमें तुमजन्मेहो तव व्यासको भाई जो शन्तनु राजाको तथा सत्यवती को पुत्र तिसका क्षेत्रदासी कैसे होतीभई क्योंकि हमसव शास्त्र तथा लोकमें नहीं सुने कि कोईभी क्षत्री होके शूद्रीकेसंग अपना विवाह किया है १ वाचक वोले कि(भ्रातुःक्षेत्रे)इस श्लोकमें पेश्तरजो क्षेत्रशब्द को अर्थ नहीं किया जावैगा २ इस श्लोक में क्षेत्र कहे धर्म कीरक्षा करने वास्ते दासीके गर्भसे विदुर वड़े ज्ञानी जन्मते भये क्या धर्म नष्टहोतारहा जिसकी रक्षा करने वास्ते विदुर जन्मे व्यासके छोटेभाई जो चित्रांगद तिसकावंश नष्टहोता रहा तिसकी रक्षा करनेवास्ते विदुरजन्मे रक्षाकरना ये है कि धृतराष्ट्र तथा पांडुको ज्ञानासिखाना येहीरक्षा ॥ ३ ॥ इ०भा० तृ० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी भक्तिज्ञान वैराग्य प्राप्त होने का

फलम्। ज्ञानभक्तिविरागादिर्व्यन्यपप्रच्छयंसुधीः १ वाचकउवाच ॥ भगवद्ध्यानवेलायां योगिनोहृदयेनिशम्। स्वकीयेचैवपश्यन्ति ब्रह्मसृष्टिंचराचरम् २ अश्रुत्वासृष्टिरचनां कथम्पश्यन्तितेहृदि। योगिनोऽतोविपृच्छन्ति सृष्टिसंकल्पनाम्मुदा ३ इतिश्री भा० तृ०सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी॥७॥श्लो०॥१५ से २९तक॥

श्रोतार ऊचुः॥ मैत्रेयोवर्णयामास शृंगारंनरयद्धरेः। महायोग्यमिदम्मन्ये भुपतेस्स्वारान्नंपथा १ वाचक उवाच॥ अज्ञानिनाम्प्रलोभाय शृंगारन्नरवद्धरेः। यंश्रुत्वा

भगवद्भक्तिन्तेपिकुर्वन्तिमोहिताः २ मुनिभिर्वर्णित श्चातश्शृंगारोनरवद्धरेः ३ इति श्री भा० तृ० शंकानि० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८॥श्लो०॥२३से३१तक॥

श्रोतार ऊचुः॥ हरिःप्रोवाचब्रह्माणं सर्गमुद्यममा वह। पुरःस्थितोदर्शयित्वा स्वरूपंजगदीश्वरः १ स्व वाक्याद्दर्शनाच्चैवश्रेष्ठमत्वोद्यमंकथम्।प्रेरयामासब्रह्मा णंकर्तुंयंकमलापतिः २ वाचक उवाच ॥ विनोद्यमब्रसि

ज्ञानी जनतो भगवान् को त्रिलोकनाथ जानतेही हैं पण अ- ज्ञानी जन भगवान् को कुछभी नहीं जानते सुंदरि चीज को भगवान् करिके जानते हैं उन अज्ञानियों को लोभ करने वास्ते मनुष्य सरीके ईश्वर को श्रृंगार वर्णन भया है जिस भगवान् के श्रृंगार को सुनिकै अज्ञानी जन भी मोहको प्राप्त होवेंगे जानेंगे कि ऐसे वड़े लक्ष्मीवान् भगवान् हैं ऐसा जा- निकै अज्ञानी भी भगवान् की भक्ति करेंगे धनवान् होने वा- स्ते फिरि धीरेधीरे ज्ञानी होजावेंगे २ इस वास्ते मुनिजनोंने मनुष्य की पोशाक सरीके भगवान् को श्रृंगार वर्णन करते हैं ३ इतिश्री भा० तृ० अष्टमे ऽध्याये अष्टम वेणी॥ ८ ॥ श्लोक २३ ॥ से ३१ तक ॥

श्रोता पूछतेभये ईश्वर ने ब्रह्माके सामने खड़ेहोके अपना रूप ब्रह्मा को दिखायकेब्रह्मासे बोलेकि हेब्रह्मा संसारके बनाने वास्ते तुम उपाय करो १ तब ईश्वर ने अपने स्वरूपसे तथा अपने दर्शन देने से उद्यमको वड़ा क्यों मानते भये जिस उद्यम करनेवास्ते ब्रह्मा को आज्ञा दिया क्या ईश्वरका दर्शन ब्रह्माकिया तथा ईश्वरका वचन इनदोनोंसे ब्रह्मा संसार को न बनाय सकता उद्यम विना यह वड़ी शंका होती है २ वाचक

च्छंति सर्वेऽर्थाभवसागरे । अङ्गोभगवतश्चाय मुद्यमो भगवत्तनुः ३ नवाक्यादु दर्शनाच्छ्रेष्ठो हरेर्भवसुखाकरः अतोस्यहरिणाप्रोक्तमधिकत्वञ्चब्रह्मणे ४ इतिश्रीभा० शं० तृ० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥श्लो० ॥ २९ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुनःपप्रच्छमैत्रेयंविदुरस्सृष्टिकल्पनां । कथमेतन्महाबाहो शंकेयम्भारगर्विता ॥ वाचक उवाच ॥ मणिहीनोयथासर्प्पो गतवित्तोयथाजनः । नष्टपुत्रोयथाप्राणी बभूवविदुरस्तथा २ श्रीकृष्णविरहा

बोलेकि हेश्रोताहो इस संसाररूप समुद्रमें विनाउद्यम कोई भी काज नहीं होसक्ता क्योंकि यहउद्यम जोहैसो ईश्वरकी देहहै ३ ईश्वरके दर्शनते तथा वचन से बड़ानहींहै परंतु संसार में उद्यम जोहैसो सुखकी खानिहै इसवास्ते ब्रह्मा से ईश्वर उद्यमकी बड़ाई करिकै उद्यम करनेको ब्रह्माको कहते हैं ४ इतिश्री भा० शंकानि० मं० तृतीयस्कंधे शिवसहाय बुध विरचितायां नवमेऽध्याये नवम वेणी ॥९ ॥ श्लोक ॥ २९ ॥

श्रोतापूछते भये विदुरने मैत्रेय से फिरि सृष्टिकी रचना क्यों पूछते भये हे गुरुजी यह शंका बड़ेभारसे गर्वकरती है कि मेरेको काटनेवाला कोई बुद्धिमान् संसार में नहीं है १ वाचक बोले जैसा मणिको नष्टदेखिकै सर्प्प दुःखी होताहै तथा धन को नष्टदेखिकै मनुष्य दुःखी होता है पुत्रको नष्टदेखिकै सब जीवदुःखी होतेहैं तैसेविदुरभी २ उद्धवसे श्रीकृष्ण को तथा यदुवंशियों को कौरवपांडवों को तथा सबराजोंको नाश सुनिकै कृष्णके विरहकरिकै बहुत दुःखी विदुर होगयेविह्वल भये पर किसी चीजकी सुधि नहीं रहती तैसे बिदुरकी सुधि

क्रान्तस्सश्रुत्यचोद्धवात्तथम् । यादवानांकुरूणांच त थाचसर्वभूभुजाम् २ इतिश्री भा० तृ० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः। मुनिनोक्तंकथंब्रह्मन्संभवस्सर्वदेहिनां। बभूवकर्मभिस्सृष्टेः पूर्वंकर्मनजायते १ वाचक उवाच॥क र्मशब्दोपिसंप्रोक्तोमुनिभिर्ज्ञानतत्परैः। कृत्यंचसर्वयोनी नांनतुप्रारब्धमुच्यते। जनिर्बभूवभूतानांकर्मभिर्भवका र णैः२इतिश्रीभा०तृ०एकादशेध्यायेएकादशवेणी॥११॥ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विधेर्वेदशपुत्राश्चकथंजाताःपृथक् नहीं रही कि यह प्रश्न पाहिले हमकिहेरहेहैं विह्वल होके सृष्टि कीरचना पुनि पूछते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० तृ० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी मैत्रेयमुनि विदुरसे कहेकि सब प्राणियोंकी उत्पत्ति अपने २ कर्मकारिके भई पण जब प्रलय में सब चर अचर नष्ट होगया एक ईश्वर बचे कलु दिन पीछे ईश्वरकी नाभिसे कमलको पुष्पभया उस फूलमें ब्रह्माजन्मले के सृष्टिको बनानेलगे तबसृष्टि के पेश्तरकर्म कहांरहा कर्मतो प्राणी जन्मेंगे कर्मकरेंगे तब होवैगा यह बड़ीशंका है १ वा- चक बोले इसलोक में ज्ञानवान् जोमुनिहैं सो कर्म को प्रारब्ध नहीं कहते सब योनिके करनेके उपायको कर्म कहते हैं जिस योनिका जैसा उपाय ब्रह्मादेखे हैं उसी योनिको उसी प्र- कारको रूपशब्द चलना खाना पीना आदि सब कारण करिके जुदा २ सब योनियों को बनाये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० तृ०ए- कादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

द्ध्यंति सर्वेऽर्थाभवसागरे । अङ्गोभगवतश्चाय मुद्यमो भगवत्तनुः ३ नवाक्यादू दर्शनाच्छ्रेष्ठो हरेर्भवसुखाकरः। अतोस्य हरिणाप्रोक्त मधिकत्वञ्चब्रह्मणे ४ इतिश्रीभा० शं० तृ० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥श्लो० ॥ २९ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुनःपप्रच्छमैत्रेयंविदुरस्सृष्टिकल्प नां । कथमेतन्महाबाहा शंकेयम्भारगर्विता ॥ वाचक उवाच ॥ मणिहीनोयथासर्प्पो गतवित्तोयथाजनः । नष्ट पुत्रोयथाप्राणी बभूवविदुरस्तथा २ श्रीकृष्णविरहा

बोलेकि हेश्रोताहो इस संसाररूप समुद्रमें विनाउद्यम कोई भी काज नहीं होसक्ता क्योंकि यहउद्यम जोहैसो ईश्वरकी देहहै ३ ईश्वरके दर्शनते तथा वचन से वड़ानहींहै परंतु संसार में उद्यम जोहैसो सुखकी खानिहै इसवास्ते ब्रह्मा से ईश्वर उद्यमकी बड़ाई करिकै उद्यम करनेको ब्रह्माको कहते हैं ४ इतिश्री भा० शंकानि० मं० तृतीयस्कंधे शिवसहाय बुध विरचितायां नवमेऽध्याये नवम वेणी ॥९ ॥ श्लोक ॥ २९ ॥

श्रोतापूछते भये विदुरने मैत्रेय से फिरि सृष्टिकी रचना क्यों पूछते भये हे गुरुजी यह शंका बड़ेभारसे गर्वकरती है कि मेरेको काटनेवाला कोई बुद्धिमान् संसार में नहीं है १ वाचक बोले जैसा मणिको नष्टदेखिकै सर्प्प दुःखी होताहै तथा धन को नष्टदेखिकै मनुष्य दुःखी होता है पुत्रको नष्टदेखिकै सब जीवदुःखी होतेहैं तैसेविदुरभी २ उद्धवसे श्रीकृष्ण को तथ यदुवंशियों को कौरवपांडवों को तथा सबराजोंको नाश सुनि कै कृष्णके विरहकरिकै वहुत दुःखी विदुर होगयेविह्वल भये पर किसी चीजकी सुधि नहीं रहती तैसे विदुरकी सुधि

क्रान्तस्सश्रुत्यचोद्धवात्तयम् । यादवानांकुरूणांच तथाचसर्वभभुजाम् ३ इतिश्री भा० तृ० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः।मुनिनोक्तंकथंब्रह्मन्संभवस्सर्वदेहिनां। बभूवकर्मभिस्सृष्टेः पूर्वंकर्मनजायते १ वाचक उवाच॥कर्मशब्दोपिसंप्रोक्तोमुनिभिर्ज्ञानतत्परैः। कृत्यंचसर्वयोनीनांनतुप्रारब्धमुच्यते। जनिर्बभूवभूतानांकर्मभिर्भवकारणैः२इतिश्रीभा०तृ०एकादशेध्यायेएकादशवेणी॥११॥ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विधेर्वैदशपुत्राश्चकथंजाताःपृथक्

नहीं रही कि यह प्रश्न पाहिले हमकिहेरहेहैं विह्वल होके सृष्टि कीरचना पुनि पूछते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० तृ० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी मैत्रेयमुनि विदुरसे कहेकि सब प्राणियोंकी उत्पत्ति अपने २ कर्मकरिकै भई पण जब प्रलय में सब चर अचर नष्ट होगया एक ईश्वर बचे कछु दिन पीछे ईश्वरकी नाभिसे कमलको पुष्पभया उस फूलमें ब्रह्माजन्मले के सृष्टिको बनानेलगे तबसृष्टि के पेश्तरकर्म कहांरहा कर्मतो प्राणी जन्मैंगे कर्मकरैंगे तब होवैगा यह बड़ीशंका है १ वाचक बोले इसलोक में ज्ञानवान् जोमुनिहैंसो कर्म को प्रारब्ध नहीं कहते सब योनिके करनेके उपायको कर्म कहते हैं जिस योनिका जैसा उपाय ब्रह्मादेखे हैं उसी योनिको उसी प्रकारको रूपशब्द चलना खाना पीना आदि सब कारण करिकै जुदा २ सब योनियों को बनाये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० तृ०एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

पृथक्। शरीरात्किमभिप्रायाद्ब्रह्मन्वदसविस्तरम् १ वाचकउवाच॥मानसानकृताःपुत्रानारदाद्याविरंचिना। ज्ञात्वासांसारिकांस्तांस्तुविद्यापत्तविवर्जितान् २ कदा मोहंकदाक्रोधमित्यादितत्परान्ध्रुवम्। शरीरांगात्पृथक् चक्रे तेषांजन्मस्वभावतः ३ इतिश्री भा० तृ० शं०नि० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥ १२ ॥ श्लो० ॥ २२ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ सृष्टिपूर्वंकथंजाता राक्षसाःकनकाद यः। येषांभारसमाक्रान्ता गताभूमीरसातलम्। रसातल

श्रोता पूछते भये हे आचार्यजी ब्रह्मा अपनी देहते जुदा२ अंगसे दश १० पुत्र क्यों उत्पन्न करते भये देहके एकअंगसे क्यों नउत्पन्न किया दश १०पुत्रोंको जुदा जुदा उत्पन्न करने का क्या अभिप्राय है १ वाचक वोले नारद आदि दशपुत्रोंको ब्रह्मा ध्यानसे जानिलिहोकि येहमारेपुत्र मोक्षविद्याको नहीं जानेंगे संसारके कर्ममें वड़ेचतर होवेंगे ब्रह्मा ऐसाजानिकै नारद आदि दशपुत्रों को मनकरिकै नहीं उत्पन्न किहे २ ब्रह्मा जानिलिहेकि निश्चय करिके हमारे दशपुत्र कभी मोहको कभी क्रोधको कभी कामको इन आदिलेकै अनेक जो संसारको कर्म तिसमें चतुर होवैंगे इसवास्ते देहके जिसअंगको जैसा स्वभाव उस अंगकरिकै वैसही पुत्रब्रह्मा उत्पन्न करते भये ३ इ० भा० तृ० द्वादशाऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ शलोक ॥२२॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी भागवत तृतीयस्कंध वीसअध्यायके तेरहश्लोकके अर्थसे मालूमपरताहैकि हिरण्यकाशिपुआदि राक्षसोंके मरपीछे सृष्टि रचना ब्रह्मा न किये हैं तव सृष्टिके पेशतर हिरण्यकशिपु आदिराक्षसकैसे जन्मते भये जिनराक्षसोंके भारकरिकै पृथ्वी रसातलको चलीगई तथा रसातलको

गताभूमिर्न ज्ञाताब्रह्मणाकथम् १ वाचकउवाच ॥ मनुनोक्तादिनेपूर्वं मारीचकुलसम्भवाः। राक्षसाबहवोजाताः सृष्टिश्चार्द्धप्रवर्द्धिता २ हिरण्याक्षेनवसुधा तपसाद्योतितेनवै। हतातूर्णमधस्सप्त कल्पितानविरंचिना ३ व्यतीताघटिकैकाच पृथिव्याहरणेकृते। यावदायान्तिविज्ञप्तुं सुरास्तावत्स्वयम्भुवा। मनुनोक्ताश्रुतातूर्णं हरिराविर्बभूवह् ४ इतिश्री भा० तृ० भूमिहरणशं० मं० त्रयोद० त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विहायसर्वान्सचराचरान्तनून् जगन्निवासोजगतीविमोचने । दधारकेनैवसुनिन्दितां

गईथकी ब्रह्माको क्योंनहीं मालूम परा मनुराजा पृथ्वीका हालब्रह्मासे कहेतो ब्रह्माको मालूमपर यहबड़ीशंका होती है१ वाचकबोले जिसदिन ब्रह्मासे स्वायंभूमनु कहेकि पृथ्वी को तो हिरण्याक्ष हरलेगया उसदिन मरीच के कुलमें राक्षस बहुत जन्मेथे तथा उसीदिन आधी सृष्टिभी बानिके वृद्धिको प्राप्तहोरही है२ हिरण्याक्षने तपस्याके प्रभावसे पृथ्वीकोहरिलेगया जल्दी नीचेके सातलोकों को ब्रह्मा उसदिन नहींरचे थे केवल नीचे सातलोकों की जगहपर जलभराथा ३ पृथ्वी को हरण भये पीछे घड़ीएक बीतिगई जबतक देवता पृथ्वी का हाल ब्रह्मासे कहने वास्ते आने लगे तबतक मनुने जल्दी पृथ्वी का हाल ब्रह्मासे कहते भये तब ब्रह्मा सुनिके दुःखी होगये तब उसीवखत ईश्वर प्रगट होके सब कामकिया इस प्रकार से सृष्टिके पेशतर राक्षस जन्मतेभये४इति०भा० तृ० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥१५॥

श्रोतापूछते भये ईश्वरने पृथ्वीको हिरण्याक्षसे छुड़ाने

तनुंक्रोडंस्वकर्म्मग्रसितोयथाजनः १ वाचक उवाच ॥ विज्ञायतंब्रह्मवरप्रमादिन्नमृत्युभावंगमितासुरेश्वरः। लोकेसजीवैस्सचराचरैरहोविरंचिकृत्यैरपिक्रोडवर्ज्जितैः २ विचार्य्यैवंरमानाथो धृत्वाक्रोडतनुंहरिः। जघानाशुजलाद्दैत्य मुज्जहाराचितिंहरिः ३ इतिश्रीभा० तृ० शूकररूपधारणशं० मं० चतुर्दशेऽध्या० चतुर्दशवेणी॥१४॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नसन्तिसर्वैरिपवोविकुंठिनो वैकुंठलोकेमदनादयोगुरो। प्रचकृतुर्भेदमतिंजयौकथं शेपुर्द्विघ्नजाश्चाप्यरुणाननाश्चतौ १ वाचकउवाच ॥ हरिर्विजवास्ते अनेक प्रकारके सुंदर २ शरीरको त्यागिके जैसाकोई जीवबुराकर्मकरे उसीजीवको बुरेकर्मकारिकै खोटीयोनि धारण करनापरै तैसेबड़ी निंदित सूकरकी योनि तिसको क्यों धारण किहे सूकरकी योनि बड़ीखराबहै १ वाचक बोलेकि हेश्रोता हो ईश्वरजानिलिहे कि, यह हिरण्याच्छ ब्रह्माके वरदन करिकै बहुत प्रमादमें मस्तहोरहाहै संसारमें जेतने चरअचरप्राणी ब्रह्माके बनाये हैं तिन्हों करिके यह मरैगा नहीं सूकरको वर्जित करिके सूकर से मरैगा यह बड़ी आश्चर्य की बात है २ लक्ष्मीकेनाथ ऐसा विचारिकै सूकर का शरीरधरिके जलदी हिरण्याच्छ को मारिडाले तथाजलमें डूबती जो पृथ्वी तिसको जलसे उठायकै पृथ्वीके स्थानपर पृथ्वी को टिकाते भये३इति०भा०तृ० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी१४ श्लोक॥१॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी प्राणियों की बुद्धिके नाश करने वाले कामक्रोध आदिलेके अनेक दुश्मन वैकुंठमें नहींहैऐसा हमसब शास्त्रमें सुनाहै फिरिजय विजय भेदयुद्ध क्योंकियाकि

भृगुवल्लभांयदा निरीक्ष्यक्रोधारुणचक्षुषंद्विजाः। तन्तै श्चपृष्टःकरुणाकरोहरिः कथंत्वयीशेमदनानुजोऽप्यरिः२ प्राणिनामिन्द्रियाविप्राः प्रबलास्सर्वदेहिनाम्। योगिना मपिचेतांसि ममदीनस्यकाकथा ३ आकर्षतीतिमुनिभि श्शनकाद्यैर्नस्वीकृतम्। अतोमायावशीकृत्वा हरिस्स्वा

ये ब्राह्मण ईश्वरके पासजाते हैं कुछ उत्पात करेंगे तथा दूसरे फिरि सनकादिमुनि लालमुखहोके क्रोधसे उनदूनोंको शापदिया यहतो मृत्युलोक सेभी वैकुंठलोक कामक्रोध भेद आदिको समुद्र होगया १ वाचक बोले भगवान्ने भृगुकीस्त्री को जब मारिडाले तब ईश्वरके नेत्र क्रोधकरिके लाल होगये तबऐसे ईश्वरके रूपको देखिकै सनकादिक भगवान्से पूछते भये हे भगवन् आपुतो बड़ेदयालुहो आपुमें कामदेव को छोटाभाई जो क्रोधसो क्यों है २ ईश्वर सनकादिकसे बोले हे ब्राह्मण सब प्राणियोंकी इंद्रियबड़ी जबरदस्त हैं योगियों के चित्तको खैंचिकै बुरी रस्ते में पटकि देती हैं तौ मेरी गरीबकी क्या कथा है इन्द्री के वशहोके मेरेभी क्रोध होगया३ ईश्वरके ऐसे सुंदर वचनको सनकादिक सुनिके नहीं मानतेभये अभिमान से मनमें विचारे कि क्या इन्द्री करि सक्तीहैं सनकादिकके मानकोजानिकै कुछदिन पीछे ईश्वरने अ-पनेदास जय विजय को मायाके वश करिके ४ जयविजय करिके सनकादिकोंको मरवाते भये तथा सनकादिकोंकेहृदय में क्रोधकी वृद्धि करायके जयविजय को सनकादिकोंसे शाप

टीप—तृतीयस्कन्धकेअ० १४ श्लोक १ में कारणसूकरात्मनःकी शंका है कारणसो शंकार्यानिषर्प ॥

नुचरौतदा ४ ताडयित्वाचतांस्ताभ्यान्तेषुक्रोधंव्यवर्द्ध यत् ५ इतिश्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजर्य्यांजयादिसनकादि क्रोधकारणे पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी१५ ॥ श्लो० ॥ ३० से ३३ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ हरिर्यथाचिरेविप्रान चिरेणैवमेऽन्तिकम् । इमावायास्यतोविप्रे स्स्वीकृतंतच्चिरंकथम् १ चेज्जन्मत्रयसम्बंधं तथा पिक्षणमात्रतः । कोटिशोरचितुं शक्तो भगवानूजगदीश्वरः २ वाचकउवाच ॥ सुज्ञाजानन्तिमांल्लोके नेतराभुवनत्रये।अनयोःकारणंकृत्वा प्रावि

दिवाते भये जयविजय को दुःख होवेगा पण सनकादिकों के मान नाश होनेके वास्ते यह काम ईश्वर करतेभये ५ इतिश्री भा० तृ० शंकानि० मं० पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ३० से ३३ ॥

श्रोता पूछतेभये भगवान्ने सनकादिकोसें कहेकि हेब्राह्मण लोगो ये दोनों हमारे पार्षद जल्दी हमारे पासको प्राप्त होवें यह वरदान प्रसन्न होके हमको दीजिये सनकादिक बोले हेईश्वर बहुत जल्दी आपुके पास आयजावेंगे फिरि बहुत युगतक क्योंराक्षस बनेरहे जल्दी ईश्वरकेपास नहीं आये १ हे गरुजी जो यह कहोकि तीन जन्मकी करार सनकादिकोंने करिदिया इस वास्ते देरभई ईश्वर के पास आने में भगवान् तोएक क्षणमें कोटियों योनिवनानेको समर्थ हैं तीन जन्म की क्या वातहै २ वाचक बोलेकि ईश्वरने विचार किये कि तीनलोक में ज्ञानी प्राणीतो हमको जानतेहैंकि ईश्वर

मांवस्त्रिधामम ३ भविष्यतिचितौसर्वे मांज्ञास्यन्तिजगत्पतिम्।इतिप्रथयितुंकीर्तिविलम्बोहरिणाकृतः ४ इति श्री भा० तृ० शंकानि० मं० षोडशेऽध्यायेचिरकालेषोडशवेणी१६ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वकक्ष्यातीत्यहेमाक्षोनित्यन्तिष्ठति स्वालये।दिनेशंनश्रुतोस्माभिरीदृशोनैत्यिकस्तनुः १ मायिकोविश्रुतोस्माभिःराक्षसानान्त्वनेकधा। वाचकउवाच भ्रातरौद्वौमहावीरौ सूर्यभक्तौ बभूवतुः २ शरीरवर्द्धनं

जगत्पतिहैं परंतु मूर्ख लोग हमको कुछभी नहीं जानते इस वास्ते ये दोऊ राक्षस होवेंगे तो इनके वास्ते तीन दफे. हम मृत्यु लोक में प्रगट होवेंगे ३ तवहमको सब मूर्खभी जगत्को पति जानेंगे इसवास्ते भगवान् दोनों पार्षदों को अपने पास आने में देरकिया ४ इति० भा० तृ० शं० मंज० षोड़शेऽध्याये षोड़शवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछतेभये हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु ये दोनों भाई अपने २ कर्म करिके सूर्य को नीचे करिके आपनेघरमें टिकते भये राक्षसों को शरीर जोनित्य वनारहता है सो ऐसा लंबा शरीर किसी राक्षसको हमलोग नहीं सुने मायाकरिके अनेक शरीर लंबा राक्षसोंका सुनाहै पण नित्य रहनेवाला शरीर ऐसानहींसुना १ वाचकबोले हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु येदोनों भाई सूर्यके वड़े भक्त होते भये सूर्यके पूजनको नित्य करते भये उस पूजनमें जोकोई विघ्न करनेवाले देवता तिनको ग्रास करने वास्ते शरीर को बढ़ातेभये २ शरीरकी लम्बाई देखिके विघ्न करने वाले देवता भागि गये इसवास्ते पूजन के वखत

कृत्वा त्रासार्थं विघ्नकारिणाम्। ... विवर्द्धनम् ३ इति० भा० तृ० देहवृद्धिशं० मं० सप्तदशे ऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ हरेर्नानावताराश्च श्रुतानःशांतिसंयुताः। प्रचंडमन्युःक्रोडेन ब्रह्मन्कस्मात्कृतस्तदा १ वाचक उवाच ॥ येषांभगवतादत्तो यस्स्वभावश्चराचरे नत्याज्यस्तैःकदाचश्च इतितस्यानुशासनम् २ स्वभावंक्रोडवपुषःपालितुंहरिणाकृतः ३ इति ०भा० तृ० क्रोधवृद्धिशं मं० अष्टादशाऽध्यायेअष्टादश वेणी १८ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जघानकर्णमूलेवै प्रथमोक्रंकरेण

नित्य शरीरको बढ़ायके पूजन करिके घरमें आयके दो घड़ी पीछे छोटी देहकरिके घरमें रहना३ इतिश्री भा० तृ० शं०मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता बोलतेभये हेगुरुजी भगवान् के अनेक अवतार हम सबोंने सुनेहैं कैसे हैं बड़ेक्षमावान् परन्तुशूकर भगवान्नेयुद्ध में बड़ा क्रोध क्योंकिया १ वाचक बोले संसारमें जिस प्राणी को जैसास्वभाव भगवान्ने दिहेहैं उस स्वभावको वहप्राणी कभीनहीं त्यागेगा ऐसीजीवोंके वास्ते ईश्वरकी आज्ञाहै२ शूकरको स्वभाव बड़ा क्रोधी होता है इस वास्ते शूकरके देह की मर्यादा पालन करनेवास्ते शूकर अवतार भगवान् प्रचंड क्रोधकरते भये ॥ ३ ॥ इतिश्रीभा० तृ०अष्टादशाऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोतापूछते भये पहिले युद्धमें हिरण्याक्षको शूकरभगवान्

तम्। हरिःपश्चात्स्तुतावुक्तः पदाहतकथम्मुने १ वाचकउवाच॥ आहतोराक्षसस्तस्य पश्यपश्यन्मुखन्तथा। तनुंससर्जतस्याय मर्थोव्यासप्रकीर्तितः २ इति०भा० तृ०१९अ०पदाहतशं०नि०मं०१९वे०श्लोक॥ २९॥

श्रोतारऊचुः॥ विधिर्देहंवितत्याज भूयोभूयःपुनःपुनः। रचित्वाचरदित्वाच भूरिशःप्राणिनःकथम् १ वाचकउवाच॥ रचित्वामानसींसृष्टिं ग्लानिन्दृष्ट्वातदुद्भवाम्२ ग्लानिबीजंतनुंज्ञात्वा तत्यक्त्वान्यंसमादधौ। तस्मिन्नपिनिरीक्ष्यैवपुनस्तत्याजतामपि३ इतिश्रीभा० तृ० विविधदेहत्यागशंकानि० मं० विंशाऽध्यायविंशवेणी २०॥ श्लो०॥ २८ से ४७ तक॥

हाथके थपड़से कानकेनीचे मारेतब हिरण्याक्ष मरिगया ऐसा वर्णनभया हिरण्याक्षके मरेपीछे शूकरकी स्तुति देवतोंनेकिया तब देवतोंने कहे कि शूकरके पगसे मारिगया राक्षस येदोबात की बड़ी शंका है १ वाचक बोलतेभये(पदाहतः) इसका अर्थ व्यासजी ऐसा वर्णन कियेहैंकि भगवान् कारिकै मारा जो राक्षस सो भगवान्को चरण तथा मुखदेखते २ शरीर को त्यागिदिया॥२॥ इतिश्री भा० तृ०शंकानिवारण मं० एकोनविंशऽध्यायेएकोनविंशवेणी॥ १९ श्लोक॥ २९॥

श्रोता बोलतेभये ब्रह्माने अनेक प्रकारकेप्राणियोंको बनायके बारंबार अपनी देहको क्यों त्यागते भये १ वाचक बोले ब्रह्माने अपने मनसे प्राणियोंकी सृष्टि बनायके पीछे उसी सृष्टिसे उत्पत्ति जोग्लानि तिसको देखिके ब्रह्मा जानिलिये कि यह मेरीशरीर ग्लानिको बीज है ऐसीअपनी देहकोजानि

श्रोतार ऊचुः॥महदाश्चर्यमेतन्नःश्रुतम्भागवतगुरो। दशवर्षसहस्रंच चकारकर्दमस्तपः। भार्यार्थेनैवमुनिभिः कृतंकैश्चापिनश्रुतम्१वाचकउवाच ॥ देवहूत्यैवरोदत्तो बालेवयसिविष्णुना।तवात्मजोभविष्यामिमातवैंकपिलो ह्यहम् २ ज्ञात्वैवंकर्दमोधीमान् नारदस्योपदेशतः। नान्यैर्ज्ञातन्तपश्चक्रे भार्यार्थेमुनिसत्तमः ३ इति० भा०तृ० कर्दमविवाहार्थेतपश्चक्रेइत्यस्यशंकानि०मंएकविंशेध्याये एकविंशवेणी॥ २१॥ श्लो०॥ १६॥

श्रोतारऊचुः ॥ कर्दमोक्तिरियम्ब्रह्मन्मनुम्प्रतितवा

के उस देहको त्यागिकै दूसरीदेह धारण करतेभये उसदेहमें भी ग्लानि देखैतो उसदेहकोभी त्यागि देतेभये॥२३॥ इ०भा० तृ० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥२८॥ से ४७ तक

श्रोता बोलतेभये हेगुरुजी भागवतमें हमसबने ऐसा सुनाहै किकर्दम मुनिनेस्त्रीप्राप्ति होनेवास्तेदशहजार१००००वर्षतपस्या करतेभये यह बड़ा आश्चर्य है कि कोईमुनि स्त्रीप्राप्ति होने वास्ते तप नहीं किदा ऐसा हम सबने सुनाहै१ बाचक बोले देवहूती लड़की रही तब भगवान् वरदान दिहोकि हेमाता तुमारापुत्र हमहोवैंगे कपिल हमारानाम होवैगा २ इसवरदान का हाल नारदमुनि कर्दमसे कहेथे और कोईमुनि जानता नहींरहा इसचरित्र को ऐसा नारदके उपदेशको पायकै कर्दम मुनि देवहूतीको अपनीस्त्री होनेवास्ते तपस्या करतेभयेबिचारे देवहूती जो हमारी स्त्रीहोवैगीतो कपिल हमारेपुत्रहोवैंगे३ इ०भा०तृ०एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी॥ २१॥श्लोक॥१६॥

श्रोता पूछतेभये कर्दममुनि स्वायंभुव मनुसे कहोकि तुमारी

त्मजा। अप्रमत्ताकथंज्ञात्ता मुनिनासावरांगना १ वाच कउवाच ॥ आविर्भावोभगवतःश्रुत्वातदुदरेमुनिः। विचार्य्यहृदयेस्वीयेप्रमत्तायास्सुतोहरिः। भविष्यतिकथं श्रीशो मुनिनोक्ताप्यतोहिसा २ इति० भा०तृ०अमत्ता तवात्मजेत्यस्यशं० मं द्वाविंशाऽध्यायेद्वाविंशवेणी २२ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतारऊचुः॥ पुरायया चेभवनं देवहूतिर्निजंपतिम्। रत्यर्थकल्पितंदृष्ट्वा नातिप्रीतिमनाःकथम् १ वाचकउवाच॥ अप्रभावविदापूर्वन्देवहूतिर्बभूवह। दृष्ट्वाप्रभावं स्वपतेर्विमानंतपसाकृतं २ किंयाचितंमयातुच्छं मोक्ष

कन्या देवहूती प्रमाद कर्मोंसे हीनहै सुंदरकर्म करनेवाली है इसवास्ते हम बिवाह करैंगे यहबड़ी शंकाहैकि कर्दममुनि देवहूती को कैसे जाने कि प्रमत्त कर्म्मों से रहित है १ वाचकबोलतेभये कर्दममुनि नारद के मुखसे देवहूतीके उदर से भगवान्को जन्म सुनिकै अपने हृदयमें विचार किहेकि बुरे कर्म करनेवाली स्त्रीकेपुत्र भगवान् कैसे होवैंगे भगवान् को जन्म सुनिकै कर्दम जानिलियेकि देवहूती उत्तम कर्म करनेवाली है इसवास्ते मनसे कहे २ इ० भा० तृ० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये देवहूतीने अपने पति जोकर्दम मुनि तिनसे पेश्तर तो रतिसुख वास्ते सुन्दर मकान बनाने वास्ते याचना की जब कर्दम मुनि ने अद्भुत मकान बनाये तब मकान को देखिकै उदास क्यों होगई१वाचक बोलते भये पेश्तर देवहूतीने अपने पतिके प्रभावको नहीं जानतीथी तपस्या

मार्गोनयाचितः । एनंप्राप्य महाबुद्धिमित्यप्रीतमना भवत् ३ इति० भा० तृ० अप्रीतमनेत्यस्यशं० त्रयोविंशाऽध्यायत्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ ॥श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचकर्दमोजायां सस्त्वयाराधितोहरिः । सुतस्तेभविताविष्णुर्हरिःकुत्रार्च्चितस्तया १ वाचकउवाच ॥ इहजन्मनिसाविष्णुम्पूजयन्तीदिवानिशं।पुत्रार्थेहृदयेस्वीये तदूज्ञातंकर्दमेनवै २ इतिश्रीभा० तृ० त्वयाराधितः अस्यशं० मं चतुर्विंशाऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ देवहूतिः सुतं प्राह निर्विणाहं

करिके कदम मुनिने विमान वनाया तिसको देखिके अपने पतिके प्रभावको जानतीभई कि ये सिद्धहैं २ मैंने ऐसा समर्थ पति पायके तुच्छ मकान मांगा मोक्ष नहीं मांगा इस वास्ते उदास होगई ३ इतिश्री भा० तृ० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ शृलोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कर्दमने देवहूती को कहेकि तुमनेईश्वर को पुजन किया इसवास्तेभगवान् तुमारे पुत्र होवेंगे यह भ्रम होती है कि किस जन्ममें परमेश्वर को पूजन देवहूती करती भई १ वाचक वोलेइसीजममें देवहूती अपने हृदयमें राति दिन भगवान् को अपनापुत्र होनेवास्तेमानासिक पूजनकरती रही यह देवहूती के कर्मको कर्दममुनि जानिलेतेभये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥शृलोक॥४॥

श्रोता पूछतेभये देवहूतीने कपिलसे कहीकि हेपुत्र खोटी

सुतेन्द्रियात्। असतश्चैवपप्रच्छपुनर्मुक्तिंसुतंकथम् १ वाचकउवाच ॥ निर्विण्णापिसुतंदृष्ट्वा हरिंनारायणंप्रभुम्। मुक्तिलुब्धा च पप्रच्छ पुनस्तत्प्राप्तिहेतवे २ इति० भा० तृ० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी २५ श्लोक७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वेंद्रियास्सुरैस्साद्धंतमुत्थापितुमोजसा। यत्नंचक्रुश्चनोत्तस्थौसविराट्कोमुनीश्वर १ वाचक उवाच ॥ सोविराडत्रनज्ञेयोयस्माज्जातमिदंजगत्। विराड्देहोत्रविख्यातोयश्चैतन्येनचेतितः २ इति० भा० तृ० विराडित्यस्यशं० नि० मं० षड्विंशाऽध्याये षड्विंशवेणी २६ ॥ श्लो० ॥ ६१ ॥

इंद्रियोंसेतो मैं निर्विण्ण कहेछूटिगईहोंतो फिरि कपिलमुनिसे मुक्ति होनेका उपाय क्योंपूछतीभई क्योंकि जो खोटी इन्द्रियों से छूटिगया वोतो संसारसे छूटिगया उसको मुक्तिहोनेका उपाय पूछनेसे क्याकाम है वाचक बोलतेभये देवहूती खोटीइन्द्रियों से छूटिगईहै तौभी भगवान् को अपना पुत्रदेखिके मुक्तिहोने वालेकामों की लोभकरिकै तथा मुक्तिके कर्मोंको पुष्टकरेनवास्ते पूछती भई १।२॥इति० भा०तृतीयस्कंधेपंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछतेभये हेमुनियों में ईश्वर वाचकजी जलमें जो विराट् रूप अंडरहा तिसको उठाने वास्ते सब इन्द्रीगण अपने अपने देवतोंसहित यत्नकरतीभईंपण वहतो नहीं उठा उहांसे वह विराट् कौन है वाचक बोले जिस विराट् ईश्वर करिके ये तीन लोक चौदह भुवन उत्पन्न होतेहैं वह विराट् उसको नहींजानना चाहिये यहतो विराट् कहे चौरासी लाख योनिकी देहको विराट् मुनियोंने कहेहैं जो देह जीवकरिकै चैतन्य

श्रोतार ऊचुः ॥ अहंकारेणसंग्रस्तोजीवोभवतिनि श्चितम् । परेच्छयास्वेच्छयाचशंकेयम्महतीचनः १ वाचक उवाच ॥ परेच्छयानैवनचैवस्वेच्छयामानाभि युक्तः प्रबभूवजीवः । कदिन्द्रियाणांनितरांचसंगतोवि मूढभावंगमितोनिरंजनः २ सुरापात्रेयथागंगागंगापात्रे यथासुरा । अन्योन्यासम्प्रतीतिश्चतथाजीवस्यसज्ज नाः ३ इति० भा० तृ० शं० मं० सप्तविंशाऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० २ ॥

होरही है जीवसे हीन नष्ट होजातीहै सब इंद्रिय तथा देवता देह में रहते हैं पणजीव बिना नष्ट होजाती हैं ऐसी देहरूप विराट् जीवको पायकै चैतन्य होगई ११२ इतिश्री० भा०तृ० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षडविंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ ६१ ॥

श्रोतापूछते भये जीव निश्चय करिकै अभिमानी हो जाता है सो भगवान्की इच्छा करिकैकि अपनी इच्छा करिकै भ्रष्ट होताहै यह हमारे सबके मन में बड़ी शंका है १ वाचक बोले हे श्रोताजनो निरंजन जो जीवहै सो न तौ अपनी इच्छाकरिकै अभिमानी होताहै तथा न भगवान्की इच्छा करिकै अभि-मानी होता है खोटी इन्द्रियोंकी नित्यसंगति करताहै उसी संगतिसे मूर्ख होके अभिमानी हो जाता है २ जैसा मदिराके बरतन में गंगाजल रखिजावैगा तौजल मदिरा नहीं होवैगा जल रहैगा पण मनुष्य मदिरा जानिकै उसको छुवैंगे नहीं तथा गंगाजल के बरतनमें मदिरा रखिदेवैगा तौ मदिरा गंगा-जल नहीं होवैगा मदिराई रहैगा पण मनुष्य जानैंगे कि इसमें गंगाजल है इसी प्रकार गंगाजलसरीके जीव मदिराको

श्रोतार ऊचुः ॥ सबीजस्यैवयोगस्यवक्ष्येहंलक्षणं शुभम् । इत्युवाचप्रसूम्प्रीत्यानबीजम्प्रोक्तवान्मुनिः १ ब्रह्मन्कोयोगबीजश्चकृपांकृत्वावदस्वभो। वाचक उवाच सतांसंगेसतांसंगेयोऽनुरागोविदृश्यते २ निरानुरागः सततंयोगबीजः सउच्यते । नोचेत्स्वमातरंज्ञात्वामुनिः पक्कहृदं शुभाम् ३ इति० भा० तृ० शं० मं० अष्टविंशे अध्यायेअष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जननीकपिलेनोक्तासर्वभूतेपुमांस्थितम् । तिरस्कृत्यार्चतेर्चायांभस्महोतुरिवाफलम् १

पात्र सरीके खोटी इन्द्री तिसकी संगतिसे अभिमानीहोगया ३ ॥ इतिश्री भा० तृ० शं० मं० सप्तविंशेऽध्यायेसप्तविंशवेणी २७ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोताबोले कपिलजी अपनी मातासे बोले कि,हे मैया बीज सहित योगको लक्षण मैं तुमसे कहोंगा ऐसा अपनी मासे कहेथे पण योगकाबीजसहित लक्षणक्यों नहींकहेथे हेगुरुजी योगके बीजको लक्षण क्याहै सो कृपा करिकै आप कहो १ वाचक बोले सज्जनोंकी संगति में प्रेम तथा दुष्टोंकी संगति में प्रेम नहीं करना ऐसा विचार करिकै नेत्रसे नित्य भगवान् में स्नेह देखना तथा दुष्टकर्मको बुरादेखना सोई योगके बीजको लक्षणहै कपिलने पेश्तर जानेथेकि, हमारी माता ज्ञानमें कच्चीहै इसवास्ते योगकेबीजको लक्षण कहनेकोकहेथे पीछे संगति किहेपर मालूम करिलियेकि माताती ज्ञानमें बड़ी पक्की है इसवास्ते योगकेबीजको लक्षणनहीं कहे२।३ इतिभा० तृ० अष्टविंशे ऽध्याये अष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतापूछते भये कपिल मुनि मातासे बोलेकि हेमाता सब

कपिलेनेदृशंवाक्यंकथमुक्तन्द्विजोत्तम। अज्ञाश्चैवन्नवेदानांवदन्तिवाक्यखंडनं २ वाचक उवाच ॥ सर्वज्ञानामिदंकर्मनत्वपक्कहृदांक्वचित्। सर्वज्ञाजननीतस्य सर्वज्ञः कपिलोहरिः। अतः प्रोवाचसद्ब्रह्मव्यापकत्वं जगत्पतिः ३ इ०भा० तृ० शं० मं० एकोनत्रिंशे० एकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लो० २२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पाशैर्बध्वागलेजीवंविकर्षन्तियमानुगाः। जीवस्यपुद्गलंनास्तितदभावेकथंगलम् १

चर अचर जीवोंमें हम टिकेहैं हमको तो कोई जानते नहीं हमारा अनादर करिके प्रतिमाको पूजन करतेहैं उन लोगों को कुछभी फल नहीं प्राप्त होता जैसा राखमें होम करने वालोंको कुछभी फल नहीं होता १ हेमुनियोंमें उत्तम प्रतिमा को पूजन वेदको वाक्य मानिके होताहै ऐसे वेदोंके वचन को छेदन मूर्खभी नहीं करैंगे तथा कपिल मुनि बड़े ज्ञानी होके वेदों के वचनको छेदन क्यों किया कि प्रतिमाको पूजन नहीं करना २ वाचक बोले सब देहमें ईश्वरको माननाकि ईश्वर सब देहमें टिकेहैं यह ज्ञानियोंके कर्महैं ऐसा मानने वाले प्राणी प्रतिमाको नहीं मानैंगे यह कर्म अज्ञानी को नहीं है अज्ञानीको कर्म प्रतिमाको पूजनहै कपिलकी माता ज्ञानीहै तथा कपिल ज्ञानीहैं इसवास्ते ऐसा ब्रह्मज्ञानका वाक्य कहे हैं अज्ञानीके वास्ते नहीं कहे ३ इति श्री भा० तृ० शं० मं० एकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कपिल मुनि अपनी मासे कहते भयेकि यमराजके दूत यमके पाश करिके जीवके गलामें बांधिके

वाचक उवाच ॥ वायुनावर्द्धितोदेहः कथ्यतेपांचभौतिकः। चतुर्णांगुप्ततादेहेवायुः प्रत्यक्षचारितः २ सवायुर्जीवसहितोनिर्वायुर्मृतकोच्यते । स्वस्वबुद्ध्यनुसारेणवदन्तिकवयस्सदा ३ वायुरेवशरीरेस्मिन्जीवइत्यभिधीयते । वायोः सर्वाणि चांगानि शास्त्रेप्रोक्तानिभूरिशः । तस्मात्पाशैर्गलेबध्वाकर्षन्तियमकिंकराः ४ इ० भा० तृ० शं० मं० त्रिंशाऽध्यायेत्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक २० ॥

रसीटते २ यमपुरीमें जीवको लेजातेहैं यह बड़ी शंकाहै कि जीवके देह नहींहै विना देह गल कैसे भया जिसमें वांधिकें सब जीवको यमपुरी को ले जातेहैं १ वाचक बोले पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश इन पांचके अंश करिके चौरासीलाख योनिकी देह बनीहै परन्तु प्रत्यक्ष देखनेमें वायु करिके देह वर्द्धित होतीहै पृथ्वी जल अग्नि आकाश ये चारि तो देह में प्रत्यक्ष देख नहीं परते और वायु प्रत्यक्ष मुखमें नाकमें गुदा में चलता देखताहै २जबतक देहमें वायु चलतीहै तबतक देह जीवती कहलातीहै वायुको चलना बंदभयाकि देह मरी कहावैगी जीव की वार्ताको कविजनोंने अपनी २ बुद्धि माफिक वर्णन कियेहैं ३ परन्तु सब शास्त्रों का भी ऐसा मतहैकि इस शरीर में वायु जोहै सोई जीवहै वायुके अंश करिके देह के सब अंग चैतन्य रहते हैं इसवास्ते यमदूत वायुरूप जीवके गलेमें यमके फांससे वांधिकै उसी वायुरूप जीवको यमपुरीमें ले जातेहैं ४ इति० भा० तृ० शं० मं० त्रिंशेऽध्यायेत्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भुक्त्वायमपुरीदुःखंरेतोभूत्वाकणा श्रयः। पुंसः प्रविशतेकालेस्त्रियश्चोदरमंडले १ इत्युक्तं महदाश्चर्यंकपिलेनश्रुतं च नः। कथम्भवतिजीवस्यरूपं जलनिभम्प्रभो २ गलित्वाधातुवत्केनप्रविष्टः प्रमदोदरम्। वाचक उवाच ॥ वायुरूपस्थजीवस्यसर्वत्रगमनसदा ३ प्रविष्टस्सर्वभूतेपुसूक्ष्मेणैवचराचरे। अतोवैपुद्गलंवायोर्भुक्त्वादुःखंयमालये । भूत्वातोयनिभंरेतः प्रविष्टः प्रमदोदरम् ४ इति० भा० तृ० शं० नि० मं० एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पितॄन्यजंतिसर्वेवैकामारमानोजितेंद्रियाः । कपिलोक्तिरियम्ब्रह्मन्हरिंविस्मृत्यसंततम् ।

श्रोतापूछते भये हेप्रभुजी, कपिल अपनी मातासे कहेकि जीवयमपुरी में दुःखको भोगकरिके पुरुपके रेतस कहे वीर्य होके स्त्रीके उदर में प्रवेश करता है १ ऐसाहम सबसुने हैं बड़े आश्चर्यकी बातहैकि वायुरूप जीव सो शीसारांगा सरीके गलिके जलरूपकैसे होगया २ वाचक बोलतेभये वायुरूपजीव को नित्यसब चीजों में जाना होताहै सबचीजों में चरअचर में सूक्ष्मरूप होके प्रवेशकरताहै ३ इसीवास्ते वायुको देहरूप जीवयमपुरी में दुःख भोगिके जलसरीके होके स्त्रीके उदर में प्रवेश करताहै क्योंकि वायुतो सबमें जीव है तब तैसारूप धरिके घसिजाता है ॥४॥ इतिश्री भा० तृतीयस्कंधे शं० नि मंजर्यां एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ १

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी कपिल भगवान् अपनी माताजी देवहूती तिससे कहेकि सब प्राणियोंने संसारको काम सिद्धि होने वास्ते दुष्टइन्द्रियों के वशहोके नित्य ईश्वरको भूलि

सांख्यवेत्ताकथंचैतत्प्रोक्तवान्भेददृष्टिवत् १ वाचकउवाच ॥ पितृरूपोहरिः प्रोक्तोमुनिभिस्सांख्यकोविदैः।स्वस्वरूपेभेददृष्टिंकुरुतेकपिलः कथं २ भगवद्भक्तिपुष्ट्यर्थं नराणांसुखहेतवे। उवाच कपिलः स्निग्धंवचनम्भेददृष्टिवत् ३ इ० भा० तृ० शं० मं० द्वात्रिंशे० द्वात्रिंशवेणी॥ ३२ ॥ श्लोक १७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिलोकाधिपतिर्विष्णुर्भगवान्कपिलोहरिः। कथंवभूवभोब्रह्मन् सिंधुदत्ताहंकेतनः १ वाचक उवाच ॥ संस्थापनायसांख्यस्यकपिलोऽवततारह।

पेतरोंको पूजन करते हैं ऐसाभेदरूप वचन सांख्ययोग के· जाननेवाले कपिल क्यों कहे सांख्ययोगवाले चरअचरको एकसम देखते हैं १ वाचक बोले सांख्ययोगके जाननेवाले मुनियोंने कहेहैकि, पितरजो है सो ईश्वरको रूपहै तब भगवान् केरूपजो पितर तिसमें भेदकहे पितर औरहै भगवान् औरहै ऐसीदृष्टि कपिल क्यों करेंगे परन्तु २ ऐसा वाक्य इस वास्तेकहेहैंकि जराभेदकिहेसे भगवान्में मनुष्योंकोप्रेमवढैगा तो मनुष्य सुखपावेंगे तथा भगवान्की भक्तिको पुष्टईहोजावेगीकि किसी गामको जाना भयातो भटकना क्यों किसीसे सुंदरि रस्ता पूछिके गामको चले जाना तैसेवाक्यकपिलमुनि कहेहैं भेदरूप वचन नहीं कहे ॥३॥इ०भा०तृ०शं०मं०द्वात्रिंशध्यायेद्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी तीनलोकको मालिक कपिल भगवान् सो समुद्रको दीयकी भूमिमें क्यों टिकके तपकरते थे गरीब होताहै सो चीजदूसरेसे मांगता है १ वाचक बोले

यथेच्छन्तिप्रजाः सर्वास्तत्सर्वंकुरुतेहरिः । जग्राहात्
स्सिंधुदत्तंसम्यगर्हंनिकेतनम् २ इ० भा० तृ० शं० नि०
त्रयस्त्रिंशेऽध्याये त्रयस्त्रिंशवेणी ॥ ३३ ॥श्लो० २४ ॥

सांख्ययोगनष्ट होगयाथा तिस साख्ययोग को प्रगट करिकै
पृथ्वीमें सांख्ययोगकेटिकाने वास्ते भगवान् कपिल अवतार
धारणकिहेहैं जैसा चर अचर प्राणी प्रसन्नहोकै शुभकर्म करैंगे
तैसा भगवान् भीकर्म करैंगे किसी जीवमात्रको दुःख नहीं
देवैंगे इसवास्ते समुद्रको दिया मकान तथा पूजन ग्रहण करते
भये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० शं० मं० त्रयस्त्रिंशेऽध्यायेत्रयस्त्रिंशवे०
॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ २४ ॥

इति श्रीभागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजरी
समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

चतुर्थस्कंधे ॥

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मविष्णुशिवाःप्रोचुर्म्मुनिंसंकल्प सिद्धये । तदर्थं च वयम्प्राप्ता यथातेमानसेकृतः १ सस्सं ल्पश्चकोब्रह्मन् मानसेयोत्रिणाकृतः २ वाचकउवाच॥ जापप्रणवन्नित्यं ज्ञात्वातंत्रिगुणात्मकम् । तदात्मकं तुंतवांछन्त्रेहार्दविचार्य च । मनसाचिन्तितंगुप्तं वभू गुस्तनयाश्चते ३ इतिश्रीभा० चतुर्थस्कंधेशंकानिवारण मंजर्य्यांशिवसहायबुध विरचितायांप्रथमेऽध्यायेप्रथम श्रेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी ब्रह्मा विष्णु शिव अत्रि मुनिसे कहेकि जो संकल्प आपने मनमें करिकै तपस्या कियोहै उसी संकल्प की सिद्धि होनेवास्ते हम तीनों जन आपुके सामने प्राप्त भयेहैं १ हे वाचक अत्रि मुनिने अपने मनमें यों संकल्प करिके तपस्या किया सो क्या संकल्पहै जिसको अत्रि गुप्त राखे तथा विष्णु शिवभी गुप्तराखैं २ वाचक बोले अत्रिमुनि-जी ॐकार अक्षरको ब्रह्मा विष्णु शिवका रूप जानिकै तथा ॐकारको रूप ब्रह्मा विष्णु शिवको अपना पुत्र होने वास्ते ॐकार अक्षरका जपकरते भये गुप्तकरिकै ब्रह्मा विष्णु शिव

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्यादारक्षकश्शम्भुर्दृष्ट्वादक्षंसमागतम् । स्वासनात्कथमुत्तस्थौ नसतीपितरंयदा १ वाचक उवाच॥दक्षेणनिंदितास्सर्वेसज्जनाश्चमहीतले। महामानाभिमत्तेन प्राप्तराज्येनभूरिशः २ सज्जनैःप्रार्थितोदेवस्तन्माननाशकारणे । बीजमुत्पादितुंशम्भुर्नोत्तस्थावागतन्द्विजम् ३ इति०भा० च० शं० मं०द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

अत्रिके हृदयको अर्थ विचारि कै तीनों देवता अत्रिके पुत्र होतेभये ३ इ० भा० चतुर्थस्कंधे शंकानिवारणमंजर्यां शिवसहाय बुध विरचितायां सुधामयीटीकासहितायांप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये कि शास्त्रों में लिखाहै कि ससुर को पिता सरीके मानना चाहिये ऐसी मर्यादाके रक्षणकरनेवाले जो शंकर सो ब्रह्माकी सभामें दक्षजो सतीको बाप तथा शिवको ससुर तिसको देखिके अपने आसनसे क्यों नहीं उठते भये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले जब बड़ाराज दक्षको प्राप्त हुआ तब दक्ष सब सज्जनोंकी निंदा रातिदिन करताभया बड़ामस्त होगया पृथ्वी में दक्ष २ तबसब सज्जनदक्षको अभिमाननाश करने वास्ते शिवकी बिनती करते भये तब शिवजी दक्षके मानको नाशकरनेको बीज उत्पत्ति करनेवास्ते सभामें आया जो दक्ष तिसको देखिके नहीं उठे विचार किहे कि इसको देखिके हमको अपने आसनसे उठना चाहिये हम नहीं उठेंगे तो यह अभिमानसे हमको खोटा वचन कहेगा तब इसके अभिमानको हम नाशकरि देवेंगे ॥ ३ ॥ इति० भा० च०शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योद्रुह्यत्यभ्यागतान्पापी मदमान
विमोहितः। सस्त्याज्येतिशिवप्रोक्तः केतेऽभ्यागतसत्त
माः १ वाचक उवाच ॥ कर्हिचिद्येनजानंति देहसौख्यं
चैव च क्षणाः। तेऽभ्यागताःपुनन्तीमंलोकंचसचराचरम् २
इति०भा०च०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी३श्लो०३॥
श्रोतार ऊचुः ॥ निरीक्ष्यसासतीयज्ञे पित्राशंकरहे
लनम्। कृतन्दक्षेणकिंतत्र हेलनंगिरिजापतेः १ वाच
कउवाच ॥ लिलेखस्तंभमध्ये च योवदेदत्रशंकरम्।
सयज्ञबाह्योभविता यदिसाक्षात्पितामहः २ त्रासिता

श्रोतापूछते भये सतीसे शिवजी कहैकि,जोप्राणीअभिमान करिकै अभ्यागतोंसे द्रोह करता है इसवास्ते उस पापीको त्याग करना चाहिये उससे बोलना आदिलेकै सब कामों में दुष्टको त्यागि देना चाहिये जिन अभ्यागतोंका ऐसा उत्तम माहात्म्य है वह अभ्यागत कौनहैं इस भ्रमको नष्टकरो१वाचक बोले जो प्राणी कभी भी देहके सुख दुःखको नहीं जानते तथा भजन करने में बड़े चतुर हैं ऐसे मनुष्योंकी अभ्यागत संज्ञा है ये अभ्यागतलोग क्षणभरमेंइन तीन लोकों को पवित्र कर ते हैं ॥२॥ इति० भा०च०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी३॥ श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये दक्षने अपनी यज्ञमें शिवकी निंदाकरने वास्ते क्याचिन्ह करि राखाथा जिस चिन्हको देखिकै सती भस्म होगई १ वाचक बोले दक्षने अपनी यज्ञमें एक खंभामें अपने हाथसे ऐसा लिखे थे कि सबके वास्ते सूचना किया जाता है कि, इस हमारी यज्ञमें जो कोईप्राणी शिवको नाम मुखसे उच्चारण करैगा सो प्राणी उसी वखत यज्ञके वाहर

मुनयःसर्वे भाविस्त्वान्नोन्तरन्ददुः ।इदंतद्धेलनंदृष्ट्वा सती क्रोधंसमाददे ३ इतिश्रीभा० च० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ रक्षितोवेदमंत्रैश्च यज्ञःपरमपावनः। तेमंत्रास्तंकथन्नैव ररक्षुर्वेदरूपिणः १ वाचकउवाच ॥ तेनिरीक्ष्यसतीदेहत्यागंद्विजवरास्तदा । भविष्यज्ञाश्चत्वरितं चक्रुर्मंत्रविसर्जनम् २ इति०भा०च०शं०मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी५ श्लो० ॥ १३ से २६ तक॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचशंकरंब्रह्मा यज्ञोच्छिष्टंतवा

निकाला जावैगा जो कदापि हमारा पिता ब्रह्माभी यज्ञमें शिवको नाम लेवेंगे तो वोभी यज्ञके बाहर निकाले जावेंगे और दूसरे प्राणीकी क्या बातहै २ भावी के जोरसेसब मुनि भी दक्षसे डरते भये इसीवास्ते उत्तर दक्ष को नहीं दिहेकि दुष्ट ऐसा अन्याय क्या करता है ऐसी शंकरकी निंदा खंभा में लिखीहुई सतीदेखिकै क्रोध करिकै भस्म होगई ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० नि० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये दक्षकी यज्ञको ब्राह्मणोंने वेदके मंत्रों करिकै रक्षा कियेथे तो जब वीरभद्रने यज्ञको नाश करनेलगे तबवो वेदके मंत्र वेदरूप होकै यज्ञकी रक्षाक्यों नहीं करते भये १ जबसती भस्म होगई तब मुनियोंने सतीकी देहको भस्महुई देखिकै भविष्यके जाननेवालेउनसबों ने जानिलिये कि यज्ञजल्दी भ्रष्टहोगा देर नहीं है ऐसा जानिकै बड़ी जल्दी सेवेदमंत्रोंको विसर्जन करिदेते भये ॥ २॥ इति०भा० च०शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥ ५॥ श्लोक ॥१३॥से२६ तक ॥

स्तुवै। भागस्तेपार्वतीनाथ तंजग्राहकथंशिवः १ वाच
कउवाच॥ भक्ष्यावशिष्टन्नह्यत्र शब्दशास्त्रप्रमाणतः।
सर्वेचराचरेनष्टेयदुदूर्ध्वविशिष्यते२ तदुच्छिष्टमितिख्या
तं स्वानंदसुखमुत्तमम्। तंवैयजनशीलश्च यज्ञःसंसार
उच्यते। तस्मिन्विनष्टेयच्छेषंतद्भागंपार्वतीपतेः३ इति०
भा०च० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लो०॥५३॥

श्रोतारऊचुः॥ अहम्प्रजेशबालानामघं नैवानुचिं
तये। शंकरोक्तिरियम्ब्रह्मन्कथंयज्ञविनाशनम् १ वाचक

श्रोता पूछतेभये ब्रह्मा शिवसे कहे कि हे पार्वती नाथ यज्ञ
में जो वस्तु सबके खानेमें भोगनेमें बचेसो तुम्हाराभाग ऐसी
बुरीचीज शिवजगत्पति होके क्यों ग्रहण करतेभये१ वाचक
बोले व्याकरण शास्त्रके प्रमाणते उच्छिष्ट इस शब्दको जूठा
अर्थ नहीं होवेगा उच्छिष्ट शब्दको यह अर्थ है कि, सबतीन
लोक चौदहभुवन में चर अचर सब नाशभये पीछे चीज उत
कहे सबके ऊपर बाकी रहे २.अपनी आत्मामें आनंदरूप
ब्रह्म तिसकी उच्छिष्टसंज्ञा है उस आनंदरूप ब्रह्मके भजन
करनेमें स्वभावहै जिसको तिसको यज्ञ कहना यज्ञनाम संसार
को है उस यज्ञरूप संसारको नाशभयेपर जो ब्रह्म आनंद
बाकी रहता है सो भागशिवको है ब्रह्माकहे कि हे शिव आपु
ब्रह्मानंदहौ मूर्खोंके कर्मको नहीं यादिकरना चाहिये ३
इति भा० च०शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लो० ॥५३॥

श्रोता पूछतेभएकिब्रह्मासे शिवजी कहे कि ब्रह्मामूर्खों के
कर्मोंकोहम चिंतवननहीं करते भला बुराकर्मजोमूर्खहमारवास्ते
करतेहैं सोसब हम सहिलेतेहैं तब दक्षको बुराकर्म समुझिके
दक्षकी यज्ञको नाश क्यों करतेभए१ याचक बोले शिव बिचार

उवाच ॥ महाघकारीदक्षश्चमानीसर्वविनिंदकः । यदि नप्राप्स्यतेदंडन्तदारक्षोभविष्यति । एतदर्थम्महादंडं ददौभनपातिर्द्विजम् २ इति० भा० च०शं० मं० सप्तमे ऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ कपित्थबदरीशुष्कतृणपर्णकृताशनैः । अब्वायुनाकृताहारश्चत्वारः प्रथमादयः १ बभूवैते श्शरीरस्यनतृप्तिर्भोजनैर्गुरो । उपवासव्रतश्चापिभ्रष्टोभूत्त ञ्चकेवलम् । नचकारकथन्धीमान्ध्रुवोऽस्माकंभ्रमोम हान् २ वाचकउवाच ॥ धर्म्मशास्त्रप्रणीतेयंवाणीसिद्धा

किहेकि दक्ष वड़ा पापी है अभिमानीहै सब जीवमात्रकी निंदा करताहै ऐसा दक्ष दुष्टहो२हाहै जो दंडको नहींप्राप्त होगातो ब्रह्मकर्म छोड़िके राक्षसहो जावेगा-ऐसी कृपाकरिकैशिवने दक्ष की यज्ञ को नाश करिके दंड देते भए दक्षको वुराकर्म समुझि कैयज्ञको नाश नहीं किये २ इति० भा०च० शं०नि०मं०सप्तमेऽ ध्यायेसप्तमवेणी ॥७ ॥श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये ध्रुवको वड़ातप करतेकरते मास चार४बीति गये पहिले महीनामें तीसरे २ दिन कवीठ तथा बेर को फल खायके तप किहे दूसरे महीना छठयें २ दिन सूखा चारा तथा पत्ता खायके तप किहे तथा तीसरे महीना नवमें २ दिन जलमात्रा ६ पीके तप किहे तथा चौथा महीना बारहें २दिन वायु पीके तप किहे १ हे गुरुजी कवीठ बदरीफल सूखा चारा जल वायु इन भोजनों करिकै ध्रुवके शरीर में भूखभी नहीं गई तथा उपवासको व्रतभी भ्रष्ट होगया तब इन फलोंको छोड़िकै कोरा उपवासई करिकै ध्रुवने तप क्यों नहीं किये यह हमारे सबके मनमें वड़ी शंकाहै दो श्लोक को अर्थ मिलाहै

सनातनी । यज्ञापवीतहीनैश्चेदुपवासकरैस्तपः ३ कृतंद्विजैर्न्नतत्सिद्धिंगमिष्यतिकदाचन । एतदूज्ञात्वा ध्रुवश्चक्रेतृणपर्णाशनंसुधीः ४ इति० भा० च० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेऽष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ७२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रथमंहृदिसन्दृष्ट्वापश्चात्सन्निधिमास्थितम्। बभूवातद्विदोब्रह्मन्ध्रुवो वीन्दयहरिंकथम् १ वाचकउवाच ॥ बालःपित्राचसन्त्यक्तोदुःखितोहर्निशं तथा। प्रेमाश्रुणावद्धगिरस्ततोतुन्नैवाशकच्छिशुः। चित्रेवसंस्थितोभूत्वासोऽतोऽतद्विदउच्यते २ इ० भा०च० शं० मं० नवमे ऽध्याये नवम वेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ४॥

[illegible]महै २ वाचक बोलेकि हे श्रोताजनो सुनो यह वचन धर्मशास्त्रमें लिखाहै कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जो यज्ञोपवीत नहीं लिहेवैंगे तो विना जनेऊ पहिरे उपवास करिकै तप करैंगे ३ [illegible]ब उस तपकी सिद्धि नहीं होवेगी बड़े बुद्धिमान् ध्रुवने ऐसा [illegible]ानिकै चारा तथा पत्ता खायकै तप करते भये ऐसे भोजन [illegible]केहेपर उपवास भी नहीं भया तथा तृप्तिभी नहीं भई ४ इति [illegible]ी भा० च० शंकानिवारणमंजर्यां अष्टमेऽध्याये अष्टम [illegible]णी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ७२ ॥

श्रोतापूछते भयेकि ध्रुवने भगवान् को पेश्तर अपने हृदय [illegible] देखिकै फिरि तुरन्त अपने सामने भगवान्को खड़ा देखिकै [illegible]फिरि मूर्ख क्यों होतेभये भगवान्को जरा नामलेतेहैं सो ज्ञानी [illegible] जाते हैं और ध्रुवतो दर्शन किये पीछे फिरि मूर्खक्योंरहा १ [illegible]ाचक बोले पांचवर्षके ध्रुवको पिता त्यागिदिया इस वास्ते [illegible]ाति दिन ध्रुव दुःखी होते भये तथा भगवान् को देखिकै [illegible]मसे ध्रुवकी आंखोंसे जल बहने लगा तिस जल करिके ध्रुव

श्रोतारऊचुः ॥ श्रुत्वोत्तमस्यमरणन्ध्रुवो यक्षगणैः कथम्। महद्युद्धंचकारोग्रमज्ञवद्भगवत्प्रियः। रा ज्यार्थेक्षत्रियाणाञ्चयुद्धोभवतिशोभनः १ वाचकउवाच। ज्ञात्वापिकुत्सितं युद्धम्भ्रातुर्मरणकारणम्। तथापिलौकिकंवीक्ष्य क्षत्रियाचरणंसुधीः। यक्षैर्युद्धंचकारोग्रम्भगवद्वत्सलोऽपिसः २ इतिश्री भा० च० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः॥परमाश्चर्यमेतद्धिहत्वाय क्षान्ध्रुवश्च

से बोलि नहीं गया इस वास्ते भगवान्‌की स्तुतिभी बालक जो ध्रुवसो नहीं करिसके इसवास्ते अतद्विदऽयास मुनि ध्रुवको कहेहैं २ इतिश्री भा० च शं० मं० नवमेऽध्यायेनवम६ वेणी ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतापूछते भयेकि हे गुरुजी ध्रुवने अपना भाई जो उत्तम तिसके मरणको सुनिके कुवेरके संग बड़ा युद्ध मूर्खसरीके क्यों करते भये भगवान् को प्यारा होके विचारसे हीन काम करना यह वड़ा आश्चर्य है तथा राज्य के वास्ते क्षत्रियोंको युद्ध करना यह वड़ी शोभाहै विना प्रयोजन युद्ध करना यह मूर्खताहै १ वाचकबोले भाईके मरणको कारण मानिके युद्ध करना क्षत्रियोंको निंदितहै ऐसा ध्रुव जानते रहे तोभी लोक की निंदाको डरे कि संसार कहेगा कि इनके भाईको यक्षोंने मारिडारा इनने कुछभी यक्षोंको त्रास नहींदिये यह कादर पना क्षत्रियोंको नहीं करना चाहिये ऐसे लोकमें निंदा के डरसे भगवान् के ध्रुव प्यारेहैं तौभी यक्षोंके संग युद्ध करते भये २ इति० भा० च० शं० मं० दशमे ऽध्याये दशम वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

तान्। परंलोकान्निनायाशुयम्ब्रजस्यूर्ध्वरेतसः १ ब्रह्म न्युद्धेहतानांचस्वर्गोभवातिनिश्चितम्। नह्यूर्ध्वरेतसांलोकः कपालभेदिनांतथा २ वाचक उवाच ॥ हतानारायणास्त्रेणतत्स्पर्शाद्विशेषतः। अपितर्किंकरालोकायक्षाः प्राप्ताः परम्पदम् ३ इति भा० च० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनेकेभगवद्भक्ताबभूवुर्भुवनत्रये। कैश्चापिपदन्दत्त्वामृत्योर्मूर्ध्निपदंहरेः १ सम्प्राप्तंकल्प

श्रोतापूछते भये बड़ा आश्चर्य यह होताहैकि ध्रुवने यक्षों ो मारिकै योगियों के लोकको प्राप्त करदिये १ हे गुरुजी ो प्राणी युद्धमें मरिजातेहैं उनको स्वर्ग प्राप्त होताहै परंतु ह्मांडमें प्राणको राखनेवाले तथा ब्रह्मांड को फोरिकै परम दको जानेवाले मुनियों के लोकको युद्धमें मरेहुए प्राणी कःी भी नहीं जासकेंगे ध्रुव यक्षोंको कैसे उसलोकको भेःते भए २ वाचक बोले ध्रुवजी यक्षोंको नारायण अस्त्र करि मारते भए तथा नारायण अस्त्र यक्षोंकीदेहमें छुइगया ारायण अस्त्रके मारेसे तथा उसी अस्त्रको छुइकै तथा भगःान्को दास ध्रुव तिसको देखिकै यक्षोंने प्राणकों छोड़ ्या इसवास्ते परमपदको यक्ष जाते भये ३ इति श्री भा० ातुर्थस्कंधे शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ ्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछतेभये तीनलोक में अनेक प्रकारके भगवान् के ाक्त भए परंतु कोई भी भक्त ऐसा नहीं भया कि जो का ाकी मस्तककों पगों से दाबिकै भगवान्के लोककों गया होवे ़ल्प कल्पांत तप करते १ मुनियोंको बीतिगयेहैं पण कालका

कल्पांततपश्चरणकारकैः । ध्रुवश्चमहदाश्चर्यंकथंकृत्वा पदङ्गतः २ वाचक उवाच ॥ तपतान्नध्रुवश्श्रेष्ठोनापि भूरितरन्तपः । चक्रे निःकाशितंज्ञात्वापित्राबालंकृपा निधिः ३ तस्योपरिकृपां चक्रे चातोदत्त्वापदंगतः । मृत्योर्मूर्ध्निध्रुवोदीनोयोगागम्यंहरेः पदम् ४ इति० भा० च० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अंगस्यहयमेधेचनगृहीतानिदैव तैः । स्वस्वभागान्यतः प्रोचुर्द्विजाश्चांगन्त्वमप्रजाः १ अतोभागंनगृह्णंतिसुरास्तेयजनेनृप । तत्कथंबहुभि

मस्तकको पगसे दाबिके कोई मुनिभी परंपदको नहीं गया ध्रुवने बड़ा आश्चर्य कियाकि थोरादिन तपकरिकै कालकी मस्तकको पग से दाबि कै भगवान् के लोकको गये बड़ी शंकाहोतीहै २ वाचकबोले तपस्वियों में ध्रुवबड़े तपस्वी नहीहैं तथा बहुत तपस्याभी ध्रुवनही किहे परन्तु भगवान् कृपाके सागरहैं जानि लिये कि ध्रुव बालकहै इसके पिताने घरसे इसको निकाल दिया ध्रुवके पिता हमीहैं ३ ऐसा भगवान् जानिकै ध्रुवके ऊपर ईश्वर कृपा करते भयेउसीकृपाकेप्रभाव से ध्रुवकालकी मस्तकको पगसेदाबिकै भगवान्के परमपदको जातभये ॥४॥ इतिश्री भा०च०शं० मं द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी १२ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतापूछते भयेकि राजा अंगनेअश्वमेधयज्ञ किया तबउस राजा अंगको अश्वमेध में देवता अपना २ भागनहीं ग्रहण किहे तब ब्राह्मणोंने अंगको कहे कि राजा तुमारे पुत्र नहीहै १ इसवास्ते तुमारी यज्ञमें देवता भागको नहीं ग्रहण करते

श्चान्यैरप्रजैर्यजनंकृतम् २ वाचक उवाच ॥ स्वकुला चारसंयुक्ताभूपाश्चान्येविवेकिनः। अप्रजैश्चापितैर्दत्तं भागमात्तंसुरैस्तदा ३ अंगोभ्रष्टकुलाचारस्सुनीथारति लालसः। अतोनात्तस्सुरैर्भागश्चाप्रजेनार्पितस्तदा ४ इति० भा० च० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञात्वातंदुर्म्मतिंवेनंमुनयः पृथिवीपतिम्। चक्रुःपुनश्चतंभस्मचक्रिरेशापतःकथं१वाचक क्योंकि निर्वंशीके हस्तको जब अन्न पितर तथा देवता नहीं ग्रहण करते हे गुरुजी तो फिरि और अनेक राजा निर्वंशी यज्ञकरतेरहेहैं तो उनराजों की यज्ञमें देवता भाग क्यों ग्रहण करते भये यह बड़ी शंकाहै२ वाचकाबोले अंगसे दूसरेगनती से हीन राजा अपने अपने कुलके धर्ममें निपुणथे बडे विवेक मानथे इसवास्ते पुत्र करिकै हीनथे तोभी उनराजों करिकै दिया जो यज्ञमें भाग तिसको देवता ग्रहणकरते भये ३ और अंग राजा सुनीथा जो अंगकी स्त्री तिसके संग रातिदिनभोग की इच्छा करिकै अपने कुलके धर्मको भ्रष्टकरिदिया नीचबुद्धि होगया इसवास्ते अंगको पुत्रहीन जानिकै अंगको दियाभाग देवतोंने नहींग्रहणकिये ४ इति० भा० च० शं०मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछतेभये हेगुरुजी मुनियोंने वेनको दुष्टजानिकेपृथ्वी को राजा करतेभये फिरिराजाबनायकै वेनकोभस्ममुनिलोग क्यों करतेभये बालक सरीके तमाशाभया जो कोई कहै कि, राजपायकै वेनने सबको दुःखदिया तो वेनको दुष्टता पहिलेही जानिकै मुनि जन राजदिहहैं १ वाचकबोले ब्राह्मणों ने ऐसा

उवाच ॥ ज्ञात्वेतिसङ्गतिम्प्राप्यसज्जनानामयन्नृपः । सुबुद्धिर्भवितासुज्ञोऽप्यतोराज्यंद्विजाददुः २ न चक्रेशासनंतेषामतश्चक्रुश्चभस्मसात् ३ इति० भा० च० शं० मं० चतुर्दशे ऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथन्दुष्टशरीराच्चसंजातः कमलापतिः। नाविर्भावोभगवतोभूमिसम्पीडनंविना १ वाचक उवाच ॥ वेदमंत्रेणतद्देहशुद्धिंचक्रुर्द्विजोत्तमाः । तस्माज्जातोजगन्नाथश्शीघ्रंवेनविनाशिताः।प्रजावीक्ष्यमहादुःखंपीडिताः कृपायाहरिः २ इति भा० च० शं०मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी ॥१५॥श्लो० ॥ २ ॥

विचार किहेथे कि वेन राजाहोवेगा तो वड़ेवड़े महात्मा लोगों की संगतिपायके वड़ाज्ञानी वड़ा बुद्धिमान्होजावेगा इसवास्ते मानि वेनको राजदेतेभये २वेन राजको पायके महात्मा लोगोंकी आज्ञा नहींकियाउनकोवहुत दुःखभीदेने लगा तोराजदेनेवाले मुनिजन वेनको शापकरिके भस्म करिदेते भये३ इतिश्री भा० च०शं०मं०चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोतापूछतेभये कि महादुष्टजो वेन तिसकी देहसे लक्ष्मीनाथजो भगवान् सो क्यों प्रगट होते भए तथा भूमिको दुःख देखेविना भगवान् नहीं अवतारलेते वेनके वखत में पृथ्वी को क्यादुःख रहा जिसवास्ते जल्दी भगवान् प्रगट भए १ वाचकवोले ईश्वरने वेनकरिके नाशभई जोप्रजा तिसको देखिके तथा जीती प्रजाको वहुत दुःखी देखिके भूमिके तथा प्रजाके ऊपर कृपा करिके भगवान् जल्दी प्रगट होनेकी इच्छा करतेभए तव ब्राह्मणोंने ईश्वरको विचारजानिके वेदों

श्रोतार ऊचुः ॥ येधृताहरिणाब्रह्मन्नवताराबभूविरे त्रिलोकपतयः सर्वेसूतैरुक्तः प्रथुःकथम् । यावत्सूर्यस्तपत्येषस्तावत्त्राताभवेदयम् १ वाचकउवाच ॥ ज्ञात्वावेन विनष्टाम्वै पृथिवींपृथिवीश्वरः । केवलंभूपमर्यादांस्थापितुंजगदीश्वरः।प्रजासुखविवृद्ध्यर्थंम्पृथुराविर्बभवह २ इति० भा० च० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रजानांवचनंश्रुत्वा भूमिंहंतुंसमुद्यतः । अन्योपायम्परित्यज्य०यज्ञवच्चप्रथुः कथम् १ के मंत्रकरिकै वेनकी देहको शुद्धकरते भएतव उसी शुद्ध देह से भगवान् उत्पन्नहोते भए २ इति भा० च० शं० मं० पंचदशे ऽध्यायेपंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभए जोजो अवतार भगवान् धारणकिहे सो सव तीनलोकके मालिक होते भए परंतु सूतलोगोंने ऐसा क्यों कहे कि जहांतक सूर्य प्रकाश करता है तहांतक राजा पृथु रक्षाकरैगा १ वाचकवोले तीनलोकके पति ईश्वर वेन राजा करिकै पृथ्वी को नष्टभईजानिकै तथाराजोंकी सनातनी मर्यादा भी नष्ट जानिकै अकेले पृथ्वी कोसुख देने वास्ते पृथु भगवान् प्रगट होते भए इसवास्ते पृथुराजाको सूतोंने केवल भूमिको मालिक वर्णन करतेभए २ इति० भा० च० शं० मं० षोडशे ऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥श्लोक॥ १४ ॥

श्रोतापूछते भए प्रजाके वचनको सुनिकैउसी वखत राजा पृथु कुछ दूसराउपाय प्रजाके सुख होने वास्ते नहीं विचार किया प्रजाको सुख होने वास्ते सव उपाय त्यागिके वड़ा मूर्ख सरीके पृथ्वी को मारने वास्ते राजा पृथुने क्यों तयारी

वाचक उवाच ॥ करुणापूर्णहृदयोविचार्य्यनिजमानसे।
दुष्टान्संशिक्षितुम्भूपान्येभविष्यन्तिभूतले २ प्रजार्थे
पृथिवींहन्यादन्यानामपिकाकथा। अतोभूमिंसमाहन्तु
मुद्यतोनतुरोषतः ३ इति भा० च० शं० मं० सप्तदशे०
सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ नैवासन्पृथुपूर्वेहिपुरग्रामादिकल्प

किया क्योंकि प्रजाको सुख होने का उपाय लोक शास्त्र में अनेक प्रकारका कहा है तथा पृथ्वी को मारना किसी में नहीं कहा यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले बड़े दयावान् पृथुराजा अवतारधरिके राजगादी परबैठे तौक्या देखते भए बड़ा २ घोर २ अन्याय पृथ्वीपर होरहा है तिसको देखिके अपने मनमें पृथुराजा विचार किहे कि येराजा वेनके राजके विगड़े हैं अब अगाड़ी होवैंगे राजा से सब इनको देखिके वोभी राजा विगड़िजावैंगे तो पृथ्वी तौ रसातलको जावेगी इसवास्ते इनदुष्टराजों को त्रास देखाइके सिखाना चाहिये २ दुष्ट राजों को ऐसा मालूम परा पृथ्वी ने प्रजा को दुःख दियाथा वेनके राज में से अब पृथुराजा पृथ्वी को प्रजाकी द्रोही जानिके प्रजाके सुख होने वास्ते पृथ्वी को मारने की तयारी किया दूसरे प्राणी की क्याबात है अरे भाई प्रजाको सुख देवो नहीं तो सब मारेजावैंगे ऐसा दुष्ट राजा सबत्रासकरिके प्रजाको सुख देनेलगे इसवास्ते पृथ्वी को मारने को पृथु ने विचार किहे है क्रोधकारिके पृथ्वी को मारने को नहीं विचारे ३ इति० भा० च० शं० मं० सप्त दशे० सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता पूछतेभये हे द्विजोत्तम वाचक राजा पृथुकेपेश्तर

ना। बभूवुर्भूरिशोभूपाः पृथुपूर्वन्द्विजोत्तम १ नगराः पत्तनाश्चैवप्राचीनाः पृथिवीतले। कोशपूर्णाचकैस्तेषा मभूद्राज्यादिकर्म्मच २ वाचक उवाच॥ कालीनन्तन्न मन्तव्यम्पृथुपूर्वपदेबुधैः। वेनराज्यन्तात्कालिकम्पृथु पूर्वन्निगद्यते ३ इतिश्रीभा० च० शं० मं० अष्टादशे ऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अत्रिर्मुनिवरश्रेष्ठो ज्ञानिनांज्ञानचन्द्र माः। हयरक्षाकृतातेनकथन्नयज्ञकर्म्मणि १ वाचक उवाच॥ शताश्वमेधंसंकृत्यस्वर्गंप्रापशचीपतिः। अतो विष्णुप्रियःख्यातस्सुरेशोहरिवल्लभः २ मानभंगंशची

पृथिवीमें पुरगांव नगर पत्तन ये सब नहींरहेथे तथा पृथुकेपेश्तर राजातो अनेक होगये १ जो पृथिवीमें पृथुके पेश्तर नगरगांव पत्तन शहर किशानोंके गांव नहींथे तो राजा लोगोंकेखजाना किस चीजसे भरताथा तथा राजों की कोटियों रुपयोंकाकाम काहेसे होताथा क्योंकि तहसीलतो होती नहींथी पृथिवी में जंगल होगयाथा यह बड़ी शंकाहोतीहै २ वाचकबोले विद्वान् जन पृथुके पेश्तर इस अर्थ में बहुतदिन नहीं मानते पृथुके पेश्तर इस अर्थमें पृथुको पेश्तर वेनको राज मानतेहैं किवेन के राजमें नगरगांव आदि लेके सब नष्ट होगया इसवास्ते शंका नहीं करनाचाहिये ३ इति० भा० च० शं० मं० अष्टा दशे ऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछतेभये कि अत्रमुनि बहुत मुनियों में बड श्रेष्ठ और भूतभविष्य वर्तमान जाननेमें चतुर ज्ञानियों में चन्द्रसरीके प्रकाशमान ऐसे अत्रिमुनिके सामने इन्द्र पृथुकी यज्ञमें घोड़ा को हरि लेगया उसी वखत अत्रिमुनि क्यों नहीं रक्षाकरतेभये

भर्त्तुर्नकरोतिकदापिसः। अतोमंत्रान्वितेयज्ञेविघ्नकर्ता नतद्भयम् ३ इतिश्री भा० च० शं० नि० मं० एको नविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी॥ १९॥ श्लो०॥ १५॥

श्रोतार ऊचुः॥ पूर्वोक्तंतुस्वयंविष्णुः पृथुर्भूपोब भूवह्ययज्ञान्तेविष्णुनाचोक्तः पृथुस्तेमयिभूपते।भाक्तिर्धी श्चसदास्त्वेवंकोविष्णुःकः पृथुर्गुरो १ वाचक उवाच॥ दधातिनस्वयंविष्णुरवतारंरमापतिः।श्वासंसम्प्रेर्यभू भारहरणायजगत्पतिः २ धृत्वावतारंशतशस्तद्रूपइव कारकः। करोतिशिक्षांकस्मिंश्चित्कस्मिन्नैवकरोतिच ३ इतिश्रीभा० च० शंकानि० मंजर्यां विंशेऽध्याये विंशवेणी॥२०॥श्लो०॥ ३२॥

वाचकबोले पूर्व जन्म में इन्द्र सौ १०० अश्वमेध किया तव स्वर्गको राज पायाहै इसीवास्ते इन्द्र भगवान् को वडा प्यारा भीहै २ यज्ञके प्रभावसे भगवान् इन्द्रको मानभंग कभीभीनहीं करते इसीवास्ते मुनियोंने मंत्रों करिकै यज्ञकी रक्षा बहुत प्रकारसे करतेहै परन्तु इन्द्रयज्ञमें विघ्नकरिदेताहै वेदमंत्रोंकी तथा ईश्वर की भय नहीं होती क्योंकिपेश्तरके यज्ञों की पुण्य उसके पास है इसी वास्ते पृथुकी यज्ञमें अत्रिको भी घोड़ा की रक्षा करनेमें अख्तियार नहीं चला ३ इतिश्रीभा० च० शं०मं एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी॥१९॥श्लो० १५॥

श्रोतापूछते भए भागवत में शुकदेवजी पेश्तरतो वर्णन कहेकि पृथुराजा विष्णुका रूपहै तथा पृथुकी यज्ञके अंतमें ... पृथुराजासे कहे कि हे राजन् हमारे स्वरूपमें तुमारी भक्तितथा तुमारी वुद्धि सदाकाल वनी रहेगी इससे मालूम परता है कि पृथुभगवान् को अवतार नहींहै आदमी सरीके

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदेषुसर्वगोत्राणिलिखितानिश्रुतानिनः। किंतदच्युतगोत्रञ्चयन्नदंडन्ददौपृथुः १ चेद्विख्यातान्नलोकेस्मिन्साधवोऽच्युतगोत्रिणः। तथापित्रियुगेब्रह्मन्त्रिवर्णाएवसाधवः २ वाचक उवाच॥ इन्द्रियाणांसुखैर्हीनाव्रतंसात्त्विकमाश्रिताः।पश्यन्तोऽजमयंविश्वन्तेप्रोक्ताच्युतगोत्रिणः ३ इति भा० च० शं० मं० एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी॥२१॥श्लो०॥१२॥

भगवान् वरदानदिहे हे गुरुजी आपु कहो कौन विष्णुहै कौन पृथु है यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले आपु खुद भगवान् अवतार नहीं धारण करते पृथ्वी को भार नाश होने वास्ते आपने अंश करिकै अवतार लेते हैं २ भगवान्को अंश अनेक प्रकारको रूप धरिकै भगवान्सरीके कार्य करतेहैं किसी अवतारमें भगवान् अपने अंशको सिखातेहैं भूमिमें आयकै किसी अवतारमें नहीं सिखाते सिखाना क्या भगवान् कहते हैं कि तुम हमारे अंशहो हमको भूलना नहीं इसवास्ते पृथुको भी सिखाय गये हैं कि हमारे रूप में तुमारी भक्ति तथा बुद्धिसदा बनी रहैगी ॥ ३ ॥ इति० भा० च०शं०मं० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये चारों वेदों में सब गोत्र लिखा है और हमलोगोंने सुनाभीहै परन्तु अच्युत गोत्र क्याहै जिस अच्युत गोत्रसे कुछ अपराधभी होगया तौभी पृथुराजा नहीं दंडदिहे छोड़दिहे १ जब ऐसा कोई मर्त्यलोक में कहैगा कि साधुकी अच्युतगोत्रसंज्ञा है तौभी हे गुरुजी सतयुग त्रेता द्वापर में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य साधु होतेथे तो ये अच्युतगोत्र कैसे होसकैंगे क्योंकि इन तीनोंका तो जो गोत्र गृहस्थ में रहा सोई

श्रोतार ऊचुः॥नकेषांस्तुतिनिंदेचकुर्वंतिसनकादयः। इतिश्रुतंचसर्वत्रपृथुशीलकथंचते। प्रशंसिरेमहाश्चर्य्यमिदंन्नोहृदयेगुरो १ वाचक उवाच॥विष्णोस्स्तुतिंसदा चक्रुर्म्मुनयस्सनकादयः। तदंशश्चपृथुर्भूपोनातोयोग्यम्प्रशंसने २ इतिश्री भागवतेच०शं०नि० मञ्जर्य्यां द्वाविंशोऽध्यायेद्वाविंशवेणी २२ ॥ श्लो० ॥ ४२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्लोकेत्रयोदशेप्रोक्तंब्रह्मभूतः कलेवरम्। तस्यजेनृपतिः कस्मादग्निनासंस्कृतःस्त्रिया १ वनारहैगा यह बड़ी शंका है इसवास्ते गुरुजी इसकी आपु शान्तिकरो २ वाचक वोले हेश्रोताजनो योंप्राणियों को इन्द्रिय १० को सुख न मालूमपरै तथा अजगर सरीके परारहना जो प्राप्तिभया सो खाना नहीं प्राप्ति भयातो चिन्ता नहीं करना तथा तीनलोक में सबदेहों में भगवान् को रूप देखना ऐसे जो जीव उन को अच्युत गोत्र शास्त्र में कहा है ऐसा अच्युत गोत्र भगवान् को प्राण है ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० नि० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी ॥ २१ ॥श्लोक ॥ १२॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी ऐसाहम सब शास्त्र में सुनाहैकि सनकादि मुनिजन न किसी की तारीफ करते हैं न किसीकी निंदा करते हैं सब देहों में भगवान् को रूप देखते हैं फिरि पृथुकी तारीफ क्यों करतेभये १ वाचक वोले सनकादिकमुनि नित्य भगवान्की स्तुति करतेहैं तथा पृथुभी भगवान्को अंश है इसवास्ते सनकादि मुनियोंने पृथुकी तारीफ कियातो कुछ अयोग्य नहीं योग्य है॥२॥ इति भा० च० शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ ४२ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्लोक१३ तेरहमें कहाथा कि शुकदेव-

नदाहोब्रह्मभूतानांश्रुतोऽस्माभिः कदाचन॥२॥ वाचक उवाच ॥ पतिव्रतातद्देहेनदग्धुमात्मानमिच्छती । अत श्चकारतद्देहदाहम्प्रीत्यापतेश्चसा ३ इति० भा० च० शं० नि० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्राचीनबर्हिषाराज्ञायज्ञेयज्ञैर्विचिन्व तः । प्राचीमुखैः कुशैर्ब्रह्मन्नास्तृतंपृथिवीतलम् १ अस म्भाव्यमिदंवाक्यंसप्तद्वीपवतीमही । कथंकुशैरास्तृताऽ

जीने राजासे कहे पृथुराजा ब्रह्ममें लीनहोके शरीरको त्यागते भये फिरि पृथुकी स्त्री अग्निमें पृथुकी देहजलाई क्योंकि ब्रह्ममें लीनहोनेवाले प्राणी को अग्नि संस्कार नहीं लिखता है १ ब्रह्ममेंलीन होनेवाले प्राणियोंकीदेह हमलोगोंने आजुतक कभी नहीं सुने २ वाचक बोले हे श्रोताजनो तुमारा वचन सत्यहै ब्रह्ममें लीन होनेवाले प्राणीको दाहनहीं लिखता पण पृथुकी स्त्री पतिव्रताथी पृथुकीदेहके संग अपनी देह जलाने की इच्छा करिके पतिकी प्रीति करिके अपने पतिके देहको जलाती भई उसी पतिकी देहके संग आपुभी जलिके पतिलोक को गई इस वास्ते पृथुराजा ब्रह्म में लीन होगये तौभी पृथुकी देहको दाह करतीभई ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा प्राचीन वर्हि यज्ञ २ में बड़े बिस्तार करिके पूर्वदिशा को कुशोंको मुखकिया तथा पश्चिम दिशाको कुशोंका मूलकिया इस प्रकारसे कुश बिछाय के यज्ञ बहुत किया सातद्वीप पृथ्वी कुशोंके बिछौनाके नीचे होगई जैसी पलंग बिछौनेके नीचे होती है १ यह वचन बड़े

भून्महत्कौतूहलन्त्विदम् २ वाचक उवाच ॥ महीतल न्नमुनिनाप्रोक्तंहिवसुधातलम् । ब्राह्मणानांशरीरन्तुक थ्यतेवसुधातलं ३ योगशास्त्रेप्युक्तंहियेश्वरंचवसुन्धत्तेसा प्रोक्तावसुधाद्विजैः । विष्णुप्रीतिस्तलन्तस्याद्विजानां हृदयंस्मृतम् ४ आत्मदेहन्दर्शयित्वाविदुरायमहामुनिः। चकारांगुलिनिर्देशंब्राह्मणास्तेनतर्पिताः ५ इतिश्री भा० च० शं० नि० मं० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंश वेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

तमाशा सरीके मालूम परता है वड़ा अयोग्य वाक्यहै कि सातद्वीप पृथ्वी कुशोंके विछौनाके नीचे होगई यह हमारे लोगों को वड़ातमाशा रूप मालूम परता है २ वाचक वोले मैत्रेय ऋषिने सातद्वीप पृथ्वीको व सुधातल नहीं कहेथे ब्राह्मणोंका शरीरजो है तिसको व सुधातल मैत्रेय मुनि कहेथे ३ वसु नाम भगवान् को है उन भगवान् को जो धारणकरै तिसका नाम वसुधाहै भगवान्में प्रीतिहोना उसको नाम वसुधा तिस वसुधा कहे भगवान्की प्रीतिको तलकहे मकान ब्राह्मणों का हृदय है ४ चतुर्थ स्कंध अध्याय २४ में श्लोक १० में इदंऐसा लिखा है उस इदंको अर्थ यह मैत्रेय मुनिकिहे हैं कि आपने हाथकी अंगुलीसे अपनी देह विदुरको देखाये कि हे विदुर यह हमारा हृदयजो है सोई वसुधा तलहै इसी वसुधा तलके प्राचीन वर्हि राजा कुशोंके विछौना नीचेकरिकै तृप्ति करिदिया क्यों ब्राह्मणों को विनामांगे जबरदस्तीसे दानदेता भया संकल्प करते वखत हाथमें कुशलेना तो कुशको मुख पूर्व दिशातरफ राखना तथा कुशको मूल पश्चिम दिशाको राखना ऐसी शास्त्रकी विधि है सो कुश करिकै संकल्प करिकै ब्राह्मणोंके हृदय वसुधा तलको

श्रोतार ऊचुः॥ नारदोक्तिरियम्ब्रह्मन्जीवास्तेबहवो हताः।तेत्वांसम्यक्प्रतीक्षन्तेमार्ग्गेमार्ग्गेत्वनेकशः १छे त्स्यन्तित्वांकुठारैश्चमृतमेतत्कथंगुरो । जीवोदेहंपरित्य ज्यस्वकृतंचसमाव्रजेत् २ वाचक उवाच ॥ येनयेनिह ताजीवास्तेषांरूपंविधायच । दास्यंतियमदूतावैदंडं जीवप्रघातिनाम् ३ इति०भा० च० शं०मं०पंचविंशेऽ ध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लो० ॥ ८॥

कुश के बिछौना नीचे करिदेता भया ऐसा अर्थ मैत्रेय कहैथे पृथ्वी को नहीं कहेथे ॥ ४ ॥ इति० भा० च० शं०नि० मंजर्य्यां चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा शंका देने वाला वाक्य नारद मुनिने प्राचीनवर्हि राजा से कहा कि हे राजा यज्ञ में तुमने बहुत जीव मारेहो सो सबजीव तुमारी रस्ता २ में बैठिके अनेक प्रकार से तुमको देखैंगे कि जब राजा मरैगा तो इस रस्ता में आवैगातो हम सब अपनी दावलेवैंगे १ राजा तुम मरोगे तौ तुमाराजीव उसी रस्ताको जावैगा तवतुमकोवो सबजीव कुल्हारीसे काटैंगेहजारों वर्षतकहेगुरुजी यहकैसीवात है जिस वखत देहको जीव त्यागता है उसी वखत जैसा कर्म जीव करि राखता है तैसी योनि में जन्म प्राप्त होता है फिरि वहुत दिन रस्तामें बैठना वैरी को देखना कुल्हारी से काटना यह सब नारद ने क्यों कहे हैं यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले जो प्राणी जिस प्रकार के जीवको मारता है उसी प्रकार को रूप यमराज के दूत धारण करि के मारने वाले प्राणियों को बड़ा दुःख देते हैं उस जीवको ऐसा मालूम परताहै कि जिस्को मैंने मारा सो यही है यह नहीं मालूम परता कि वो

श्रोतारऊचुः ॥ राज्ञ्यांकर्म्मप्रकुर्वन्त्यांपश्चात्कारीपुरंजनः। कथंजायाम्परित्यज्यगतवान्काननंनृपः १ वाचक उवाच ॥ विचाररहितोजालमोवंचितोव्याकुलोनिशम्। मृगासक्तमतिर्मूढस्तांविसृज्यवनंगतः २ इति० भा० च० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंशवेणी॥ २६ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ नारदःकथयामासस्वमात्मानंवहद्भूतम्। सःकथम्मोहितोब्रह्मन्स्त्रियाकामालयामुनिः १

नहीं है यहतोयम कोदूतहै इसवास्ते नारदने जीवकोरस्तामें बैठनावर्णन किहे हैं ३ इति भा० च० शं० मं० पंचविंशेऽध्याये पंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लो० ८ ॥

श्रोता पूछते भये पुरंजनीरानी पेश्तर जो कर्म करती थी तिस पीछे उसी काम को पुरंजन राजाभी करते थे ऐसा भागवत में लिखा है फिरि पुरंजनी जो अपनी स्त्री तिसको त्यागि के पुरंजन राजा वनको क्यों चले गये १ वाचक बोले पुरंजन राजा विचार से हीन है स्त्री के वशि है ठगि भी गया है राति दिन व्याकुल हो रहा है मूर्ख है मृग मारने में बुद्धि लगाय के स्त्री को त्यागि के चला गया यह नहीं विचारकिया कि पीछे से मेरी दुर्गति पुरंजनी करेगी२ इति० भा०च०शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लो० ६ ॥

श्रोता पूछते भये कि प्राचीनबर्हि राजा से नारद कहे कि मैं काम को आपनी देह में से नष्ट करने वाला हौं इस वास्ते मेरा नाम देव ऋषि है ऐसे नारद काम की घर रूप जो स्त्री तिस करि के क्यों मोहि गये तथा पागल हो के स्त्रियों के पीछे २ रोते फिरे विष्णु पुराण तथा विष्णु संहिता में यह

वाचक उवाच ॥ मोहात्पूर्वदिनेवाक्यम्प्राचीनवर्हिषम्प्र ति। मुनिनोक्तं वचस्सत्यंश्रोतारस्तान्निबोधत २ इति० भा० च० शं० मं० सप्तविंशे ऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चितारोढुंयदाशङ्कातदातान्द्विज सत्तमः। वोधयामासज्ञानेन प्रथमं किन्न बोधिता १ वाचकउवाच ॥ मदोनमत्तः पुराभूत्वाबोधितोपिनजगृहे मदेसंस्खलितेजाते ऽमदिनो वोधग्राहकः २ मदोन्मत्तंस माज्ञायज्ञानंनादावुवाचसः ३ इति० भा० च० शं० मं० अष्टाविंशे ऽध्याये अष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० ॥ ५२

नारद को मोह होने की कथा लिखी है वाचक बोले जिस दिन प्राचीनवर्हिष से नारद कहे कि मैंने जितेन्द्रिय हो काम देव को नाश करिदिया उस दिन के पीछे नारदको मोह भया जिस दिन प्राचीनवर्हि से कहे थे उस दिन तो वैसेई रहेथे हे श्रोताहो नारद का वाक्य सत्य है ३ इति भा० च० शं० मं० सप्तविंशे ऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पूछते भये जब पुरंजन स्त्री होके अपने पति के संग भस्म होने वास्ते चिता में वैठने लगा तव भगवान् ब्राह्मण को रूप धरिकै ज्ञान करि कै सव हाल जीव स्त्री हो गया था उस को वताते भए परन्तु पेशतर क्यों नहीं ज्ञान दिहे कि ऐसा दुःख जीव पाता है यह शंका है १ वाचक बोले पेशतर स्त्री रूप पुरंजन अभिमान करि के वड़ा उन्मत्त हो रहा था भगवान् ज्ञान दिहे परन्तु सुनि लिया यादिनहीं किया जो अभिमान नष्ट होता है तो जीव ज्ञानको सिखताहै भगवान् जीवरूप स्त्रीको वड़ाअभिमानी जानिके पेशतरवार

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वज्ञोनारदश्चैवज्ञात्वाऽप्यज्ञन्नृपोत्तमं । कथंप्रोवाचप्रथमं चालौकिकमयंवचः १ वाचकउवाच॥ अपक्वहृदयंज्ञात्वासदाचारविवर्जितम्। प्रथमम्भूपतिंस्त्रीचदयचोन्मत्तमजितेन्द्रियं। ज्ञानीकृत्वा क्षणेनापिप्रोवाचराजसत्तमम् २ इ० भा० च० शं०मं० एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लो०॥२॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिभक्तामहात्मानस्सर्वेब्रह्मनूप्रचेतसः । भस्मचक्रुः कथंवृक्षांस्तेदयारहिताइव १ वाचक उवाच ॥ दंडंविना न सिद्ध्यंति राजकार्याणि

वार ज्ञान नहीं कहे जब माननष्ट होगया तब कहतेमात्रईश्वर के वाक्यको मानि लिया ३ इतिश्रीभा० च०शं०मं०अष्टविंशेऽध्यायेअष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० ॥ ५२ ॥

श्रोतापूछतेभये हेगुरुजीनारदमुनिसबकेहृदयकी वात जानने वाले प्राचीनवर्हि राजाको बड़ामूर्खजानिलिये तौभी गूढ़वचन राजासे क्यों बोलतेभये क्योंकि गूढ़वचनको तो चतुरप्राणीसमझतेहैं मूर्ख नहीं समझते यह वड़ी शंकाहै १वाचकबोले नारदने पेश्तरही प्राचीनबर्हि राजाको ज्ञानसे कच्चा हृदयजानितथा सुंदर कर्मसे हीनजानिकै उन्मत्त कामी क्रोधी जानिकै राजाके ऊपर कृपाकरिकै एकक्षणमें प्राचीनबर्हिको वड़ाज्ञानी बनायकै तब गूढ़ वचन राजासे कहेहैं २ इतिश्रीभा० च० शं० मं० एकोनत्रिंशेऽध्यायेएकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभये प्रचेतस भगवान्के वड़े भक्त महात्मा ऐसे होकै दयाहीन प्राणी सरीके वृक्षोंको भस्म क्यों करते भये महात्माकाकर्म यहनहींहै यहकर्म वड़े चंडालकाहैयहवड़ीशंकाहै १वाचकबोले हेश्रोताहो तुमारा वाक्यसत्यहै निर्दयीकर्मचंडाल

कर्हिचित्। अतस्तरूणांसन्दाहंचक्रुस्तेकामतत्पराः २ इति० भा० च० शं० मं० त्रिंशेऽध्यायेत्रिंशवेणी॥ ३० श्लो० ॥४६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दीक्षिताब्रह्मसत्रेणसर्वेब्रह्मन्प्रचेतसः। ज्ञानोपदेशंकृतवांस्तान्पुनर्नारदः कथम् १ वाचकउवाच॥ वैष्णवीमजिताम्मायांज्ञात्वासम्यङ्मुनीश्वरः। ज्ञानोपदेशंकृतवांस्तेषांपुष्टयर्थहेतवे २ इति० भा० च० शं० मं० एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

है परन्तु इतना काज राजाको है सो सबकाज दंडबिना कभीं नहीं सिद्ध होवैंगे अनेक उपायकरैंपण त्रासदिहे विना नहीं सिद्ध होवैंगे इसी वास्ते प्रचेतस वृक्षोंकी लडकी को अपना विवाह करना चाहते थे इसकामकरने वास्ते वृक्षों को भस्म करते भये कुछ निर्दयपनसे नहीं भस्म किये ॥ २ ॥इति०भा० च० शं० मं० त्रिंशेऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ ४६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी सब प्रचेतस शिवसे भगवान्से नारदसे ब्रह्मज्ञान सिखेथे फिरि नारद प्रचेतोंको ज्ञान क्यों देतेभये १ वाचक बोले पेस्तरतो अभिमान से नारदमुनि माया को कुछभी नहीं जानतेथे जब माया बहुत दुखदिया तबसे मायाको डरनेलगे अपने शिष्यों को भी सिखाने लगे मायासे हुसियार रहियो इसवास्ते नारद विचारे कि भगवान्की मायाबड़ीजबरदस्त है किसीसे जानी नहीं जाती प्रचेतस ज्ञान में पकातो हे परन्तु इनको ज्ञानमें और पुष्टकरि देवैं नहीं तो

माया कभी पटकि देवैगी इसवास्ते नारद दूसरेदफे प्रचेतों को ज्ञान देतेभये॥ २॥ इति० ॥भा० च० शं० मं० एकत्रिंशेऽ ध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

इति श्रीमद्भागवतचतुर्थस्कंधशंकानिवारणमञ्जर्य्यां सुधामयीटीकायांशिवसहायबुधविरचितायांचतुर्थ स्कंधशंकानिवारणमंजरीसमाप्ता॥ श्रीरस्तु॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

पञ्चमस्कंधे ॥

सुधामयी टीकासहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रियव्रतरथश्चैकोयमारुह्याभ्रम न्नृपः । सूर्यस्यानुदिनंकर्त्तुंरजनीनाशनाय च १ नकृत न्दिवसन्तेनकथंरात्रिर्ननाशिता । आकाशेभ्रमतानेनभू मौतेसिन्धवः कृताः २ द्वीपाश्चैवकथञ्चसनूपर्वस्मा दुत्तरोत्तरम्।द्विगुणास्सिन्धवश्चैवबभूवुः कथमद्भुतं ३

श्रोता पूछते भये प्रिय व्रत राजा कोरथ १ जिस रथ में बैठिके राति को नाश करने वास्ते तथा प्रहर आठ ८ दिन करने वास्ते सूर्य के पीछे पीछे राजा प्रियव्रत भ्रमण करता भया १ क्यों राजा प्रियव्रतने रातिको नाश नहीं किया तथा दिनभी क्यों नहीं किया तथा राजा प्रियव्रत रथ में बैठिकै आकाश में भ्रमण करता था फिरि रथके पहिआ करि कै जमीन में सात समुद्र कैसे होते भए भूमिमें रथ भ्रमण करता होता तब तो रथ के पहिआ करि कै समुद्र होते भए तब शंका नहीं होती परन्तु आकाश से जमीन में पहिआ करि कै समुद्र ७ तथा द्वीप ७ भए यह बड़ी शंका है २ तथा रथ१ रथकी चौड़ाई ऊंचाई एक माफिक फिरि सात समुद्र तथा ७ सातद्वीपये पहिले से दूसरा दूना लंबाभया दूसरे से दूना

नेमिनैकेनचक्रेणरथेनभूपतेस्तदा। शंकात्रयमिदन्नित्यं वर्त्ततेहृदये चनः ४ वाचक उवाच ॥ दिनंरात्रिभगवता मर्यादावैपुराकृता। पश्चान्नृपोविचार्य्यैवंनचकारद्वयंसुधीः ५ आकाशेभ्रमतस्तस्यपृथिवीमपितत्क्षणात्। यदा यातःक्षितिंराजातदाद्वीपाश्चसिन्धवः६भ्रमतारथवेगस्य

तीसरा भया तीसरे से दूना चौथा भया चौथे से दूना पांचवां भया पांचवेंसे दूना छठा भया छठे से दूना सातवां समुद्र तथाद्वीप होते भये येभी बड़ी शंका है ३ रथ १ रथकी पहिआ एक माफिक रथकी चौड़ाई लंबाई एक माफिक ऐसे रथ करिके एक सरीके समुद्र सात ७ द्वीप ७ को होना चाहिये दूना २ बढ़ते क्यों गये हैं गुरु जी यह तीन शंका राति दिन हमारे सबके हृदयमें बसी रही हैं श्लोक तीन को अर्थ मिला है कुलक श्लोक है वाचक बोले पेश्तर तो प्रियव्रत राजा तपस्या के अभिमान ते विचार किया कि राति को मैं नाश करि देऊंगा अकेला दिन संसार में रहेगा ऐसा मन में विचारि कै सूर्य के पीछे २ फिरने लगा परन्तु फिरते वख्त राजा को ज्ञान भया कि दिनरातिकी मर्यादा भगवानने किया है इसको मैं नष्ट करोंगा तो ईश्वर मेरे को दंड देवेंगे ऐसा डरि कै रातिको नाश नहीं किया तब अकेला दिन भी नहीं किया ५ राजा प्रियव्रत तपस्या के जोर करिके आकाश में भ्रमण करता भया तथा भूमिमें भी भ्रमण करता भया कुम्हार को चक्रसरीके रथको फेरता भया जब भूमिमें रथ को फेरने लगा तब बड़े वेग करिके भ्रमण करता जो रथ तिसके चक्र करिके जमीन में समुद्र ७ तथा द्वीप ७ होते भये सात दफे राजा रथको फेरता भया श्लोक दो को अर्थ मिला है युग्म है ६ लक्ष्मी के पति भगवान् भूमि में अपनी

चक्रनेमिकृतास्तद्॥सनातनींस्वमर्य्यादांनष्टांवीक्ष्यरमापतिः ७ सिंधवस्सप्तद्वीपाश्चभूमावेतेसनातनाः। एतदर्थंस्वयंविष्णुस्सारथिर्निजमायया ८ बभूवसारथिहत्यनचाज्ञातोनृपेनहु।रथंनेमिंचचक्रंचाविस्तार्य्यस्वेच्छयाहरिः ९ स्वेच्छयाचालयित्वाश्वान्द्विगुणम्पूर्वपूर्वतः। चकारसिंधुद्वीपांश्चयथापूर्वंरमापतिः १० इतिश्रीभा० पंच० शं० नि० मंजर्य्यांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ स्त्रीप्राप्त्यर्थंतपश्चक्रेचाग्नीध्रोमहदद्

बनाई सनातन की जो मर्यादा सात ७ समुद्र ७ द्वीप एक से एक दूना तिसको नष्ट देखिकै ७ सात ७ समुद्र तथा ७ द्वीप ये पृथ्वी में सदासे हैं ब्रह्मा स्वायंभू मनुसे सृष्टिकी रचना कराया तब ७ समुद्र तथा सात ७ द्वीप नहीं बनेथे इस वास्ते अपनी माया करि के भगवान् प्रियव्रत राजा के सारथी होते भये ८ राजा को मालूम नहीं परा राजा के सारथी को हरि के दूसरे स्थान पर बैठाय देते भये आपु सारथी होके अपनी इच्छा से रथकी लंबाई चौड़ाई तथा पहिया तथा रथकी कील इन सबको जैसा चाहता था तैसा विस्तार करिकै ९ भगवान् घोड़ों को अपनी इच्छासे चलायके एक दफेसे दूना दूसरीदफेसे दूना तीसरीदफे इसी प्रकारसे समुद्र द्वीप एकसे एकदूना दूना जैसा पेश्तर रहा तैसा बनायकै वैकुंठ लोकको गये इसीवास्ते समुद्र तथा द्वीप दूना दूना भया है १० इति भागवतेपंचमस्कंधेशंकानि० मं०सुधामयीटीकायांप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछने भए बड़ी आश्चर्यकी बात है राजाआग्नीध्र

भुतम्। दीनाश्चैवन्नकुर्वन्तिविवाहार्थेतपःप्रभो १ जम्बु द्वीपपतिस्सश्चकथन्तस्मैददुर्नते। कन्यांभूपतयःसर्वेत द्वशाश्चविशेषतः २ वाचकउवाच॥ मृष्यादौक्षत्रियान स्युस्स्वायम्भुवसुतान्विना। जज्ञिरेक्षत्रियाः पश्चाद्यदा सृष्टिश्चमैथुनी। एतदर्थन्तपश्चक्रेविवाहार्थन्नृपोत्तमः३ इ० भा० पं० शं० मं० द्वितायाऽध्यायेद्वितीयवेणी २॥ श्लो०॥ २॥

श्रोतार ऊचुः॥ आविर्भूतंजगन्नाथंस्वकार्य्यसिद्धि हेतवे। स्वीयेयज्ञेकथन्दृष्ट्वाननेनामतुतोषन १ ऋषि भिस्संस्तुतोदेवोराजाऽपरइवस्थितः। एषानोमहत् स्त्रीप्राप्ति होनेवास्ते तपस्या किया है हे गुरुजी गरीवभी विवाह होनेवास्ते तप नहीं करैगा १ राजा आग्नीध्र जंबूद्वीप को मालि कथा उसको राजा लोगोंने लड़िकी क्यों नहींदिहे सवराज लोग आग्नीध्र राजाके अखूतिआरमेंथे फिरि बिवाह होनेवास्ते तप क्यों किहे वाचक बोले सृष्टिकी आदि में कोईभी क्षत्री नहीं रहेथे अकेले स्वायंभुवकेपुत्र क्षत्रीरहेथे जव मैथुनी सृष्टि बृह्माने बनाया तव पीछेसे क्षत्री जन्मते भये जो क्षत्री रहेनथे तो आग्नीध्र को लड़िकी कौन देवें इसवास्ते आग्नीध्र विवाह होनेवास्ते तपस्या करते भये॥ ३॥ इति० भा० पं० शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी॥ २॥ श्लोक २॥

श्रोता पूछते भये राजानाभिने अपनी यज्ञमें प्रगट जो भग-वान् तिनको देखिके नमस्कार किया तथा स्तुतिभी नहीं किया यह क्यों न किया १ ऋषियोंने भगवान्की स्तुतिकी है और राजातो दूसरा आदमी सरीके खड़ा रहा जैसाकुछ यज्ञमें दावा नहीं ऐसा खड़ा रहा यह बड़ी शंका है इस शंकाको आप

शंकावचसातान्निवारय २ वाचक उवाच ॥ दृष्ट्वायज्ञ समायान्तंसभार्य्योनृपतिर्हरिं । प्रेमाश्रुपूर्णनयनोध्यान मग्नोबभूवह ३ अशक्तोवचनोच्चारेऽपतद्भूमौसगद्गदः। ईदृशन्नृपतिम्वीक्ष्यतत्पक्षेऋषयोस्तुवन् ४ इतिश्री भा० शं० मं० पं० तृतीयेध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ ४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ क्षत्रियाणांशिशोर्न्नामब्राह्मणैः क्रियतेसदा । श्रुतन्नोवेदमार्गेणनाभिश्चक्रेकथंस्वयम् १ छिंधिशंकामिमाम्ब्रह्मन्स्वंस्ववाक्यासिनागुरो २ वाचक उवाच ॥ युगत्रयेद्विधानामकृतं च सर्वप्राणिभिः ।
अपने वचन करिकै निवारण करो २ वाचक बोले राजानाभि अपनी यज्ञमें भगवान्‌को देखिकै स्त्रीसहित राजाके नेत्रोंसे जल बाहि रहा है भगवान् को दर्शन करिकै ध्यान में मस्त होगये ३ जब नाभि स्त्री सहित बोलि नहीं सकेथे भूमि में पड़िगये प्रेमकरिकै शरीरमें रोमांच खड़ा होगया ऐसा राजा को प्रेमकरिकै आतुर देखिकै तब राजा नाभिकी तरफ से ऋषियों ने भगवान् की स्तुति करते भये इस वास्ते नाभि राजाने भगवान् को नमस्कार तथा स्तवन नहीं किया॥ ४॥ इति० भा० पं० शं० नि० मं० तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी हम सबने ऐसा सुना है कि क्षत्री के बालक होता है तो उस बालक को नाम ब्राह्मण लोग वेदकी रीति से करते थे परन्तु नाभि राजा अपने पुत्रको नाम आप क्यों करते भये १ हे गुरु जी आप अपने वचन रूप तरवार करिकै इस शंका को काटो २

वेदमार्गेणविप्रैश्चापित्रामात्रा चकर्मभिः३विप्राज्ञातोन्टप श्चक्रेकर्म्मवीक्ष्यसुतस्यवै । विप्रान्सन्तोष्यदानेननाम पुत्रस्यनिर्मलम् ४ इति० भा० शं० मं० पं० चतुर्थे ऽध्यायेचतुर्थवेणी ४ ॥श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुरीषवर्णनंशास्त्रेनकेषांकविभिः कृतम्। हरेश्चाप्यवताराणान्नोश्रुतं च कदापि नः १ तत्सौगन्धिमहाश्चर्यमभितोदशयोजनम् । सौरभ्यंवायुनेतद्धिकृतमेतत्सुकौतुकम् २ पिपीलिकानाम्पृष्ठेचयथैव गिरिधारणम्।सिंधोर्विशोषणन्दंशैस्तथेदमपिभाव्यते३ वाचक बोले सतयुग त्रेता द्वापर में सब प्राणी बालकों के दो नाम करते थे वेदकी रीतिसे तौ ब्राह्मणों से नाम कराते थे तथा बालकको कर्म देखि कै माता पिता बालकको नाम करते थे ३ ब्राह्मणों की आज्ञा लेकै तथा अपने पुत्रके कर्म देखि कै दानकरि के ब्राह्मणों को प्रसन्न करि कै तब राजा नाभि पुत्रको नाम करते भये मानसे वेदरीति नहीं त्यागे ४ इति० भा० पं० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी पुरीष को वर्णन शास्त्र में किसी को कविलोग नहीं किए भगवान् के अनेकअवतार भये-तिन के भी पुरीष वर्णन कवि लोग नहीं किये तथा हम सब ने सुनाभी नहीं कभी १ उस पुरीपकी सुगंधि वायु बहती है तो चारोतरफ कोश ४०चालीस तक अतर सरीके खुशबोयजाती है यह आश्चर्यमें आश्चर्य होताहै कि मलमें सुगंधि कैसीभई २ जैसा कीड़ीअपनीपीठि पर पर्वत लेकै चलै तथा मसामाषी डंस येसब समुद्रको सुषायदेवैं यह बड़ीआश्चर्य सरीकीबातहै

वाचक उवाच ॥ बालानांरोगशान्त्यर्थंयथायत्नमनेक
धा। कुर्वन्तिपितरोनित्यंलोभानिविविधानिच ४ दर्शयि
त्वासुमिष्टादीन्कटुादीन्दापयन्तिच। एवंजीवस्वमोक्षा
यद्धरिर्लोभम्प्रदर्शिवान् ५ मोक्षमार्गविनष्टंसस्समीक्ष्य
ऋषभोहरिः। जीवानांलोभनार्थायमहाश्चर्यमदर्श

तैसे उस मलमें सुगंध होनायहभी वड़ा आश्चर्यमानना चाहिये तथा जिसजगह पर मल पड़ा रहैगा उसी जगह से चारोंतरफ चालीस ४० कोश तक सुगंधि होना यह बड़ा आश्चर्य है हे गुरुजी यह वड़ा गप्य शास्त्र में लिखा है वाचक वोले जैसा बालकों को रोगनाश होने वास्ते माता पिता भाई भौजाई आदि लेके वहुत यत्न करते हैं बालक दवाई नहीं खातातो उसको दुलार करिके सुन्दर २ चीज़ोंको लोभ देखा-तेहैं ४ वालकोंको माता पिता मीठी २ चीज देखायकै रोग नाशहोने वास्ते कटुकटु चीज पिलायदेते हैं तैसेही जीव भ्रष्ट होरहेहैं तिन जीवोंको मोक्ष होने वास्ते भगवान् लोभ देखाते भये ऋषभदेव भगवान् मोक्ष मार्गको नष्ट देखिके विचार कियेकि हमको तो बहुत दिन मर्त्यलोकमें रहनाहै नहीं और विना बहुत दिनके सत्संग मोक्ष मार्ग प्रगट नहीं होगाऐसा विचारिके जीवोंको लोभ देखाने वास्ते विष्ठामें सुगंधिउत्पत्ति करिके संसार को देखाते भये ऐसी चमत्कारी देखिके सब प्राणी लोभको प्राप्ति भये कहने लगे कि हे भाइयो मोक्षमार्ग को सेवन करो देखो ऋषभदेव मोक्षमार्ग को सेवन करते हैं तो जिस की विष्ठा चालीस ४० कोशतक अतर सरीके खुश बोय करती है तो उनको यम की भय क्यों होगी आपना सब मोक्ष मार्ग सेवन करेंगे तो अपनी भी ऐसी कीर्ति होगी ऐसे

यत् ६ इतिश्रीभा० शं० नि० मं० पंच० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोता ऊचुः ॥ हरेस्सर्वेवताराश्चशुकदेवेनवर्णिताः। नकानपिनमश्चक्रेकथन्नेमेतमीश्वरम् १ वाचक उवाच॥ चक्रुस्सर्वेवताराश्चकर्मसंसारकारणम्।कैवल्यशिक्षणश्चक्रेस्वयंचकृतवांस्तदा २ इति० भा० शं० मं० पंच० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १९ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ भरतःपूजनंचक्रेपुलहाश्रमसंस्थितः। तुलसीपत्रपुष्पैश्च कस्यरूपस्यवैहरेः १ अनेकरूपो

विचारि के सब प्राणी मोक्ष में आनंद करने लगे हे श्रोताजनों इस वास्ते मल में सुगंधि होती भई ६ इति भा० शं० मं० पंचमस्कंधे पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥५॥श्लोक॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेवजी ने भागवत में भगवान् के सब अवतार वर्णन किये परन्तु नमस्कार किसी अवतार को नहीं किये ज्ञानमें चतुर वैरागको फुल्लायमान मान करने में सूर्य्य ऐसे शुकदेव जी ऋषभ देवको नमस्कार क्यों करते भये १ वाचक बोले भगवान् अनेक अवतार धरिके जैसा मनुष्य संसार को कर्म करताहै तैसा ईश्वरभी करतेभये और ऋषभ देवने प्राणियोंको मोक्षकी रस्ता सिखाये तथा आपुभी मोक्ष होनेको कर्म किये इसवास्ते बड़ेज्ञानी शुकदेव जीने ऋषभ देवको विषय मार्गसे हीन जानिके परमहंस मानिके नमस्कार करतेभये ॥२॥ इति० भा० शं० मं० पं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठ वेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥१६॥

श्रोता पूछते भये पुलह मुनिके आश्रम में टिकिके भरत तुलसीपत्र तथा पुष्प करिके पूजन करते भये परन्तु कौन से

भगवान्कथितोवेदपारगैः २ वाचक उवाच ॥ ध्यात्वासु मनसाविष्णुंवैकुंठस्थंजगत्पतिम् । तस्मैसमर्प्ययत्सर्वं तंमंत्रैरेवप्रेमतः ३ इ० भा० शं मं० पं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ यदर्थंराज्यमुत्सृज्य जगामभरतो वनम्। तन्मृगीपुत्रव्याजेनत्यक्तवान्सकथन्नृपः १ चेत्त न्मोहसमाग्रस्तस्तथापिमहदद्भुतम्।रुरोहपर्वतंपङ्गु रेतिनोभातिमानसे २ वाचक उवाच ॥ मृगरूपंमुनिं दृष्ट्वाधवलंलोकलज्जया । स्वपत्नींचमृगींकृत्वारमन्तं कानने नृपः ३ जहासभरतः शीघ्रंतेनशप्तस्त्रिजन्मना।

भगवान् की मूर्ति को पूजन किये १ वेदके जानने वाले मुनियोंने भगवान् को अनेक रूप कहे हैं २ वाचक बोले भरतने स्थिरमन करिके वैकुंठवासी जगत् के पति ऐसे भगवान् को ध्यान करिके उन्हहीं भगवान् के मंत्रों करिके जो अपने मन में वस्तु सो सब वस्तु वैकुंठनाथके चरणों में अर्पण करिके वैकुंठनाथको पूजन करते भये बड़े प्रेमसे ॥ ३ ॥ इति०भा० शं० मं० पं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतापूछते भये भरत राजा जिस भगवान् को पूजन भक्ति करिके करनेवास्ते राजको त्यागि के वनको गये सो पूजन अति संदर कर्म मृगी के वालक के वास्ते क्यों छोड़ि दिये १ जो कोई कहै कि मृगी के वालक के मोह करिके व्याकुलहोकारिके भगवान्का पूजन त्यागिदिये तौभी वड़ाआश्चर्य होता है राजको कुटुंबको मोह छोड़िदिया और पशुके मोहसे व्याकुलहोना यह कैसा है कि जैसापग कारिके हीन आदमी पर्वतपरचढ़िजावे तैसा आश्चर्य हमारे सबके मनमें होताहै २

श्रवनान्मृगपुत्रस्य मोक्षंप्राप्स्यत्यतोहिसः । मोहि तःपरिचर्याचहरेस्तत्याजकौतुकम् ४ इ० भा० शं० मं० पं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कश्यपंसृष्टिकर्तारम्वर्जयित्वाचसौ भरिम् । नश्रुतोनश्चशास्त्रेषुमहत्कौतूहलन्त्विदम् १ द्विपत्नीकोमुनिः कश्चित्कथंतस्यचद्वाऽभवत् २ वाचक उवाच ॥ अपक्कहृदयोविप्रोगृहीपत्न्यांसुताननम् । अ दृष्टाचैवपुत्रार्थंपुनरूढातपस्विनी ३ सायदोढाद्विजस्यैव

वाचक बोले जब भरतराजा एक दिन वनको गये तब वनमें क्या देखते कि धवलनाम मुनि संसारकी लज्जाकरिके आप मृगहोके और अपनी स्त्रीको मृगी वनाय के रमण करि रहे हैं तिनको राजा भरत देखिके ३ हसते भये तब जलदी धवलमुनि शापदिहे कि हेदुष्ट मृगीके बालककी तूरच्छा करैगा उसीरच्छाके कारणसे तेरी एकजन्म में मुक्तिनहीं होवैगी तीन जन्ममें मोक्षको प्राप्त होवैगा हे श्रोताहो इस शापते भरतने तमाशा सरीके मृगीके बच्चेमें चित्त लगायके उसी के मोहसे भगवान्को पूजनआदि त्यागि देतेभये ॥ ४ ॥ इतिश्री भा० शं०मं०पंचमस्कंधेअष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥८॥ श्लोक॥१५ ॥

श्रोता पूछते भये कि हम सबोंने शास्त्र में ऐसा सुना है कि मुनियों में स्त्री कश्यप मुनिके बहुत रही हैं सृष्टि करने वास्ते तथा सौभरि ऋषि के स्त्री ५० रहीहैं १ और किसी ब्राह्मण को नहीं सुने कि दो स्त्री रही हैं सो इस ब्राह्मणके दो स्त्री क्यों होती भई यह बड़ी तमाशासरीकी बात है २ वाचक बोले हे श्रोता ब्राह्मण गृहस्थ था गवांर था कुछ पढ़ा नहीं था पहिली स्त्री में पुत्र नहीं भये तब पुत्र होने वास्ते दूसरी

बभूवुस्तनयाद्वयोः ४ इतिभा० पं० शं० मं० नवमे ऽध्यायेनवमवेणी ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मूकवाक्यइवाश्चर्यंशिविकावाहन्वेषणम् । कारयामासविप्रेंद्रकथंराजारहूगणः १ महादरिद्रीभूपोपितस्याऽपिवहवस्सदा । शिविकावाहकास्सन्तितस्यासन्किमुतेनहि २ वाचकउवाच॥ज्ञानलब्धिभविष्याच्चयोजिताश्चसहस्रशः । नृपेनखंडितश्चैकस्सम्बभूव पुनः पुनः ३ सस्तावशेषितान्दृष्ट्वावाहकान्वेष

स्त्री से विवाह कर लिया ३ जब दूसरी स्त्री को विवाह कर लिया तब ब्राह्मण के दोनों स्त्री के पुत्र होते भये ४ इतिश्री भा० पं० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा रहूगण मिआना ले चलने वाले आदमी को क्यों शोध लगवाया एक खंडित होगया तो क्या और पालकी ले चलने वाले नहीं रहे राजा होके एक आदमी ज़्यादा नहीं राखा जैसा गूंगा वाक्य बोले तब लोगों को आश्चर्य मालूम परता है तैसा ये भी आश्चर्य है क्योंकि १ बड़ा दरिद्री राजा होगा तिसके भी पालकी ले चलने वाले आदमी बहुत रहते हैं और रहूगण राजा के बहुत क्यों नहीं रहे कि एक दुःखी हो गया तो पालकी जंगल में रह गई दूसरे को पकरि मँगाय तो पालकी चलती भई यह क्या तमाशे की बातहै २ वाचक बोले राजा रहूगण के हजारों आदमी पालकी ले चलने वाले रहे थे एक दुःखी हो गया तो दूसरेको तैयार किये ओभी दुःखी होगया इसी प्रकार हजारों आदमी पालकी ले चलने में जोड़ते भये परन्तु भरत के मुखारविंद से राजा को ज्ञान प्राप्ति होना लिखा था इस वास्ते जिसी को पालकी

यान्तदा । कारयामासतीर्थेष्सुर्दैवाद्भरतमागमत् ॥ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मनोविभूतयश्चासन्सर्वाजीवस्य नित्यशः। भरतेनकथम्प्रोक्तंमाययाकल्पितस्यच १ न मायारचितोजीवोजीवस्साक्षात्स्वयम्प्रभोः। अंशोमाया वशीभूतोनतुमायाविकल्पितः २ वाचक उवाच ॥ यो यस्मात्त्रासमाप्नोतितन्न्यूनमपिमन्यते । श्रेष्ठांमेनेतदा मायांजडस्सर्वगरीयसीम् ३ स्वात्मानंचतयाग्रस्तंवीक्ष्या

ले चलने की आज्ञा देवै तब सात आदमी अच्छे रहैं एक दुःखी होजावै ३ बहुत उपाय राजा किया परन्तु सात आदमी खुशी रहैं एक दुःखी हो जावै पालकी में कंधादियेकि एक दुःखी भया तथा राजाको तीर्थ जाने की जल्दी इच्छा इस वास्ते अपनी पालकी ले चलने में कोई बाक़ी नहीं रहा तब दूसरे आदमी को ढुंढ़वाया दैवयोग से भरत मिलिगये इसी वास्ते विघ्न होता था काम हो गया इस कारण दूसरे आदमी का शोध लगाया है कुछ दरिद्रपना नहीं ४ इ० भा० पं० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक १ ॥

श्रोता पूछते भये कि रहूगण से जड़ भरत कहे कि माया करि के बनाया हुआ जो जीव तिसको जेतना मनको पदार्थ है सो सब होता है उसी पदार्थ को जीव भोगता है परन्तुभरत ने जीवको माया करिके बनाया क्यों कहे थे १ जीवमाया करि के रचित नहीं है जीव तो भगवान् को अंश है परन्तु मायाके वशिहो गया भरतने जीवको माया रचितक्यों कहेथे २ जोप्राणी जिस से भय मानता है सो प्राणी आपना त्रास

. . . . । मायारचितजीवं सस्समुवाचविमोहि तः ४ इतिश्री भा० पंच०शं० मंजर्य्यांएकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ संसारेस्थूलकृश्यादिसदसद्ब्रह दादिच। यत्सर्वंयुग्मभावंचतदुक्तंमाययाकृतम्। भरतेन कथंस्वामिन्नतदीश्वरवैकृतं १ वाचक उवाच ॥ बीजंवि नानकस्यापिसमुत्पत्तिर्विजायते । ईश्वरप्रेरितामायासा शक्तिरितिकथ्यते २ तज्जातोभ्रमबीजश्चतेनोत्पन्नमिदं

देनेवाला छोटाभी होगा तौभी उसको सबसे बड़ा करिकै मानैगा ज्ञानियोंके सामने माया बिल्कुल छोटीहै परन्तु जड़ भरत को वारंवार माया दुःख देती है मायासे भरत डरिगये तबसब चीजोंसे मायाको भरत बड़ी मानते भये ३ जड़भरत ने आपने को माया करिकै दुःखी देखिकै मायासे वहुत डरे इसीडरसे जीवको माया करिकै बनाया कहे हैं क्योंकि उस वखत भरत ऐसा मायासे डरेथेकि आपने मन में विचारतेथे कि ब्रह्मा विष्णु शिव मायासे बड़े नहीं हैं माया सबसे बड़ी है ॥ ४ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादश वेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी संसार में जो वस्तु मोटी तथा पतली सुंदर खराब बड़ी छोटी पाप पुण्य राति दिन हानि लाभ जन्म मरण आदिलेकै जोड़ीकहे दोको जोड़ है सो सब माया को बनायो है ऐसा रहूगण राजा से भरतक्यों कहे क्योंकि यह तो सब भगवान् को बनायो है १ वाचकबोले कि बीजबिना कोई भी प्राणी नहीं जन्मलेता इसी वास्ते ईश्वरकी आज्ञा को प्राप्त हुई माया उसी को शक्तिभी सुनि

जगत् । प्रोवाचातोमहायोगीभरतोमाययाकृतम् ३ इतिश्री भा० पं० शं० मं० द्वादशे ऽध्याये द्वादशवेणी॥ १२ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चत्वारोवर्णिताःस्कंधाश्शुकेननृपर्वि श्रुताः। हेराजन्राजशार्दूलचेत्याद्यन्यसंबोधनैः १ स मुच्चार्यमुनिर्भूपंकथयामासवैकथाः । तेनोक्तश्चोत्तरा मातः कथमत्रमहाभ्रमः २ वाचक उवाच॥ हरिकीर्तन संलुब्धं पृच्छन्तन्तम्पुनः पुनः । धन्यास्यचोत्तरामाता

जन कहते हैं २ तिस माया करिके भ्रमभय. भ्रमयह है कि, विश्वास किसीको नहीं मानना सोई भ्रम करिके यह संसार उत्पन्न होता भया इस वास्ते वड़े योगी जड़भरतने मायासे किया कहे हैं ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेव जीने भागवत को चारिस्कंध वर्णन किहे तथा राजाभी चारों स्कंधोंको सुनता भया शुकने राजाको ऐसा दुलार नामलेके कथा चारोंस्कंध में वर्णन करते भये हे राजन् हे राजशार्दूल हे नृपशिरोमणे हे कौरवोत्तम ऐसा आदिले के अनेक प्रकार को संबोधनसे दुलार करिके कथा कहते भये१ परन्तु पंचमस्कंधके अध्याय१३ शूलोक२४में परीक्षित् को उत्तरा मातः क्यों कहे उत्तरा माता को अर्थ यह है कि उत्तरा है तुम्हारी माता ऐसे हे परीक्षित् यह बड़ी शंका होती है जो और कभी परीक्षित् की माता को नामलेके राजा को दुलार शुक किहे होते तो शंका नहीं होती गुरु जी शंका कहो दो श्लोक को अर्थ मिला है युग्म है वाचक बोले शुकदेव जी ने परीक्षित् को भगवान् के कीर्तन में वड़ा

जनयामासयात्रिमम्।ज्ञात्वैवमुत्तरामात्तर्मुनिर्हर्षादुवा
चह ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयो
दशवेणी१३ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥सर्वान्जीवान्परित्यज्य संसारेमोहिता
न्मुनिः।वानरस्योपमादत्ताकुटुम्बभरणेकथम् १ वाचक
उवाच ॥ सर्वेचराचरेजीवाः कुटुम्बभरणेरताः । तथा
पिवानराणांवै केषामपिनगीयते । कुटुम्बपोषणेप्रीति
स्सदृशीनीतिसंचये॥२॥ इति० पं० शं० मं० चतुर्दशे
ऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥श्लो० ॥ ३० ॥

लोभी जानिकै तथा देह नाश होने की चिंता को त्यागि कै
वारंबार भगवान् के चरित्र को पूछि रहे हैं परीक्षित् भगवान
में ऐसा प्रीतिमान् परीक्षित् को देखिकै शुकजी विचारते भये
कि परीक्षित् की माता जो उत्तरा तिसको धन्य है ३ जो
उत्तरा परीक्षित् को जन्माती भई तिसको धन्य है ३ ऐसा
बड़ा हर्ष करि कै राजा को(उत्तरा मातः)इस पद से दुलार
करि कै कथा वर्णन करते भये॥ ३॥ इति० भा० पं० शं०मं०
त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३॥ श्लोक २ ४ ॥

श्रोता पूछते भये चौरासी लाख योनिमें सब जीव मोहके
वशिहोकै अपने अपने परिवार के पालन करने में रातिदिन
लगिरहे हैं परन्तु शुकजीने सब जीवों को त्यागि के परिवार
के पालन करने में वानर की उपमा क्यों दिया क्या वानर
सब जीवोंसे ज्यादा परिवार को पालन करता होगा यह
शंका है १ वाचक बोले संसार में सब जीव परिवार के पाल-
ना करने में चतुर हैं परन्तु नीति शास्त्र में लिखा है कि वानर

श्रोतार ऊचुः ॥ समदृष्टिःसमाख्यातोव्यासपुत्र मुनिः । कथम्प्रोवा [illegible] ॥
वाचक उवाच ॥ राक्षसैर्नाशितावेदाश्चत्वारश्चयुगत्रये कलौ पाखंडिभिर्ग्रस्तास्तेभविष्यन्ति निश्चितम् २ ज्ञापनायजीवानांकलिजानाम्मुनीश्वरः । [illegible] यैव प्रोचेपाखंडिनोजनान् ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

सरीके परिवारका मोह तथा पालना कोई प्राणी नहीं करेगा इस वास्ते शुकजी वानर की उपमा परिवारपालन करने में देते भये ॥ २ ॥ इ० भा० पं० शं०मं०चतुर्द०चतुर्दशवेणी॥१४॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोता पूछते भये शास्त्र में तथा लोक में मुनिजन शुकदेव को समदृष्टि कहते हैं कि शुकदेवजी भला बुराको एक रकम देखते हैं ऐसा परमहंसशुक जी दूसरे प्राणी को अज्ञानी सरीके पाखंडी क्यों कहते भये १ वाचक बोले कि शुक जी अपने मनमें विचार किये कि सतयुग त्रेता द्वापर में चारोंवेदों को राक्षस नाश करते हैं तथा कलियुग में पाखंडी प्राणी निश्चयसे चारों वेदोंको नाश करेंगे २ कलियुग में जो प्राणी जन्मे हैं उन प्राणियों को वेदकी रीति सिखाने वास्ते तथा हुसियार करने वास्ते तथा कलियुग के प्राणी चतुर होवेंगे तो वेदकी रक्षा होवेगी इस वास्ते दूसरेको पाखंडी कहेहैं क्योंकि अपने धर्मकी रक्षा करने वास्ते परमहंस भी थोराभेद करते हैं ॥ ३ ॥ इति श्री भागवते पं० शं० मं पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ कदम्बाम्रजम्बूबटानां चरित्रन्तथातद्
।" दीनांहृदांच । विश्रुत्यामनोनस्सदाभ्राम्यते
कम्पतेशंकयात्रासितम्भीतिमग्नं १वाचकउवाच॥ यदा
ब्राह्मणक्षत्रविच्छूद्रवर्णास्स्वकर्मस्थितास्संस्थितावेदमा
र्गे।तदासर्वमेवंचितोसंस्थितंवैपरीत्याहृतंविष्णुनातत्सम
स्तम् २ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० षोडशेऽध्याये
षोडशवेणी॥ १६॥ श्लो० १६ से ॥ २५ ॥ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ आत्मनाकथमात्मानं तुष्टुवुर्जगदी
श्वराः । एषानोमहतीशंका नार्य्या नार्य्यारतिर्यथा १

श्रोता पूछतेभए हे गुरुजी कदंब, आम,जामुनि, वट,इन वृक्षों
को चरित्र सुनिकै तथा इन वृक्षों करिकै उत्पत्ति भये जो
नदी तथा कुंडसब चीज देनेवाले को सुनिकै हमारा सब को
मनचक्करखाय रहा है शंका करिकै कांपता है शंकासे डरिकै
उसी शंका की भय में छिपिगया क्योंकि ऐसी बात सुनने में
नहीं आई नदी में तथा कुंड में सब पदार्थ भरेहैं हर२ १
वाचक बोले जब ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अपने अपने धर्म
में तथा वेदके मार्ग में टिकेथे तब कुंडोंको नदियों को वृक्षों
को प्रभाव जो भागवत में लिखा है सो सब सत्य रहा जब
चारोंवर्ण कलियुग में अपने २ धर्म को तथा वेदोंकी मार्गको
त्यागि देतेभये पाखंडी होगये तब भगवान् कुंडोंको नदियों
को वृक्षों को प्रभाव हरि लेतेभये ॥ २ ॥ इति० भा०पं०शं०
मं० षोड़शेऽध्यायेषोड़शवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥१६ से२५ तक॥

श्रोतापूछते भए अपने मुखकरिके भगवान् के अवतारों
की स्तुति क्यों करते भए बड़ी शंका होती है जैसा स्त्रीके
संग स्त्री रमण करेतो क्यासुख प्राप्त होवेगा कुछभी नहीं

वाचक उवाच॥ हरेर्नामा निरूप णि नि अ. अज्ञानूज्ञापयितुंतानि स्वात्मनात्मानमीश्वरः। कुर्वन्तिसदास्तोत्रै रेतदर्थं च नान्यथा २इतिश्रीभा० पं० शं० नि० मंजर्य्यांसप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी॥ १७॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ सिंधुजोक्तश्च भगवान् त्वत्पादसेवनंविना। नमाम्प्राप्नोतित्रैलोक्ये कोपीतिवचनंकथं १ दुरात्मानोनजानंति विष्णुंचैवचतुर्युगे। दैत्यादिमानवास्सर्वे तेषांश्रीरचलामुने २ वाचक उवाच ॥ सेवका

तैसे अपने मुख से अपनी स्तुति करने में क्या महत्त्वहोवैगा १ वाचक बोले तीन लोकमें भगवान् को नाम तथारूप अनेक हैं उननाम रूपोंको ज्ञानी जनतो जानतेहैं परंतु अज्ञानी नहीं जानते अज्ञानियों को अपने नामरूप की महिमा मालूम करनेवास्ते भगवान् अपने मुखसे अपनी स्तुति करते हैं क्योंकि वो अज्ञानी जन ऐसे मूर्ख शिरोमणि हैं कि दूसरेकी बात मानते नहीं २ इ० भा० पं० शं० मं० सप्तदशे ऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतापूछने भए लक्ष्मी भगवान् से कही कि हे भगवन् जो प्राणी तीनलोक में आपको पूजन सेवन भजन नहीं करते वो प्राणी मेरेको कभी भी नहीं प्राप्त होवैंगे जन्म जन्मदरिद्री बनेरहेंगे ऐसा वाक्य लक्ष्मीने क्यों कहीं क्योंकि १ हे मुनि दुष्टजीव जैसे दैत्य दानव दुष्टमनुष्य ये सबचारों युगमें विष्णुको नहीं जानते कि विष्णु क्या चीज हैं और सेवनतो धरारहा परंतु तिनके घरमें लक्ष्मी अचलहोके टिकी हैं तो लक्ष्मी का वाक्य झूठा भया है गुरुजीइस शंकाको

वासुदेवस्यतेनराःपूर्वजन्मनि।स्वस्वकर्म्मानुसारेण तपो भ्रष्टाऽभवन्द्विती ३ कुये।निंचसुयोनिंच प्राप्तास्स्वेनैव कर्म्मणा। तपसैश्वर्यमापन्ना भ्रष्टादुर्बुद्धयोऽभवन् ४ यावद्धरिकृतासेवा तावदैश्वर्य्यमद्भुतम्। भवेयुस्तेच तत्क्षीणे दुःखिनोऽतोरमोदितम् ५ इति० भा० पं० शं० मंजर्य्यांअष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८॥श्लो०॥२२॥

श्रोतार ऊचुः॥ वर्णिताःक्षुद्रनद्योपि यालोकैर्नैवज्ञायते।अवन्त्यंतिकगाक्षिप्रागीताशास्त्रेषुभूरिशः।सालोकै रपिविख्याता नोक्ताभागवतेकथम् १ वाचक उवाच॥

आप नाश करो २ वाचक बोले जो दैत्य आदि दानव तथा म्लेच्छ और कोई दुष्टमनुष्य भगवान्को नहीं जानते तथा लक्ष्मी को सुख भोगते हैं वो जीव पूर्व जन्म में भगवान् के सेवक थे मर्त्यलोकमें आयके अपने अपने कर्म से भ्रष्ट होगये हैं भगवान्को भूलिगयेहैं ३ तपसे भ्रष्ट होके दुष्टबुद्धि होके कोई सुंदरि योनि को प्राप्त भए कोई खराब योनिको प्राप्त भए परंतु भगवान्के सेवनरूप तपस्या करिके अचल लक्ष्मी को सुख भोगिरहेहैं ४ जबतक भगवान्की सेवाको पुण्य उनलोगों के पास रहेगा तबतक अचल लक्ष्मी को सुख भोगेंगे जब सेवाकी पुण्य नष्टहोजावैगी तथा इस जन्म में भगवान्को पूजन नहीं करते हैंइसवास्ते बहुत दुःख पावेंगे खाने को अन्नभी नहीं मिलैगा इसवास्ते लक्ष्मीने भगवान् से कहीथी की आपु को सेवन नहीं करते हैं सो जीव मेरेको नहीं प्राप्त होते॥ ५॥ इ० भा० पं० शं० मंजर्य्यामष्टादशेऽध्यायेऽष्टादशवेणी॥ १८ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कि मर्त्य लोक में जो छोटी२नदी हैं जिन

पश्चिमोत्तरतोमार्गन्ददौक्षिप्रानचागतान्। मुनीन्पूजयितुंशम्भुमेकदाशम्भुरात्रिषु २ पूजनंभ्रष्टमन्वीक्ष्यतैश्शप्ताचादरन्नते। भवेद्भागवतेशास्त्रेमुनिनातोनवर्णिता ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दर्भशालमलप्लक्षानां शाकपुष्करशाखिनाम् । जम्बोरपिचविस्तारं श्रुत्वावर्द्धतिनोभ्रमः १ को नाम भी कोई नहीं जानता उनको तो भागवतमें वर्णन व्यास जीने किया तथा उज्जैन के सामने वहनेवाली क्षिप्रा नदी जिस को शास्त्र में नाम लिखाहै तथा लोक में प्रजाभी क्षिप्रा को जानते हैं ऐसी क्षिप्राको वर्णन भागवतमें व्यास जीने क्यों नहीं किये १वाचक बोले एकदिन शिवरात्रिके समय मुनिजन शंकर के पूजन करनेवास्ते पश्चिम दिशासे आतेभये उसीदिन दैवयोगसे क्षिप्रा भीजल करिके पूर होरहीहै मुनिजन उतरने लगे तौ क्षिप्राने रस्तानहीं दिया मुनिजन पश्चिमें दिशा के तटपर बैठे रहिगये २ शिवरात्रि को शिव को पूजन मुनियों ने भ्रष्ट देखिके क्षिप्रा को शाप देतेभये हेदुःष्टे नदि भागवत में जिसका वर्णन भया सो धन्य है तेराआदर भागवत शास्त्रमें नहीं होगा हे श्रोताहो ऐसा मुनियों को शाप जानिके व्यासजी ने भागवत में क्षिप्रा को वर्णन नहीं किया ३ इति भा० पं० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये कुश को सेमला को पाकरि को शाकको कमल को जामू को इनवृक्षों की लम्बाई चौड़ाई सुनिके हमारे सबके मनमें दिन २ प्राति शंका बाढ़ती है क्योंकि येवृक्ष हैं कि तमाशा है १ वाचक बोले किराजा प्रियव्रत करि

वाचक उवाच ॥ प्रियव्रतकृतंकर्म्म शंकनीयंकदापिन। ईश्वरेणकृतंसर्वन्निमित्तंकृत्यभूपतिम् २ पंचमेप्रथमेप्रोक्तंश्लोकेचैकोनखाऽधिके। कर्म्मप्रैयव्रतंकर्तुमीश्वरात्कोपिनक्षमः ३ इति० भा० पं० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोककोनेमनहीं ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ आकाशेभूम्यधोनैव सविताश्रूयतेचनः। त्रिलोकीन्तपतेसूर्य्यः कथम्मुनिरुवाचह १ वाचक उवाच ॥ भूम्यधस्सप्तलोकानां गाथानोक्ताशुकेनसा। मर्त्यादूर्ध्वंत्रिलोकान लोकाभ्यन्तःप्रवर्तिनी। सात्रिलो

के किया जो कर्म तिस कर्म्म में शंकाकभी भी नहीं करना चाहिये क्योंकि जो आश्चर्य करने लायककर्म प्रियव्रतने किया है सो सबकर्म भगवान्ने किया है राजा प्रियव्रत को निमित्त करिके २ क्योंकि पंचम स्कंध के प्रथम अध्याय श्लो ३६ में व्यासजी कहे हैं कि राजा प्रियव्रत करि के किये जो कर्म तिन कर्म्मों को करने वास्ते ईश्वरकी सामर्थ्य है और दूसरे प्राणीकी किसीकी नहीं है ऐसे व्यासके वाक्यसे मालूम परता कि जो आश्चर्य रूप काम प्रियव्रतने किया सो सब भगवान् ने किया है इसवास्ते प्रियव्रत केकिये कर्ममें शंका नहींकरना चाहिये ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं०विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक को नेम नहीं अध्याय भरेमें शंका है ॥

श्रोता पूछते भये सूर्य आकाशमें हैं भूमिके नीचे सूर्यनहीं हैं फिरि व्यासकैसे कहाकि तीन लोक में प्रकाश सूर्यकरते हैं१ वाचक बोले भूमिके नीचे जो सातलोक हैं तिनलोकों की कथा शुकजी नहीं कहेथे मर्त्य लोक के ऊपर जो लोकहैं तिन लोकों के बीचमें जोलोक हैं तिनको त्रिलोकी कहेथे

कीसमाख्यातातपत्येताम्प्रभाकरः २इति०भा०पं०शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी २१॥श्लो०॥ ३॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भूमौतपःप्रकुर्वन्ति सर्वेब्रह्मर्षिसत्तमाः।शास्त्रेश्रुतंचनोब्रह्मन् केचोर्ध्वेयेसमाश्रिताः१वाचक उवाच॥समाप्यतपसांसिद्धिं भुविन्त्यक्त्वा च येगताः। तत्रतिष्ठन्तितेसर्वे शिष्यास्तेषांक्षितिंश्रिताः २ इतिश्री भा० पं० शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शिशुमारस्यहृदये ग्रहाणाम्मध्यसंस्थितः। नारायणःकोभगवान् महाश्चर्यमिदंश्रुतम् १

उसी त्रिलोकी कहे तीनलोक में सर्यप्रकाश करते हैं २ इति भा० पंचमस्कंधे शं० नि मंजर्यां एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी २१ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये हमसबशास्त्रमें ऐसा सुना है कि सबऋषि जन पृथ्वी में तपस्या करते हैं परंतु हे गुरुजी मुनिजन ऋषि लोक में टिकिके तपकरते हैं वोमुनि भूमिमें तपकरनेवाले हैं कि दूसरे कोई हैं १ वाचकबोले भूमिमें तप करने वाले जो मुनि सो तपस्या की सिद्धि की समाप्ति करिके पृथ्वी को त्यागि के ऋषिलोकको जाते भए ऋषिलोक में भगवान्को ध्यान करनेलगे कठिन २ तप छोड़िदिए परंतु उनहीं ऋषियों के शिष्य भूमिमें टिकेहैं अपने २ गुरुवों के आश्रमपर तप करिरहेहैं २ इति भा० पं० शं०मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोतापूछते भए शिशुमार चक्रके हृदय में नवग्रहों के बीच में नारायण भगवान् टिके हैं ऐसा भागवत में हम

वाचकउवाच ॥ बद्रिकायान्तपस्तेपेयश्चिरन्धर्म्मनन्दनः। शिशुमारस्थितानांसः शिक्षार्थंतत्रसंस्थितः २ इतिश्री भा० पं० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वत्सरेवत्सरेदुष्टौ सूर्य्यौपीडयतोनिशम्। चक्रस्यापिभवेत्कष्टन्नजघ्नतौहरिःकथम् १ चेत्ताभ्यांच सुधापीतातथापितत्कृतासुधा २ ॥ वा.उ.॥ चक्रपूतौहरि

सबने सुना है हे गुरुजी नारायण भगवान् कौन हैं बड़ी शंका होतीहै क्योंकि जो वैकुंठ नाथ नारायणहैं सो ग्रहोंकेवीच में कैसे टिकैंगे१ वाचकबोले धर्मके पुत्र जो नारायणहैं जिन्हों ने वद्रिकाश्रम में वहुतदिन तक तप किये सो नारायणं शिशुमारचक्र में टिके जोसव देवता तिनको सुंदर धर्मसि- खानेवास्ते ग्रहों के वीच में टिके हैं २ इति भा० पं० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्या० त्रयोविंशवेणी २३॥ श्लो० ७ ॥

श्रोता पूछते भए राहुकेतु ए दोनों दुष्टवर्ष २ सूर्य को तथा चन्द्रको पीड़ाकरते हैं तथाइन दोनों से सूर्यचंद्रकी रक्षाकरने वास्ते भगवान् को सुदर्शनचक्र आताहै तौ हमेश आनेजाने में रक्षाकरने में सुदर्शन कोभी कष्टहोता है ऐसे दुख देने वाले राहुकेतु को भगवान् क्यों नहीं मारडालेकि किसीको दुःख नहीं होता १ यह जोको ; कहैकि राहु केतु अमृत पियेथे किसी केमारेनमरते तौ सत्यहै परंतुअमृत भी भगवान् का वनायाहै भगवान् मारा चाहते तो अमृत रक्षा नहींकर सका २॥वाचक बोले भगवान्सुदर्शन चक्र करिके राहुको मारते थे तवसे राहु केतुचक्रको छुइके पवित्र होगयेभगवान् सुदर्शन चक्र करिके पवित्रराहुकेतुको जानिके नहींमारते भय तथा

ज्ञात्वाचासुरौनावधीद्धरिः। चक्रचिन्हंविलोक्यैवहरिःप्रीतोह्वयोरभूत् ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० चतुर्विंशेध्याय चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥ से ॥ ३ ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुमुक्षुरन्यंकंसेवेच्छेषादन्यमिति प्रभो । नकुत्रापिश्रुतंचैतद्बालवन्मुनिनोदितम् १ वाचकउवाच ॥ शेषशब्दस्यद्वैधार्थो मुनिनासंकृतःपुरा। शब्दशास्त्रविहीनैश्चज्ञायतेपृथिवीधरः २तत्कृतश्रमविद्भिर्नष्टेसर्वेचराचरे। यश्शेषोज्ञायतेसस्तु मुमुक्षूणांसुखप्रदः ३ भूमिभारधरंशेषं निमित्तंकृत्यवैमुनिः। राजानं

दोनोंकी देहमें चक्रको चिह्न देखिके राहु केतुके ऊपर प्रसन्न होगये ३ इति भा० पं० शं० मं० चतुर्विंशऽध्यायेचतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लोक १ से ३ तक ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी शुकदेवजी राजासे कहेकि मुक्ति होने की इच्छा किहे जो प्राणीहैं सो शेषसे दूसरो देव कौन है जिसको सेवन करैंगे मुक्ति देनेवाला शेष सिवाय दूसरा देवता कोई नहींहैं ऐसा वाक्य कभी भी हमलोगनहींसुने कि मुक्ति देनेवाले शेष भगवान्हैं शुकजी बालकसरीके क्यों ऐसे वचन कहे १ वाचक बोले व्यास मुनिने शेष शब्दको दो अर्थ कियेहैं व्याकरणको जो मनुष्य नहीं जानते वो मनुष्य तोशेष अपने मस्तक पर भूमिको धरेहैं उसको शेष कहैंगे २ तथा जो मनुष्य व्याकरण को जानते हैं वोसब शेष शब्द को अर्थ ऐसा करैंगेकि तीनलोक चौदह भुवन चरअचरको नाश भये पीछे जिस भगवान् को नाश नहींहोता उसको शेष कहतेहैं सोईशेष भगवान् मुक्तिकी इच्छाकरनेवाले जीवों को सुखदेने वाला हैइसी वास्तेमुक्तिकी इच्छाकरनेवाले जीव शेषभगवान्

कथयामास नष्टशेषम्मुनीश्वरः४इतिश्री भा० पं० शं० मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी२५॥ श्लोक॥ ११॥

श्रोतार ऊचुः॥ द्विजादयोनविश्रुताः कदाऽस्माभि मुनीश्वर। स्वगर्द्दभानांम्पतयो मुनिनोक्तंकथन्त्विदं १ वाचक उवाच॥ समीचीनश्शुनामर्थो भ्रमोऽस्तिगर्द्द भेपदे। प्रोक्तस्सर्वेषुकोशेषु वस्तोऽपिगर्दभोच्च्यते २ त्रिवर्णैःपाल्यतेवत्सस्तस्मात्तेपतयस्स्मृताः। स्वगर्द्द भानाम्पतयः चातःप्रोक्ताद्विजातयः ३ इ० भा० पं० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी २६॥श्लो०॥२४॥

को त्यागिकै दूसरेदेवको किसको पूजनकरैंगे ऐसामुनिनेकहेहैं३. पृथिवी जीवों को धारण किये जो शेष तिन का व्याज करिकै संसार के नष्टभये पीछे जो शेष भगवान् तिनके वास्ते राजा से शुक जी कहे हैं॥ ४॥ इति० भा० पं० शं० नि० मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी॥ २५॥ श्लोक॥ ११॥

श्रोता पूछते भये कि हमसबोंनेऐसा कभी नहीं सुना कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य कुत्ता गदहा आदि लेके और पशु हैं तिन को पति होतेभये मुनिने ऐसा वाक्य क्यों कहे १ वाचक बोले श्वान को पति होनातो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के वास्ते प्रगटहै क्योंकि उसश्वान को तीनों वर्ण पालते हैं गर्धभको पतिहोना तीनवर्ण को नहीं चाहिये तौभी बड़े बड़े कोशों में बकरा को भी गर्दभ कहते हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बकरा को पाल न चारों युगमें करते भये कोई यज्ञवास्ते कोई जीव दया मानि कै इन आदि कारण से बकराको पालते भये इसवास्ते मुनिने तीनों वर्णों को श्वान तथा गर्द्दभ को पति कहथे क्यों कि तीनवर्णोंको कुत्ता बकरा पालना बड़ा बुराकर्म शास्त्र में

लिखा है परन्तु जो प्राणी प्रमाद से उनकी पालना करेंगे सो दुःख भोगेंगे ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ २४ ॥

इतिश्रीभागवतशंकानिवारणमंजरी शिवसहाय
बुधविरचितासुधामयीटीकासहितासमाप्ता
श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

षष्ठस्कंधे ॥ ६ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विद्वानजामिलोज्ञानी गुर्वग्नितिथिसेवकः । दृष्टमात्रःकथंशूद्रीं स्वधर्म्माद्धिररामह । मह दाश्चर्यमेतद्धिवर्ततेहृदयेचनः १ वाचक उवाच ॥ ऋषिस्पराशरन्दृष्ट्वाच्युतवीर्य्यंजहासवै । योनौचनीचकन्यायागंगामध्येसुविह्वलम्२ तेनशप्तस्त्वमप्येवंक्षणाच्छूद्रो

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी अजामिल बड़ा पण्डित था ज्ञानीथा गुरुकी अग्नि की महात्मों की सेवा करने वालाथा ऐसा अजामिल शूद्री को देखतेई मात्र अपने धर्मसे भ्रष्ट होगया यह बात सुनिकै हमारे सबके मनमें बड़ा आश्चर्य मालूम परता है क्योंकि कोई मूर्ख भ्रष्ट होता है तोभी एक क्षणमें नहीं होता यह तो बड़ा चतुरथा क्षणएकमें क्यों भ्रष्ट हुआ १ वाचक बोले गंगा की बीच धारा में पराशर मुनि काम करिकै दुःखी होगये तब भील की कन्याके संग रमण करतेभये ऐसे पराशर मुनिको अजामिल देखिकै बहुत हंसता भया २ अजामिल को हसता देखिकै पराशरमुनि अजामिल को शाप देते भये हे दुष्ट हमेसरीके तूभी किसी समयमें शूद्री को देखिकै कामसे व्याकुल होके ब्रह्मकर्म से भ्रष्ट होजावेगा

भविष्यति । शूद्रीकामेनसंतप्तश्चातशशीघ्रंविमोहितः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी१ श्लो० ॥ ६१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अजामिलोयदाशुद्धो नारायणप्रकीर्तनात् । तंवक्तुंस्वात्माभिर्वीच्य तद्दूताश्चकथंगताः १ वाचक उवाच ॥ नारायणेतिशब्दस्य कीर्तनाद्यमत्रासतः । विमुक्तोनचपापैश्च सर्वैश्शुद्धोबभूवह २ चेच्छुद्धस्तन्नयन्तिस्मते वैकुंठंतदाक्षणात् । ब्रह्महत्यासमंपापं हमतो एकदफ़े भ्रष्टहो शरीर को शुद्ध करिलेवेंगे परन्तु तंतो बिलकुल ब्राह्मण नहीं रहैगा चंडाल एक क्षणमें होजावेगा हे श्रोताजनो इसवास्ते अजामिल क्षणमें भ्रष्ट होगया॥ ३ ॥ इति श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहायबुधाविरचितायांसुधामयीटीकायांषष्ठस्कंधेप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ६१ ॥

श्रोतापूछते भये कि नारायणको नाम मरते वखत अजामिलने लिया तो अजामिलको पातक सब नष्टहोगया अजामिल शुद्धहोगया तो भगवान्के दूतोंसे कुछबात करनेकी इच्छा अजामिलकिया तौ दूतोंने विचार किये कि यह हमसे बोलेगा तौ हमारे सबको पापलगेगा ऐसा जानिके क्यों चलेगये क्योंकि अजामिलतो पापसे छूटिगयाथा यह शंकाहै १ वाचक बोले नारायणके नामको अजामिललिया तबउसी नामके पुण्यसे यमराज के त्राससे छूटिगया तथा सबपाप करिके नहीं छूटा २ जब पापसे छूटि गया होता तो उसी वखत भगवान्के दूतोंने अजामिलको बैकुंठको एक क्षणमें लेजाते पृथ्वीमें तपस्या करनेको फिरि क्या कामथा दूतोंने

पापिनाम्भाषणेनच । एवंज्ञात्वागतास्सर्वे तपस्तप्तुं द्विजोगतः ३ इति० भा० ष० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी २ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ऋषयोनैवजानन्ति धर्म्मम्भागवतम्भटाः। वयन्द्वादशजानीमः प्रह्लादजनकादयः १ इमेनोक्तमिदंवाक्यमहदाश्चर्य्यदायकम् । प्रह्लादादृषयो न्यूनाहरिर्य्येषांचकिंकरः २वाचकउवाच॥नन्यूनाऋषयः सर्वेतेश्रेष्ठाभुवनत्रये। मानिनोनैवपश्यन्ति धर्म्मभागवतं

विचार कियेकि पापीके संगवात करनेवाले प्राणीका ब्राह्मण मारेसे जो पाप होताहै सो पाप उसको लागताहै ऐसा जानिकै अजामिलको छोड़िके चलेगये तब अजामिल पाप नाश करने वास्ते तपकरनेको गया ३ इति भा० ष० शं० मं० द्वितीयेऽध्याय द्वितीय वेणी ॥ २॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतापूछते भये कि यमराजने अपने दूतोंसे कहेकि हे दूतलोगों भागवत रूप धर्मको ऋषलोगभी नहीं जानते हैं प्रह्लाद तथा जनकराजाको आदिलेके हम बारह १२ जन भागवत रूप धर्मको जानतेहैं हेगुरुजी बड़े आश्चर्य की बात यहहै कि जिन मुनियोंको भगवान् दासहै सो मुनिजन भगवान्के धर्म जाननेमें प्रह्लादसे भी मूर्ख होगये यह बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले मुनिजन भगवान् से बड़ेहैं दूसरे प्राणी से किसी कामसे छोटे क्यों होवैंगे तीन लोकमें सबसे बड़े हैं परंतु तपस्याके अभिमानसे भागवत रूप धर्मको नहीं देखते विचारतेहैं कि क्या हमारे तपसे भागवत धर्म बड़ा है ऋषिजन तपकरिकै अभिमानी होरहे हैं इसवास्ते भागवत धर्मको नहींजानने और प्रह्लाद जनकआदि येगरीब हैं इनको

शुभम् ३ तपसामानिनस्सर्वे प्रह्लादाद्यास्तुकिंचनाः"
इति० भा० ष० शं०मं०तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी॥३
श्लो० ॥ १९ ॥ से ॥ २० ॥ तक॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रचेतससुतानूचे द्विपदानांचतु
ष्पदः। अन्नंकथमितिब्रह्मन् महाश्चर्यंनिशाकरः १
उवाच॥नह्यत्रशशिनाप्रोक्ताःपशवश्चचतुष्पदः।भक्ष्यभो
ज्यौचोष्यलेह्यौ पदास्स्वादन्निगद्यते २ चत्वारैतत्पदो
यस्मिन्कथ्यतेसश्चतुष्पदः । सुभोजनोक्तश्शशिनानप
शूनाम्प्रभक्षणम् ३ इति० भा० ष०, शं० मं० चतुर्थेऽ
ध्यायेचतुर्थवेणी ४॥ ॥ श्लो० ॥ ९ ॥

भगवान् सिवाय दूसरा आधार कोई नहीं है इसवास्ते भागवत
धर्मजाननेको यमराज अपने दूतोंसे, कहेथे ३ इ० भा० ष०
शं० मं० तृतीयेध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३॥ श्लो० ॥ १९ ॥ से२०॥

श्रोतापूछते भये चंद्रमाने प्रचेतसके पुत्रोंसे कहेकि मनुष्य
को आहारपशु है वड़े आश्चर्य की बातहै हर १-१ वाचक
बोले हेश्रोताहो(द्विपदानां चतुष्पदः)इसश्लोककोअर्थ चन्द्रमा
चतुष्पदयाने चारि पगवाले पशुनहीं किये ऐसा अर्थ किहे कि
चतुः कहे चारि प्रकारको भोजन भक्ष्य १ भोज्य २ चोष्य ३
लेह्य इन चारों प्रकार भोजनोंको पदकहे सोई स्वाद मनुष्यों
को आनंदसे आहार है २ इनचारों भोजन को पदकहे स्वाद
जिस भोजनमें होवै उस भोजन को चतुष्पद कहेथे चतुष्पद
नाम बहुत सुंदर भोजनको है चंद्रमाने मनुष्य को पशुखानेको
नहीं कहेथे ॥३॥ इति० भा०ष० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थ
वेणी॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ९ ॥

श्रोता पूछते भये हर्यश्व जो दक्षके पुत्र हैं सो सबभाई

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रजाविवृद्धयेयुक्तान्हर्य्यश्वान्नारदो ।तान्निवार्य्यप्रजासृष्टेयोंगमार्गेष्वप्रेरयत् १वाचक ॥तेषामिच्छाप्रजासृष्टौ नाभवत्पितुराज्ञया। कर्तुं [illegible] :। तेषाम्मनोगतम्भा [illegible] २ इतिश्रीभा० प० शं ० मं० [illegible] वे ी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥तिमिश्चसरमेलाचसुरसाद्यामुनेस्स्त्रि ः। तृणादिगृद्धजलजाशुनोयासांसुतास्स्मृताः १किन्त्वा सन्ताश्चब्राह्मण्यःकिन्तुश्वानादिमातरः। महदाश्[illegible]मे तद्विब्राह्मणीनांकुजातयः२वा०उ०मुक्ताशुक्त्यांयथोत्पन्ना

मिलिके सृष्टि बनाने वास्ते तपस्या करनेलगे तब तिनसबको नारद ने सृष्टि बनाने वास्ते मना करिके योगकरने को क्यों आज्ञा देते भये सृष्टि बनाने में नारद को क्या हर्जा होताथा १ वाचक बोले दक्षपुत्रोंकी इच्छा सृष्टि बनाने की नहींथी योग करने की इच्छाथी परन्तु पिताकी आज्ञा मानि के सृष्टि बनाने वास्ते तपकरने को गये तब नारद उनके हृदयकी बातको विचारिकै तिनके मनकी बात जानि के सृष्टिबनाना मनाकरिकै योगकरने को उपदेश करतेभये॥२॥ इ० भा० प० शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥५॥ श्लोक६॥

श्रोता पूछते भये कि कश्यप मुनिकी तिमिसरमाइला सुर· सा आदिस्त्री होतीभई जिन्होंके तृण सर्प गीध जल के जान· वर सब तथा कुत्ता ऐसे २ पुत्रहोते भये १ हे गुरु जी जिनके ऐसे पुत्रभये सो सब स्त्री ब्राह्मणीथीं कि कुत्ता आदिजो जन्मे तिनकी माता को रूप धारण कियेथीं कैसारूप तिन्होंकाथा बड़ा आश्चर्य होता है कि ब्राह्मणियों के पेटसे ऐसेखराब पुत्र

गजमुक्तागजश्रवे । मृगनाभ्य ...
चनम् ३ वंशवृत्तेचवंशाद्धि मुनिस्त्रीषुप्रजज्ञिरे । तथा
प्येतेचब्राह्मण्य स्ताविधेर्बलवानूगतिः ४ इतिश्रीभा०
ष०शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥श्लो० ॥ २६॥
श्रोतार ऊचुः ॥ युगान्यतीतावहवश्चेन्द्रे राज्यंप्रशा
सति । अयासीत्सदसन्नित्यमिन्द्रस्यभगवानूगुरुः १
नोच्चचालासनादिन्द्रस्तद्दिने गर्वितःकथम् । वाचक
उवाच ॥ वलिनाकारयामास शत्रुंजयमखंगुरुः २ तस्स
माप्तिदिनन्तत्तु सुरेशस्तेनमोहितः । गुरोरनादरादन्य
जन्मते भये हर३-२ वाचक बोले जैसे सीप में मोती होता है
तथा हाथी के कान में गजमोती होताहै जैसा मृगाकी नाभी
में कस्तूरी होती है गायके कानमें गोरोचन होता है ३ जैसा
बांसमें वंशलोचन होता है तैसा बूह्माकी इच्छा करिके तिमि
सुरसाइला आदिलेके कश्यप मुनिकीस्त्री थीं बूाह्मणीथीं पशु
पच्छिणी रूप नहींथीं परन्तु बूह्मा का कर्म बड़ा जबरदस्त है
इसवास्ते बूाह्मणियोंके उदरसे ये सब जानवर जन्मते भये ॥
४ इ० भा० ष० शं मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ श्लोक ॥२६ ॥
श्रोता पूछते भये तीन लोकको राज करते करते इन्द्रके
बहुत युग बीतिगया तथा बृहस्पति जो गुरु सो नित्य इन्द्रकी
सभाको आतेथे कभी भी गुरुको अनादर इन्द्रने नहीं किया.
परन्तु उसदिन अनादर क्यों किया बुद्धिभ्रष्टहोगया यह बड़ी
शंकाहोती है हर३वाचकबोले कि बलिको दुखी देखिके शुक्रा
चार्य शत्रु को जीतने वास्ते बलिसे यज्ञ कराते भये जिस
दिन यज्ञकी समाप्ति होगई उसीदिन इंद्रकी पुण्य नष्ट होगई
तब बलि की यज्ञकी पुण्य से इन्द्र पागल होगया २

दुपायंनैवतज्जये। कारयित्वाप्यतस्तस्यातिरस्कारोमखो गतः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तम वेणी ॥७॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्राप्तकालोनृपोऽपृच्छन्मुनिम्वर्म्मक ंगुरो । कथाप्रश्नम्परित्यज्य हरेर्नारायणस्य च १ ाचक उवाच ॥ आत्मार्थंसज्जनाः कर्म्मनकुर्वन्तिकदा पेच । नदीगिरितरूणाम्वै स्वाभावमिवसोनृपः २ ाबबलिकी यज्ञमें विचार कियाकि जबइन्द्र अपने गुरुको अनादर करैगा तब इन्द्रको बलि जीतैगा इस उपायसे दू. सरा उपाय इन्द्रके जीतने का नहीं है ऐसा विचारिकै बलि की यज्ञ इन्द्रको मोहिकै इन्द्रसे बृहस्पतिको अनादर कराय कै चलागया इस कारणसे उस दिन इन्द्रगुरुको अनादर किया ३ इति भा० ष० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतापूछते भए राजा परीचित् को मरण नगीच आया था तब राजा भगवान्की कथाको पूछनातौ छोड़ि दिया नारायण वर्म्म क्यों मुनिसे पूंछा नारायण वर्मतौ शरीर की रक्षा है सोशरीरतौ राजाका छूटने वाला फिरि क्यों पूंछा १ वाचक बोले सज्जन पुरुष अपने सुख होने वास्ते कुछभी कर्म्म नहीं करते दूसरे को सुख होने वास्ते काम करते हैं राजा परीचित् नदीको पर्वतको वृक्षको स्वभाव ग्रहण किया जैसी नदी राति दिन जलसे भरी रहती है पण अपने वा- स्ते नहीं भरी रहती है दूसरे जीवोंको सुख देने वास्ते जल से भरी रहती है तथा पर्वत चारा लकड़ी आदि अनेक वस्तु अपने ऊपर राखता है परंतु अपने वास्ते नहीं दूसरे जीवों को सुख देने वास्ते जैसा वृक्ष दूसरे वास्ते फलपत्ता

सुखायसर्वजीवानांपप्रच्छकरुणापरः ३ इतिश्रीभा०ष० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ वद्द्धेसततम्वृत्तश्चतुर्दिक्षुकथंगुरो। इषुमात्रंमहाश्चर्यमिदंचकौतुकंकिमु १ वाचक उवाच॥ इषुशब्दोत्रचापश्च विद्वद्भिर्नचगृह्यते । इषीकेषुश्चस म्प्रोक्ता विश्वकोशादिमंडले २ मात्रंस्थूलमितिप्रोक्त मिषीकास्थूलसंचयः । दिनेदिनेसोवद्द्धेन तुचापप्रमाणतः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवम वेणी॥ ९॥ श्लो०॥ १३ ॥

फूल आदि राखते हैं तैसा परीक्षित् भी २ आपुतो मरबे योग्य होगया परंतु सबजीवों को सुख होने वास्ते नारायण वर्म पूंछे हैं ३ इति० भा० ष० शं० मं० अष्टमे ऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये कि पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर इनचारों दिशा की तरफ नित्य चारि चारि हाथ सोरह १६ चारों तरफ वृत्रासुरकी देह बाढ़तीथी रोज यह बात बड़े आश्चर्य की है तमाशासरीके मालूम परता है क्यों वर्ष १ को हिसाब जोड़ो तो कितनी मोटी देह होवैगी और वृत्रासुरतो लाखों वर्ष जीता रहा तब कैसी देह भई होगी हर ३ वाचक बोले इषुमात्र इस श्लोक में विद्वान् जन इषुको बाण नहीं कहते क्योंकि विश्वकोश कमंडलुकोश आदि कोशों में इषु को सकिभी लिखते हैं २ मात्रको मोटा अर्थ लिखते हैं इस प्रमाण से इषुमात्र कहे सीकेसरी के ज्यादा वृत्रासुर की देह नित्य चारों तरफ बाढ़तीथी चार हाथ प्रमाण एक धनुषको

टीप--सीक वांसकी सलाई को कहते हैं-

श्रोतार ऊचुः ॥ विश्वरूपस्सुरानूचेसः शोच्यस्स्थावरैरपि। शोकादयोनवृक्षाणां कथंशोचन्तितेनरान् १ वाचकउवाच ॥ स्थावरास्तरवःप्रोक्ता नान्यत्रभगवत्पदात्। स्थापयन्तिमनोयेते मुनयःस्थावराःस्मृताः। तेऽपिशोचन्तिमुनयस्त्वाष्टेनभाषितंनरम् २ इति० भा० प० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशम वेणी॥१०श्लो० ॥८॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वृत्रासुरस्यशब्देन लोकाश्चासन् विचेतसः। कथमेतच्छुकेनोक्तं लोकाश्चबहुविस्तृताः १

हैं सो धनुष प्रमाण माने चारि हाथ नहीं नित्य देह बाढ़तीथी ३ इति भा० प० शं० मं० नवमे ऽध्याये नवमवेणी॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता पूछते भये विश्वरूप देवतों से कहेकि ऐसे प्राणी को वृक्षभी शोच करते हैं कि इसकी सुंदरि गति किस प्रकार से होगी यहबड़ा दुष्ट है तो यह शंका होती है कि वृक्षतो जड़ हैं उनको तो किसी बातको शोच आदिलेके जो दुःख सुख सो नहींहै फिरि वोवृक्ष मनुष्यको शोच क्योंकरेंगे १ वाचक बोले (सश्शोच्यस्थावरैरपि) इस श्लोक में व्यासजी वृक्षों को स्थावर नहीं कहेथे भगवान् के चरणों में जो मुनि लोग नित्य मनको टिकाते हैं तिनको व्यासजी स्थावर कहेथे ऐसे मुनिजन जो हैं सो विश्वरूप करिके कहाजो मनुष्य तिसका शोच करते हैं २ इति भा० प० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भए शुकदेवजी परीक्षित् से कहेकि हे राजन् वृत्रासुरके शब्द करिके सब लोक व्याकुल होगया ऐसा वाक्य सुनिके बड़ी शंका होतीहै क्योंकि लोकतो बहुत हैं वृत्रासुर कैसा शब्द किया जिस करिके सबलोक व्याकुल होगया

तथापिविष्णुर्भगवान् विरंचिशंकरोगुरो। महात्मानश्च मुनयो लोकेष्वेवसन्तिच २ वाचकउवाच॥ लोक शब्दःप्रजावाची लोकोलोकोपिकथ्यते। युद्धस्यपरितो लोकास्संस्थितास्तेविचेतसः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं०एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी॥ ११॥ श्लो०॥ ६॥

श्रोतार ऊचुः॥ यावच्छिन्द्येदवृत्तस्य मूर्द्धानमयनद्वय म्। तावद्व्यतीतवज्रस्तु महदाश्चर्यकौतुकम् १ चतुर्यु गेबभूवुश्च राक्षसानेकशोगुरो। नकेषामीदृशंकर्म श्रुतम स्माभिरुत्तमम्२ वाचकउवाच॥ नह्यत्रज्योतिषामर्थो

यह बड़ी शंका है १ जो सबलोक शब्द से व्याकुल भये तो लोकईमें तौविष्णु ब्रह्मा शिव ऋषि बड़े बड़े महात्मा मुनि येसबरहतेहैं तो ये सब जन व्याकुल होगये होवेंगे २ वाचक बोले लोकशब्द लोकको नहीं मुनियोंने कहेहैं तथा प्रजाकोभी लोक मुनिजन कहतेहैं तब लोकको व्यास जी ऐसा कहेहैंकि इन्द्र वृत्रासुर के युद्धके चारों तरफ जो लोक कहे प्रजा सोसब व्याकुलहोगये सब लोकको व्याकुल होने वास्ते व्यास जी नहीं कहेथे ३ इति० भा० ष० शं० नि० मं० एकादशे ऽध्याये एकादश वेणी॥ ११॥ श्लोक॥ ६॥

श्रोता पूछते भये इंद्रको वज्र वृत्रासुरके मस्तकको बारह महीनेमें काटा यह बड़े आश्चर्य की बातहै १ हे गुरुजी सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलियुग इन चारों युगमें अनेक राक्षस भयेहैं परंतु किसीके मस्तक काटने में महीना बारा १२ नहीं बीता हम सब किसी शास्त्रमें ऐसा आश्चर्य सुना भी नहीं २ वाचक बोले(ज्योतिषां अयने) इस श्लोक में ज्योतिष को अर्थ ज्योतिष शास्त्र नहीं व्यास किये ज्योतिषको अर्थ ऐसा

ज्योतिश्शास्त्रस्यगृह्यते। ज्योतिषान्नेत्रदीप्ती नाम्विष्णु पादौसुकोमलौ ३ अयनौमुनिभिःप्रोक्तौ यावत्तौतेनवीक्ष्यते। अहर्गणात्क्षणेतावद्वज्ञाश्चिच्छेदतच्छिरः ४इति० ष० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी१२श्लो०३३॥

श्रोतार ऊचुः॥ ऋषिभिर्महदाश्चर्य्यमुक्तमिष्ट्वा हरिम्प्रभो। हयमेधेनमुच्येत चराचरवधादपि१पितृगो गुरुमातृघ्नो ब्रह्मघ्नःश्वानभक्षकः। चांडालोपिविमुच्येत तद्यज्ञेनशचीपते २ वाचक उवाच॥ नीतिशास्त्रेषुवेदेषु पुराणेष्वपिसर्वशः। आत्मघातेशिशोर्घाते धेनुस्त्रीघातके

व्यासजी किहेहैंकि ज्योतिष जो आंखों का प्रकाश तिसको अयने मार्नें स्थान भगवान्को कोमल २ पगहैं ३ सोई भगवान् के पगको मरते वखत वृत्रासुर जबतक देखने लगा तबतक राति दिनके एक २ क्षणमें वह वृत्रासुरके मस्तक को वज्रनेकाटिडाला ऐसा अर्थ व्यासजीने किहेथे वारहमास १२ नहीं किये ४ इतिश्री भा० ष० शं० नि० मंजर्य्यां द्वादशे ऽध्याये द्वादश वेणी १२॥ श्लोक॥ ३३॥

श्रोता पूछते भये कि मुनियोंने इन्द्रसे वड़े आश्चर्य की वात कहेहैं कि हेइन्द्र तीनलोक चौदह भुवन में जो चरअचर जीवहैं तिनको मारि डाले फिरि अश्वमेध यज्ञकरिकै भगवान्को पूजनकरैगा तो पेश्तर कहेहुयेजोजीवतिनकीहत्यासे छूटिजावेगा१तथापिता गुरुमातृकोमारिडालैब्राह्मणको मारि डालेकुत्ता आदि जीवों को खायलेवै एसाचांडाल होवैतोभी हे इन्द्र अश्वमेध यज्ञकरिके पापसे छूटि जावैगा हे गुरुजी ऐसा वचन कहना मुनिको नहीं है चंडालको है तथा सुनने वालाभी चंडाल है हर२ ऐसा अन्याय मुनिहोकै वोलना २

तथा ३ नानृतम्ब्रिब्रुवन्पापी भवेदितिविचार्य्यच । लोभयित्वासहस्राक्षमनृतोक्तेनब्राह्मणाः ४ वृत्रेणदुःखितम्वीक्ष्य विश्वमेतच्चराचरम्। घातयित्वासुरेशेन तम्भूवुःसुखान्विताः ५ इतिश्रीभा० प० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ७ से ६ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥दशलक्षस्त्रियोराज्ञश्चित्रकेतोःप्रवर्णिताःशुकेनैवकथम्ब्रह्मन् तासांरत्यादिपोषणम् १ वाचक उवाच ॥ चित्ररूपाःस्त्रियस्सर्वाश्चित्रिताश्चित्रकेतुना।

वाचक वोले नीति शास्त्र में वेदमें पुराण में धर्मशास्त्र में ऐसा लिखाहै कि अपने शरीर को नाश होता होवै तथा बालक माराजाता होवै तथा गौमारी जाती होवै स्त्रीमारीजाती होवै और झूठबोलसे येसब बचिजावैं तौ झूठ बोलिकै इनसबके प्राणकी रक्षा करना वह झूठ नहीं लिखाजावैगा ३ ऐसा ब्राह्मणोंने विचारि कै इन्द्रको यज्ञका लोभ देखाय कै झूठा वचन बोलिकै इन्द्रकरिकै वृत्रासुर को मराते भये ४ क्योंकि वृत्रासुर ने तीनलोक चर अचर सब को दुःखदेरहा है तीनलोक की रक्षा करने वास्ते गनती से हीन जीवों की रक्षा करने वास्ते झूंठ बोलिकै इन्द्रसे वृत्रासुर को मराय के सब सुखी होतभये इसवास्ते अश्वमेध की तारीफ इन्द्रसे मुनिजन करते भये ॥ ५ ॥ इति० भा० प० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ शूलोक ॥ ७ ॥से६तक ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरु जी राजा चित्रकेतुकेदश१००००० लाखस्त्री परीक्षित्से शुकदेव जी कहेकिहे परीक्षित् चित्रकेतु राजा के दशलाखस्त्री थीं तब उनस्त्रियों को रति आदिकके और अनेक प्रकारको पोषण भरण कैसा होताथा बड़े

देखवर्ण ७ थैं चित्रज्ञानपृथक्पृथक् २ जाना ते विद २८ चित्रसंजीवनीमणि। यदेच्छतितदाता सां कृत्वासंजीवनंक्षणात् ३हास्यादिक्रीडांसंकृत्यपुनश्चै वविसर्जयेत्। विवाहितोयदाराजा तत्पश्चाच्चित्रिता स्त्रियः ४ दृष्ट्वापुत्रमुखंराजा नित्यन्तासांनजीवनम्। करोतिजीविताश्चेताः पंचमेदिवसेतदा ५ स्वस्वमा र्जनकर्त्रीभिश्चोक्तास्सर्वानिरादरम्। एकदाजीविता स्सर्वादैवान्नैवविसर्जिताः ६ गरन्ददुःकुमाराय्शोकार्ते

आश्चर्य की वात है शिव २-१ वाचक बोले राजा चित्रकेतु चित्रवनाने में वड़ा चतुर था सो अपने सोनेवाले महल में दशलाख मकान में जुदा २ दशलाख स्त्रियोंकी तसवीर चित्र की मूर्ति लिखी थी २ चित्रविद्या जानताथा राजा तथा चित्र को सजीवन करने की विद्या भी जानताथा जव चित्रकेतु इच्छा करैकि इनस्त्रियों को सजीवन करना चाहिये तव उसी वखत स्त्रियों को सजीवन करिकै ३ तिनकेसंग हास्यविलास करिकै फिरि तुरंत विसर्जन करि देता रहा जव राजाको विवाह भया तव इनस्त्रियों की चित्रकी मूर्ति वनाताभया विवाहके पेश्तर नहीं वनाता था ४ जव राजा चित्रकेतुके पुत्र नहीं भया तव तो नित्यस्त्रियों को सजीवन करताथा पुत्रभये पीछे पुत्रको मुखदेखिकै आनंद में मस्तहोगया तव नित्यस्त्रियों को सजीवन नहीं किया जव कभी यादि आवै तव पांचवें दिन कभी सातवें दिन सजीवन करने लगा ५एकदिन चित्र- केतु स्त्रियों को सजीवन करिकै पेश्तर सरीके सव कामकरता भया दैवयोगसे विसर्जन नहीं किया तवतो सव स्त्रियों ने उन स्त्रियों की झारनेवाली जो दासीथी सो सव कहती भई

नन्टपेनच । विसर्जितानसर्वास्तायोषिद्भावञ्चसं
ताः। ब्राह्मणैर्बालहत्यायाव्रतंचेरुर्निरूपितम् ७
भा० प० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥
१४ ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

श्रोतार ऊचुः॥मुनीकथंकौपप्रच्छ युवांराजाविचक्ष
णः। चित्रकेतुर्मुनीन्सर्वान्जानीतेभुवनत्रये १ वाचक
उवाच ॥ यद्यप्याश्वासितोराजामुनिभ्यांचतथाविधै।
पुत्रशोकार्तहृदयोनबुबोधमुनीश्वरौ २ इ० भा० प०
शं० मं० पंचदशे ऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक
१० से ॥ १५ तक ॥

कि जबसे राजा के पुत्र हुआ तबसे तुम सबको अनादर
करि दिया अनादर क्या नित्य तुमारा सजीवन करताथा सो
अब पांचसात दिन में सजीवन करता है हमसब तुमसब को
नित्यझारती हैं सफा करती हैं ऐसे दासियोंके वचन सुनिके
बालक को विषदेती भई बालक नष्ट होगया तब राजाशोकसे
दुःखी होके उन स्त्रियों को विसर्जन नहीं किया इसवास्ते
जीतीरहगई ब्राह्मणों ने बाल हत्या की शांति होनेवास्ते जो
उपाय बनाये सो करती भई हैं श्रोता हो इस प्रकारकी दश-
लाख स्त्री चित्रकेतुकीथीं आदमी रूप नहीं रहीं ७ इति०भा०
प० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दश वेणी॥१४ श्लोक ११ ॥

श्रोता पूछते भये राजा चित्रकेतु बड़ा चतुरथा तथा तीन
लोकमें जो मुनिजनथे तिनको जानताथा फिरि नारदको
तथा अंगिराको क्यों पूछाकि तुम दोजने कौन हो तुमारा
क्या नामहै १ वाचक बोले राजा चित्रकेतु को नारद तथा
अंगिरा ज्ञान देते भये तौभी पुत्र शोकसे राजा बहुत दुःखी

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वेषांचैवभूपानांसभार्याणांगति
त । विपरीता कथंजाताचित्रकेतोर्गतिश्शुभा १
: ..। : ...ास्तद्भार्या कुत्रसंगता २ वाचक
।च॥ छायान्यायोत्रमन्तव्यो यत्र भूपस्तुतत्रसा ।
।बाहुल्यभीतश्चनलिलेखमहामुनिः३इ०भा०प०शं०
म० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥श्लो० ॥ २९ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ अनेकजन्मनाज्ञानी सर्वदेवप्रपूजकः।
देवर्षिशिष्योभूत्वापि शेषपादानुकूलवान् १ एतल्ल

होरहा है पहिंचानानहीं कि ये तो नारद तथा अंगिरा मुनि हैं २ इतिश्री भा० प० शं० मं० पंचदशे ऽध्याये पंचदश वेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १० से १५ तक ॥

श्रोता पूछते भये सब राजा जिस लोकको गये हैं तब उन सब राजोंकी स्त्रीभी उनके संग उसी लोकको गईहैं ऐसा हम सब शास्त्र में सुना है परंतु चित्रकेतु तो विद्या धरोंका राजा हुआ तब उसकी स्त्री किसलोकको गई १ वाचक बोले जैसा सबके देह की छाया देहके संगको नहीं छोड़ती इसी प्रकार से पतिव्रता स्त्री अपने पतिको संग नहीं छोड़ती जहां पति जाता है उसी स्थानको वो जातीहै इसी विचारसे चित्रकेतु विद्याधरको राजा हुआ तो वह विद्याधरकी रानी हुई ग्रंथ बड़ा होजायगा इसवास्ते व्यासजी रानी की कथा नहीं वर्णन किये विचार कियेकि पंडित लोग जान लेयँगे ५ इति भा० प० शं० मं० षोड़शे ऽध्याये षोड़शवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये चित्रकेतुराजा अनेक जन्मको ज्ञानी था तथा सब देवनोंको पूजन करनेवाला था नारद का चेलाभीथा

जणसंयुक्तो मूर्खवद्विजहासच। जगतःपितरौदृष्ट्वा गिरिजाशंकरौकथम् २ वाचक उवाच ॥ बलिवत्कृतवान्कर्म पूर्वविद्याधरस्यसः। जहाराक्षीणपुण्यस्य राज्यंमंत्रप्रभावतः ३ अतोभगवतोनुज्ञाम्प्राप्यमायाविमोहिनी। विद्याधरंमोहयित्वा कार्यमेतदकारयत् ४इति०भा०ष०शं० मंजर्य्यांसप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी १७॥श्लो०५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रनाशायसागर्भन्दधौक्रोधेनकामतः। कथंतयानविज्ञातस्सहस्राक्षोन्यरूपवान् १ वाचकउवाच ॥ ईश्वराज्ञांसमुल्लंघ्य कार्यंकर्तुंसमुद्यता

शेषकी कृपा चित्रकेतुकेऊपर बहुतथी १ इतना लक्षणों करिकै युक्त चित्रकेतु जगत्के माता पिता जो शिव तथा पार्वती को देखिकै क्यों हंसता भया २ वाचक बोले जैसा बलि राजा यज्ञ करिकै इन्द्र के राजको छोरिलिया आप इन्द्र होगया तब जिस पुण्य करिकै इंद्र राज पाया था वो पुण्य नष्ट नहींभईथी थोरी बाकी थी इस वास्ते भगवान् वामन रूप धरिकै इंद्रको राज देते भये तैसा कर्म चित्रकेतु भी किया विद्याधरों के राजकी पुण्य नष्ट नहीं भईथी परंतु चित्रकेतु मंत्र जपिकै विद्याधरों का राजा हुवा ३ इसी वास्ते भगवान् अपनी मायाको आज्ञा देकै मायासे चित्रकेतुको मोहित करिकै शिवको द्रोहकरायके चित्रकेतुको नष्ट किया४ इ० भा० ष०शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये दितिने इन्द्रको नाश करने वास्ते गर्भको धारण किया तब इंद्रने दितिको गर्भ नाश करने वास्ते कपट करिकै दिति को सेवन करने लगा पणदिति को क्यों नहीं मालूम पराकि यह इन्द्र है क्योंकि दिति कुछ गँवारि नहीं

अतोमुमोहमोहेन नवुबोधशचीपतिं २ इति०भा०ष० शं० मं० अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८ श्लो०५६॥

श्रोतार ऊचुः॥ विष्णोरावाहनाद्यर्च्चा मंत्रश्चोंकार संयुतः। उक्तंचसप्तमश्लोक आहुतिश्चाष्टमेतथा। सो प्योंकारयुतोब्रह्मन्कथम्पाठ्याविनोस्त्रिया १ वाचक उवाच॥ तदुच्चारंस्वपतिना कारयित्वा पतिव्रता।

थी बड़ीचातुरथी यहशंकाहोतीहै १वाचकबोलेजब दितिनेइंद्रके नाशकरनेवास्ते उपायकिया तब भगवान् मनाकियाहै अंबाजी अभीइन्द्रकीपुण्य बहुतहैअभी इन्द्रकानाश नहींहोगा परिश्रम मतिकरो भगवान्कीआज्ञाको नहींमानी इन्द्रकेनाश होनेवास्ते गर्भधारण किया भगवान् के वचनको नहीं माने इसवास्ते इन्द्रको कपट नहीं जानती भई पागलि होगई॥२॥ इ०भा० ष० शं०मं०अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८॥श्लोक॥५६॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी षष्ठस्कंधके अध्याय १९ श्लोक ७ में विष्णुको आवाहन आदि पूजन को मंत्र ॐकार सहित दितिसे कश्यप कहेथे तथा श्लोक ८। ९ में होम करने की बिधि कहेथे परन्तु ॐकार को तथा वेदके मंत्रोंकोस्त्री कैसे पठन करैगी क्योंकि स्त्रियोंको वेदपढ़ना तथाॐकारकापढ़ना सुनना दोऊ मनाहै दितिको कश्यप सुनाये तो ठीक है महा- रमाहैं पण दिति पठन कैसा किया होगा यह शंका है१वाचक बोले दिति पतिव्रताथी अपने पतिजो कश्यप तिनसे ॐकार को तथा वेदमंत्र को पढ़ायके आपु दूसराजो अक्षरहै स्तोत्र में जैसा नमोभगवते इस आदिले तिनकोपढ़ती भई इसवास्ते दोषनहीं भया ॐकार तथा वेदमंत्र आपु पढ़ती तबतो दोष

चणसंयुक्तो मूर्खवद्विजहासच। जगतःपितरौदृष्ट्वा गिरिजाशंकरौकथम् २ वाचक उवाच ॥ वलिवत्कृतवान्कर्म पूर्वविद्याधरस्यसः । जहाराक्षीणपुण्यस्य राज्यंमंत्रप्रभावतः ३ अतोभगवतोनुज्ञाम्प्राप्यमायाविमोहिनी। विद्याधरंमोहयित्वा कार्यमेतदकारयत् ४इति०भा०ष० शं० मंजर्य्यांसप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी१७॥श्लो०५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रनाशायसागर्भन्दधौक्रोधेनकामतः । कथंतयानविज्ञातस्सहस्राक्षोन्यरूपवान् १ वाचकउवाच॥ ईश्वराज्ञांसमुल्लंघ्य कार्यकर्तुसमुद्यता

शेषकी कृपा चित्रकेतुकेऊपर बहुतथी १ इतना लक्षणों करिके युक्त चित्रकेतु जगत्के माता पिता जो शिव तथा पार्वती को देखिके क्यों हंसता भया २ वाचक वोले जैसा बलि राजा यज्ञ करिके इन्द्र के राजको छीनलिया आप इन्द्र होगया तब जिस पुण्य करिके इंद्र राज पाया था वो पुण्य नष्ट नहींभईथी थोरी बाकी थी इस वास्ते भगवान् वामन रूप धरिके इंद्रको राज देते भये तैसा कर्म चित्रकेतु भी किया विद्याधरों के राजकी पुण्य नष्ट नहीं भईथी परंतु चित्रकेतु मंत्र जपिके विद्याधरों का राजा हुवा ३ इसी वास्ते भगवान् अपनी मायाको आज्ञा देके मायासे चित्रकेतुको मोहित करिके शिवको द्रोहकरायके चित्रकेतुको नष्ट किया४ इ० भा० ष०शं० सं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये दितिने इन्द्रको नाश करने वास्ते गर्भको धारण किया तब इंद्रने दितिको गर्भ नाश करने वास्ते कपट करिके दिति को सेवन करने लगा पणदिति को क्यों नहीं मालूम पराकि यह इन्द्र है क्योंकि दिति कुछ गँवारि नहीं

अतोमुमोहमोहेन नबुबोधशचीपतिं २ इति०भा०ष० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ श्लो०५६॥

श्रोतार ऊचुः॥ विष्णोरावाहनाद्यर्चा मंत्रश्चोंकार संयुतः। उक्तंचसप्तमश्लोक आहुतिश्चाष्टमेतथा। सो प्योंकारयुतोब्रह्मन्कथम्पाठ्याविनोस्त्रिया १ वाचक उवाच॥ तदुच्चारंस्वपतिना कारयित्वा पतिव्रता।

थी बड़ी चातुरथी यह शंका होती है १ वाचक बोले जब दितिने इंद्रके नाशकरने वास्ते उपायकिया तव भगवान् मना किया है अंबाजी अभी इन्द्रकी पुण्य बहुत है अभी इन्द्रका नाश नहीं होगा परिश्रम मतिकरो भगवान् की आज्ञा को नहीं मानी इन्द्रकेनाश होनेवास्ते गर्भधारण किया भगवान् के वचनको नहीं माने इसवास्ते इन्द्रको कपट नहीं जानती भई पागलि होगई॥२॥ इ०भा० ष० शं०मं०अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८॥ श्लोक॥५६॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी षष्ठस्कंधके अध्याय १९ श्लोक ७ में विष्णुको आवाहन आदि पूजन को मंत्र ॐकार सहित दितिसे कश्यप कहेथे तथा श्लोक ८। ९ में होम करने की बिधि कहेथे परन्तु ॐकार को तथा वेदके मंत्रोंकोस्त्री कैसे पठन करेगी क्योंकि स्त्रियोंको वेदपढ़ना तथा ॐकारकापढ़ना सुनना दोऊ मना है दितिको कश्यप सुनाये तो ठीक है महात्माहैं परण दिति पठन कैसा किया होगा यह शंका है १ वाचक बोले दिति पतिव्रताथी अपने पतिजो कश्यप तिनसे ॐकार को तथा वेदमंत्र को पढ़ायके आपु दूसराजो अक्षरहे स्तोत्र में जैसा नमोभगवते इस आदिले तिनकोपढ़ती भई इसवास्ते दोषनहीं भया ॐकार तथा वेदमंत्र आपु पढ़ती तबतो दोष

पठेदन्न्याचरंसाध्वी नदोषोऽनेनसंभवेत् २ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी १६॥ श्लो० ७ से ९ तक ॥

होता पतिसे पढ़ायके कामकरि लिया ॥ २ ॥ इति० भा० ष० शं०मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ७ से ९ तक ॥

इतिश्रीभागवतषष्ठस्कंध शंकानिवारणमंजरीशिवसहायबुधविरचितासुधामयीटीकासहितासमाप्ता श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

सप्तमस्कंधे ॥ ७॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः॥ शुकेनोक्तंनमस्कृत्यकथयिष्येहरेःकथा म्।कृष्णम्मुनिस्प्रोक्त पूर्वानतुगाथाहरेश्वसा १ वाचक उवाच ॥ अस्यपूर्वमशोक्तायान ताहरिकथाःस्मृताः। नविचार्यैवमूचेसः कथयिष्येहरेःकथाम् २ प्रह्लादरक्षणार्थय विष्णुराविर्भविष्यति । सिंहरूपेणभगवानतः

श्रोता पूछतेभये कि हेगुरुजी राजासे शुकदेवजीने कहा कि व्यासको नमस्कार करिके हरिकी कथा अबमैं कहौंगा बड़ी शंकाहै ऐसे वाक्यसे मालूम परताहै कि सप्तमस्कंध के पहिले जोस्कंध ६ वर्णनभये हैंउन्होंमें हरिजो भगवान् तिन की कथा नहीं है १ वाचक बोले शुकदेवजी ऐसा विचारि कै नहीं कहेथे परीक्षितसे कि स्कंध ६ में भगवान्की कथा नहीं है अब भगवान्की कथा मैं कहताहूं २ शुकजीने जानिलिया कि प्रह्लादकी रक्षाकरनेवास्ते भगवान् सिंहकोरूप धरिकै प्रगटहोवैंगे शास्त्रमें सिंहको हरिनामहै इसवास्ते शुक कहेथे कि हे राजन् अब हरिकहे सिंहरूप भगवान्की कथा मैं

प्रोक्तमिदंवचः ३ इतिश्रीभा० सप्त० शं० मं० शिव सहायवुधविरचितायांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिलोकेमुनयश्चक्रुर्दुःखितेसुखितेऽपिवा । उपदेशंकदापीत्थंयमेनापिकृतंश्रुतम् । नश्चक्रेसः कथंपत्न्या स्सुयज्ञस्योपदेशकं १ वाचक उवाच ॥ बाल्याद्यमस्यसाभक्तिं चकारनृपवल्लभा । अतोयमस्स मागत्य हत्वाशोकंददौगतिम् ॥२॥ इ०भा० स० शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वेच्छयाप्रददौब्रह्मा सर्वेषाम्वर

कहताहूं ऐसा कहेहैं ३ इति भा० स० शं० मं० सुधामयीटीकायांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये कि प्राणी दुःखीहोवै चाहे सुखीहोवै परंतु तीनलोकमें प्राणीको सुखहोनेवास्ते मुनिजन उपदेश करतेथे ऐसा शास्त्रमेंसुनाहै परंतु यमराज किसीको नहीं उपदेशकिहे ऐसाभी सुनाहै सो यमराज सुयज्ञ राजाकी स्त्रियोंको उपदेश क्योंकिये हे गुरुजी यहबड़ी शंकाहै १ वाचक बोलते भये सुयज्ञ राजाकी स्त्री बालपनसे यमराजकी सेवन करती थीं इसी वास्ते रानीको दुःखी देखिकै यमराज रानी के सामने आयकै ज्ञानदेकै शोकको हरिकै सुंदर गतिकहे पतिके लोक को रानीको भेज देते भये रानी ज्ञान पाइकै अपने पतिके पासगई इसवास्ते यमराज उपदेश करते भये २ इति० भा० स०शं०मं०द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोता पूछते हैं हेमुनिजी जो जो प्राणी ब्रह्माकी तपस्या किया उन सबको अपनी इच्छासे ब्रह्मा वर देतेभये ब्रह्माको

अनाज्ञप्तस्सुरैश्चास्य ज्ञापितोदेवतागणैः।
... १वाचक उवाच॥
... भावन्दातुंवरंहिसः। नइयेषसुराणा
...त्वाददौवरम् ॥ २ ॥ इ० भा० स० शं० मं०
... ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ हिरण्यकशिपुर्लेभे वरंयदितदा
। धर्म्मेविष्णौसुरेसाधौ गाविवेदेषुब्रह्मसु १ द्वेषंच
...यद्देतेषु हिरिणोक्तमिदंकथम्। द्वेषकारीसभविता तत्व
... २ वाचक उवाच ॥ पृथक्द्वेषम्प्रचक्रे

देवतोंने प्रार्थना नहीं किया कि तुम वरदेवो और इस हिरण्यकशिपु को देवतोंके कहे वर क्यों दिया यह बड़ा ...र्य है १ वाचक बोले हिरण्यकशिपु ऐसा विचारिकै तपस्या करने लगा कि वरदान लेकै भगवान् को वधन करोंगा हिरण्यकशिपुके मनकी वात जानिकै ब्रह्माके हिरण्यकशिपु के वास्ते वरदान देनेकी इच्छा नहींथी परंतु जव देवतोंने ब्रह्मासे कहेकि हमसव दुष्टके तपके तेज करिकै जलतेहैं ऐसा देवतोंको दुःख देखिकै तव ब्रह्मा वर देतेभयेइसवास्तेदेवतों की प्रार्थनासे ब्रह्मा दिहेहैं २ इति भा० स० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वर्णी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूछतेभये हिरण्यकशिपु जिस दिन ब्रह्मा से वरदान पाया उसीदिन से धर्म से भगवान् से देवतावों से साधुवोंसे गायसे ब्राह्मणोंसे वेदोंसे इन सवसे १ वैर करता भया तव भगवान् देवतोंसे क्यों कहेकि हे देवता लोगो डरो मति जव हमसे धर्मसे देवतोंसे गौसे वेदसब्राह्मणसे साधुसे वैर करैगा तव उसी वखत हम हिरण्यकशिपुको मार

स स्सर्वेष्वेतेषुराक्षसः। युगपद्भगवत्प्रोक्तो
श्यति ॥ ३ ॥ इतिश्री भा० स० शं०नि० मं
ध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शक्रादयश्चकम्पन्ति
रंतरम्। जीवन्तिराक्षसास्सर्वे यत्कृपादृष्टिवं
तस्यपुत्रः कथम्प्रोक्तोमुनिनाराजसेवकः। च
स्तस्यसर्दीनश्चकथम्मुने २ वाचक उवाच।
रोहितायेवैतेषान्तेसेवकाः स्मृताः। च

डालैंगे यह बड़ी शंकाहै २ वाचक बोले इन
जुदा वैर राक्षस करता था राजनीति विचारिकै

। ित: . ३ इतिश्री भा० स० शं० मं० पंच
चमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥
ऊचुः ॥ मानुष्यंजन्मप्रह्लादोवर्णयामा
। भगवद्भजनंत्यक्त्वादैत्यानान्तेनमानवाः १
उवाच ॥ सर्वैश्चप्राणिभिर्ज्ञातम्मानुष्यं जन्मउ
तत्रापिहरिभक्तानामतस्तेषांप्रलोभनम्।कर्तुंप्र
ः । ुध्यंज ु: २ इ० भा० स० शं०
ऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ लो० ॥ १ ॥
॥र ऊचुः ॥ स्वाश्रमेजननान्नीत्वानारदोमेतद्
सावसदैत्यपुत्रान्वैप्रह्लादोक्तमिदंवचः १ नचा

द नहीं है इसवास्ते शुक्रके पुत्रको नारद राजसे-
३ इति भा० स० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचम
लोक १२ ॥
ता पूछतेभये कि दैत्योंके बालकोंसे प्रह्लादने भग-
भजन त्यागिके मनुष्यके जन्मकी तारीफ किया तब
ोंके बालक मनुष्य नहींथे वोतो राक्षसोंके पुत्रथे यह
काहै १ वाचक बोले सबप्राणी जानते हैं कि मनुष्य
बसे बड़ाहै तिसमनुष्योंमें भी भगवान्के भक्त बड़ेहैं
ते दैत्यके पुत्रोंको लोभ देखानेवास्ते मनुष्य जन्मकी
ह्लाद करतेभये प्रह्लाद विचार किहे कि ये लोग
रको कर्म सुनिके मनुष्यसरीके भगवान्में प्रीतिकरैंगे
ा० स० शं० मं० षष्ठऽध्याये षष्ठवेणी ६ श्लोक १ ॥
ा पूछतेभये राक्षसोंके बालकोंसे प्रह्लाद कहे कि
नि मेरी मैयाको अपने आश्रमपर लैगये तब मेरी मा

श्रमोनारदस्यनतस्यस्थिरताश्रुता । तयाकृतः
सश्शंकेयम्महतीहिनः २ वाचक उवाच ॥
नार्थम्वैबद्रिकायांशुभाश्रमम् । ना.५. [illegible]
न्त्वासोभुवनत्रये। करोतिभजनंविष्णोस्तत्रस्था
यम् ३ इतिश्री भा० स०शं० नि० मंजर्यां सप्तमे
ये सप्तमवेणी ॥ ७ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जयहुर्दे [illegible]
शासनम् । लोकेवेदेपितेषाम्वैननामाऽपिश्रुतंचनः
न्यनानामपिश्रेष्ठानामन्न्येषांचतपस्विनाम्। [illegible]
नारदके आश्रममें टिकतीभई जबतक मेरापिता [illegible]
आयानहीं तबतक १ हेगुरुजी हमलोगोंने ऐसा सुनाहै
स्त्रोंमें कि नारदमुनिके आश्रम नहीं है तथा नारदमुनि
स्थानपर घड़ीदोचार टिकतेभी नहीं तब नारदके अ
प्रह्लादकी मा कैसे बहुत दिनतक टिकती भई यह ब
शंकाहै २ वाचकबोले भगवान्को भजन करनेवास्ते ब.
श्रममें नारदको गुप्त आश्रम है तीनलोकमें नारद भ्र.
करिके अपने आश्रमपर आयके ईश्वरकोभजन करतेहैं ।
के आश्रमपर जोजीव बसतेहैं उनको किसीकी भयनहींहै।
इसवास्ते प्रह्लाद दैत्यके बालकोंसे कहहैं ३ इति भा०
शं० नि० मंजर्यां सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ७ श्लोक १.

श्रोता पूछतभये राक्षसोंके लड़िकोंने प्रह्लादसे .
सिखतभये परंतु ज्ञानियोंका नाम लोकमें तथा शास्त्रमें
जीवोंको मालूम परता है परंतु उनको तो नाम
तथा लोक में हम तो नहीं सुने किधरगए वो लड़
हे गुरुजी छोटा तपस्वीको बड़ा तपस्वीको और जो ..

श्रुतन्नश्च कुत्रतेसंगताःप्रभो २ वाचक उवाच ॥ आग त्यभार्गवोदृष्ट्वादैत्यपुत्रान्विरागिनः।पुनस्ताञ्छिक्षयामास तद्धर्माञ्छापन्नासतः ३ बालत्वात्तत्रजुस्सर्वे प्रह्लादशिक्षणन्तथा । राक्षसंकर्मतेचक्रुरतोनैवतपस्विनः ४ इतिश्री भा० स० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टम वेणी ८ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रह्लादेप्रीतिरधिका हरेरद्भुतकर्मणः।तत्कथंनददौशीघ्रम्वरंचतत्यजेरुषम्।विलंबंकृतवान्भूरि भ्रमोयम्वर्तते च नः १ ॥ वाचक उवाच ॥ तथा ब्रह्मज्ञानीहै उन सबको नाम हमलोग सुनाहै परंतु प्रह्लाद के शिष्योंको नाम हम नहीं सुना प्रह्लाद से ज्ञानलेकै वो लोग किस लोकको गये यह भ्रमहै २ वाचक बोले यह उत्पात प्रह्लाद की तथा हिरण्यकशिपुकी यज्ञ होना प्रारंभ भया तब शुक्राचार्य उसके पास नहींथे पीछेसे आयकै सबउत्पात तथा राक्षसों के लड़कों को सुंदर कर्म करता देखिकै लड़कों से शुक्र बोलेकि यहकर्मतुम सबजनेत्यागिदेवो नहींत्यागोगे तोहमतुम सबको भस्म कर देवैंगे ऐसा डरपाय कै लड़कोंको फिरराक्षस कर्म सिखाते भये ३ बालक लोग तपस्या में कच्चेथे इसवास्ते डरकै सुंदर कर्म त्याग दिहे और राक्षस कर्म करने लगे इस वास्ते तपस्वी नहीं भये विना तपस्वीभये नाम कैसा मालूम परैगा ४ इतिभा० स० शं० नि० मं० अष्टमे ऽध्याये अष्टम वेणी ॥ ८॥ श्लोक ॥ १॥

श्रोता पूछत भये नृसिंह रूपभगवान् की वड़ी प्रीति प्रह्लाद के ऊपरथी फिरि जल्दी क्रोधको त्यागिकै प्रह्लादको बरदान क्यों नहीं दिहे ऐसी प्रीति करिकै फिरि वर देनेमें

शीघ्रंनतत्यजेक्रोधं नचतूर्णम्बरन्ददौ॥लोकान्ख्यापयितुं चक्रे विलम्बञ्जगदीश्वरः २ इति० भा० स०शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ६ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सार्द्धकनककेशेन चत्वारःपितरो गताः । प्रह्लादस्यैकविंशैश्च पितृभिःकथमुक्तवान्।हरिस्तन्तेपितापूतः शंकास्तिदारुणाचनः १वाचक उवाच॥ व्यतीतांश्चतुरोज्ञात्वा भविष्यन्दशसप्तच । एकविंश

विलंब क्योंकिये यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले श्रीनृसिंहजी जल्दी क्रोध नहीं त्याग किये तथा प्रह्लादको जल्दी वरदान भी नहीं दिहे तिसका कारण यहहैकि लोकमें प्रह्लादकी भक्तिकी बड़ाई कराने वास्ते क्रोध त्यागनेमें तथा वरदान देनेमें देर किये लोकमें सब ऐसा वचन कहैंगेकि सब देवता नृसिंहजीकी स्तुति किये परन्तु क्रोध नहीं शांतभया जब प्रह्लाद स्तुतिकरते भये तब उसी वखत क्रोधको त्यागि देते भये ऐसा भगवान् को प्रह्लाद प्याराहै इसवास्ते क्रोध देर को त्यागते भये तथा वरदान भी देनेमें देर कियेहैं २ इति भा० स० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥६ ॥श्लो०॥२ ॥

श्रोतापूछते भये प्रह्लादसे नृसिंहजी कहेकि तुमारा बाप एक बीस पीढ़ी को संग लेके बैकुंठको गया हे गुरुजी इस बातमें हमारे सबको बड़ी शंका होती है क्योंकिहिरण्यकशिपु सहित गने तब चारि पीढ़ी होतीहैं क्योंकि ब्रह्मा १मरीचि २ कश्यप ३ हिरण्यकशिपु ४ ये चारि भयेतो एकविंशपीढ़ी भगवान् क्यों कहेथे १ वाचक बोले चारि पीढ़ी बीती जानिके तथा सतरह १७ पीढ़ी अगाड़ी की लेकेइस प्रकारसे पीढ़ी१७

मिताश्चैते हरिणोक्तास्तद्वाध्रुवम् २ इति० भा० स० शं०मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी १० ॥ श्लो०॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युगत्रयेद्विजास्सर्वे गुणज्ञाःकमलापतेः।येन्यनाज्ञानवार्तायान्तेऽपिनारायणेरताः१जानंति त्वद्विधाविप्राश्चरित्रं कमलापतेः । नारदंप्रत्युवाचैवन्धर्मराजःकथं गुरो२वाचक उवाच॥ ब्राह्मणान्तपसोन्मत्तान्केचिद्भूपांश्चराज्यतः।धर्मराजोविचार्य्यैवम्प्रोवाचनारदंप्रति ॥ ३ ॥ इ० भा० स० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥नकस्यापिश्रुतंलोके लौकिकेनावलो

भगवान् कहेहैं २ इतिश्री भा० सप्तमस्कंधे शं० नि० मंजर्य्यां सुधामयी टीकायां दशमे ऽध्याये दशमवेणी ॥ १०॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछतेहैं कि हेगुरुजी सतयुग त्रेता द्वापरमें सब ब्राह्मण भगवान्के गुणको जानतेथे जो कोई ब्राह्मण ज्ञान की बात में थोरा समझताथा सोभी भगवान् के चरणोंमें प्रीति करता था १ हे गुरुजी तब फिरि नारदसे युधिष्ठिर क्यों कहेथे कि भगवान्के चरित्रको आपुसरीक ब्राह्मण जानते हैं दूसरा नहीं जानैगा यह बड़ी शंकाहैकि नारद ज्ञानी भये और सब ब्राह्मण अज्ञानी भये २ युधिष्ठिरने किसी किसी ब्राह्मणों को तपस्या करिकै उन्मत्त जानिकै तथा किसी किसी राजोंको भी राजसे उन्मत्त जानिकै नारदसे ऐसा वचनकहे ३ इति भा० स०शं० मं० एकादशे ऽध्याये एकादश वेणी॥११॥श्लो०॥४॥

श्रोता पूछते भये ॥ हे गुरुजी यहबात शास्त्रमें हमलोग नहीं सुना तथा लोकमें देखा भी नहीं कि गुरुकी स्त्री शिष्य के

कितम्। गुरुस्त्रीभिश्चशिष्यस्य कृतमभ्यंजनादिकं।कार येन्नगुरुस्त्रीभिरात्मनो ऽभ्यंजनादिकम्।कथंमुनिरुवाचेदं युधिष्ठिरधर्मनंदनम् २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वाकलियुगं घोरमागतंसन्निधौमुनिः तज्जानांशिक्षणार्थाय वीक्ष्य मेतदुवाचह ॥ ३ ॥ इति० भा० स०शं०नि०मं०द्वादशेऽ ध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ मुनिनाजगरेणोक्तं सर्वस्भुंज्मिपरे च्छया । ददातिकोपिचेद्दुष्टः प्रमदाद्यन्यकुत्सितं १

देहमें मालिश करिके स्नान करायके तेल फुलेल शिष्यके देह में लगावै तथा शिष्यके बार झार देवै शृंगार करिदेवे आंखों में अंजन लगाय देवै १ फिरि नारद मुनि धर्मराजसे क्योंकहे कि जवान शिष्य होजावे तो अपनी देहको मंजन आदि कर्म गुरुकी स्त्रीसे न करवाना तथा करवावैगा तो भ्रष्ट होजावैगा यह बड़ी शंकाहै २ वाचक बोले हे श्रोताहो जब नारदको युधिष्ठिरको संवाद भया उसी दिनके थोरेही दिन पीछे कलि- युगको भूमिमें राज नारद मुनि जानिकै ऐसा वचन युधिष्ठिर से कहि रहेथे कलियुगमें जन्मैंगे मानुष्य तिनको सिखाने वास्ते क्योंकि कलियुगमें ज्ञान रहना कठिनहै ३ इ० भा० स० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक॥ ८॥

श्रोता पूछते भये अजगर मुनि प्रह्लादसे कहेकि हमारे वास्ते कोई चीज भली बुरी कोईभी प्राणी देताहै तब उस चीजको हम ग्रहण करतेहैं परन्तु इच्छा किसी चीजकी हम नहीं करते हे गुरुजी संसारमें अनेक प्रकार के जीवहैं जो कोई दुष्ट जीव मस्करी करने वास्ते स्त्री आदि लैके और जो खराबचीज है जैसा मदिरा आदि लैआयकै अजगर मुनिको

भविष्यातिमहादुःखम्मुनिनोक्तंकथंत्विदम् । तदाकिं क्रियतेतेनतद्ग्रहाग्रहणेपिच२वाचक उवाच॥सत्यम्मुनि रेणोक्तंसर्वभोक्ताहिसस्स्मृतः । यश्चैवंकर्तुमिच्छेद्वतं वेधद्धतितत्क्षणे । हरेस्सुदर्शनन्तस्य रक्षणेयोजित स्सदा ॥ ३ ॥ इति० भा० स० शं० मं० त्रयोदशेऽध्या येत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३९ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ लोकेवेदेश्रुतन्दृष्टन्नचैवंनश्चकर्हि चित्। योऽस्त्र्यर्थेविजहौप्राणान् जघानापितरंगुरुम् १ मैथिल्यर्थेरावणश्च द्रौपद्यर्थेचकौरवाः । एवन्नैवच

देवेगा तो ग्रहण करते कि त्याग करते २ तो अजगर मुनि कैसा करेंगे बड़ा दुःख होवैगा ग्रहण करेंगे तब नरकमें पड़ेंगे त्याग करेंगे तो भेददृष्टि कहावैंगे २ वाचकबोले अजगर मुनि सत्यकहेहैं सब चीजके भोग करनेवाले अजगर मुनि हैं परन्तु जो कोई ऐसा दुष्ट कर्म करनेको विचारभी करैगा तब उसको उसी वखत भगवान् को सुदर्शन चक्र भस्म करि देवैगा क्योंकि अजगर मुनिकी रक्षा करने वास्ते सुदर्शन चक्रको भगवान् सदाहुक्म करिदिहेहैं कि इनकोकोई उपद्रव देवै उसको तुरत भस्म करना ३ इ० भा० स० शं० मं० त्रयो दशे ऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३९ ॥

श्रोता पूछते भये वेदमें ऐसा हमलोग नहीं सुना तथा लोकमें देखाभी नहीं कि स्त्री वास्ते कोई अपना प्राण त्यागि दिया होवे तथा पिता को गुरु को मारि डाला होवै १ जो कोई ऐसा कहे कि जानकी के वास्ते रामचंद्र रावण ब्राह्मणथा उस को मारिडाले तथा द्रौपदी के वास्ते पांडवने । द्रोणाचर्य आदि गुरुको मारिडाले तो ऐसा नहीं मानना

मन्तव्यो जीवानाम्मुनिनोदितम् २ वाचक उवाच तृष्णास्त्री नारदेनोक्ता नत्वियंलौकिकीतदा । त्यजन्त्यसून्गुरुंहंति सर्वेतृष्णासमन्विताः ३ इ० भा० स० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी १४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भोक्तव्यौद्वौद्विजौदैवे त्रयःपैत्र्येच नाधिकं । नारदोक्तिरियम्ब्रह्मन् कस्मिन्भोज्याश्चभूरिशः १ वाचक उवाच॥ नह्यत्रद्वौद्वयोरर्थो द्वौप्रकारौप्रगृह्यते। जितेंद्रियाश्चक्षुधिता भोजनीयास्त्वनेकशः २ तथात्रीन् त्रिप्रकारांश्च पुत्रस्त्रीशिष्यसंयुतान् । पैत्र्येप्रभोज

चाहिये क्योंकि रामकृष्ण तो पूर्णब्रह्म थे पामर जीवोंके वास्ते नारदकहे हैं २ वाचकबोले तृष्णारूप स्त्री वास्ते नारद कहे हैं संसार की स्त्रीके वास्ते नहीं कहे तृष्णा स्त्रीके वास्ते प्राणियोंने जीवको त्यागि दिया है तथा पिताको गुरुको मारि-डालते हैं ॥ ३ ॥ इ० भा० स० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दश वेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरु जी नारद मुनि युधिष्ठिर से को कि ब्राह्मण दो २ देवकार्य में भोजन कराना चाहिये तथ पितृकर्म में तीनब्राह्मण भोजन कराना चाहिये तो देवकर्म पितृकर्म से और दूसराकर्म कौन है जिसमें बहुतसे ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये १ वाचक बोले(द्वौ)इसका दोब्राह्मण अर्थ नहीं है(द्वौ)को यह अर्थ है कि दोप्रकार को ब्राह्मण भोजन कराना देवकर्म में एक तो जितेंद्रिय दूसरा भूखा इस प्रकार ब्राह्मण देवकर्म में बहुत भोजन कराना चाहिये २ तिसी प्रकार से चतुर प्राणी पितृकर्म में पुत्र स्त्री शिष्य संयुक्त ऐसा तीनप्रकार को ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये पुत्र ।

येद्विप्रान् सख्यातान्सुकौशलः ३ इति० भा० स० शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

स्री २ शिष्य ३ ये तीनप्रकार ऐसा अर्थ उसश्लोकको है दो ब्राह्मण तथा तीन ब्राह्मण नहीं है जो दो ब्राह्मण तीन ब्राह्मण अर्थ होताती पहिले युगोंमें राजा लोग असंख्य ब्राह्मण क्यों भोजन कराते ॥ ३ ॥ इति भा० स० शं० मं पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

इतिश्रीमद्भागवतसप्तमस्कंधशंकानिवारण
मंजरीशिवसहायबुधविरचितासुधामयी
टीकासहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

अष्टमस्कंधे ॥ ८ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते ॥

श्रोतारऊचुः ॥ त्रिविष्टपरचकस्स्वामिन् यमशास द्रमापतिः । यज्ञोहृत्वासुरगणान् भक्षितुं चागतान्म नुम् १ वाचक उवाच ॥ त्रीनृत्रिभ्यश्चैवयोपाति लो कान्छत्रुभ्यएव च । त्रिविष्टपस्यविज्ञेयस्संतोषश्च शची पतिः २ कस्याऽपिमन्यतेशिक्षामिन्द्रोनैवजगत्पतिः ।

श्रोता पूछते भये हे स्वामिन् स्वायंभुव मनुको खानेवास्ते आये जो राक्षस तिनको मारि के त्रिविष्टप को भगवान् सिखाते भये सो त्रिविष्टप क्या चीज है ? वाचक बोले चोर जारी जुवारी इनतीन दुष्टसे तीनों लोककी रक्षा जो करै तिस को नाम त्रिविष्टप है त्रिविष्टप इंद्रको शास्त्र में कहा है तथा दूसरा अर्थ यह है कि काम क्रोध लोभ इन तीन दुश्मनों से जो तीन लोककी रक्षाकरै तिस को त्रिविष्टप नाम है संतोष को भी त्रिविष्टप शास्त्र में कहा है क्योंकि काम क्रोध लोभ इनको नाश संतोषसिवाय दूसरा कोईभी नहीं करसकेगा२ हे श्रोता हो इन्द्रतो अभिमान में डूबि गया है किसी को भी सिखावन नहीं मानता इसवास्ते यज्ञ भगवान् संतोष को सिखाते भये कि भाई तुम काम क्रोधलोभ इनदुष्टों से तीन

अतोऽन्वशासत्संतोषंत्वञ्जीवान्रक्षसर्वदा ३ इतिश्री भा० श्र० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महादाश्चर्यमेतद्धिहरयश्चापिद्राविताः । गजेंद्रगंधमाघ्राययेतेषाम्मदनाशकाः १ वाचक उवाच ॥ भवद्भिश्चैवसत्योक्तं हरयोघ्नंतिवैगजान् । गजःप्राकृतिकोनायन्तपोरक्षत्ययंसदा । अतोदृष्ट्वाद्रवन्त्येनंहरयोगंधताडिताः ॥ २ ॥ इति०भा० श्र० शं०मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

लोक की रक्षाकरो हे श्रोताहो त्रिविष्टप संतोषहै३इति०भा० श्र० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥१ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये हाथियों के अभिमान को नाश करने वाले जो सिंहसो सब सिंहोंने उस गजकी देहकी सुगंधिको संघिकै वनछोड़िकै भागिजाते भये बड़े आश्चर्यकी बातहै एक सिंहको देखिकै हाथियोंको यूथप भागताहै सो उसके गंधिको सूंघिकै सब सिंह भागते भये गुरुजी कालको जीवखाने लगा १ ।वाचक बोले हे श्रोता हो आप सब जने सत्य कहते हो हाथियों को सिंह मारते हैं सिंहके सामने हाथी कभी भी नहीं खड़ा हो सकेगा सिंह के वनमें हाथी जाता भी नहीं यह बात जो खुद प्राकृत हाथी होता है तिस की है यह हाथी तो तपस्वी था शापसे हाथी भया था परन्तु इसको राति दिन इसका पेश्तर का तप रक्षा करताथा उस तप की सुगन्ध से भस्म होते जो सिंह सो सब भागि गये २ इति भा० श्र० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ न्यूनंकार्य्येपिदुद्राव भगवान्कमलापतिः। तुच्छोभूमिनरेशोऽपि नैवन्द्रवतिकर्हिचित् १ वाचक उवाच॥ज्ञानवैराग्ययज्ञादि तपोदानजपादिभिः। अन्यैस्सुकर्म्मभिस्तूर्णमाविर्भवतिनद्रुतम् २ स्वनामोच्चारणंश्रुत्वागोवत्सामिवधावति। अतोदुद्राववेगेननामोच्चारणमात्रतः ३ इति भा० अ० शं० मं० तृतीये० तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अनेकेहरिणास्पृष्टाऽनेकजन्मतपस्विना। विष्णुरूपन्नप्राप्तंतैर्गजेंद्रःप्राप्तवान्कथम् १

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी थोरा भी काम करने वास्ते भगवान् आपु से भागि के गजेंद्र को छुड़ाते भये यह बड़े आश्चर्य की बात है किसी देवता को भेजिकै काम कराय देते ऐसा ग्राह क्या दूसरा रावणादिक राक्षस भया था ऐसा तौ थोरे काम के वास्ते कोई पृथ्वी में गरीब राजा भी नहीं भागेगा १ वाचक बोले ज्ञान वैराग यज्ञ तप दान आदिलेकै और जो सुंदर कर्म तिन्हकर्मों करिके पुकारे हुये जो भगवान् सो जल्दी नहीं प्रकट होते २ परन्तु भगवान् को नाम लेकै कोई पुकारता है तौ भगवान् कैसा दौड़ते हैं जैसा वत्सके शब्द को सुनिकै गाय दौड़ती है इस वास्ते गजेन्द्र भगवान् को नाम लेकै पुकारा तब आपने नाम को सुनिकै भगवान् जल्दी दौड़ते भये ३ इति भा० अ० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ ३० ॥

श्रोता पूछते भये अनेक तपस्वी जिन्हों को भगवान् वार वार भेटते थे परन्तु वो तपस्वी लोग भगवान् के रूपमें नहीं प्राप्तभये और गजेंद्र भगवान्‌की देह जरासे छुइकै भगवान्

वाचक उवाच ॥ भक्तिम्प्रकुर्वतोविष्णोर्व्यतीतावहवो युगाः।गजेंद्रस्यचश्रोतारो व्यासेनोक्तन्नभूरिशः। अतः प्रापहरे रूपं गजेंद्रस्स्पर्शमात्रतः २ इतिश्रीभा० अ० शं०मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो०॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शप्तस्सुरेशोमुनिनान त्रिलोकंमुनीश्वरः। निश्श्रीकंयज्ञहीनंच कथंतद्भवत्तदा १ वाचक उवाच ॥ मुनिशप्तेसहस्राक्षे वलिरिन्द्रोवभूवह। तस्मान्निशाचरैर्यज्ञास्सश्रीकाश्च विनाशिताः २ इति० भा० अ० शं० मंपंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ५ श्लो०१६ ॥

के रूप में प्राप्त हो गया यह वड़े आश्चर्य की वात है वाचक वोले हे श्रोता हो गजेंद्र को तपस्या करते करते बहुत युग वीति गये परन्तु गजेंद्र की तपस्या को व्यास जी बहुत प्रकार से नहीं वर्णन किये तप वलसे गजेंद्र भगवान् के रूप को प्राप्त भया २ इति भा० अ० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये कि हे मुनि जी दुर्वासा मुनि ने अकेल इंद्र को शाप दिये थे कि हे इन्द्र तेरी लक्ष्मी नाश हो जाय गी तथा तीन लोकको शाप नहींदियाथा तव तीन लोक फिरि लक्ष्मी से क्यों हीन हुआ १ वाचक वोले मुनि की शाप इंद्र को भई तव तीन लोकको राजा वलि होता भया इस कारण से तीनलोक को यज्ञ करिके तथा लक्ष्मी करिके राक्षस लोग हीन कर देते भये इस वास्ते तीन लोक यज्ञ करि के तथा लक्ष्मी करि के हीन भया २ इति भा० अ० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० १६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ हारनूपुरकेयूरवलयादिविभूषणः। शिशुस्त्रियोरलंकारा धृताभगवताकथम् १ वाचकउवाच॥ ब्रह्मादीनांसुराणांच वालरूपस्यवैहरेः। उपासनाप्रिया नित्य मतोवालविभूषणम्। धृत्वाभूत्वाशिशुर्विष्णुस्तूर्णमाविर्भविष्यति २ इतिश्रीभा० अ० शं०मं षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी॥ ६ ॥श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ सुरान्विमूर्च्छितान्दृष्ट्वा सर्पश्श्वास विषाग्निना। किम्बवृषुर्घनाब्रह्मन् भगवद्वशवर्तिनः १ वाचक उवाच॥ कुमारौददतुश्शीघ्र विषवीर्यहरान्रसान्। तान्मिलित्वाजलेतूर्णम्मेघावृष्टिम्प्रचक्रिरे २ इति० भा० अ० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवानने हार तथा पायजेव तथा कंकन कुंडल कंगना आदि लेके वालक को तथा स्त्री को ऐसा गहना क्यों धारण करते भये १ वाचकवोले ब्रह्मा आदि देवतों को वालक रूप भगवान् की उपासना वड़ी प्यारी है इस वास्ते जल्दी बालकरूप होके तथा वालकको सव गहना धारण करके ब्रह्मादिकको दर्शन देते हैं इसवास्ते वालक को गहना धारण करते हैं २ इति भा० अ० शं० मं० षष्टेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ शूलोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी सर्पके मुखकी श्वाससे निकला जो विष तिस विषकी अग्नि करिकै मूर्च्छित जो देवता तिनको देखिकै भगवान्की आज्ञा करनेवाले जो मेघ सो काहेकी वर्षा करते भये १ वाचक वोले जहरके वीर्यको नाशकरनेवाला रस अश्विनीकुमार वैद्य मेघोंको देतेभये उसी रसको मेघोंने

श्रोतार ऊचुः ॥ बभूवुर्दानिनस्सर्वेभूपाश्चैवयुगेयुगे। दीर्घायुषश्चार्थपूर्णेनतेषामुपमाकृता १ यथोपमाशुकेनैव कृताराज्ञःपरीक्षितः । सुरवृक्षार्थपूर्णेवै कथमेतद्गुरो वद २ वाचकउवाच ॥ न तु संसारिकार्थानामर्थिना मत्थंपूर्तये । उपमैषाप्रज्ञातव्या श्रीमद्भागवतार्थिनः । कथाप्रश्नर्द्धिनाचोक्तस्सुरवृक्षसमोनृपः ३ इतिश्रीभा० अ०शं०मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८ श्लो० ६ ॥

जलमें मिलायकै अकेले देवतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते भये २ इति भा० अ० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ७ श्लो० १५ ॥

श्रोता पूछतेभये सतगुग त्रेता द्वापरमें बड़े बड़े दानी राजा होतेभये जिनकी बड़ी आयुष होती भई परंतु सब प्राणियों की आशा पूरण करने में तिनकीभी ऐसी उपमा मुनियोंने नहीं किया १ जैसी उपमा याचकोंका मनोरथ पूरण करनेवास्ते शुकदेवजीने कल्पवृक्षकी उपमा परीक्षितकी किया ऐसी उपमा कैसी राजोंकी नहींभई यहबड़ी शंकाहोतीहै शिव ३।२ वाचक बोले संसारके सुखको जो याचना करनेवाले प्राणी उसकी आशा पूरण करने में यह उपमा मुनिने परीक्षितकी नहीं कियायह उपमातो जो कोई भागवत की याचना करतेहैं उन की याचना पूरण करने में परीक्षितको शुकदेवजी कल्पवृक्ष तरीके कहे हैं क्योंकि परीक्षित् राजा भागवत को सुनिके पूंछि पूंछि बहुत कथाका विस्तार किया इसवास्ते कल्पवृक्ष की उपमा राजा परीक्षितको शुकदेवजीने दियेहैं ३इति भाग वत अष्टमस्कंधे शंकानिवारण मंजर्यां अष्टमेऽध्याये अष्टम वेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वंचनेराचसानाम्वैधृता भागवता कथम्। अन्यरूपान्परित्यज्यानिन्दितास्वैरिणीतनुः १ चेत्तेषाम्मोहनार्थाय तथापिमाययान्यथा २ वाचक उवाच ॥ भगवान्नारदंचक्रेसुंदरीम्प्रमदाम्पुरा। बहुवर्ष सहस्राणिव्यतीतानिमुनेस्सदा ३ मायामुक्तश्चतंशेपेत्व मप्येवम्भाविष्यसि। अतोधृताचहरिणानिंदितास्वैरि णीतनुः ४ इति भा० श्र० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नप्रापुश्चामृतंसर्वेवासुदेवपराङ्

श्रोता पूछते भये राक्षसों को छलनेवास्ते भगवान् सब रूप त्यागिके संसार में वड़ी निंदायोग्य वेश्याको शरीर क्यों धारण करते भये १ जो कोई कहौकि राक्षसों को मोहने वास्ते माया करिके वेश्या भये तौभी अन्याय है क्योंकि दूसरे रूप करिके राक्षसों को न मोह करि सक्के थे भगवान् वड़े वड़े महात्मों को मोहकरि देतेहैं तौ राक्षसों के मोहकरने में क्या कठिनथा २ वाचक वोले सतयुग में भगवान् नारद मुनिको माया करिके स्त्री वनाय दिया देवीभागवतमें लिखा है तव नारद को स्त्रीभये वहुत हजारों वर्ष वीतिगये ३ नारद मायासे छूटिगये तव पुरुष रूपहोके भगवान् को शाप देते भये कि हे भगवन् तुम हमेसरीके कभी स्त्रीरूप होजावोगे हे श्रोताहो इसवास्ते भगवान् वेश्या को शरीर धारण करतेभये ॥ ४ ॥ इतिश्री भा० श्र० शं० मंजर्य्यांनवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछतेभये कि हेगुरुजी राक्षसतो भगवान्के वैरीथे

।खाः । दितिजाविष्णुभक्तश्चकथन्नप्राप्तवान्बलिः १
।चक उवाच ॥ अमृतस्यबलेर्नेच्छाराजधर्म्मान्समी
ःयच।कुलधर्म्मान्ज्ञातिधर्मानतस्तेनेदमाकृतम् २इति
श्री भा० अ० शं०मं० दशमे ऽध्यायेदशमवेणी॥१०॥
।लोक॥१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यदाम्टतासुराञ्छुक्रोजीवयेद्दिय
पास्वया । तदातेषांकथंनाशोभविष्यतिदुरात्मनाम् १
वाचक उवाच ॥ यावत्तेजोराक्षसानामधिपस्यप्रवर्तते।

इसवास्ते वह अमृतको नहीं पाये परन्तु बलि राजा तो भग-
वान्को भक्तथा इसवास्ते वो अमृत क्यों नहींपाया यह बड़ा
भ्रम होताहै १ वाचक बाले अमृत लेनेकी इच्छा बलिराजा
को नहींथी जो कोई कहै कि अमृत लेनेकी इच्छा नहींथी तो
यह काम क्यों किया उत्तर राजाको धर्म देखिकै कि राजाको
सबकामकी परीक्षा लेना चाहिये तथा जाति धर्म देखिकै
जातिकी आज्ञा बलि न मानता तौ जाति नाराज होजाते.
इसवास्ते यह काम बलिने किया तथा बलिको अमृत नहीं
प्राप्त हुआ २ इति भा० अ० शं० मं० दशमेऽध्याये दशम
वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये शुक्रजी मरेहुये राक्षसों को अपनी विद्या
रिकै जिआय देतेथे तब राक्षसोंको नाशकैसाहोताथा१ वाचक
ले जबतक राक्षसों के मालिक के तेजकी वृद्धि रहती थी
ब शुक्राचार्य राक्षसोंको जीताकरि सकैथे जब राक्षसों के
ालिक को तेजनष्ट होजावैगा तब शुक्राचार्य राक्षसोंको
भी भी नहीं जिआय सकैंगे क्योंकि समयके प्रताप को

तावज्जीवयतेदैत्यान्तद्विनष्टेनसः क्षमः २ इति भा० अ० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी॥ ११०॥ श्लोक ॥ ४७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोमहाभगवाञ्छम्भुः कथंकाम वशोभवत् । एषानो महतीशंका छिन्ध्याचार्य्यवचो सिना १ वाचकउवाच ॥ युगानाम्बहुसाहस्रं मायाचक्रे तपःपरम् । शिवेनोक्तावरम्ब्रूहि तयोक्तस्त्वंवशीभव २ शिवेनोक्तपुनर्माया क्षणैकम्बशगस्तव। भविष्यामिचश्रो तारश्चातःकामवशोभवत् ३ इतिश्रीभा० अ० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी १२॥ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

भगवान् भी मानते हैं तो शुककी क्या वात है॥ २ ॥ इति- भाग०अ०शं०मं०एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी११श्लोक४७।

श्रोता पूछते भये महादेव कामके नाश करने वाले हैं फिरि भगवान्को स्त्रीरूप देखिकै कामकी वश क्यों होगये यह हमारे लोगों को वड़ी शंका है हे गुरुजी आप अपने वचन रूप तरवारि करिकै इस शंकाको काटो १ वाचक वोले अनेक हजारों युग(नमःशिवाय)इसमंत्रको जपि के मायातप करती भई तब एक दिन शिवजी वोले हे माया जो वर तेरेको चाहै सो माँगु तव माया वोली हे शंकर तीन लोकमें जो देहधारी प्राणी तथा देवता विष्णु ब्रह्मा आदिजेके सब मेरे वश हैं एक आपु मेरे वश नहींहो सो आधी घड़ी के वास्ते आपभी वशि हो जावो २ शिवजी माया से कहेकि क्षण १ तेरी वश हम रहैंगे हे श्रोताहो इसवास्ते शंकर काम के वश भये हैं कुछ कामी होके कामके वश नहीं भये ३ इतिभा०अ०शं०मं० द्वादशऽध्याये द्वादशवेणी१२श्लोक२७॥

श्रोतार ऊचुः ॥प्रभाकरसुतश्श्रीमान् सावर्णेरनुजः शनिः। कथम्पीडांकरोत्यस्य सततंजगतःप्रभो १वाचक उवाच॥ज्ञात्वोन्मत्तंत्रिभुवनं वरंलब्ध्वापितामहात्तेषाम्मदविनाशाय शनिःपीडांकरोतिवै २ इति भा० श्र० शं०मं०त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी॥१३॥श्लो० १०॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ग्रस्तान्पश्यन्नृषयो वेदान्कालेनभो गुरो। चतुर्युगान्तेकिंस्याद्वैफलन्तेषाम्प्रदर्शने १ वाचक उवाच॥वेदानांयावदुत्पत्तिः पुनश्चैवभविष्यति।तावत्समीच्यमुनयो वेदधर्मचतुर्विधम् २ कथयन्तिमनुष्येभ्यो धर्म्मालोपोभवेद्ध्रुवम्। एतदर्थम्प्रपश्यन्ति ग्रस्तान्वे

श्रोता पूछते भये शनिश्चर सूर्य के तौ पुत्र तथा सावर्णि मनुके छोटे भाई ऐसे कुल के वंश होके फिरि नित्य संसार को दुःख क्यों देते हैं १ वाचक बोले तीन लोक को उन्मत्त शनिश्चर देखिके बिचार किये कि सब प्राणी अभिमान करिके ईश्वरको भूलि गये ऐसा शनिजी विचारि के ब्रह्मा से बरदान लेके उन्मत्त जो जीव तिन को अभिमान नाश करने वास्ते दुष्ट जीवों को दुःख देते हैं और जो सज्जन हैं उनको नहीं दुःख देते २ इति भा श्र० शं० निवारण मंजर्य्यां त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी चारियुगके अन्त में काल करिके ग्रसित हुआ जो वेद तिनको ऋषिलोग देखतेहैं परन्तु तिन ऋषियोंके देखने में क्या फलहुआ १ वाचकबोले जब तक चारि वेदों की उत्पत्ति फिर होवेगी तब तक ऋषियोंने वेदमें से चारो युगके धर्मको देखिके २मानुष्योंको कहते हैं मानुष्यलोग सुनिके धर्मको नाशनहीं करते जबऋषियोंसे मनुष्यलोग धर्म नहींसुनें

दान्मुनीश्वराः ३ इतिश्रीभा०अ० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विनाशताश्वमेधेन कृतेनेन्द्रासनं मुने। नरेणाधिष्ठितंकश्चिन्न श्रुतंशास्त्रसंचये १ इन्द्रो वशीकृतस्सर्वै राक्षसैरसकृच्छ्रुतम्। कथंशुक्रार्चनेनैव बलिःप्राप्तस्तदासनम् २ वाचक उवाच ॥ रेमेऽहिल्यांसहस्राक्षोयद्दिनेकामतापितः। तद्दिनेषष्ठिमेधस्य फलन्नष्टंबभूवह ३ चत्वारिंशावशिष्टंचाहिरण्यकशिपुस्तदा। तस्थौतदासनेपश्चाद्बलिनाधिष्ठितंचतत्। यथापुण्यन्तथाविष्णुस्सहायंकुरुतेसदा ४ इतिभा०अ० शं०मं०पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥ १५॥श्लो०॥३३ ॥

तब वेद तो उस वखत थे नहीं नष्ट हो जाते हे श्रोता हो इस वास्ते प्रसित हुये वेदों को ऋषिलोग देखते हैं ३ इति भा० अ० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी ॥ १४॥श्लो० ४ ॥

श्रोता पूछतेभये जो मनुष्य तथा जीव अश्वमेध यज्ञ नहीं करते सो प्राणी इन्द्र नहीं कभीहोता बिना इन्द्र भये इन्द्र की गादीपर क्यों बैठेगा ऐसा हमने सब शास्त्र में सुनाहै १ तथा ऐसाभी हम सुना है कि अनेक दफे राक्षसों ने इन्द्रको अपने अख्तियार में करि लियेहैं परंतु यह बड़ी शंका भई कि अकेले शुक्र को पूजन करिकै बलिने इन्द्र कोराज छीनि लिया तथा इन्द्रकी गादीपर बैठगया बिना अशवमेध किये २ वाचक बोले जिस दिन अहिल्याके संग इन्द्रने खोटा कर्म किया उसी वख्त ६० यज्ञकी पुण्य नष्ट होगई ३ चालीस ४० अश्वमेधको पुण्य इंद्रके पासरही तब हिरण्यकशिपु इन्द्रके आसनपर बैठताभया तिसके पीछे बलि बैठताभया जैसी

श्रोतार ऊचुः ॥ स्त्रीणान्नैवाधिकारोस्तिवेदमंत्रेषु कर्हिचित्। अदितिंकश्यपःप्रोचेनाग्नयश्चहुतास्त्वया त्रचिन्मयिसंप्राप्तशंकेयम्महतीचनः१ वाचकउवाच षितेस्वपतौवालातद्धोमविघ्नशान्तयेजुहुयात्स्वपते न्ना धर्मशास्त्रमतेनच। ज्ञात्वैवंकश्यपः प्रोचेस्वप्रि मादितिम्मुनिः २ इति भा० अ० शं० नि० मं० षो शेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

द्रकी पुण्य तिसप्रकार इंद्रकी रक्षा भगवान् करते भये है ताहो इसवास्ते बिना अश्वमेध किये बलिने इन्द्रका राज नि लिया ४ इति भा० अ० शं० मं० पंचदशेऽध्याये पंच-शवेणी १५ श्लोक ३३ ॥

श्रोता पूछतेभये अदिति से कश्यपमुनि कहेथे कि हे प्रिये हम किसी दूसरे ग्रामको चलेगयेथे तब तुमने अग्निमें होम नहींकिया इसवास्ते उदासीन बैठीहो हे गुरुजी बिना वेदमंत्रों सेतो होम होवैगा नहीं और वेदोंको मंत्र पढ़नेको स्त्रियोंको अधिकार भी नहीं है तौ फिरि ऐसा वाक्य कश्यपमुनि क्यों कहे थे यहशंका हमारे सबके मनमें है १ वाचक बोले प्रायश्चित्त कदंब श्लोक लक्ष १००००० तथा विधान पारिजातक लक्ष १००००० श्लोक तथा अष्टादशस्मृति श्लोक ५२००० इन आदि लेके और जो अनेक बड़े २ धर्मशास्त्रहैं तिन धर्म शास्त्रों में ऐसा लिखाहै कि जो स्त्रीको पति मास १ के वास्ते दूसरे ग्रामको चलाजावे तथा अपनी अग्निहोत्रकी अग्नि आदि सामग्री न लेजावै तब अपने पतिके नामको मंत्र मानिके उसी नामसेस्त्री होमकरिदेवै पतिके होमको विघ्न न होनेपावै ऐसा धर्मशास्त्रों को मत जानिकै कश्यपमुनि अदिति से पूंछेहैं २॥इतिभा०अ०शं०नि०मंजःषोड़शेऽध्यायेषोड़शवेणीश्लोकः॥

श्रोतार ऊचुः ॥ [illegible] प: । अदित्यांविष्णुसूत्यर्थं विना वीर्य्यन्नतज्जनिः १ वाचकउवाच॥सहित्वानेकदुःखानिमर्य्यादांस्वकृतांहरिः सदैवरक्षतेऽनोवैवीर्य्यसृष्टिप्ररक्षणात् । वीर्य्याश्रयंस माश्रित्यस्वाविर्भावंकरोतिसः २ इतिभा० अ० शं० मं सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युगत्रयेददुर्दानंयाचिताश्चनृपाद्वि जैः । तथापिगुरुमापृष्ट्वाविचार्यशतधापुनः १ तत्कथ न्दातुमुद्युक्तस्सस्तेनायाचितोबलिः २ वाचक उवाच ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् के जन्म होने वास्ते अदितिके शरीरमें कश्यप मुनि वीर्य्य स्थापन करते भये यह बड़ी शंका होती है कि बिनावीर्य्य स्थापन किये भगवान् को जन्म नहीं होता क्योंकि वीर्यको जन्म तो चौरासीलक्ष योनिको होताहै और भगवान् तो सर्वव्यापी हैं उनके जन्म होने वास्ते वीर्यस्थापन को क्या कामथा १ बाचक बोले भगवान् अनेक प्रकारको दुःख सहिकै आपनबिनाई मर्यादाकी रक्षाकरते हैं यहबात शास्त्र में लोक में भी सबको जाहिर है वीर्य बिना संसारकी उत्पत्ति नहीं होती इसवास्ते वीर्य्य की मर्यादा की रक्षाकरने वास्ते वीर्य करिकै आपु प्रगट होतेहैं जो वीर्यकी मर्यादा तथा अपनी बनाई आपही मर्यादा न राखे तो सब वस्तुमें विराज मानहै फिरिजन्म लेनेका क्या काम है बैकुंठ में बैठ बैठे जो चाहैसो करिलेवै इसवास्ते कश्यप वीर्य स्थापन अदिति में करते हुये२इतिश्रीभा०अ०शं०मं०सप्तदशेऽ ध्यायेसप्तदशवेणी १७॥ श्लो० ॥२१॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी सतयुगत्रेता द्वापरमें ब्राह्मण राजों

गृहस्थैर्य्याचितोदानंसन्दद्याद्ब्राह्मणैर्नृपः । अयाचि
तोविरक्तैश्चधर्मशास्त्रमतान्विदन्। अयाचितोवलिश्चैव
वामनायदातुंसमुद्यतः ३ इतिभा० अ० शं० मं० अष्टा
दशेऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मचारीस्वयम्भूत्वातथाऽप्यनृत
वादनम् । चकारवामनोब्रह्मन्महत्कौतूहलं च नः १
वाचक उवाच ॥ शठंकर्मसदाकुर्य्याच्छठेनधर्मशास

से दान मांगतेथे तव राजालोग गुरु से अनेक वार पूंछिके
सुपात्र तथा कुपात्र विचारिके दान देतेथे १ जब ऐसे विचारि
के दान देतेथे तब वामन भगवान्‌तौ वलिसे दान मांगा नहीं
विना मांगे दान देनेको वलि क्यों तैयार हुआ यह भ्रमहै २
वाचक वोले धर्मशास्त्रको यह मत है कि गृहस्थ ब्राह्मण दान
मांगै तब राजा दान देवै तथा विरक्तब्राह्मण दानन मांगै तौ
भी राजा दान देवै ऐसा धर्मशास्त्रके मतको राजा वलि जानिकै
वामन विरक्तहैं कुछ मांगे भी नहीं तौ भी वलि दान देनेको
तैयार भया ३ इति० भा० अ० शं मं अष्टादशेऽध्यायेअष्टादश
वेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी हमारे सबके मनमें वड़ा आश्चर्य
होताहै कि वामन भगवान् होके तथा ब्रह्मचारी होके थोरेही
कामके वास्ते झूठ वोलते भये हरहर १ हे गुरुजी क्या वलिको
दण्ड देनेको दूसरा उपाय नहीं था वाचक वोलेकि धर्म्मशास्त्र
में ऐसा लिखा है कि दुष्टके संग जो दुष्टता करेंगे उनको
दोष नहीं होता राजा वलि कैसा दुष्टहै कि यह अपने मन में
जानताथा कि इन्द्र की पुण्य अभीहै हम राज लेलेवेंगे किसी

नम्। शुक्रंपूज्याददेराज्यमिंद्रस्यचशठोबलिः २ इन्द्रो वक्तिसदाविष्णुंपुण्यशेषंचदेहिमे। अतोभगवतेदम्बैकृतंकर्म्मविनिंदितम् ३ इतिभा० अ० शं० नि० मंजर्य्यां एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी॥ १९ ॥श्लो० १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोगृहोमुनिभिः प्रोक्तः कथितोच त्पतिर्बलिः। इंद्रासनेसमास्थित्वाकथंगृहपतिःस्मृतः १ वाचक उवाच॥ येगृह्णंतिसदाप्रीत्याभगवन्नामसादरम्।

प्रभाव से तब भगवान् को दुःख भोगना परैगा ऐसा जानता रहा है तौभी शुक्रको पूजन करिकै इन्द्रको राज लेलिया २ तब राज से भ्रष्ट इन्द्र भगवान् से नित्य तगादा करनेलगा कि महाराज मैं अश्वमेधयज्ञ १०० कियाहौं तब मेरेको आपु इन्द्र बनाये हो कुछ फोकट से नहीं बनाये सो १०० यज्ञमें जो मैंराज किया सोतो भोगिलिया अब जो मेरी बाकी पुण्य होवै उस पुण्य करिकै मेरा राज देवो और न राज देवो तौ मेरी पुण्य देवो हे श्रोताहो ऐसे इन्द्र के वचन सुनिकै भगवान् लज्जा तथा दुःख को प्राप्त होके विचार किये कि विना छल किये बलिसे इन्द्रको राज नहीं मिलैगा ऐसा विचारिकै झूठ बोलिकै इन्द्रको राज देते भये ३ भा० अ० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी १९ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेवजीने राजा बलिको घरको पति करिकै वर्णन किये हे गुरुजी घर किसका नाम है कि बलि राजा इन्द्रकी गादी पर बैठिकै तीन लोकको पति होकै फिरि गृहपति कहाया ऐसा उत्तम चीज गृह क्या है १ वाचक बोले जो जीव नित्य भगवान् को नाम बड़े आदरसे बड़ी प्रीति से जपते हैं जप करने को गृहण करना भी नाम है उन जीवोंको

ते गृहा मुनिभिः प्रोक्तास्तेषामुक्तोपतिर्वलिः ॥ २ ॥ इतिश्रीभा० अ० शं०मं विंशेऽध्याये विंशवेणी॥ २० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ बलिश्चत्रामनेनोक्तो विशत्वन्निरयं सदा। पश्चात्सुतलमित्युक्तः कथन्तन्नददौहरिः १वाचक उवाच ॥ यदूचेवामनस्तच्च निरयम्बलयेददौ। अयसो

इनाम है तिन्हों को पति बलिहै क्योंकि० राति दिन बलि रीके भगवान्के नामका जप करनेवाला कोईभी नहींहै इस ास्तेशुकदेवजी वलिको गृहपति कहेहैं घरको पति नहींकहे२ ति भा० अ० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये वामन भगवान् पेश्तर तो बलिको कहे थे कि तूं नरक में वास करु ऐसा पापी है तूं फिरि पीछे सुतललोक वलिको देते भये नरक को क्यों नहीं भेजे पामर जीव सरीके यह तमाशा किया जैसा कोई क्रोधी मनुष्य क्रोध भये पर जो चाहै सो मुख से बकिदेवै यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले वामन भगवान् जो लोक वलिको देने वास्ते कहे थे सोई लोक दिये क्योंकि निरयको अर्थ नरकनहीं है तथा जो लोक अयस जो लोह तिस करि के निकहे रहित होवै याने जिस लोक में लोह न होवे उस लोक को भी मुनि यों ने निरय कहा है भगवान् भी निरयको अर्थ ऐसा करि के वलिको कहे थे कि निरयमें वास करोगे इस वास्ते निरय जो सुतल लोक तहां वलिको भेजिदिये क्योंकि सुतल आदि लोकोंमें मणि सिवाय दूसरी धातु कोई नहीं है और लोह

निर्गतंलोकन्निरयंसंस्मृतोबुधैः २ इतिश्री भा० अ०शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी॥ २१ ॥ श्लो०॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ बलिः कम्प्रापसंस्थानं यद्दुःप्राप्यं सुरैरपि । स्वर्गस्सुराणांसुतलो नागानामालयंसदा १ वाचक उवाच ॥ जीवन्मुक्तःकृतोराजा वामनेनचतत्त्व णे।यल्लोकंयोगिनोयान्तितल्लोकंप्रापितोबलिः२ इतिश्री भा०अ०शं०मं०द्वाविंशेऽध्या०द्वाविंशवेणी २२श्लो०३७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगत्कर्तुर्जगद् भर्तुर्जगत्पालयितु

की कौन गनती है श्रोताहो निरयको अर्थ विचारिकै वामन कहैथे नरक में पड़ने को वलिको नहीं कहैथे २६० भा० अ० शं० मं० एकविं० एकविंशवेणी ॥२१॥श्लो० ३२ । से ३४ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा कौनलोक है कि जिस लोकको देवताभी बड़े क्लेश से जासक्ते हैं और उसी लोक को एकक्षणमें वलिराजा चला गया जो कदापि स्वर्ग लोक को वलिगया तौ स्वर्ग लोक देवतोंकाहै औरजो सुतलको गयातौ सुतल नागोंका है हेगुरुजी यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले वामन भगवान् जिस वखत वलिसे दानलिया उसीवखत वलिजीताथा तोभी संसारसे मोक्ष करिदिया चाहे तौ संसार में रहै चाहे योगीके लोकको जावै ऐसे लोकको देवता लोग बड़े दुःखसे भी नहीं जासकैंगे इसवास्ते शुकजी कहैथे जिसलोकको वलि प्राप्त भयासो लोक देवतों से दुःख से भी नहीं जावे योग्य है२इति भा०अ०शं०मं०द्वाविशे० द्वाविंश वेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ३७ ॥

श्रोता पूछते भये जगत् को करने वाले जगत् को स्वामी जगत् की पालना करने वाले ऐसे जो भगवान् तिन भगवान

स्तथा। इन्द्रस्याधःकथंचक्रयभिषेकंपितामहः १वाचक उवाच ॥ इन्द्रस्यत्रासनार्थाय लघुत्वेस्थापितोहरिः । विचार्यविधिनासम्यक् प्रेरितेनचविष्णुना २ इतिश्री भा० अ० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी २३॥ श्लो०॥ २१॥

श्रोतारऊचुः॥समूचुर्म्मुनयोभूपंभगवद्ध्यानकारणे। स्वयंकथन्नतञ्चक्रुर्ध्यानंभागवताद्विजाः १वाचकउवाच॥ नवैकुर्वन्तिमुनयश्शरीरस्यसुखायच। ध्यानंभगवतोवि

को इंद्र के हाथके नीचे राज ब्रह्मा देते भये मालिक तो इंद्र दिवान भगवान् को ब्रह्मा किये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले भगवान् की आज्ञा मानिके ब्रह्मा बहुत प्रकार से विचारि के इंद्रको त्रास देने वासते भगवान को इन्द्र के हाथ के नीचे मालिक बनाए क्योंकि लोक में भी अपनी बराबरि पुत्रको भाई को देखिके लोक कुकर्म नहीं करते इसप्रकार से भगवान् इंद्र को छोटा भाई है वामन के सामने इंद्र खोटाकर्म नहीं करैगा इस वासते त्रिलोक के नाथको इन्द्र के हाथ के नीचे ब्रह्मा मालिक करते भये २ इ० भा० अ० शं मं० त्रयोविं० त्रयोविंशवेणी२३ श्लोक ॥२१॥

श्रोता पूछते भये मुनियोंने भगवान्को ध्यानकरने वासते राजाको कहेथे किराजा भगवान्को ध्यानकरो परन्तुआपु मुनि लोग भगवान् को ध्यान क्यों नहीं करते भये यह बड़ी शंका है१वाचक बोले मुनि लोग शरीरके सुख होने वासते भगवान् को ध्यान नहीं करते मोक्ष के वासते ध्यान करतेहैं उस वखत

प्राश्यातोनैवकृतन्तुतैः२इति०भा०अ० शं०मं०चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥
शरीर की रक्षाको कामथा इस वास्ते मुनियोंने भगवान्को ध्यान नहीं किये २ इ० भा० अ० शं० मं०चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

इतिश्रीमद्भागवतअष्टमस्कंधशंकानिवारणमंजरी
शिवसहायबुधविरचितासुधामयीटीका
सहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

नवमस्कंधे ॥ ९ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शम्भुनोक्तंकथम्ब्रह्मन् स्थानमेतद्भवेद्ध्रुवम् । प्रविशेत्पुरुषश्शीघ्रं प्रमदायोऽतिशीलिना १ सर्वंचराचरंविश्वं स्वस्वकार्यार्थसिद्धये । व्रजंतिशिवसंस्थानन्तेभवन्तिनयोषितः २ वाचक उवाच॥ कैलासस्यचशापान्ते स्थापिताबहवोगणाः । विचार्य्य

श्रोता पूछते भये हैं गुरुजी महादेवजी बड़े शीलवान् होके ऐसा क्यों कहथे कियह हमारे स्थानके सामने जो कोई पुरुष मात्र आवैगा सो जल्दी स्त्री होजावैगा चौरासी लाख योनि में जिस योनिको पुरुष आवेगा उसी योनिकी स्त्री होजावेगी१ और तीन लोक में जो सब चर अचर प्राणी हैं सो सब अपने अपने कार्यको सिद्ध होने वास्ते शिवके कैलासको जाते हैं वे सब स्त्री नहीं होते यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले शाप देकै पीछे से महादेव विचारिकै कैलास के चारों तरफ़ एक कोशपर बहुत से अपनेगण टिकाय देते भये ३ जोकोई प्राणी कैलासको आता है उसको कोश भरेपर शिवगण खड़ा करिकै शिव से पूंछते हैंकि हे महाराज अमुक २ प्राणी आपके दर्शन करने को आये हैं तब शिव आज्ञा देते हैं आनेदेवो तब वह

शम्भुनावाह्येजनैकेचतुर्दिशः ३ आगन्तुकांश्चसंस्थाप्य गणाःपृच्छंतिशंकरम्। तेनाज्ञप्ताःसमायान्ति तत्रा तस्स्युर्नतेस्त्रियः ४ इति० भा० न० शं सं प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

हतधेनुम्पृषध्रंच शशापानेनकर्म्मणा। गुरुस्त्वम्भविताशूद्रः कथन्तेषामिदन्नहि १ वाचक उवाच ॥ श्येनेन मुनिनाशप्ता यमभार्य्यात्रिदंडिना॥ धेनुयोनिस्तयाप्राप्ता द्वादशाब्दंपुरायुगे २ दत्त्वामहाशिषम्मुक्ता पृषध्रंच

प्राणी कैलास के भीतर जाते हैं इस वास्ते स्त्री नहीं होते कोशभरेपर खड़ा करनेको कारण यह है कि जिस सीमा के भीतर आनेसे स्त्री होते हैं उस सीमाके दूर वह कोशपर खड़ा करते हैं ४ इति भा० नव० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथम वेणी १ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये गौको बधन किया ऐसा जो पृषध्र तिस को वसिष्ठजी ने शाप दिया कि तूं गायको माराहै इस दुष्ट कर्मसे शूद्र होवैगा ऐसाशाप क्यों दिया क्योंकि गौ मारना यह शूद्रका काम नहीं है यहतो चांडालको कर्म है १ वाचकबोले सतयुग में त्रिदंडी नाम मुनि बाजपक्षी को रूपधरिकै संसार में भ्रमण करिरहे हैं एकदिन यमपुरी को अपनी इच्छा से तमाशा देखने वास्ते चलेगए तबयमकी स्त्री मुनिको चरित्र जानि कै तमाशा करने वासते गौको रूप धरिके पक्षी रूप जो मुनि तिनको अपने श्रृंगसे मारने दौड़ती भई तब मुनिने शाप दिया कि वर्ष १२ तूं गौहोवैगी इसवास्ते यम की स्त्री गौ होके अयोध्या के राजा की गउवों में रहतीथी २ उसी गौ रूप यमकी स्त्री को पृषध्र दैवयोग से मारडाले तब

जगामसा। मुनिर्ध्यानेनतद्ज्ञात्वा द्वौकार्यौसंविचार्यच गवाम्माहात्म्यवृद्धयर्थं तन्मोक्षायशशापवै । शूद्रश्च जान्हवीभ्राता मानेनरहितस्सदा ४ इति० भा०नवम० शं० मं० द्वितीयऽध्यायेद्वितीयवेणी॥ २॥ श्लोक॥ ९ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ एकरूपान्समावीक्ष्य सुकन्यात्रीन् पुरस्थितान्। कथंजगामशरणमश्विनोश्चपतिव्रता १

वक उवाच ॥ अश्विनोर्मनसाध्यानं चक्रेपार्श्वन्नसा

ेकी शापसे छोटिके पृषध्रकी मोक्ष होने वास्ते आशीर्वाद
े अपने पतिके पासगई वसिष्ठजी ने ध्यान करिके सब
ेत्र जानिके दोकाम विचारिके ३ गौवोंको माहात्म्य बढ़ाने
स्ते कि और कोई ऐसा न करै तथापृषध्रकी मोक्षहोनेवास्ते
ाप दिया तू शूद्र होवैगा शूद्र होने को कारण यह है कि
द्र अभिमान से रहित होते हैं तथा श्री गंगाजीके भाई भी
द्र हैं भगवान् के पगसे शूद्र जन्मे हैं तथा गंगाभी पगोंसे
ाकली हैं इस दो गुण करिकै शूद्र को मोक्ष जल्दी होताहै
श्रोताहो इस वास्ते वसिष्ठ पृषध्र को शूद्र होना कहेथे ४
० भा०न०शं०मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी २ ॥ श्लो० ९॥

श्रोता पूछते भये सुकन्या अपने सामने एकसरीके तीन
ुरुषको खड़ा देखिकै अश्विनी कुमार की शरण कैसे प्राप्त
ाई क्योंकि वो तीनों तो एकठारहे थे दीप से दीप जलावै
ो क्या मालूम परैगा कि यह तिलके तेलको है यह सरसों
ालसी पोस्त घीको दीपहै मालूम न परैगा तैसा वो तीनों
एक रूप थे १ वाचक बोले सुकन्या अपने मन में अश्विनी
कुमार को ध्यान किया है उन दोनों देवतोंके सामने नहीं गई
ध्यान करिकै अपने मन में ऐसी प्रार्थना अश्विनीकुमारकी

गता। दर्शयस्वपतिम्मेद्य युवाम्मेपितरौप्रभू २ इति० भा० न०शं० मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी३श्लो० १६॥

श्रोतार ऊचुः॥ अंबरीषोददौधेनून् षष्टिकोटिमितान्मुने। महदाश्चर्यमेतद्धि वर्ततेमानसे च नः १ वाचक उवाच॥ ज्योतिश्शास्त्रेचार्बुदस्य संख्यादिग्कोटिनिर्मिता। धर्मशास्त्रसहस्राणां पंचप्रोक्तामुनीश्वरैः २ इति० भा० न० शं०मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी४॥श्लो० ३४॥

श्रोतार ऊचुः॥ अंबरीषस्यचरणौ गृहीतौमुनिना कथम्। तप्तेनापिहरेश्चक्र तेजसाभाव्यमेवतत् १

करती भई महाराज आप दोनों जने मेरे बापहो मेरे पतिको देखाय देवो ऐसी विनती करिकै अपने पतिको प्राप्त भई २ इति भाग० न०शं० नि० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ३। श्लोक॥ १६॥

श्रोता पूछते भये कि राजा अंबरीषने साठि ६००००००० कोटि गाय को दान कियो है गुरुजी हमारे सबके मनमें बड़ा आश्चर्य होता है कि साठि कोटि गाय तथा साठि कोटि बछड़ा बछड़ी तथा साठि कोटि दान लेनेवाले ब्राह्मण एकठा होनेकी बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले ज्योतिष शास्त्रमें अर्बुद १ को दश कोटि लिखाहै तथा प्रायश्चित्त कदंब तथा विधान पारिजातक एलच्च श्लोक हैं इन्हों आदि लेकै और भी जो धर्म शास्त्रहैं उनमें अर्बुद १ को पांच ५००० हजारसंज्ञा लिखी है इसप्रमाणसेती हजार गौ राजा ने दान कियाथा २ इति भा० न० शं० मं०चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ वेणी ४ श्लो०॥ ३४॥

श्रोतापूछतेभये हेप्रभजी दुर्वासा मुनि भगवान्केचक्रकेतेज करिकेभस्म होरहेहैं तोभी अम्बरीषको पग कैसा ग्रहणकरते

वाचक उवाच॥ दिग्सहस्रान्द्विजान् गृह्यचरतांभुवनत्र यम्। दुर्वाससेदंसम्पूर्णं त्रासितंशापकारणात् २ विश्व म्प्रकम्पितन्दृष्ट्वाभगवान्गिरिजापतिः। तन्मानन्नाश नार्थाययत्नमेनंचकारह ३ इतिश्रीभा० न० शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी॥ श्लो०॥ १॥

श्रोतार ऊचुः॥ युवनाश्वःकथंराजा यज्ञतोयम्पपौस्व यम्। महदाश्चर्य्यभूतंच शिशुवत्कौतुकम्मुने १ वाचक उवाच॥ सगर्भांजान्हवीन्दृष्ट्वा पुष्करेसन्तनुप्रियाम्।

भयेबड़ाअयोग्य कर्महै कलियुगके ब्राह्मण तौदुर्वासानहींथे कि देह के सुख होनेवास्ते नीच कर्म करना वोतो बड़े प्रतापी थे फिरि क्यों नीच कामकिये बड़ाभ्रम होताहै शिव ३।१ वाचक बोले दश १०००० हजार ब्राह्मणों को संगलेकै तीन लोक में दुर्वासा भ्रमण करिकै तीनों लोक को शाप करिकै बहुत दुखी करि देते भये जरा से किसी जीव से अपराध होजावै तब उस को ऐसा शापदेना कि बहुतवर्ष तक दुःख पावैगा २तीन लोकको कंपायमान तथा बहुत दुःखी देखि कै दुर्वासा को अभिमान नाश करने वास्ते यह यत्न महादेव करि कै तीन लोक को सुखी करते भये क्यों कि अंबरीषको चरित्र राति दिन दुर्वासा के हृदय में बशिगया विचारि कै क्रोध करने लगे हे श्रोताहो इस वास्ते मोहको प्राप्तहुये दुर्वासा अंबरी-षके पगको ग्रहण करते भये ३ इतिश्री मद्भागवते नवमस्कंधे शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी॥ ५॥ श्लोक॥ १॥

श्रोता पूछतेभये हे मुनिजी राजायुवनाश्व आपुसे उठिकै ब्राह्मणों को सोता देखिकै चोर सरी के यज्ञको जलपी लि-या यह बालक सरी के कर्म किया बड़े आश्चर्यकी बात है१

युवनाश्वस्तयाक्रान्तो जहासबहुशोनृपः २ नक्षान्त विष्णुनातत्त मयानृपसत्तमम्। मोहयित्वातदुदरे गर्भं धारयिताहरिः ३. इतिश्रीभा० न० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २७॥

श्रोतार ऊचुः॥ सर्वान्यज्ञान्परित्यज्य पुत्रामिषसमुद्भवम्। कर्तुंसमुद्यतोराजा यज्ञमेतंत्कथंगुरो। वरुणोपि महापापी शिशुहत्यांचयोग्रहीत् १ वाचक उवाच॥ पुत्रहीनोनृपोज्ञात्वा स्वात्मानंमनसासुधीः। राजनीतिं विचार्य्यैव कर्म्मैतद्वैसमाकरोत् २ इतिश्रीभा० न० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी॥ ७ ॥ श्लो०॥ ८ ॥ से ॥ ६॥ तक ॥

वाचक बोले पुष्करजी में राजा युवनाश्व गंगाजी के राजा सन्तनु के वीर्य से गर्भ देखिके बहुत हँसता भया परंतु गंगाजी युवनाश्व के अपराधको क्षमाकिया २ परंतु राजा के अपराधको भगवान्नहीं क्षमाकिहे इसवास्ते राजोंमें उत्तम जो युवनाश्व राजा तिसको माया से पागल करिके जलपिवायकै उसके पेट में गर्भ धारण कराते भए ३ इ० भा० न० शं०मं० षष्ठे ऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २७।

श्रोता पूछते भये राजाहरिश्चंद्रने सबयज्ञको त्यागिके पुत्रकेमांसकरिकै बरुणकी जो यज्ञ तिसको करने को क्यों विचार किए और बरुणभी ऐसा उत्तम देवता सो बालहत्या ग्रहण करने को अंगीकार किया वरुणभी बड़ा पापी है गुरु जी शास्त्रकी अंधेर देखते तौ कलियुग अच्छो है इसमें ऐसा २ अन्याय तौ कोई भी नहीं करता हर २ १ वाचक बोले राजा हरिश्चंद्र अपने को पुत्र करिके हीन जानिके

श्रोतार ऊचुः ॥ और्वश्चब्राह्मणोब्रह्मन् नृपभार्यां घतांकथम्। निवारयित्वास्वात्मानं पुत्रवन्तममन्यत १ वाचक उवाच ॥ परावरज्ञश्चौर्वर्षिर्ज्ञात्वासगरवीरतां। स्वाशिष्यंचापितंस्वस्य कीर्तिविस्तारणन्तथा। नशिष्य पुत्रयोर्भेदो लोकेशास्त्रेप्रदृश्यते। एवंविचार्यस्वात्मानं पुत्रवन्तममन्यत ३ इतिश्री भा० न० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमेवर्णी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

मनमें राजनीति विचारिके पुत्रके मांस करिके यज्ञ करने को विचार कियाकि अभी मेरे पुत्र नहीं है वरुणको लोभ देखायके जो पुत्र मेरे होजावैगा तो नहीं मारौंगा पुत्रके वास्ते झूठ बोलने का पाप भी नहीं होवैगा हे श्रोता हो इसवास्ते हरिश्चंद्रने पुत्रके मांस करिके यज्ञ करने को विचार किया है २ इतिभा० न० श० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेर्णी ॥ ७ श्लोक ॥ ८ ॥ से ॥ ९ ॥ तक ॥

श्रोता पूछतेभए हे गुरुजी और्व ब्राह्मणने राजाकीस्त्री पतिके संग भस्म होने लगी तिसको भस्म होनेको मनाकरिकै अपनेको पुत्रवान् क्यों मानतेभए कि यह स्त्रीनहीं भस्महोगी तो हमारे पुत्र होवैगा यह बड़ी शंका है १ वाचकबोले अगाड़ी पिछाड़ी की बात जानने वाले जो और्व ऋषि सो ऐसा जानिकै कि राजा सगर बड़ा वीर होगा तथा हमारा शिष्य होगा संसार में हमारी कीर्ति होवैगी २ लोक में तथा शास्त्र में पुत्र में तथा शिष्य में भेद नहीं देखि परता ये दोनों बरोबरि हैं ऐसा विचारिकै सगरको पुत्रमानिकै अपने को पुत्रवान्मानते भये ३ इ० भा० नं० शं० मं० अष्टमेध्याये अष्टमवेर्णी ॥ ८ ॥ श्लो०॥३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चिरकालन्तपस्तप्त्वा सर्वेभूपम्मृता ध्रुवम्। नकेनापिक्षितिन्नीता स्वर्धुनीलोकपावनी १राज्ञा भगीरथेनापिकेननीताक्षितिंचसा २ वाचक उवाच ॥ पंचवर्षोयदाभूत्वा राजाभागीरथस्तदा। पितॄणांचरितंश्रुत्वा गङ्गानयनकारणम् ३ गङ्गानामसहस्रंच पठितुं सरसमारभत्। तस्याजतद्दिनान्नैवमतःप्रीताचस्वर्धुनी४ इति भा०न०शं०मं०नवमेऽध्यायेनवमवेणी ९॥श्लोक२॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नाभूदनिच्छत्तम्मृत्यु रामेराजनि

श्रोता पूछतेहैं हे गुरुजी सब राजा सगरके वंश वाले तप स्या करते २ मरि गये परंतु संसारके पापको नाशकरनेवाली जो श्रीगंगाजी तिनको भूमिमें कोईभी राजान लेआयसके १ परन्तु राजा भगीरथ क्या तप किया जिस तप करि कै भूमि में गंगा जी को लै आया २ वाचक बोले जब राजा भगीरथ पांच वर्ष को भया तब अपने पितरों को चरित गंगा जी को लै आने वास्ते तप करि कै मारे गये पणगंगा भूमिमें नहीं आई ऐसा सुनिकै ३ पांचवर्ष की अवस्था से श्री गंगाजी को सहस्र नाम पाठ करने को प्रारंभ किया परन्तु जिस दिन से पाठ करना प्रारम्भकिया उसदिन से जब तक गंगाजी नहीं आई तब तक छोड़ानहीं राजा वृढा भी हो गया ऐसी पण देखिकै श्रीगंगाजी थोरे दिन तप भगीरथ किया तो भी बालपनसे अपना नाम जपने वाला भगीरथको जानिकै बहुत प्रसन्न होकै थोरेही दिनमें भगीरथके संग भूमि को चली आती भई ४ इति भा० नव० शं० मं० नवमेऽध्याये नवम वेणी ९ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी रामचन्द्र के राजमें जो प्राणी

कर्हिचित् । महदाश्चर्यमेतद्धिमृत्युस्सर्वत्रवर्तते१वाचक उवाच ॥ शब्दस्यानिच्छतामस्य मृत्युरर्थोनभाव्यते। तस्यायमर्थोज्ञातव्यो रामचन्द्रपदोज्झनं २ इति० भा० न० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ ५४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ यद्विप्रेभ्योददौरामस्तद्द्विजाःप्रददुः पुनः । रामायरामचन्द्रेण तद्गृहीतंकथम्मुने १ वाचक उवाच॥ ब्राह्मणानाम्प्रसादाश्च गृहीताःक्षत्रियैस्सदा।

के मरनेकी इच्छाकिया उसको मरणा होताथा और जोमरण नहीं होने की इच्छा करता उसको मरण कभीभी नहीं होता था यह बड़े आश्चर्य की बातहै क्योंकि मृत्युतो सब लोकों में है किसी लोक में जल्दी किसी लोक में देरकी परंतु ऐसा लोक कोई भी नहीं है कि जिस लोक में मृत्यु न होवे १ वाचक बोले अनिच्छता इस शब्दको अर्थ मरणकी इच्छा करना नहीं होगा इसका यह अर्थ है कि जो प्राणी राम चंद्र के चरणारविंदको त्याग करनेकी इच्छा करते थे राति दिन उसी चरणों में मस्त रहते हैं उन प्राणियोंकी मृत्यु नहींहोती २ इतिभा० न० शं० मं० दशमे ऽध्याय दशमवेणी १० ॥ श्लोक ॥ ५५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जो वस्तु रामचंद्रने ब्राह्मणों को दानादियेथे ब्राह्मण दान लिये कछु घड़ी तथा दिन पीछे उसी दानवाली वस्तुको ब्राह्मणों ने रामचंद्र के वास्ते प्रीतिसेदेते भए तब रामजी अपनीदानदियेवस्तु क्यों लेतेभये यहीशंका इसमें होतीहै१वाचक बोले ब्राह्मण लोग प्रसन्नहोके अपना प्रसाद तुलसीपत्र आदिसेके तथा तीनलोक को हर्ष

तदवज्ञाकृतेशीघ्रं शापन्दास्यंतिब्राह्मणाः२एवंविचार्य्य रामेण गृहीतन्नचलोभतः ३ इति० भा० न० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी॥ ११ ॥श्लो० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कालस्यान्नंजगत्सर्वं कथंराजाव्वशेषितः। मरुर्यःकलिनाशेच पुनर्वंशकरःप्रभो १ वाचक उवाच ॥ बाल्याद्योगरतोधीरो मरुर्हरिपरायणः। योगिनान्नाशनेशक्तिर्नास्तिकालस्यकर्हिचित् २ इ० भा० न० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥१२॥श्लो०६ ॥

श्रोतारऊचुः॥राजानिमिर्महाज्ञानीवसिष्ठश्चमुनीश्वरः।

पर्यंत जब क्षत्रियों को देते हैं तब उसी वखत क्षत्रियलोग ब्राह्मणों को दिया प्रसाद लेजेते हैं जो कभी कोई राजा न लेवैतब जल्दी ब्राह्मणलोग उस राजाको शाप देवैंगे ऐसा रामचंद्र मन में विचारिकै अपनी दईवस्तु ग्रहण करते भये लोभसे नहीं ग्रहण किये ॥ ३ ॥इति भा०नवमस्कंधेशं० नि० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पूछते भये हेप्रभुजी तीनलोक में जन्मे जो प्राणी तिनसब प्राणियों को कालखाय लेता है परन्तु राजा मरुको काल क्यों नहीं भक्षण कियाकि जो राजा मरु कलियुग को नाश भये पीछे सूर्यवंश को फिरि उत्पत्ति करैगा आपु कहो१ वाचक बोलेराजा मरु बालपणसे ईश्वर को भजन करनेलगा भजन करते २ बड़ायोगी होगया तौ योगियों को खाने की सामर्थ कालकी कभी नहीं क्यों कि कालतो योगियोंकोदेखि के दूरडरि जाता है इसवास्ते राजा मरु कालसे बचिगया२ इति० भा० न० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरुजी राजानिमि बड़ा ज्ञानीथा

उवाच ॥ गुरुणाशिक्षितश्चन्द्रो धर्मशास्त्रप्रमाणत स्वीकृतःपुरुषःक्रीड़ां स्त्रियाकुर्यान्नदोषभाक् २ शिक्षितातेन प्रमदारमितायदा। परेणस्वरजःप्राप्य शुद्ध्यतीतिविनिश्चितम् ३ एवंपरस्परन्तौहौ महान्याय म्प्रचक्रतुः ४ इति०भा० न० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशश्रेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥कथंनकृतवान्यज्ञं गाधिःपुत्रस्यहेतवे जामातरंययाचे च तत्पत्नीपुत्रहेतवे १ वाचक उवाच॥

तथा तारा भी चन्द्रमाकोशाप नहीं दियाबड़ा आश्चर्य होता है ऐसा कर्म तो राक्षसभी नहीं करैगा हर ३।१ वाचक बोले बृहस्पति संहिता आदि और धर्मशास्त्रों के प्रमाण से बृहस्पति चंद्रमा को सिखाये थे कि अपनी इच्छासे स्त्री पुरुष के संग भोग करने वास्ते मन करतीहै तथा पुरुष स्त्रीकी प्रार्थना से उसके संग भोग करता है तो पाप नहीं पुरुष को लगता और जो स्त्रीकी प्रार्थना नहीं मानता तो पुरुषको बहुत पाप लगता है २ तथा ताराको भी बृहस्पति सिखाये थे कि जोपर पुरुष के संग स्त्री क्रीड़ा करैगी तो जबतक स्त्री कपड़ा से नहीं होवैगी तबतक तो अशुद्ध रहैगी और कपड़ासे भई तौउसी तीन दिन में शुद्ध होजावैगी पाप रतीभरि भी नहीं रहैगा ३ हे श्रोताहो इस प्रकार से बृहस्पतिके सिखाये जोचन्द्र तथा तारा येदोनों बड़ा अन्याय करतेभये४ इति भा० न० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशश्रेणी ॥ १४॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भए पुत्रहोने वास्ते सब राजा यज्ञ करते थे पर राजा गाधि पुत्रहोने वास्ते यज्ञ क्यों नहीं किया जिस वास्ते गाधि की स्त्री पुत्रहोने वास्ते जमाई की ५।

करिष्यामिकरिष्यामि नित्यंचिन्तयनेन्नृपः। तावत्सत्य वतीदत्ता भार्गवायतपस्विने । ज्ञात्वाजामातरंसिद्धं राज्ञीयांचांसमाकरोत् २ इतिश्री भा० न० शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ रेणुकावृद्धभावापि ददर्शरतिकौतु कम्। महादाश्चर्यमेतद्धि विभातिहृदये च नः १ वाचक उवाच ॥ रेणुकापितृवेश्मस्था बालेवयसिचंचला। नदीं स्नातुंगतावालासखीभिःपरिवारिता२क्रीड़न्तीम्पक्षिणीं

किया यह बड़ी शंका है कि राजाकी स्त्री होके जमाई से पुत्रमांगना और राजाको पुत्र होनेका उपाय नहींकरना यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले राजा गाधि नित्य ऐसी चिंता अपने मनमें करते थे पुत्रहोने वास्ते यज्ञ करैंगे ऐसा करते २ बहुत दिन बीति गया तब तक ऋचीक नाम भृगु वंश में तपस्वी था उनके संग राजा गाधि अपनी सत्यवती लड़िकी को विवाह करिदिया तबरानी अपने जमाई को सिद्ध जानि के पुत्र की याचना करती भई रानी विचारा कि राजा यज्ञ करने को विचारता है परंतु राजा यज्ञ करते नहीं हैं श्रोता हो इस कारण से रानी जमाई की याचना पुत्रहोने वास्ते किया है २ इतिभा० न० स्कं० शं० मं० पंचदशेऽ ध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी रेणुका बूढ़ी थी तोभी स्त्री पुरुषके रतिको तमाशा देखने लगी यह बात हमारे सब के मनमें बड़े आश्चर्य सरीकी मालूम परती है १ वाचक बोले बालपन में रेणुका बड़ी चंचल थी पिताके महलमें रही तब एक दिन बहुत सखियों को संग लेके स्नान करनेवास्ते

वृद्धामपश्यस्पत्तिणासह। ... नकरिष्यसि। दृष्टिक्रीडाचसर्वासा क्री न ...ते। एतदर्थंतयापापं कृतन्नान्यद्धिचिन्तनम् ४ । भा० न० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कंजुहावगुरुश्चाग्नौ ... नूरजेः। यस्मिन्प्रहूयमानेच सहसान्तोगुरोतदा १ वाचक उवाच ॥ तेषाम्बैरजिपुत्राणां गुरुणाशिष्यरचिणा। तेजस्याहूयमानेच सहसान्तोवधीन्नतान् २ इति ० भा ० न० शं० मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी १७॥श्लो० १५॥ नदीको जातीभई २ एक बूढ़ी चिड़िया अपनेपति पत्ती तिसके संग क्रीड़ा करि रहीहै तिसको देखिके रेणुका बहुत हँसती भई तब चिड़िया ने शाप दिया कि हे दुष्टिनी मैंतो अपने पतिके संग रमण करतीहूं और तू वृद्धापन में दूसरे के संग क्रीड़ा करेगी ३ सम्पूर्ण क्रीड़ाको मूल आंखोंसे देखनाहै सो कीड़ा तू करेगी हेश्रोताहो इस वास्ते रेणुका पापकिया बूढ़ापन में दूसरा कुछ अन्यायको विचारिके नहीं किया ४ इति भा० न० शं० मं० षोड़शेऽध्याये षोड़शवेणी १६॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोता पूंछते भये हे गुरुजी बृहस्पति अग्निमें क्या चीजका होम करते भये जिस चीज के होमके प्रतापसे रजिराजा के पुत्रोंको इन्द्र मारिडाला यहशंकाहै१वाचकबोले शिष्यकी रक्षा करनेवाले जोबृहस्पति सो राजारजिके पुत्रोंको तेजमंत्र से अग्निमें होमकरि देतेभये तबराजारजि के पुत्र तेज हीन होगये तब इन्द्र राजारजिके पुत्रों को मारिडाला२इति भा० न० शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी॥१७॥श्लोक ॥१५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ययातिर्लघुपुत्रस्य वयसारीरमन्नृपः। तन्मातरिमहापापं कृतंह्याभ्यांकथंगुरो १ वेदाज्ञा सर्वदाग्राह्यापितुरेपासनातनी। मर्य्यादासाचकर्तव्या न्यायान्यायांविचार्यंच २ वाचक उवाच ॥ शर्मिष्ठाऽधरपानेनययातिर्बुद्धिवर्जितः। पुरुर्द्दत्त्वयस्यदोहित्रोह्यो पापात्मकसम्मतो ३ इतिश्रीभा० न० शं० मं० अष्टादशोऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ४५ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ महदन्यायमेतद्धि ज्येष्ठान्पुत्रान् विहाय च। सिपेचलघुपुत्रस्वै राज्येराजाकथंसुधीः १

वाचक उवाच ॥ कामिनोलोभिनःक्रोधयुक्तायेप्राणिनः क्षितौ। तेविचारन्नकुर्वन्ति सदैतेस्वार्थतत्पराः २चकारा तोययातिर्नविचारंपापसंश्रयात् ३ इति० भा० न० शं० मं एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंविस्मरणंचक्रे दुष्यन्तोचिर कालतः। शकुन्तलायाःपुत्रस्य स्वात्मनश्चरितस्यच १ वाचक उवाच ॥ जानन्नपिनृपोधीमान् लोकभीत्यान

बड़ाअन्याय क्यों किया बड़े पुत्रोंको त्यागिकैछोटेको राज देते भए यह हमारे सबके मनमें बड़ी शंकाहोतीहै १ वाचक बोले कामी लोभी क्रोधी ऐसे ? जीव भूमि में हैं परन्तु न्याय अन्याय को विचार नहीं करते नित्य अपने शरीरको सुख चाहते हैं न्याय में दुःख देखैंगे तब न्यायको त्यागि देवैंगे अन्याय में सुख देखैंग तब अन्याय करैंगे देहको सुख होना उसको तौ पुण्यजानते हैं तथा देहको दुःख होना उसको पापजानते हैं सुकर्म कुकर्म नहीं देखते २ इस पापके प्रभाव से ययाति राजा छोटे बड़े को विचार किया नहीं जिसकी देहसे सुख पाया उसको राज दिया ॥ ३ ॥ इतिभा० नव० शं० मं०एको नविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये थोरेही दिनमें राजा दुष्यंत अपने चरित को भूलिगया तथा शकुंतलाको अपने पुत्रको भूलिगया गुरु जी यह बड़ी शंकाहै अगाड़ी के लोग कैसे भोले थे हर १ १ वाचकबोले कि बड़ाबुद्धिमान् राजाजानतारहा कि हमारा पुत्र यह है यह शकुंतला हमारी स्त्री है परन्तु लोककी निंदा

जगृहे ।ज्ञापयित्वानभोवाण्या सर्वानंगीचकारवै २ इति भा० न० शं० मं० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ समुद्वाहतनयां शुकस्यक्षत्रियर्षभः। कथन्नीपोगुरोह्येतन्महत्कौतूहलम्प्रभो १ वाचक उवाच ॥ श्रेष्ठाब्रह्मविदांकन्या शुकस्यनान्यमिच्छती॥ पतिंवव्रेस्वयम्भपन्नृपोऽपब्रह्मवित्तमः २ इति भा०न० शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी २१श्लोक२५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भार्गवोरामचन्द्रेण न्यस्तशस्त्रः

के डर से नहीं ग्रहण किया आकाशवाणी से सबको मालूम कराय के तौ ग्रहण किया है २ इति भा० न० शं० मंजर्यां विंशेऽ ध्याये विंश वेणी २० ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा नीपक्षत्री होके शुकदेव जी ब्राह्मण थे तिनकी लड़िकी के संग क्यों अपना विवाह करता भया क्षत्री की लड़िकी को तौ ब्राह्मण सदैव ब्याहि लेते थे परन्तु ब्राह्मण की कन्या को क्षत्री नहीं ब्याहे कभी देवजानी की वाततो शापसे भई है हमारे सब के यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले तीनलोकमें शुकदेव की लड़िकी सब ब्रह्मज्ञानियों में ब्रह्मज्ञानी थी ब्रह्मज्ञानी पुरुष को अपना पति करना चाहतीथी दूसरे पुरुष को नहीं तथा राजा नीप बड़ा ब्रह्म ज्ञानीथा ऐसा विचारि कै अपनी इच्छा में राजा नीपको अपना पति करिलियाथा कुछ संसारकी रीति से वह विवाह नहीं हुआथा ॥ २॥इति भा० न० शंकानिवारण मंजर्यांएक विंशेऽध्यायेएकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये रामचंद्र के सामने त्रेतायुग में परशुराम

कृतःपुरा । नदीजेनकथंयुद्ध मकरोद्द्वापरेपुनः १ भार्गवोनपणंकृत्वा न्यस्तशस्त्रोबभूवह । अंबिकांस्व शरण्यामें वीक्ष्यविह्वलितामृषिः । कल्पयित्वास्त्रवृंदा नियुद्धारंभन्तदाकरोत् २ इति० भा० न० शं० मं० द्वा विंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२॥ श्लो०॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दशसाहस्र्योषित्सुशशबिंदोस्सुता गुरो । शतकोट्यःकथंजाता महत्कौतूहलास्विदम् १ वाचक उवाच ॥ नताश्चतनुधारिण्यस्सर्वाश्चेंद्रिय

जी आपको धनुषबाण राखिके तप करने को चलेगये थे ऐसा रामायण में लिखागया है फिरि द्वापरयुग में भीष्म जी के संग युद्ध क्यों करते भये क्योंकि उसी वखत परशुराम जी धनुषबाण कहांसे पाये हे गुरुजी यह बड़ी शंका हमारे सबके मनमें है सो आप कृपाकरिके निवारण करो १ वाचक बोले जब परशुराम जी ने रामचंद्रजी के सामने अस्त्रको त्याग कियां तब ऐसी शपथ नहीं कियाथा कि आजुसे हम कभी अस्त्रग्रहण नहीं करेंगे इसवास्ते बहुत दुःखी जो अंबिका तिसको अपनी शरण को प्राप्त देखिके तप करिके दूसरा धनुषबाण बनायके भीष्मके संगयुद्ध करते भये ॥ २ ॥ इति भा० न० शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी राजा शशबिंदु के दस-हजार स्त्रियों में सौकरोड़१०००००००० पुत्रहोते भये यह कैसे तमाशाकी बात है कि कहनेवाले तो महात्मा हैं परंतु सुनने वालेकोलज्जा मालूम परती है शिव ३।१ वाचक बोले हे श्रोताहो राजा शशबिंदु के दशहजार स्त्रीथीं सो मानुष्य को शरीरधारण करने वाली नहीं थीं वोतो राजा बड़ा योगीथा

सहस्रानन्तवाचीच पुत्रास्तासांसुखादयः।
... चोक्तंसंसारहेतवे २ इति० भा०नं०
० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी२३श्लो०१४॥
श्रोतार ऊचुः ॥ मर्त्यलोकेप्रजातानां नराणान्नैव
जन्मनि। दुंदुभिंवादयामासु स्सुराश्चनोश्रुतंचनः १
त कथंवादयामासुर्वसुदेवस्यजन्मनि २ वाचक उवाच॥
वसुदेवोयदाजातस्तदादुन्दुभिसन्निधौ। संस्थितश्चन्द्र

सोदश इन्द्रियोंकी प्रकृति सहस्र कहे गनतीसे रहितसोई राजा की स्त्रीयाँ उनास्त्रियोंमें सौकोटिपुत्रभये सो मनुष्यनहीं भयेवो तो योगमें प्रेमसुख आदि असंख्य गुण मानना यपत्र भये व्यासजीने वर्णन तो किया गुप्तकरिके परन्तु संसार के जीवों को ऐसी वार्ता जल्दी नहीं मालूम परती इसवास्ते संसार पर घटाय के वर्णन किये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० न० शं० मं० त्रयोविंसेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी मर्त्यलोक में जो मनुष्य जन्मते हैं तिनके किसी के जन्म भयेपर देवता दुंदुभी नहीं बजाते और हम सबने कभी सुनाभी नहीं कि बजाते हैं १ तब वसुदेव को जन्मभयेपर देवना दुंदुभी क्यों बजाते भये जो कोई कहे कि भगवान् वसुदेव के पुत्र होवेंगे इस वास्ते अगाड़ी से देवतोंने हर्ष मानिके बजाये हैं तो दशरथ आदि जिनके बहुत जने के भगवान् पुत्र भये हैं तो दशरथ आदि के जन्म में दुंदुभी क्यों नहीं बजाये यह बड़ाभ्रम है २ वाचकबोले जब मथुरा में वसुदेव जन्म लेते भये तब उस समय दुंदुभीके सामने चन्द्रमानउदयथा चन्द्रमाजानिलियाकि इसलड़केके पुत्र भगवान् होवेंगे और चंद्रको प्रकाश करनेवाला

माज्ञात्वातंस्ववंशप्रकाशकम्। अस्माज्जनिष्यतेविष्णुर तोवाद्यंचकारसः ३ इतिश्री भा० न० शं० मं० चतुर्विं शेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी॥ २४ ॥ श्लो० ॥ २९ ॥

यह लड़का होवेगा ऐसा जानिके चन्द्रमा ने दुंदुभी बजाया देवतों ने नहीं बजाया तथा दशरथ के जन्मकी समयमें सूर्य दुंदुभी के सामने नहीं थे होते तौ सूर्य भी बजाते अपने २ कुलकी वृद्धि देखिके सबको हर्ष होताहै ३ इ० भा० न० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंश वेणी २४ ॥ श्लोक ॥ २९ ॥

इतिश्रीमद्भागवतनवमस्कंधशंकानिवारणमंजरी शिवसहायबुधविरचितासुधामयीटीका सहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

दशमस्कन्धपूर्वार्द्धे ॥ १० ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सूर्य्यवंशादभूत्स्वामिन्निशादीप्तिकरान्वयः। नृपप्रश्नकृतेश्लोके कथंसूर्य्योनकीर्तितः १ वाचक उवाच ॥ चन्द्रवंशेसमुत्पन्नं कृष्णंश्रुत्वामहीपतिः । स्वस्यापिकुलमान्यत्वात्पुरश्चन्द्रःप्रकीर्तितः २ इति० भा० दशमस्कंधपूर्वार्द्धशंकानिवारणमञ्जर्य्यां शिवसहायबुधविरचितायांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी १ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे स्वामी जी सूर्य वंश करिकै चंद्र वंश भयाहै और राजा परीक्षित् के प्रश्नवाले श्लोकमें पेश्तर सोम वंशकोनामहै पीछे सूर्यवंश क्यों वर्णनभया पेश्तरतो सूर्यहै यह बड़ीशंकाहै कि पेश्तरवालेकोपछिवर्णनकरनापछिवालेकोपेश्तर वर्णनकरना छंदभीनहीं भ्रष्टदेखताजोछन्द भ्रष्टहोताहोवैतबतो चिंतानहीं १ वाचकबोले राजापरीक्षित् चंद्रवंशमें श्रीकृष्णको जन्म सुनिकै तथा आपनेभी कुलको मान्य करने वास्ते श्लोक में पेश्तर चंद्रमा को कीर्तन किया है २ इ० भा० द० पूर्वार्द्धे शं० मं० ससुधामयी टीकायां शिवसहायबुधविरचितायां प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः॥॥ रोहिण्यावसुदेवस्य चिरन्नाभूच्च संगमम्। विष्णोर्ज्ञातञ्चचारित्रंलोकेकैश्चापितत्कथम्। नापकीर्त्तिर्वभूवाथ तयोःकिंकारणाद्गुरो १वाचकउवाच॥ त्रैलोक्यांचनिवासिन्यः प्रजाजाताश्चपुष्करे॥ स्नानार्थं भोजराजोपि सर्वान्गृह्यकुलांस्तथा २ तेनसार्द्धंचगतवान् वसुदेवोपिपुष्करम्। रोहिण्यपिगतातत्र नंदगोपाभिरक्षिता ३ सर्वेषांतत्रसंयोगो बभूवपुष्करेतदा। चेन्नाभूद्वसुदेवस्य लोकैर्भूतेवज्ञायते ४इतिश्रीभा० द०पू० शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी॥ २॥ श्लोक१५॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी रोहिणी की तथा वसुदेव की मुलाकात बहुत दिन से नहीं भईथी और बलदेव रोहिणी के गर्भ में जन्मते भये तौ लोक में निंदा वसुदेव की तथा रोहिणीकी क्यों नहीं भई जो कोई कहै कि योगमायाने सब काम कियाहै तौ ठीक है परन्तु संसार में तौ भगवान् के चरित्र को कोई नहीं जानता योगमायाकी बाततौ कोटियों नर में एक कोई जानैगा इस वास्ते बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले पुष्करजी के स्नान करने वास्ते तीन लोक के वास करने वाले सब प्रजा पुष्करजी को आते भये तब कंस भी यदु के वंश में जो जो कुलथे सबको संग लेके पुष्करजी को गया २ कंस के संग वसुदेव भी पुष्कर को गये तथा नंद आदि गोपों करिकै रक्षा को प्राप्त रोहिणी सोभी गई थी ३ पुष्करमें सबकी मुलाकात भई परन्तु वसुदेवकी तथा रोहिणी की मुलाकात कंसकी त्रासते नहीं हुई परन्तु लोकतौ जानि लिया कि पुष्कर में वसुदेव की रोहिणी से मुलाकात होगई है इस वास्ते बलदेव को जन्म भये पर कोई भी वसुदेव

श्रोतार ऊचुः ॥ सुखेनमार्गंप्रददौ यमुनानकदुंदुभिं। :पतेसिन्धुरिव ददौमार्गंपयोनिधिः । कुत्रलक्ष्मी पतेश्चैव नरामायसुखेनवै १ वाचक उवाच ॥ बलये दर्शनन्दातुन्नित्यंगच्छतिवामनः । पातालपन्थानान्यो स्तिसमुद्रविवरादृते । नित्यंददातिसौख्येन पन्थानं वामनायसः २ इतिश्री भा० द० पू० शं० मं० तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥श्लो० ॥ ५१ ॥

रोहिणीकी निंदा नहीं किये कि मुलाकात तौ भई नहीं बलदेव कैसे जन्मे ४ इति० भा० द० पू० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये मुनिजी राजा से कहे कि कृष्णको लेके वसुदेव ब्रजको चले तब जैसा भगवान् को समुद्र बड़े सुखसो रस्ता दिया है तैसे यमुना वसुदेवको बड़े सुखसे रस्ता देती भई हे गुरुजी किस स्थानपर भगवान् को सुखसे रस्ता समुद्रने दिया यह बड़ी शंकाहै जो कोई कहै कि लंकाको जानेके वास्ते रामचन्द्र को दिया तब यह बात अनर्थक है क्योंकि रामतो बहुत दुःख सहे हैं समुद्र को शोषणे को तैयार भये तोभी पुल बांधिके गये हैं सुखसों रामचन्द्रको समुद्रने नहीं जाने दिया वाचक बोले इस स्थानपर भगवान् को सुख से रस्ता समुद्र देताहै कि राजाबलिको दर्शन देने वास्ते वामन नित्य सुतल लोकको जातेहैं तब पाताल जानेको रस्ता एक समुद्र में है दूजी नहीं है सो नित्य वामनको सो समुद्र आप सुखिके रस्ता देता है इस वास्ते व्यास भगवान् को रस्ता देने को समुद्रको कहे हैं २ इति भा०द० पू०शं०मं०तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ५१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥

राक्षसैः । भोजराट्स्वहितम्मेने नाहिंस्यम्ब्रह्मकैरपि १
वाचक उवाच॥नतद्ब्रह्मात्रसंज्ञेय श्चात्रसत्कर्म्मब्रह्मवै
यज्ञादिस्नानदानादि रमेशहृदयाजवम् २ इतिभा०
द० पू० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ४श्लो०४३॥
श्रोतार ऊचुः ॥ वसुदेवः कथंचक्रे मित्रेणसहवंचनम्।
नसत्यकथनेनंदः किमुबालमरक्षत १ वाचक उवाच॥

श्रोता पूछते भये कंस ने राक्षसों करिके जिस ब्रह्म को बधन कराय के अपना कल्याण मानता भया सो ब्रह्म कौन है क्योंकि सर्वव्यापी अजर अमर चैतन्य कारक ऐसा जो ब्रह्म है सो कभी भी किसी के मारे नहीं मरैगा यह मरने वाला ब्रह्म कौन है जो राक्षसोंके मारे मरिगया यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले जो अजर अमर सर्वव्यापी ब्रह्महै सो ब्रह्म को(ब्रह्महत्या हितं मेने)इस श्लोक को अर्थ व्यास जी नहीं किये इस श्लोक को अर्थ व्यासजी ऐसा किये कियज्ञ आदिदान आदि स्नानआदि भगवान्‌को पूजन आदि अनुराग अपने हृदयमें कोमलता दया इनको आदि लेकै और अनेक प्रकार को सुंदर कर्म सोई ब्रह्महै तिसको नाश करायकै कंस अपना हित मानता भया ऐसा अर्थ व्यासजी कियेहैं २ इति भा० द० पूर्वा० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी४श्लोक४३॥

श्रोता पूछते भये वसुदेव ऐसे महात्मा होकै फिरि मित्र जो नंदतिन के साथ कपट क्यों करते भये जो सत्य बोलते कि हमारे दोपुत्र आपु के पास हैं सो आप रक्षा करो क्यों कि विपत्ति में मित्रसिवाय दूसरा कोईभी सहाय नहीं करता है ऐसा कहेपर क्या श्रीकृष्ण की रक्षा नंद न करते कपटको

[illegible] वैं कर्मकुर्वन्तिप्राणिनः । त्रिलोकस्थायथाविष्णुस्तथायमपिमोहितः । पूर्वंदत्तवरोनन्दो यशोदा च तपस्विनी । विष्णुनातोऽनृतम्प्रोक्तम्वसुदेवेनगोपतिम् ३ इति० भा० द० पू० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चकम्पिरेत्रयोलोकाः कथंशब्देन गोकुले । महदाश्चर्यमेतद्धि पूतनायाश्चनश्श्रुतम् १ वाचकउवाच ॥ त्रिलोकस्थाःप्रजास्सर्वाश्श्रीकृष्णादर्श

ष्या कामथा १ वाचक बोले तीन लोक में टिके जो प्राणीसो सब भगवान् की माया करिकै पागल हो रहेहैं तैसा वसुदेव भी पागल होगये जो कोई ऐसा कहे विना कारण माया किसी को नहीं मोह करती तौ सत्य है वसुदेवको मोहहोने में यह कारण था २ पहिले नंदको तथा यशोदाको भगवान् वरदान दियेथे किहम जन्मैंगे दूसरेके पण बालक्रीड़ा तुमारे पास करैंगे इसवास्ते भगवान् वसुदेव को माया से मोहित करिकै कपट कराया जो वसुदेव सत्य बोलते तौ नंद कृष्ण की पालना करते तौ सही परन्तु जरा भेद दृष्टि तौरहती कि दूसरे के पुत्रहैं इसवास्ते नंदसे वसुदेव कपट किये हैं अपनी इच्छासे नहीं किये॥३॥इति भा० द०पू० शं०मं० पंचमेऽध्याये पंचम वेणी ॥ ५ ॥ शलोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी गोकुल में पूतना मरती वखत शब्द कियाथा उसी शब्दकरिकै,तीन लोक कांपने लगा वड़ा आश्चर्य मालूमपरताहै हम लोग तौ कभी नहीं सुना किराक्षस तथा राक्षसी के शब्द करिकै तीन लोक कांपने लगा हर ३ वाचक बोले जिस वखत पूतना मरते वखत शब्द कियाथा

नायच। प्रच्छन्नाश्चसमायाता गोकुलेसमयेतदा २ ताश्श्रुत्वातद्ध्वंशीघ्रं बभूवुःकम्पितास्तदा। अतोलोक त्रयाःप्रोक्ता द्वयोर्भेदोनदृश्यते ३ इति० भा० द० पू० शं०मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चकारनकथंकृष्णः स्वदेहेभारवर्द्धनम्। दुःखार्दितंव्रजंकृत्वा रोदयित्वास्वमातरम्। स्वतनौकृतवान्पश्चाद्भारस्यवर्द्धनंहरिः १ वाचकउवाच॥ वरम्पूर्वंददौब्रह्मातृणावर्तायदैयदा। त्वत्कृतेनानुतापेन यशोदाश्रुनिपातनम्। भविष्यति च तेमृत्युस्तदातोन

उस समय गुप्तहो कै तीन लोक में टिके जो प्रजा सो सब श्रीकृष्ण को दर्शन करने वास्ते व्रज में आये थे २ सो सब प्रजा पूतना के शब्द को सुनिकै जल्दी कांपने लगे इस वास्ते तीन लोक कांपने वास्ते व्यास जी कहे थे क्यों कि लोक प्रजा को भी नाम तथा प्रजा लोकको नाम है लोकमें तथा प्रजा में भेद शास्त्र में नहीं देखने में आता ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी॥६॥श्लोक ॥१२॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णने अपनी माता को तथा सब व्रजवासियों को दुःखी करिकै तथा अपनी माको रोवाय कै अपनी देह में भारको बढ़ाया तौ जब तृणावर्त हरिकै लेचलने लगा तब अपनी देह में भार क्यों नहीं बढ़ाये कि राक्षस के उठाये न उठते तब सब को दुःख क्यों होता यह शंका है १ वाचक बोले ब्रह्मा ने पहिले तृणावर्त को वरदान दिये थे कि तेरे किये दुःख करिकै यशोदा के आंखों से जब अश्रुपरैगा तबतेरी मृत्यु होवैगी इसवास्ते श्रीकृष्णने पेश्तर अपनेशरीरमें भारनहीं

पुरस्कृतम् २ इतिभा० द० पू० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ गर्गोमुनीश्वरोब्रह्मन् चक्रेनंदेन वंचनम्। कथंतद्ब्राह्मणानाम्वै सर्वस्वंहरतेक्षणात् १ वाचक उवाच ॥विचार्यमनसागर्गोमहोत्पातोभविष्यति अत्रोक्तेचमयासत्येदैत्यैर्ज्ञातोशिशुर्ध्रुवम्। चक्रेऽतोवंचनं पापम्परोपकारणायच २ इतिश्रीभा० द०पू०शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी। ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

बढ़ाये ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तम वेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी गर्गमुनि नंदके संग कपट क्यों करते भये कि हम श्रीकृष्ण को नाम नहीं धरैंगे क्यों कि इसी वास्ते तो गयेथे हे गुरु जी झूठ वचन क्षण एक में ब्राह्मणों के तप आदि सब धनको नाश करिदेता है सो गर्ग झूठ क्यों बोले हर ३।१ वाचक बोले गर्गमुनि अपने मनमें विचार कियेकि हमनंद से सत्य २ बोलैंगे और प्रत्यक्ष करि कै कृष्ण को नाम धरैंगे तो बड़े उत्साहसे बाजन बजवाय कै और जो अनेक हर्षसो आनंद करैंगे तब कंसआदि दैत्य जानि जावैंगे कि यह बालक किसी यदुवंशी को है तो बड़ा उत्पात होवैगा इसवास्ते झूठ बोले हैं बिना कपट किये नंद गुप्तनाम न कराते बड़ाउत्साह करते नाच तमाशा हजारों प्रकार का बाजन बाजते इस कारण से गर्ग कपट किये हैं तथा पराये जीवके उपकार वास्तेझूठको पापभी नहींहोता२ इति० भा० द० पू० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८ ॥

॥ ७ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ कृत्वानुबंधनम्प्राप्तोयशोदामुरुदुःखिताम् ।पुरःकथन्नतद्भेजे कृष्णश्चैतन्महद्भुतम् १ वाचक उवाच ॥ सर्वारज्जूनि गोलोकादागताश्चैवदासिकाः। भूत्वागोनाम्व्रजेतेषां मोक्षार्थंनपुरोहरिः। प्रथमंबंधनम्भेजे सर्वासाम्मुक्तिहेतवे२इतिभा०द०पू०शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी॥ ९ ॥ श्लो० ॥ १९ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ केनदृष्टश्श्रुतोवापि लोकेशास्त्रेच सज्जनैः। तत्कथंरेमतुर्यत्रा वम्भोजवनराजिनि १

श्रोता पूछते भये कृष्णजी यशोदा माताको बहुतदुःखी करिके पीछेसे रस्सीमें बंधिगये तो पेश्तर क्यों नहीं जल्दी ए कई दफेमें बंधे यह बड़ाशंका है माता को दुःखी करिके रस्सी में बंधिगये इसका कारण क्या है १ वाचक बोले जब गोलोक से श्रीकृष्णके संग सबगौ व्रजको आनेलगीं तब गोलोक में गौवोंकी सेवन करने वाली दासी रस्सी होकेगौके चरण में सेवनकरि रहीहै नंदजी की गौवोंकी भगवान् विचारेकि अब इनगौवोंकी दासिनको गोलोकको भेजि देवें ऐसा विचारिकै उनगौवों की दासियों की संसार से मुक्ति होनेवास्ते फिरि गोलोक को भेजने वास्ते पहिली दफेरस्ता में नहीं व दफे वँधिजातेतौ यशोदा अपने घरकीसबरस्सी क्यों ले इति०, भा० द० पू० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ १९ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी कोई भी सज्जन न...में घन होता है ऐसा शास्त्रमें सुना नहीं तथा लोकमें किसी नदी में कमल को वन देखेनहीं फिरि दोऊ यव नदीके में प्रवेश करिके कमल के वनमें स्त्रियोंके संगक्रीड़ा

रमापतिम्प्राणपतिञ्जगत्पतिम्भूयो
मानसे २ इति भा० द० पू०शं मं०
एकादशवेणी ११॥ श्लो० ६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥अघासुरस्याधरवर्द्धनं
नोहृदयंचकम्पते । नरावणस्या: ।
मपीत्थंमुखवर्द्धनंश्रुतम् १ वाचक उवाच ॥
न्तमालोक्यपुराऽस्यसंचितंतपः । तद्वर्द्धित्वानभ
चोष्ठंचाकृष्यतेजसा २ अनेनजन्मनापापं संचित
पुप्लुवे।अधोगन्तुंक्षितिम्भित्वा चोष्ठंचाकृष्यपूर्ववत्

देखिकै लक्ष्मीके पति प्राणके व जगत्के पति ऐसे श्री
वारम्वार नमस्कार करिकै अपनेको धन्य जानिकै मन स
हँसते भये २ इ० भा० द० पू० शं० मं० एकादशेऽध्याये
दशवेणी ११ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूंछते भये हेगुरुजी अघ नाम राक्षसके दोनों
की लंबाई सुनिकै हमारे सवको मन तथा हृदय कांपने
क्योंकि ऐसी ओठकी लम्बाई रावण की तारक की और
नेक राक्षसों की हम कभी न सुना वड़ा आश्चर्य होताहै
१ वाचक बोले अघासुर की पूर्व जन्मकी पुण्यहै सो
को दर्शन अपने सामने करिकै वड़े हर्ष से वर्धित होकै
को प्राप्त भई परन्तु अपने तेज करिकै अघासुर के ऊप
ओष्ठको खैंचिकै संग लेतीगई २ तथा इस जन्म करिकै
जोपाप सो श्रीकृष्ण को देखिकै डरिकै अघासुरकी देह
छोड़िकै भागता भया पाताल में जाने की तयारी किया
को भेदन करिकै अघासुर को पाप पातालको गया
अघासुरके नीचे को ओठको अपने जोरसे खैंचिकै संग

कृष्णस्पर्शाद्द्वयंनष्टम्प्रविवेशतनौहरेः । अतोनभासि भूमौच तदाधरविवर्द्धनम् ४ इतिश्रीभा० द० पू० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥ १२ ॥ श्लो०॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरेर्नान्यावतारेषु न मोहोब्रह्मण श्रुतः । मोहम्प्रापकथम्ब्रह्मा कृष्णाविर्भावमंडले १ वाचक उवाच ॥ स्वसुतन्नारदंदृष्ट्वा मायाग्रस्त म्विधिस्तदा । जहासतेनशप्तश्च मायात्वाग्रसतेपितः २ कृष्णभोजनमन्वीक्ष्य मोहग्रस्तोभविष्यसि ॥ ३ ॥ इति भा० द०पू० शं० नि० मञ्जर्य्यांत्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

गया पेश्तर सरीके ३ अघासुर नेश्रीकृष्ण के शरीरको स्पर्श किया तब उसका पुण्य पाप दोनों नष्ट होगया तब अघासुर कृष्णकी देह में मिलिगया पाप पुण्य नाश होने का कारण यहहै जब प्राणी के पास पुण्य रहैगा तब वह प्राणी स्वर्ग भोगैगा पापरहैगा तौ नरक भोगैगा दोनोंनष्ट होंगे तौ ईश्वर में मिलैगा इसवास्ते आकाश में तथा भूमि में अघासुर के ओठ की वृद्धि हुईथी॥४॥इ० भा० द० पू० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादश वेणी १२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये भगवान् के अनेक अवतार भये परन्तु किसी अवतारों में ब्रह्माको मोह नहीं भया ऐसा हम सबने सुना है पण श्रीकृष्णके अवतार में ब्रह्माको क्यों मोह भया यह बड़ी शंका होतीहै १ वाचक बोले ब्रह्मा जी नारदजी को माया से ग्रसित हुआ देखिके हँसते भये तब नारदजीने ब्रह्मा को शाप दिया कि हे पिताजी तुमको माया ग्रसित करेगी २ एक दिन श्रीकृष्णको भोजन करता देखिके माया से ग्रसित

श्रोतार ऊचुः ॥ स्तुतिंकृत्वागतो ब्रह्मानोवाचभगवान्कथम् । महाश्चर्यमिदम्ब्रह्मन्तिरस्कारोविधेरभूत् ॥ वाचक उवाच ॥ स्वस्तुतिंस्वाननेनैव कुर्वन्तिदुर्जनाजनाः। कृष्णोऽनोव्रीडितोभूत्वानोवाचकमलोद्भवम् २ इतिश्रीभा० द० पू० शं०मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ स्वस्यश्रेष्ठंकथंचक्रेशेषंस्वांशयदूद्वहः । एषानो महतीशंकावर्ततेमहतीहृदि १ वाचक

होवोगे हे श्रोता हो इसवास्ते श्रीकृष्णजी के अवतार में ब्रह्मा को मोह हुआ ३ इति भा० द० पू० शं०मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदश वेणी १३ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछतेभये श्रीकृष्णकी स्तुति करिके ब्रह्मा अपने लोककोगये परन्तु कृष्णभगवान् ब्रह्मासे क्यों नहीं बोलते भये सबजगह देवतोंसे बोलतेहैं यह बड़ा आश्चर्य भया कि भगवान् खुद ब्रह्माको अनादर किया १ वाचक बोलतेभये अपने मुखसे अपनी तारीफ दुष्टजन करतेहैं मैं ऐसाहौं २ इसीवास्ते श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म जगत्के नाथ ब्रह्मासे किई अपनी स्तुति सुनिके लज्जायमान होगये ब्रह्मासे कुछभी नहीं बोले विचार किये कि हमने नाहक ब्रह्माके चरित्रको नहींमाने वत्स बालकोंकोब्रह्मा हरिलेगयेथे तौ हमको ब्रह्माकी स्तुति करिके लेआना चाहतारहाहै ऐसे दयालु भगवान् लज्जासे नहीं बोले २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी १४ श्लोक ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्रीकृष्ण भगवान् विष्णुहो कैसेअपना अंश जो शेष तिन को अपने से बड़ा क्यों कियेकि बलदेव

॥ लक्ष्मणेनानिशंरामः सेवितस्तंवरंददौ ।
... श्रेष्ठस्त्वान्तेसेवानुकारकः । कृष्णनामाभ
। चातश्चेथानद्वीश्वरः ॥ २ ॥ इति भा० द० पू०
शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥ १५ ॥श्लो० १४॥
श्रोतार ऊचुः ॥ नागेशस्यह्रदाद्यातियान्दिशंयमु
नातदा । संयोगावधिगंगायाः कथन्नासाविषान्विता १

को सेवन कृष्ण वड़ा जानि के करते भये हे गुरु जी हमारे सबके मनमें यह वड़ी शंका है वाचकबोले त्रेता में लक्ष्मण जी श्रीरामचन्द्र जीकी वहुत सेवन रातिदिन करते भये तव श्रीरघुनाथ जीने लक्ष्मणको वरदान दिये हेभाई लक्ष्मण हम तुमको प्रसन्न भये इसवास्ते द्वापर में तुमको अपना बड़ा भाई वनायके हम तुम्हारा सेवन करैंगे श्रीकृष्ण हमारा नाम होगा हेश्रोताहो इसवास्ते शेषजी विष्णुसेवड़े होते भये२इति भा०द०पू०शं०मं०पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥१५॥श्लो०॥१४॥
श्रोता पूछते भये कालिय नाग के कुंड से जिस दिशाको यमुना जी गई हैं गंगाजी को तथा यमुनाको मिलाप भया है प्रयाग तक यमुनाके जल में नागको जहर क्यों नहीं मिला रहा क्योंकि कुंड को जल जहर से पूर्ण रहाथा सोई जल प्रयाग तक आया सो जहर से मिला चाहिये जैसा कुंड में जहर से मिलाथा तैसा प्रयाग तक जहरीजल होनाचाहिये सो क्यों नहीं भया १ तथा भागवतमें लिखाहै कि कालियके कुंडकेसामने यमुनाके तीरपर जो प्राणी जीवधारी तथावृक्ष आदिसव जलिजातेहैं तो कदंबको वृक्षकालिय कुंड के सामने रहा सोक्योंनहीं भस्महुआ यहदोशंकाहमलोगोंको दुःखदेती हैं१वाचक वोले जिसदिन कालिय यमुनाके कुंडमें वास किया

श्रोतार ऊचुः ॥ स्तुतिंकृत्वागतो ब्रह्मानोवाचभगवान्कथम् ।महाश्चर्यमिदम्ब्रह्मनूतिरस्कारोविधेरभूत् ॥ वाचक उवाच ॥ स्वस्तुतिंस्वाननेनैव कुर्वन्तिदुर्जना जनाः।कृष्णोऽनोव्रीडितोभूत्वानोवाचकमलोद्भवम् २ इतिश्रीभा० द० पू० शं०मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दश वेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ स्वस्यश्रेष्ठंकथंचक्रेशेषंस्वांशयदूद्वहः । एषानो महतीशंकावर्ततेमहतीहृदि १ वाचक

होवोगे हे श्रोता हो इसवास्ते श्रीकृष्णजी केअवतार में ब्रह्मा को मोह हुआ ३ इति भा० द० पू० शं०मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदश वेणी १३ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछतेभये श्रीकृष्णकी स्तुति करिकै ब्रह्मा अपने लोककोगये परन्तु कृष्णभगवान् ब्रह्मासे क्यों नहीं बोलते भये सबजगह देवतोंसे वोलतेहैं यह बड़ा आश्चर्य भया कि भगवान् खुद ब्रह्माको अनादर किया १ वाचक वोलतेभये अपने मुखसे अपनी तारीफ दुष्टजन करतेहैं मैं ऐसाहूँ २ इसीवास्ते श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म जगत्के नाथ ब्रह्मासे किई अपनी स्तुति सुनिकै लज्जायमान होगये ब्रह्मासे कुछभी नहीं वोले विचार किये कि हमने नाहक ब्रह्माके चरित्रको नहींमाने वत्स वालकोंकोब्रह्मा हरिलेगयेथे तौ हमको ब्रह्माकी स्तुति करिकै लेआना चाहतारहाहै ऐसे दयालु भगवान् लज्जासे नहीं वोले २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी १४ श्लोक ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्रीकृष्ण भगवान् विष्णुहो कैसेअपना अंश जो शेष तिन को अपने से बड़ा क्यों कियेकि बलदेव

। लक्ष्मणेनानिशंरामः सेवितस्तंवरंददौ ।
[illegible] त्वान्तेसेवानुकारकः । कृष्णनामाभ
[illegible] ः ॥ २ ॥ इति भा० द० पू०
शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥ १५ ॥श्लो० १४॥
श्रोतार ऊचुः ॥ नागेशस्यहृदाद्यातियान्दिशंयमु
नातदा । संयोगावधिगंगायाः कथन्नासाविषान्विता १

को सेवन कृष्ण वड़ा जानि कै करते भये हे गुरु जी हमारे सबके मनमें यह वड़ी शंका है वाचकवोले त्रेता में लक्ष्मण जी श्रीरामचन्द्र जी[illegible]ो वहुत सेवन रातिदिन करते भये तव श्रीरघुनाथ जीने लक्ष्मणको वरदान दिये हेभाई लक्ष्मण हम तुमको प्रसन्न भये इसवास्ते द्वापर में तुमको अपना वड़ा भाई वनायकै हम तुम्हारा सेवन करैंगे श्रीकृष्ण हमारा नाम होगा हेश्रोताहो इसवास्ते शेषजी विष्णुसे वड़े होते भये२इति भा०द०पू०शं०मं०पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥१५॥श्लो०॥१४॥

श्रोता पूछते भये कालिय नाग के कुंड से जिस दिशाको यमुना जी गई हैं गंगाजी को तथा यमुनाको मिलाप भया है प्रयाग तक यमुनाके जल में नागको जहर क्यों नहीं मिला रहा क्योंकि कुंड को जल जहर से पूर्ण रहाथा सोई जल प्रयाग तक आया सो जहर से मिला चाहिये जैसा कुंड में जहर से मिलाथा तैसा प्रयाग तक जहरी जल होना चाहिये सो क्यों नहीं भया १ तथा भागवतमें लिखाहै कि कालियके कुंडकेसामने यमुनाके तीरपर जो प्राणी जीवधारी तथावृक्ष आदिसव जलिजातेहैं तौ कदंवको वृक्षका[illegible]य कुंड के सामने रहा सोक्योंनहीं भस्महुआ यहदोशंकाहमलोगोंको दुःखदेती हैं१वाचक वोले जिसदिन कालिय यमुनाके कुंडमें वास किया

कदम्बवृक्षश्चकथन्नबभूवाग्निसान्मुने २ वाचक ७
तद्धूदस्थमहिम्वीद्य शतहस्तंचतुर्दिशः ।
विधिश्चक्रेहृदान्नान्यत्रसंस्थितिः ३ वै ५
कदंबोपरिसंस्थितः । मः वंः
ज्जनाः ॥ इति भा० द० पू० शं०नि० मं०षोड़शेऽध्याये षोड़शवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ४ से ५ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥तद्धूदःकालियेनैव ज्ञातोनान्यैःकथं प्रभो । सर्पैरेषाचमहृती शंकास्मांस्तुदतेसदा १ वाचक

उसीदिन कुंडमें टिका जो नाग तिसको ब्रह्मा देखिके विचार किये कि ऐसा विषके जोर करिकै यमुनाजीको जलतो जहरी होगया कुंडसे प्रयागतक यमुनागई हैं सो जहरी जलभया श्रीगंगाजीमें मिलीतो गंगाजलभी जहरी होजावैगा गंगाजी समुद्रमें मिलीहैं सोभी जहरीहोगा जोकभी यमुनाजी बहुत पूर आवैंगी तब पीछेकोभी जल जायगा सोभी जहरी होगा ऐसा विचारिकै नागके कुंडसे चारोंतरफ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण सौ १०० हाथ तक जहर रहैगा सौ हाथकेऊपर जहर नहींरहैगा ऐसा प्रमाण करिदिये इसवास्ते सबदेशमें यमुना को जल जहरी नहीं भया ३ हे श्रोताहो गरुड़ अमृत को लै आये तब थोरीदेर केवास्ते कदंब के ऊपर बैठेथे तब अमृत को कुछुबिंदु पड़गया कदंबपर इसवास्ते नागके जहर करिकै कदंब भस्म नहीं हुआ ॥ ४ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥ से ५ तक ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरुजी उस कुंडको कालिय जानताथा तथा दूसरे सर्पों को क्यों नहीं कुंडमालूमथा यहशंकाहमलोगोंको

॥ देवर्षिशिष्योनागेशः कालियस्तेनज्ञापितः।
दस्तस्मान्नान्यैर्ज्ञातोबभूवह ॥ २ ॥ इति
० द० पू० शं नि० मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदश
॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ कदाचिन्तयद्भक्तो बधनेजगदी
ः। प्रलम्बालपस्यहिंसायां कथंचिंतान्वितोभवत् १
उवाच ॥ शेषेनकल्पितोमृत्युस्तस्यपूर्वविरंचिना॥
ज्ञात्वाचिन्तान्वितोभवत् २ इति भा०
द० पू० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादश
वेशी १८ ॥ श्लोक १८ ॥

नित्यचैन नहीं लेनेदेती १ वाचक बोले कि कालियनाग नारद
को चेलाथा इसवास्ते नारदने कालिय को कुंडवतायेथे कि
तेरेको कभी आपत् काल पड़े गरुड़की तरफ से तौतू यमुना
के कुंड में चलाजाना कुंड में गरुड़ को जोर नहीं चलेगा हे
श्रोताहो इसवास्ते अकेले कालिय को कुंड मालूम था
और किसी सर्पोंको नहीं मालूमथा ॥ २ ॥ इति०भा० द०पू०
शं० मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेशी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये रावण आदिलेके अनेक राक्षसों को भग-
वान् मारते भये किसी राक्षस के मारने वास्ते चिंता नहीं
किये छोटेसेछोटा प्रलम्बनाम राक्षस तिसको मारने सेंक्यों
चिंता करते भये यह बड़ी शंकाहोती है १ वाचक बोले प्रलम्ब
को मृत्यु ब्रह्माने पेस्तर शेष करिकै कियेथे कि तू शेष के मारे
मरैगा और किसीके मारे नहीं मरैगा तब ऐसा भगवान्
जानिकै तथा शेषको हृदय कोमल जानिकै कि दया देखिकै

श्रोतार ऊचुः ॥ पालनम्वस्तमातॄणांमहिषीणांच निंदितम् । त्रिवर्णानांकथंचक्रे श्रीकृष्णोनंदनंदनः १ वाचक उवाच ॥ अजावत्सतरीगोनाम्नाहिष्योवृद्धधेनवः। द्वयोश्चमध्यवर्तिन्यो गावःप्रोक्तामुनीश्वरैः। कृष्णेनपालितास्ताश्च नमहिष्योनचाप्यजाः २ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी १९ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वेचगुणिनस्संतिकामिनीभिश्च संयुताः । कामिनीभिश्चत्यक्तास्मतेश्रुतानोकदापिनः ।

शेष नहीं मारैंगे इसवास्ते भगवान् चिंता करते भये ॥ २ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥१८॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्यको बकरीपालना तथा भैंसि पालना यह बहुत खराब काम शास्त्र में लिखा है फिरि श्रीकृष्ण बकरी तथा भैंसि को पालन क्यों करते भये १ वाचक बोले पण्डित जन बकरी को अजा कहते हैं परन्तु मुनियोंने अजाको ऐसा अर्थ किये हैं कि बालक जिस में नहोवे उस को नाम अजा है अजाकहे गौवों की बछी तथा महिषी कहेवृद्धी२ गायबछीके वृद्धी गाइयोंके बीचमें जो रहने वाली गायमाने ज्वानिगौ तिनकी गाय संज्ञा है श्रीकृष्ण भगवान् बछी तथा वृद्धी ज्वानिगौकी पालन किये हैं बकरी तथा भैंसिको पालन नहीं किये ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी संसार में जो गुणी प्राणी हैं सो सब अपनी स्त्रियों के संग सुख दुःख गृहस्थी में भोगि

न्तिस्थैर्यं गुणिषुयोषितः १ वाचक । प्रोक्ताश्चात्रनकामिन्यः प्रमदाश्शास्त्रपारगैः। : प्रीतयोभरिशःचिता । ताःकामि न्योनकुर्वन्तिस्थैर्यंगुणिषुकर्हिचित् २ इति भा०द० पू० शं० मं०विंशेऽध्याये विंशवेणी॥२०॥श्लो०॥१७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नद्योरूपान्तरंप्राप्यरेमिरेस्वस्वना यके । जलरूपाश्श्रुतानैव मपिकाःकामविह्वलाः । गोपीभिश्चकथंप्रोक्तानद्यः कामातुराऽभवन् १ वाचक उवाच ॥ मनसायेभवन्त्यर्थास्तेसर्वेचमनोभवाः । नद्ये

रहे हैं परन्तु ऐसा किसी गुणी को नहीं सुना किउसकी स्त्री उसको त्यागि दिया होवे तो फिरि शुकदेव जी कहेथेकि जैसा गुणी प्राणीमें स्त्री वहुत देर टिकती नहीं तैसा आकाश में विजली देरतक नहीं टिकती यह वडी शंकाहै १ वाचक वोले(स्थैर्यन्नचक्रुः कामिन्यः)इस श्लोक में शास्त्र के जान ने वाले मुनियोंने कामिनीको स्त्री अर्थ नहींकिये ऐसा कामिनी को अर्थ किये हैं कि संसारके सुखकी तृष्णाकी वहुत प्रीति साई कामिनी है सो तृष्णाकी वहुत प्रीतिरूप कामिनी गुणी प्राणी में वहुत देरतक नहीं टिकती देरतक मूर्ख में टिकतीहै ऐसा अर्थ शुकदेवजी ने कियेथे२ इति भा० द० पू० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी २०॥ श्लोक ॥ १७॥

श्रोता पूछते भये कि ऐसा शास्त्र में हम सवोंने सुना है कि नदी दूसरा रूप धारण करिकै अपने अपने पतिके संग क्रीडा करतीथीं जैसा श्री गंगाजी नर्मदा आदि क्रीड़ा करिकै फिरि जलरूप होजाती थीं परन्तु ऐसा कभीभी नहीं सुना कि कोईभी नदी जलरूप धारण करि कै कामदेव करिकै

कःकामदेवश्चकथितोवैमनोभवः । अतस्ताः
स्वमूवुरतिविह्वलाः २ इ० भा० द० पू० शं० मं०
विंशेऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जहारवसनन्तासां कथं
त्पतिः । तथादधारस्वस्कंधे तदुच्छिष्टश्रिरीक्षणम् १
तासांचक्रेमहान्यायं नग्नानांगतिमुत्तमाम् । कर्मभि
स्त्रिभिरेतैश्चकिन्नप्राप्स्यंतिताविना २ वाचक
ताभिस्संपूजितादेवी चक्रेचिन्तांस्वमानसे । कथंचेमाः
प्रदास्यन्तिगोपाःकृष्णायसर्वशः ३ भविष्यतिनचेदा

विह्वल होगई तो फिरि गोपियों ने क्यों कही कि कृष्ण की प्रीति से नदीभी काम से विह्वलहोगई यह बड़ी शंका है१ वाचक बोले अकेले कामदेवको मनोभव नाम नहीं है मन करिकै जितने अर्थ उत्पन्न होवैं तिन सबको मनोभव नाम है नदियों के मन में कृष्ण को प्रेम उत्पन्नभया सोई मनोभवहै उस प्रेमरूप मनोभव करिकै विह्वल होगई २ इति भा० द० पू० शं० मं० एकविंशेऽध्याये एकविंश वेणी २१ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जगत् के पति ऐसा कर्म क्यों करते भये कि गोपकी लड़कियों को वस्त्र हरिलिये तथा लड़कियों को धारण किया मल मूत्र लगा ऐसा जोवस्त्र उस वस्त्रको अपने कंधेपर राखिलिये तथा नग्न लड़कियोंको देखते भये बड़ापतितभीहोगा सोभीऐसा खोटाकर्म नहींकरैगाहर३ १ क्या इस तीन कर्म को भगवान् न करते तो वो सब गोप की लड़िकी वैकुण्ठको न जातीं गुरुजी यह बड़ी शंकाहै श्लोक दोको अर्थ मिला है युग्महै २ वाचक बोले गोपकी कन्या ने

साम्प्रतिःकृष्णस्तदामम । भूमौनैवकरिष्यंति पूजनं कर्हिचिन्नराः ४ एवंविचार्यसावस्त्रन्तासांहृत्यस्वयंस्थिता। भूत्वावस्त्रमयीदेवी यादृशन्तादृशन्तथा ५ लज्जापनयनार्थाय सर्वमेतत्तयाकृतम्। ताभिर्ज्ञातंचनत्वेतत् क्रीडन्त्यस्तानदीजले ६ तासांरूपंचसन्धृत्य कृष्णान्तिकमुपागताः। वरेदत्तेरमानाथे मोहिताश्चा पिताययुः ७ ताभिर्ज्ञातमिदंसर्वं मस्माभिःकृतमेवतत्। लब्ध्वावरमगुस्सर्वाः कृष्णात्प्राप्तमनोरथाः ८ ज्ञात्वैतदपिसंचक्रेकृष्णोमायामुपागतः। अतोनदोषोहरणेवस्त्र

श्रीकृष्ण को अपना अपना पति होने वास्ते देवी को पूजन करती भई तब तिन लड़कियों करिकै पूजित जो देवी सो अपने मन में चिन्ता करती भई कि गोप लोग इन सब लड़िकियों को विवाह कृष्ण के संग कैसा करैंगे क्योंकि एक पुरुषकेसंग१ लड़िकीको विवाह होताहै बहुतको नहींहोसक्ता२ जब इनसब लड़िकियोंके पति कृष्णनहीं होवैंगे तबकभी भी मानुष्य पृथ्वीमें मेरापूजन नहीं करैंगे कहैंगे कि देवीको पूजन झूठा है ४ देवी ऐसा विचारि कै तिन लड़िकियों के वस्त्र को हरि कै जैसा जिस लडकी का वस्त्र था तैसा वस्त्र होके जहां वस्त्र धरा रहा उसी स्थान पर बैठिगई वस्त्र होके ५ लडिकियों की लज्जा कृष्णसे त्याग करने वास्ते देवी यह सब काम किया एक दफे स्त्री पुरुष सरीके गोपों की लड़िकी कृष्णसे लज्जा त्यागिदेवैंगी तो चाहै पिता ब्याह कृष्णके संग करै चाहै नकरै ये तो कृष्ण की स्त्री हो जावैंगी तथा संसार में हमारे पूजन की महिमा नहीं घटेगी और लडिकी जल में हास्य तमाशा आपुसमें करि रही थीं यह देवी को किया कर्म लडिकियोंको

स्वस्कंधधारणे । निरीक्षणेचनग्नायां
हरिः ६ इति भा० द० पू० शं० मं०
द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० १६ से २० तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृ [illegible]
पिच । देहसंगोनराणांवै ताश्चापिरतिकामुकाः ।
कृष्णान्तिकम्प्राप्ता भ्रमोयंहृदयेचनः १ वाचक उवाच

नहीं मालूम परा ६ सब लडिकियों को रूप देवी धरिकै कृष्णके सामने गई भगवान् वरदान दिहे तब मायाने सब लडिकियों को मोहि लिया तो मोह को प्राप्त जो सब लडिकी सो अपना २ वस्त्र पहिरकै अपने २ घरको चली गईं वस्त्र को रूप तथा लडिकी को रूप देवी भी काम करिकै छोडि दिया ७ जो जो वस्त्र हरण आदि कर्म भया सो सब काम को वो सब लडिकी जानी कि हम सब किया वरदान लेके भगवान् से मनोरथ को सिद्धि करिकै अपने अपने घर को गईं ८ देवी के चरित्रको कृष्ण भी जानिकै यह सब काम किया है हे श्रोता हो इसी वास्ते माया रूप जो वस्त्र तिस के हरण में तथा वस्त्र को कन्धा के राखने में नग्न लडिकियों के देखने में कुछ दोष नहीं क्योंकि वस्त्र तथा लडिकी सब देवी थीं और देवी को पति भगवान् है इस वास्ते यह सब काम भगवान् किये हैं खुद गापों की लडिकियों को नहीं किये ६ इति भा०द० पू०शं०मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी २२ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥ से २० ॥ तक ॥

श्रोता पूछते भये कृष्णने मथुरा के ब्राह्मणों की स्त्रियों से कहे कि हे ब्राह्मणी लोगो हमारा दर्शन करि लिया अब अपने २ घरको जावो क्योंकि स्त्री पुरुष के अंग संग से स्नेह

...प्रीतयश्चतास्स्मृताः । तदंगच
... भाः । लोकाविहेतुनागुप्तं चक्रे
... २ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयो
... त्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चक्रेनान्यावतारेषु क्रोधमिंद्रायक
... । तत्कथंकृतवान्कृष्णो येनतन्माननाशनम् ।
भवत्रिपुलोकेषु सर्वदासर्वजन्तुषु १ वाचक उवाच ॥

कभीभी नहीं होवेगा इस वचनसे मालूम परता है कि ब्राह्मणी
भी कृष्णके संग रमण होने वास्ते कृष्णके सामने आई थीं
यह भ्रम हमारे सवके हृदय में वड़ा है १ वाचक वोले
कृष्ण वेदके रूपहैं तथा वेदोंकी प्रीति सोई मथुराके ब्राह्मणों
की स्त्री भई हैं वो सब वेदोंकी प्रीति ब्राह्मणी रूप होके वेद
रूप श्रीकृष्णके अंगतथा चरणोंको छूने वास्ते आई थीं भग
वान् विचारे कि इनके संग वेद होके हम इनको अपनी देह
तथा चरण छूने देवेंगे तो संसार में हम गुप्त होके आये हैं
सो प्रगट होवेगा इसवास्ते तिन ब्राह्मणी को मनोरथ नहीं
किये भगवान् हे श्रोताहो ऐसी अंग संगको कृष्ण ने कहेथे
रमण होने को नहीं कहेथे २ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयो
विंशोऽध्याये त्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी शास्त्रोंमें ऐसा हम सबने सुना
है कि कभीभी भगवान् इन्द्रके ऊपर क्रोध नहीं किये चाहे
वैकुंठ में रहेचाहे और अवतार धरिलिये रहें तोभी फिरि
श्रीकृष्ण भगवान् इन्द्र के ऊपर क्रोध क्यों किये जिसक्रोध
करिके तीनलोक में जो चौरासी लाखयोनि तिसयोनियों में
युग युग इन्द्रके अभिमान को नाश होगया है यह हमारे
सबके मन में यही शंका होती है १ वाचक बोले महीना १२

कदापीन्द्राज्ञयागोपान चक्रुश्चंडिकार्च्चनम्।
कसम्भूते कृष्णन्दृष्ट्वासतीचतम् २
त्तंविस्मृतस्तेनवैहरिः।
ननाशनम् ३ इति भा० द० पूर्वार्द्धे शं० मंजर्य्यां चतु
र्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रेणप्रार्थितोविष्णु
तिहरिः। विस्मृत्यतंकथंचक्रेइन्द्रः कृष्णस्यानिंदनम् १
वाचक उवाच ॥ कृष्णपत्नींसमाश्रित्य देवीमायाच

जिसदिन पूरण होवैं उसदिन सबगोप इन्द्रका यज्ञ
हैं उसी यज्ञ में गोपलोग देवीको भी पूजन करने को विचार
करैं तब इन्द्र मनाकरि देवैंकि देवीको पूजन तुम मतिकरो
सबदेवतोंकारूपहमकोजानो हमसे बड़ीदेवीनहींहै इसकारण
से कभीभी गोपलोग देवीको पूजन नहीं किये जब श्रीकृष्ण
भूमिमें विराजमान भये तब देवीके अनादर को देखिकै
कृष्ण को भी बुरामालूम परा ऐसा श्रीकृष्णको अपनी तरफ
देखिकै देवीने इन्द्रको २ मोहलेती भई मोहको प्राप्त जो
इन्द्र सो पागल होकै ईश्वर को भूलिगया तब श्रीकृष्ण इंद्र
के ऊपर क्रोध करिकै इन्द्र के अभिमान को नाश करिदिये
हे श्रोता हो इसवास्ते कृष्ण जी इन्द्रके ऊपर क्रोधकरते भये
३ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० चतुर्विंशेध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥
२४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये इन्द्रकी बिनती से भगवान् पृथ्वीमें
अवतार लिये हैं सोई इन्द्र कृष्ण की निंदा क्यों किया १
वाचक बोले भगवान् की प्रिया जो देवी तिसका अनादर
अभिमानसे इन्द्र बहुतदिनोंसे करताथा उस अपना

।। स्वापमानंचसंस्मृत्य चिरंचेन्द्रेणसंकृतम् २
... ...:पतितोभवत् । निनिन्दातो
... ...शः ३ इति भा० द० पू०शं०
पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी २५॥श्लो० १से६तक॥
श्रोतारः ऊचुः ॥ कृष्णाकर्म्माण्यहंवेद पृथिव्यांकोपि
नोजनाःउवा चेद्कथंगर्गस्तदन्येकिंनब्राह्मणाः १वाचक
उवाच ॥ जातित्वादेकवचनम्प्रोक्तंगर्गेणतद्वचः । नर्षी
नमुनीनूतिरस्कृत्य मोहग्रस्ताजनाश्चनो २ इति भा०
द० पू० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंश
वेणी २६ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

इन्द्रने किया तिसको देवी यादि करिके तथा श्रीकृष्णको पक्षभी पायके पेश्तर इन्द्रका उपद्रव देवी नहीं किया अनादर सहिलेती भई अब श्रीकृष्ण को रुखपाय के २ देवी इन्द्र को मोहिलेती भई मोहको प्राप्त जो इन्द्र सो पागल होके भगवान् को भूलिके श्रीकृष्णकी निंदाकिया तथा ब्रजके ऊपर वर्षाभी बहुत करता भया ॥ ३ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० पंचविंशेध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ १ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये नंद से गर्ग मुनि कहे कि श्रीकृष्णके कर्म को हम जानते हैं पृथिवी में और कोई भी नहीं जानते गुरु जी यह बड़ी शंका होती है कि गर्ग तो तपस्वी भये गर्ग से और जो मुनि ऋषि रहे थे सो सब ब्राह्मण नहीं थे गर्ग के वाक्यसे ऐसा मालूम परता है १ वाचक बोले सब मुनियों ऋषियों को अनादर करि के गर्ग जी ऐसा वचन नहीं कहे गर्ग जी अहंपद को यह अर्थ किये थे कि हमारी जाति जितनी है संसार में मुनि ऋषि गृहस्थ किसान सब श्रीकृष्ण

श्रोतारः ऊचुः ॥ शताश्वमेधयज्ञेन प्राप्तराज्यंशची पतिम्। तिरस्कृत्यकथंचक्रे कृष्णंस्वेन्द्रंवृषप्रसूः १ वाचक उवाच ॥ महावृष्टिंचकारेंद्रो गवांघातायगोकुले। कर्म्मणातेनतत्पुण्यं दशांशंनाशमापच २ विचार्य्यैवं चसुरभिर्दुष्टोसौस्वार्थसाधकः । गोघातादपिनोभीतः पुनश्चैवंकरिष्यति । अतस्स्वेंद्रंहरिंचक्रे नाधीनास्तस्य धेनवः ३ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी २७ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

के कर्मको जानते हैं परन्तु जो ब्राह्मणों से दूसरा मानुष्य है माया से ग्रसित होरहे हैं वोप्राणी कृष्ण के कर्म को नहीं जानते ऐसा अर्थकिये अपने अकेले वास्तेनहीं किये थे॥२॥ इति० भा० द० पू० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी॥२६॥ श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये सौ १०० अश्वमेध यज्ञ करिकै राज को प्राप्त जो इन्द्र तिसका अनादर करिकै सुरभी गौ जो है सो अपना इन्द्र श्रीकृष्ण को क्यों करती भई क्योंकि गुरु जी तीनलोक में एक इन्द्र सिवाय दूसरा इन्द्र हम सब ने सुनाभी नहीं यह बात सुनिकै बड़ी शंकाभई है १ वाचक बोले इन्द्रने गौवों को नाश करने वास्ते गोकुल में बड़ीवर्षा किया गौवोंको मारना विचारा दुष्टने उसी कर्म करिकै इन्द्र का दशवां अंश पुण्य नाशभई २ इन्द्र की दशवां अंश पुण्यको नाशसुरभी विचारिकै अपना इन्द्र भगवान्को करती भई सुरभी विचार कियाकि इन्द्र ऐसा चंडाल है अपने काज के वास्ते धर्म अधर्म नहीं देखता गोघात सेभी नहीं डरता भया तौदूसरे पाप को क्या डरैगा अबकी तो कृष्ण रक्षाकिये

श्रोतारः ऊचुः ॥ कथंसमभ्यर्च्यहरिंव्रजेश्वरः स्नानं विनावैगतवान्नदीतटम् । समर्चनम्प्राणपतेर्जगत्पते रयोग्यमस्नानकृतेनप्राणिना १ वाचक उवाच ॥ मन सापूजनंकार्य्यं वासुदेवस्यसज्जनैः । व्रजेश्वरश्चतत्कृत्वा स्नातुंपश्चाद्गतोहिसः २ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ ॥ श्लोक॥१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंययाचिरेगोप्यो मोक्षरूपाऽध राऽमृतम् । कामाग्निशमनार्थाय भगवन्तन्निरंजनम् । प्रकृताश्चयथानार्य्यो नरंकामविमोहिताः १ वाचक

एदुष्ट ऐसा कर्म फिरि कभी करैगा तौ हमारे बालबच्चे मारे जावैंगे इसवास्ते भगवान् को अपना इन्द्र करती भई ॥ २॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी२७॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूंछते भये भागवतमें लिखाहै कि, नंदजीएकादशी को व्रत करिके घड़ी४राति पीछलीरही तब भगवान्को पूजन करिकै यमुना में स्नान करने गये इस में यह शंका होती है कि विना स्नान किये भगवान्को पूजन कैसा करते भयेक्यों कि जो प्राणी स्नान नहीं करते वो प्राणी भगवान्को पूजन करैगा तौ बड़ी खोटी बात है , वाचक बोले सज्जन पुरुष भगवान् को मानसिक पूजन करते हैं तथा मानसिक पूजन से भगवान् प्रसन्नभी होतेहैं इसवास्ते नंदजी मानसिक पूजन भगवान् को करिकै पीछे से स्नान कर ने को गये थे २ इति भा०द०पू०शं० मं०अष्टविंशेऽध्यायेअष्टविंशवेणी२८श्लो०॥१॥

श्रोता पूछते भये जैसे कामदेव करिकै दुःखी मानुष्योंकी स्त्री मानुष्यों की विनती करतीहैं ओष्ठ चुंबन करनेवास्ते तैसे

उवाच ॥ विचारितंचगोपीभिर्विद्याहीनावयंसदा। कथं कृष्णंस्तुमस्स्तोत्रैरितिविह्वलमानसाः २ नश्श्रुतंशारदावासः श्रीकृष्णाधरमंडले। चेदस्माकंभवेदोष्ठे तस्योष्ठस्पर्शनंशुभम् ३ प्राप्तविद्याभविष्यामश्शारदा कृपयावयम्। तदास्तोत्रैश्चविविधैस्स्तोष्यामोजगताम्पतिम्। अतोययाचिरेगोप्यश्श्रीकृष्णाधरचुम्बनम्४ इति भा० दश० पूर्वार्द्धे शं० मं० एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी २९ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

गोपी तौ मोच को रूपथीं परन्तु कामकी शान्ति होने वास्ते पूर्णब्रह्म सरीके जो कृष्ण तिन से ओष्ठ चुंवन करने वास्ते याचना क्यों करती भई यह बड़ी शंका होतीहै ब्रह्मरूप कृष्ण मोचरूप गोपिका मनुष्य की स्त्री सरीके कर्म करतीभई हरः १ वाचक वोले गोपियाँ विचार करती भई किहम सब कुल भी पढ़ानहीं श्रीकृष्ण को जैसा विद्वान् लोग स्तोत्रों करिके स्तुति करतेहैं तैसा हमभी किया चाहतीहैं परन्तु विना विद्या कैसा स्तोत्र करिके स्तुति करेंगी २ परन्तु हम ऐसा सुना है कि श्रीकृष्ण के ओष्ठ में सरस्वती को वास है जो हमारे सब के ओष्ठ में कृष्णको ओष्ठ छुइजावे ३ तव हम सबको विद्या प्राप्त होजावेगी तव अनेक प्रकार के स्तोत्रों करिके भगवान की स्तुति हम सव भी विद्वानों के सरीके करेंगी है श्रोताहो इसवास्ते गोपियोंने कृष्णके ओष्ठको चुंवन करनेवस्ते याचना करती भई कामकी वशि होके नहीं याचना किईथी ४ इति भा० दशम० पू० शं०नि० मंजर्यां एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी २९ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ तरवश्चकथन्नोचुः कृष्णम्मार्ग ५। गोपीपृष्टामहाश्चर्य्य मिदन्नोभातिमानसे १ उवाच ॥ कृष्णप्रेम्णायथोन्मत्ता बभूवुर्व्रजयो । तरवश्चापितद्ध्यान मग्नास्स्युर्नस्मरन्तिच । परंस्वात्मानमथवानोतरम्प्रददुहर्यतः २इतिभा०द०पू० शं० मं० त्रिंशेऽध्याये त्रिशवेणी ॥ ३० ॥ श्लो० ५ से ६ तक॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रमदानांकरस्पर्शो पुरुषस्यमहासुखम् । स्तनयोर्भवतिसर्वासां नतुतच्चरणाश्रयात् १ कथंयाचिरेगोप्यः कृष्णपादार्पणन्तदा । प्रेमातुरश्चेन्मन्तव्यातत्रहर्यन्यांगंनतस्यकिम् २ वाचक उवाच ॥

श्रोता पूछतेभये कि वृक्षों से गोपियों ने श्रीकृष्णचंद्र को पूछाथा और वृक्ष जानते थे कि इसी रस्तासे श्रीकृष्ण गयेहैं फिरि वृक्ष गोपियों से क्यों नहीं बोलते भये कि कृष्णको हम सबने देखे तथा नहीं देखे चुप क्योंहोगये यह बड़ी शंकाहै१ वाचक बोले जैसा कृष्ण के प्रेमकरिकै गोपी उन्मत्त होरही हैं कृष्ण सिवाय दूसरीचीज नहीं देखतीं तैसे कृष्णके ध्यान करिकै वृक्षभी मस्त होरहे हैं वृक्षोंकोतो अपनी देहको तथा दूसरी बात को स्मरण नहीं है भगवान् में मनलगाय रहे हैं इसवास्ते उत्तर नहीं दिये ॥ २ ॥ इति० भा० द० पू० शं० मं०त्रिंशाऽध्यायेत्रिशवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥५॥ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये स्त्रियों के स्तनको पुरुष हस्तसे स्पर्श करता है तोस्त्रीको सुख होता है कुछ पुरुषके चरणके स्पर्शसे सुख नहीं होता १ तब गोपियोंने कृष्ण को चरण अपने स्तनपर स्पर्श होनेको क्यों याचना करती भई कि महाराज आपका

कालियन्दमितंश्रुत्वा कृष्णपादार्पणेनच । विचार्य्य हृदयेगोप्यो निजेचेत्तत्पदार्पणम् ३ अस्माकंस्तनयो दैवाद्भविष्यतिविनाशनम्। कामस्यतर्हिनिर्मुक्तानिर्द्वंद्वा भवसागरात् ४ वयंभजेमश्रीकृष्णमतस्तच्चरणार्प्पणम्। अयाचिषुस्तदागोप्यस्साक्षात्ताश्श्रुतिमानिकाः ५ इति भा० द० पू० शं० मं० एकत्रिंशेऽध्याये एक त्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ ७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मित्रोपिभगवान्कृष्णो यासान्ता

चरण हमारे सबके स्तनोंपर अर्पण करो जो कोई कहै कि गोपी प्रेमसे आतुर थीं उनको पगकी तथा हस्तकी यादि भूलिगई थी इसवास्ते चरणकी याचना किईथी तौ फिरि कृष्ण के दूसरे अंगकी याचना क्यों नहीं करती भईं अकेला चरण क्यों सबदेह भरेकी याचना करलेतीं यह बड़ीशंका है २ वाचक बोले गोपियाँ सुनती भईं तथा देखतीभी भईं कि श्रीकृष्णके चरणों के स्पर्श करिकै कालिय नागकोजहर नष्ट होगया कालियनाग निर्विष होगया इसीसे जो हमारेसब के स्तनपर कृष्णके चरणों को स्पर्शहोजावे तौ ३ हमारे सबके कामदेव को नाश होजावैगा क्योंकि कालियके जहरसे काम बड़ानहींहै काम को नाश भयेपर सब संसारके बाधासे छूटि जावैंगेदो श्लोक को अर्थ मिलाहै युग्महै४कामको नाश भये परहम सबभी श्रीकृष्णको भजन करैंगी हेश्रोताहो इसवास्ते गोपियोंने श्रीकृष्णके चरण को अपने स्तनपर स्पर्श होने को याचना करती भईं क्योंकि गोपीभी वेदोंकी ऋचाहैं ॥५॥ इ० भा०द०पू० शं०मं०एकत्रिंशेध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥३१॥श्लो०७॥

श्रोता पूछते भये जिन्ह गोपियों के मित्र श्रीकृष्णसो सब

श्चासनंकथं । ददुस्तस्मैस्वभूक्तैश्चवस्त्रैर्गोप्योनदुर्गताः १ वाचक उवाच ॥ स्वकार्योन्मत्तचित्तानान्नास्तिज्ञानं शुभाशुभे । प्रेमोन्मत्तास्तथागोप्यश्श्रीकृष्णपदयोस्त दा । ताभिर्ज्ञातमतोनैव मशुद्धंवाशुभन्त्विदम् २ इति भा० द पू० शं० मं० द्वात्रिंशेऽध्याये द्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ गोपीकृष्णकरौगृह्यस्तनयोस्संद धौकथम् । प्राकृतायाश्चतत्कर्म्मनार्य्यैवेदमिदंकृतम् १ वाचक उवाच ॥ प्रह्लादध्रुवयोर्मूर्ध्निकृष्णहस्तमिदंशु भम् । अनेनविधृतम्पूर्वमतोहंस्तनयोर्दधे । आभ्यां
गोपीअपना पहिरा जोवस्त्र तिस वस्त्रकरिकै भगवान्को बैठने वास्ते आसन क्यों देती भई क्यागोपी दरिद्रथी नयावस्त्र मंगायकै भगवान्को आसन क्यों नहीं दिये वड़ीशंका होती है गुरुजी १ वाचक वोले जो प्राणी अपने काजमें उन्मत्त होजाताहै उसको नहीं मालुम परता कि यह खराव कामहै यह अच्छा काम है इसी प्रकार से कृष्ण के चरणों में गोपी उन्मत्त होरहीं हैं उनको नहीं मालूम परा कि यह वस्त्र हमारा पहिरा है कि नहीं पहिरा है हे श्रोताहो इसवास्ते भगवान्को गोपियोंने अपने पहिरे वस्त्र करिकै आसन देती भई ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० द्वात्रिंशेऽध्यायेद्वात्रिंशवेणी ॥ ३२॥ श्लो० १३ ॥

श्रोता पूंछते भये गोपी श्रीकृष्ण को हाथ अपने हाथ से पकड़िकै अपने स्तनपर क्यों रखती भई जैसा मानुष्यकी स्त्री कर्म्म करतीहैं तैसा कर्म क्यों करती भई १ वाचक वोले गोपी विचार किया कि येई श्रीकृष्ण इसी अपने हस्तोंको प्रह्लाद

मुक्ताभविष्यामि तदाकामोनमान्दहेतु । ...
दधौहस्तं कृष्णस्यस्तनयोश्चसा २ इति भा० द०
शं०मं०त्रयस्त्रिंशेऽध्यायेत्रयस्त्रिंशवेणी॥३३॥श्लो० १
श्रोतार ऊचुः ॥ दंशान्तिप्राणिनस्सर्प्पाः न्तु
न्त्यैननश्श्रुतम् । स्वभावस्सस्तुतेषांवै ...
तः १ वाचक उवाच ॥ स्वमुक्तिसमयंवीक्ष्य
शांस्कुयोनितः । साक्षुधाचतयात्तोंहिनन्दंजग्राहवेगत
२ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुस्त्रिंशेऽध्याये
शवेणी ॥ ३४॥श्लो० ५ ॥

के तथा ध्रुव के मस्तकपर धरेथे तब प्रह्लाद तथा ध्रुव संसा
के दुःख से छूटिकै भगवान् को भजन करने लगे इसवास्ते
भी अपने स्तनपर भगवान् को हस्त धरिकै इन दोनों हस्त
के प्रताप करिकै संसार के दुःख से छूटिकै भगवान्को भज
करोंगी कारु देव मेरेको नहीं दुःख देवैगा पुरुषकी ममता शिर
पर बहुत रहती है स्त्रीकी ममता स्तनपर रहतीहै ऐसा गोपी
विचारिकै अपने स्तनपर कृष्णको हस्त धराथा कामसे दुःखी
होके नहीं रक्खाथा २ इ. भा० द० पू०शं०मं०त्रयस्त्रिंशेऽध्या
त्रयस्त्रिंशवेणी ३३ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूंछते भये सब प्राणियों को सर्प काटते हैं परन्तु
सर्प अपनी भूखकी शान्ति होनेवास्ते नहीं काटते कि प्राणि
को दंशिकै क्षुधाजावै सर्पोंको तोस्वभावहै प्राणियोंको घटक
भरना फिरि भागवत में लिखाहै किभूखा सर्प नंदको दंशत
भया हेगुरुजी यह बड़ी शंका होतीहै १ वाचकबोले सर्प पेश्तर
को देवताथा जब इसको मुनिजी शाप दियेथे तब इससे कहथे
कि श्रीकृष्णको हाथ तेरी देहमें लग जायगा तब तूसर्पयोनि

ार ऊचुः ॥ गोप्योदिनानिदुःखेन व्यतीयुः
जैताः। किंरात्रौमिलितास्तेन तिष्ठन्त्येकत्रगो
१ वाचक उवाच ॥ शब्दज्ञैर्वासरोह्यत्रादिवसो
ते। वासम्प्रमाणंयोराति वासरस्सोनिगद्यते २
ा.. ज्ञातव्यश्शब्दपारगैः। व्यतीयुस्ता
ान श्रीकृष्णरहिताश्चताः ३ इति भा० द०पू०
मं०पंचत्रिंशेऽध्यायेपंचत्रिंशवेणी॥३५॥श्लो०॥१॥

लूटेगा सो सर्पने समय देखा किआज योगहै कृष्णके हाथ
देहमें छूनेको ऐसी निश्चय सोई भूख भईहै उसीसे दुःखी
होके सर्प नंद बाबा को काटता भया २ इति भा० द० पू०
शं० मं० चतुस्त्रिंशेऽध्याये चतुस्त्रिंशवेणी ३४ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥
श्रोता पूछते भये कि शुकजी परीक्षितसे कहेथे किहे राजन्
दिनको गो चराने को जातेथे तब कृष्ण करिके रहित
जो गोपी सो सब बहुत दुःखसे दिनको बिताती थीं हे गुरुजी
ऐसे वाक्य से मालूम परता है कि सबगोपी व्रजकी रात्रि में
पास सभा बनायके रहतीथीं प्रभातभया जब कृष्ण
बनको गये तब सब दुःखी होगईं यह बड़ी शंकाहै १ वाचक
बोले व्याकरणके पढ़नेवाले विद्वान्जोहैंसो(निन्यदुःखेन वास-
रान्)इस श्लोक में वासरको अर्थ दिन नहीं करेंगे वास सब
वस्तुके प्रमाणको नाम हैउसी वासको जो ग्रहणकरै तिसको
नाम वासर है २ व्याकरण पढ़नेवाले विद्वान् वासर को
अर्थ निमिष किये हैं इसी निमिष को गोपी बड़े दुःख से बि-
ताती भई आंखों के पड़ने उघरने को निमिष नाम है ३
इति भा०द० पू० शं० मं० पंचत्रिंशेऽध्यायेपंचत्रिंशवेणी ॥३५॥
ो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ : वं
ब्दतः । पतंत्यकाबलोगर्भा नित्यंगर्ज्जतिसःखलः
तदासृष्टेर्द्वयोर्नाशः कथन्नाभूद्द्विजोत्तम । त ०
कर्म्म चान्येषांराक्षसांचनः २ वाचक उवाच ॥
रेणसमाज्ञप्तौ सुवीर्य्यसुरपालकौ ।
र्थमतोदैत्योमहाबली । नद्य व
रणेदिने ३ इति भा० द० पू० शं० मं० षट्त्रिंशे
षट्त्रिंशवेणी ॥ ३६ ॥ श्लो० ३ से ४ तक ॥

श्रोता पूछते भये वृषभासुरके शब्द करिके गौवोंको
मानुष्यों की स्त्रियों को गर्भ उदरसे पड़िजाता था ऐसा भाग-
वत में लिखा है तबवो दुष्टतौ नित्य शब्द करतारहा होगा ,
तब गौवोंको तथा मानुष्योंको इन्हदोनोंकी सृष्टिको नाश क्यों
नहीं भया इन्हदोनों को वंशनष्ट होना चाहता था सो क्यों
नहींभया यह बड़ी शंका है हर ३ तथा ऐसा कर्म किसी राक्ष
सोंको हमलोग नहीं सुना २ वाचक बोले वृषभासुरके शब्द
के प्रभाव को जानिके भगवान् सुवीर्य तथा सुरपालक इन्ह
दोनों देवतों को आज्ञा दियाकि जो दुष्टशब्द करनेलागै तौ
तुमदोनों उसके गलाको रोकिलेवो ऐसी भगवान् की आज्ञा
पायके वृषभासुरके आसपास रहने लगे जब वृषभासर
ने को विचार करै तब ये दोनों देवता उसके कंठको
इसी प्रकार सब उमरि बीतिगई वृषभासुर शब्द करने
पाया जिस दिन मरण होने को प्रमाणथा उसदिन
करिके भगवान्के हस्त से मारिगया इसवास्ते नित्य
करने नहीं पाया ३ इति भा० द० पू० शं० मं०
षट्त्रिंशवेणी ३६ ॥ श्लोक ॥ ३ से ४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वधोपायान्यनेकानि सन्तिशत्रोर्मुं ...। तानित्यक्त्वाकथंचक्रे हरिर्बाहुप्रवेशनम् १ ...च उवाच ॥ पूर्वन्दत्तवरोदैत्योब्रह्मणातेकदापिन। ...सृष्टि...वि... त्यसुरोत्तम २ देहान्तर्भगव... प्रवेशान्मरणन्तव। अतस्तदास्येकृष्णेनकृतं ...नम् ३ इति भा० द०पू० शं० मं० सप्तत्रिंशे ... सप्तत्रिंशवेणी ॥ ३७ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शूद्राणान्निदितम्ब्रह्मकीर्तनंवेदभाषितम्। अक्रूरेणकथंप्रोक्तंशूद्रस्यविषयात्मनः। दुर्लभं कीर्तनंतस्यकिंतद्दीनैश्चसौलभम् १ वाचक उवाच ॥

श्रोता पूछते भये वैरीको मारने वास्ते अनेक उपाय शास्त्र में तथा लोक में जाहिरहैं परन्तु केशी को मारने वास्ते सब उपाय त्यागिके श्रीकृष्ण अपनी भुजा केशी के पेट में क्यों ... करते भये वाचक बोले केशी को ब्रह्माने वरदान दिये थ कि हमारे हाथकी बनाई सृष्टि करिके तेरीमृत्यु नहीं हो वगी २ जब श्रीकृष्ण अपनी बाहु तेरे पेटमें प्रवेश करेंगे तब तेरी मृत्यु होवैगी इसवास्ते केशीके मुख में भगवान् अपनी भुजा को प्रवेश करते भये ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तत्रिंशेऽध्यायेसप्तत्रिंशवेणी ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी वेदको कीर्तन श्रवण पठन येसब शूद्रको नहीं करना चाहिये चाहे विरक्तहोवै चाहै गृहस्थहोवै तो फिरि अक्रूर क्यों कहथे कि विषय में रमित शूद्र तिसको वेदको कीर्तन आदिवड़ो दुर्लभ है इस वाक्य से मालूम परता है कि गृहस्थ शूद्र के वेद को कीर्तन आदि दुर्लभ है तथा विरक्त शूद्र को दुर्लभ नहीं है पुण्य है यह

शूद्रजन्मेतिशब्दस्य नार्थोज्ञेयःकदापिच । १ ॥
श्वशब्दज्ञैः शूद्रेवजन्मयस्यवै २ सश्शूद्रजन्माविज्ञेय
स्तथापिविषयातुरः । द्वाभ्यांकुलक्षणां याम्बैदुर्लभंतेन
तत्सदा ३ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टत्रिंशेऽ
ध्यायेअष्टत्रिंशवेणी ॥ ३८ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सत्योक्तेकंसवाक्येच स्वामिद्रोहा
घपद्धतिम् । ब्रह्मन्प्राप्नोतिचाक्रूरः कपटेकृष्णपात
कम् । किमुवाचतदाक्रूरः पृष्टःकृष्णेनवैव्रजे १ वाचक

भ्रम है १ वाचक बोले शूद्रजन्मा इस शब्दका शूद्र अर्थकभी
भी नहीं जानना चाहिये शूद्रजन्मा इसको यह अर्थ है कि
शूद्र सरीकेजिसको जन्म होवै तिसको शूद्रजन्माजानना चा-
हिये २ जन्मतो भया ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के कुलमें परन्तु भ्रष्ट
सरीके आचरण करै सज्जन प्राणी जानिलीजो यह अर्थको
मैं गुप्त लिखाहूं एक भ्रष्टदूसरे विषय से इनदोनों खराब ल-
क्षणों करिकै संयुक्त जो ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य तिनको वेदको
कीर्तन आदि दुर्लभहै ऐसाअक्रूरकहेथेशूद्रको नहींकहेथे ॥३॥
इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टत्रिंशेऽध्यायेअष्टत्रिंश वेणी ३८
श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण व्रजमें अक्रूरसे पूछे
कि आप किस काम के वास्ते वृजको आये हो तब अक्रूर
कृष्णसे क्या कहते भये जो कंसका वचन कृष्ण से कहें कि
आपको तथा बलदेव को मारने वास्ते यज्ञ देखने के मिससे
कंसने बुलाया ऐसा कहैं तब मालिकके विश्वासघातको पाप
अक्रूर को लगेगा क्योंकि यह बात गुप्त करिकै कंस अक्रूर से
विश्वास जानिकै कहाथा कि अक्रूर किसीसे नहीं कहेंगे तथा

उवाच ॥ पृष्टःकृष्णेनचाक्रूरः संकटम्प्रापवैतदा। दारु
एयुभयतोदुःखं ज्वलितेऽन्तःकरोयथा २ ध्यानमग्नो
बभूवाथ ध्यानेकृष्णेनप्रेरितः । कपटम्भोजराजस्य
माविःकुरुनदोषभाक् ३ मत्तस्त्रासंत्यजत्वम्वै सर्वज्ञोहं
नलौकिकः। अतोवदत्कंसवाक्य मक्रूरःकपटावृतम् ४
इति भा० द० प० शं० मं० एकोनचत्वारिंशेऽध्याये
एकोनचत्वारिंशवेणी ॥ ३९ ॥ श्लो० ॥ ९ ॥

जो कंस सरीके कपट करिके कहैं किमहाराज आपको मामा
है कंस राजा भी है सो यज्ञको तमाशा देखने को बुलायाहै
तब भगवान्की तरफ से कपटको पाप भोगेंगे १ वाचक बोले
जब श्रीकृष्ण अक्रूर को पूछे कि आपुका आना वृज में किस
वास्ते हुआहै तब अक्रूर बड़े दुःखको प्राप्त भये कैसा दुःखी
भये जैसा एक लकड़ी दोनों तरफसे जलती होवै उस लकड़ी
को कोई आदमी हाथ से पकाड़ लेवै दोनों तरफ से जलने
का योगलगा लकड़ी छोड़े तो हाथ जलनेसे बचैगा तैसा अ-
क्रूर होगये कंसको पक्षकरैं तोभगवान् के द्रोही होवें भगवान्
का पक्षकरैं तो कंसके द्रोही होवैं तब प्राण त्यागनेको विचार
करते भये २ अक्रूरने कृष्णको ध्यान किये उस ध्यानमें कृष्ण
अक्रूर को आज्ञा देते भये कि आपु दुःख क्यों सहतेहो भक्त
के दुःख से हम दुःखी होते हैं कंसकी कपट को आपु मति
प्रगटकरो हमारी तरफसे कपटको दोष आपुकोनहीं होवेगा३
भगवान् कहे हमारी तरफसे कपट की त्रास त्यागिदेवो क्यों
कि हम सब संसार को कर्म जानते हैं आदमी सरीके हम
नहीं हैं हेश्रोताहो ऐसी भगवान्की आज्ञा पायकै अक्रूर कंस
के कपट वचन कृष्ण से कहे यज्ञ देखने को तुम दोनों जनों

श्रोतार ऊचुः ॥ यंसंन्यस्यगमिष्यंति योगिनोयो गतत्पराः । सोयंकृष्णःकिमितिवा शंकेयम्महतीचनः १ वाचक उवाच ॥ योगिभिश्चाप्यगम्यन्त न्तिमुमुक्षवः । स्वस्वमिष्टंवदंतिस्म . . अक्रूरेणाप्यतश्चोक्तः कृष्णोब्रह्मस्वरूपवान् २इति द० पू० शं० मं० चत्वारिंशेऽध्याये चत्वारिंशवेणी ४० ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथमुच्छिष्टमन्यस्य दुरात्मनाम् । दधारभगवान्वस्त्रं त्रैलोक्यपतिरीश्वर॰
को कंसने बुलाया है ४ इति भा० द० पू० शं० मं० चत्वारिंशेऽध्याये एकोनचत्वारिंशवेणी ३६ ॥ श्लोक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी योग में चतुर बड़े ऐसे जन सब संसारके सुखको त्यागिकै जिस ब्रह्म में सो कृष्णहै ऐसी शंका हमारे सब के मन में होती है १ बोले जिस ब्रह्मको मुमुक्षु जीव जाते हैं उस ब्रह्मको नहीं जायसकते वह ब्रह्म बड़ा कठिनहै परन्तु ... अपने इष्टको ब्रह्म के स्वरूप सरीके बड़ाई करिकै वर्णन करते हैं इस वास्ते अक्रूर भी कृष्णको करिकै वर्णन करते भये २ इति भा० द० पू० शं० रिंशेऽध्याये चत्वारिंशवेणी॥४० ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछतेभये तीन लोकके पति भगवान् दुर्स उच्छिष्ट माने पहिरा हुआ कपड़ा आप क्यों बड़ी शंका होती है हर ३।१ वाचक बोले धर्म लिखाहै कि मामा को पहिरा वस्त्र तथा पहिरावस्त्रतथा ब्रह्मचारीको पहिरा वस्त्रइन्हवस्त्रो

वाचक ॥मातुलानांकुमारीणां कन्यानांब्रह्मचारि
। नोच्छिष्टधारणेदोषं धर्मशास्त्रमतन्त्विदम् २
...षा मपिधार्यःकदाचन । मातुलस्यदधौ
...त्वं ...च... ...पा... ः ३ इति भा०द० पू० शं० मं०
...ध्याये एकचत्वारिंश वेणी ॥ ४१ ॥
श्लोक ३८ से ३९ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदद्भुतमेतद्धि मथुरायाःकुल
स्त्रियः । कृष्णदर्शनमोहोत्थस्मरक्षोभाद्विमोहिताः १
बभूवुर्नविदुस्ताश्च स्वा मानंवसनादिच । नायन्धर्मकु
लस्त्रीणाम्पुंश्चलीनामिदंमतम् २ वाचक उवाच ॥
गोवर्द्धनधरादीनि तादृशानिबहूनि च । व्रजे कृतानि

पहिरि लेवैगा तोपाप नहीं होवैगा२कमर के नीचे को पहिरा
वस्त्रतो मामा कन्या ब्रह्मचारी इन्ह कोभी कभी नहीं धारण
करना दूसरे की क्याबात है श्रीकृष्ण अपने मामा को वस्त्र
जानिकै उच्छिष्ट वस्त्र धारण करते भये ॥ ३ ॥ इति भा०द०
पू० शं० मं० एक चत्वारिंशेऽध्यायेएकचत्वारिंशवेणी॥ ४१ ॥
श्लोक ॥ ३८ ॥ से ३९ तक ॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बात है कि मथुरा की
स्त्रियाँ कृष्णको देखिकै कामदेव करिकै विह्वल होगई १
एसी विह्वल होजाती भई कि अपनी देहकी तथा कपड़ाकी
शुधि भूलिगई हे गुरु जीपर पुरुष को देखिकै विह्वल हो
... । यह गृहस्थकी स्त्रियोंको धर्मनहीं है यह धर्मतौ व्यभि
...रिणी स्त्रियोंका है यह बड़ीशंका होती है २ वाचक बोले
...में कृष्ण गोवर्धन को उठाये उस सरीके और अनेक कर्म

श्रोतार ऊचुः विभूयात्पि . . . मि . . .
तम्। शास्त्रेष्ववस्थानियमोनकृतस्तस्यसेवने १
कृष्णवाक्येन पितुर्यूनश्चसेवनम्। . . .
शंकेयंधयतेमनः॥ २॥ वाचक उवाच॥ नैव
वृद्धस्तेनोक्तो ऽत्रपितातदा। . . . . ध
ष्ठोमातातत:परम्। ज्ञात्वोवाचेतिकृष्णोवैध . .
न्त्विदम् ३ इतिभा० द० पू० शं० मं० पंच . . .
ध्यायेंपचचत्वारिंशेवेणी ४५ ॥ श्लोक ॥ ७॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णने कहे कि वूढ़ा पिताको .
करना चाहिये परन्तु शास्त्र में ऐसा नियम नहीं है कि
पिताको सेवन करना और ज्वान पिताको सेवन नहीं .
१ कृष्णके वचन करिके क्या मालूम परता है कि समर्थ
होवे तौभी ज्वान पिताको सेवन नहीं करना समर्थ होवे
वाअसमर्थ होवे तब वूढ़ा पिताको सेवन करना ऐसा .
के वचन से मालूम परता है यह शंका हमारे सबके . .
कंपायमान करती है २ वाचक बोले(मातरंपितरंवृद्धं . . .
क में वृद्धको अर्थ वूढ़ापन को भगवान् नहीं किये कि
वूढ़ाको नाम है वृद्धको अर्थ कृष्ण ऐसा कियेथे कि सर्व
से पिता वृद्ध कहे श्रेष्ठहै तथा धर्म शास्त्रभी सब धर्म्मों . .
को वड़ा कहते हैं पिता से माता वड़ी है ऐसा धर्मशास्त्र
मत जानिके श्रीकृष्ण वृद्ध पिताको पूजन करने वास्ते
यह नहीं कहेथे कि वूढ़े पिताकी सेवन करना ज्वान पि
सेवन नहीं करना ३ इति भागवते द० पू० शं० मं०
चत्वारिंशेऽध्याये पंचचत्वारिंश वेणी ॥४५॥ श्लोक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ व्रजगोकुलयोरेकेयोजनेमथुरापुरी।
गोप्योमथुरांभगवान्व्रजम् १ व्रज
तक्रक्षीरदधीनिच।नवनीतान्यपितथानाया
ः २ परस्परंचमित्रार्थंगच्छंतिबहुयोज
। नराश्चैतत्कथंस्वामिन्नंतर्दाहोद्वयोरभूत् ३
उवाच ॥ लोकापवादात्संभीतोमायाम्प्रेर्य्यजग
तिः।मोहयामासतागोपीर्नायातंतास्समाकरोत्।मनः
श्रोता पूछते भये व्रज से गोकुलसे मथुरापुरी चारि कोश
तथा मथुरा से व्रज ४ कोश है परन्तु व्रज को कृष्ण कभी
गये और गोपी भी मथुराको कभी नहीं गई १ गोपियां
छांछ माखन बेंचने को भी मथुरापुरी को नहीं आई
बेंचने को आतीं तोभी कृष्णकी मुलाकाति होजाती २
स्वामिन् परसपर मित्रकी मुलाकाति करने वास्ते स्त्री
पुरुष हजारों कोश चले जाते हैं और कृष्णकी तथा
की ऐसी मिताई रही फिरि चारि कोशपर मुलाकाति
नहीं किये कृष्ण के मनमें मोहकी ज्वाला जलि रही है
गोपियों के भी हृदय में मोहकी ज्वाला जलिरही है
बड़ी शंका होती है ३ वाचक बोले भगवान्
निंदासे डरते भये कि वृजमें लीला किया तबहम
अबहमारी अवस्था ज्वानभई जो गोपी वृजसे हमारे
मथुराको आवैंगी तथा वृजको हम जावैंगे तो पेशतर
के चरित्र मथुरा में तथा वृज में करैंगे तो संसार में
निंदा होवैगी ऐसा डरिकै मायासे गोपियों को मोह
भये मोहको प्राप्त भई जो गोपी सोमनही मनमें
। परिताप तो करना परन्तु मथुरा आनेको विचार
नहीं करती भई भूलिगई मथुराजाने वास्ते तथा निंदा

कदापिमथुरामतोनैवव्रजंहरिः ४ इतिभागवते द० शं० मं० षट्चत्वारिंशे ऽध्याये षट्चत्वारिंशवेणी॥४६ श्लोक ॥ ५ से ६ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ गोपीभिः ... भाषिता। मुनीनामपियाब्रह्मनूदुर्लभागीयतेजनैः ... वंचनाभक्तिर्नोदितामुनिभिर्मुने १ वाचकउवाच ॥ ह्यान्तर्वंचनावाह्येभक्तिश्चनवलक्षणा। नसाभ... विज्ञेयाकर्तरीसाविधीयते २ भक्तेश्चलक्षणंवाह्ये ... प्येकोनदृश्यते । सर्वमन्तर्विराजन्तेसाभक्ति ...

मानिके कृष्ण भी व्रजको नहीं गये इसवास्ने है श्रोता गोपी मथुराको नहीं गईं और भगवान् व्रजको नहीं आये ४ इति० भा० दशम० पू०शं० नि०मंजर्य्यांषट्चत्वारिंशेऽध्याये षट्चत्वारिंशवेणी ॥ ४६ ॥श्लोक ॥ ५ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी गोपियां क्या बड़ीभक्ति कृष्ण में करती भईं जिस भक्ति की तारीफ उद्धव कियाकि ऐसी भक्ति योगी लोगभी नहीं करसकेंगे जो कोई कहेकि पति आदिसब परिवारसे कपट करिकै भगवान् की प्रीति गोपियोंने किया तौ कुटुंब से कपट करना यह कुछ उत्तम कर्म नहींहै इस कर्मको तो मुनिलोग बुराकर्म कहतेहैं१वाचक बोले मनमेंतौ कपटराखै ऊपरसे नवधा भक्तिकरैसोभक्तिनहीं है वहतो धर्म को काटने वास्ते कतरनी है२मनुष्यके ऊपरसे तौ भक्तिको लक्षण एकभी नदेख परै तथा मनमें सब भक्ति को लक्षण होवै ऐसी भक्ति मोक्षदेने वाली है ३ गोपियां ऊपरसे तौ निंदारूप कर्म करती भईं तथा मनमें भक्ति को सब लक्षण करती भईं इसवास्ने उद्धवने कहे हैं कि गोपीने

यिनी ३ गोपीषुलक्षणंचैतदतोक्तामुनिदुर्लभा ४ इ०
भा० द० पू० शं० मं० सप्तचत्वारिंशेऽध्याये सप्तचत्वा
रिंशवेणी ॥ ४७ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सैरंध्रीकृष्णरमणं श्रुत्वानोभ्रमितं
मनः। कथमेतत्कृतंतेन कृष्णेननरवत्त्विदम् १ वाचक
उवाच ॥ वर्णाश्रमविहीनश्च क्लीवस्त्रीपुरुषादपि ।
भक्तानाम्प्रेमबद्धश्च नृत्यतेजगदीश्वरः २ काष्ठपुद्गल
वद्विष्णोश्चरितन्नसिप्रोतवत् । वृषवच्चैवश्रोतारोऽतो

भक्ति भगवान् की किई है सो भक्ति मुनियन को दुर्लभ है
४ ॥ इति भा० द० पू० शं०मं० सप्तचत्वारिंशेऽध्यायेसप्तचत्वा
रिंशवेणी ॥ ४७ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी कुबरी से श्रीकृष्णको रमण
सुनिके हमारा सबको मन बहुत भ्रमित होगया है १ वाचक
बोले संन्यासी नहोवे ब्रह्मचारी नहोवे वानप्रस्थ नहोवे गृहस्थ
नहोवे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य होवेचाहे चाहेस्त्री पतित होवे चाहे
नपुंसक होवे सब कर्मसे भ्रष्टहोवे चाहे पुरुष होवे परन्तु भग-
वान् की सेवनकरे सोईभगवान्को प्यारा है सब कर्मसे नीच
होवेतो कुछभगवान्बुरानहींमानैंगे और बड़ा उत्तम होवे और
भगवान् की प्रीति नकरैतो उस को भगवान् वैरी करिके
मानते हैं भक्त जनोंके प्रेमरूप रस्सी में बँधेहुये हैं जैसी नाच
भक्तजन नचाते हैं तैसीनाच भगवान् नाचत हैं २ जैसी काष्ठ
की पुतरी नचाने वाले आदमी की आज्ञा से काम करती है
तैसाभक्तकी आज्ञा से भगवान् सब काम करते हैं तथा जैसा
बैलकी नाकमें रस्सी डालिके आदमी जिधर को लेजाता है
उधरको बैल जाता है तथा वेद रूप कृष्ण वेदकी ऋचा रूप

यथावद्विवांछना। तथाचक्रेजगन्नाथो वेदस्तादृक्‌चसा स्मृता ३ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टचत्वारिंशेऽध्याये अष्टचत्वारिंशवेणी ४८ श्लो० ५ से ६ तक॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदाश्चर्यमेतद्धि यत्कुंतीमंगलेऽपि। नानीताथवसुदेवेन बन्दीमुक्तेनकापिच। स्वालयेचकथम्विप्रदुःखितासापिवैमुहुः १ वाचक उवाच॥ सप्तद्वीपेशभार्य्यासा दुःखितापीशवर्ज्जिता। तथापि कुन्त्यानयने शक्तिश्शौरेर्नचाभवत् २ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोनपंचाशत्तमेऽध्याये एकोनपंचाशद्वेणी॥ ४९ ॥श्लो०॥ ७॥

कुवरी भगवान् की दासी इसवास्ते जैसी कुवरी बांछा किया तैसे भगवान् काम करते भये ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टचत्वारिंशेऽध्यायेअष्टचत्वारिंशवेणी ॥ ४८ ॥श्लोक॥ ५ से ६ तक॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बातमालूम परती है कि वसुदेव बंदीखाना से छूटिगये तथा अनेक प्रकार को मंगल वसुदेवके घरमें होताभया तौभी कुंतीको अपने घरमें नहीं लेआये लोकशास्त्र की रीति है कि बहिनि तथा लड़िकी को बापमा भाई अपने घरले आते हैं सुखी होती है बहिनि बेटी तब तो चाहे देरको लेआते हैं परन्तु दुःखी देखिके तो बड़ी जल्दी लेआते हैं सो वसुदेव कुंती को क्यों नहीं लेआये यह तो बड़ी शंका होतीहै १वाचक बोले कुंती सातद्वीप पृथ्वीको राजा जो पांडु तिसकी स्त्रीथी तथा विधवा रही बहुत दुःखी थी तौभी कुंतीको अपनेघर ले आने को वसुदेव की सामर्थ्य नहींथी क्योंकि वसुदेव गरीब थे और वह कुंतीतो दुःखीभी

श्रोतार ऊचुः ॥ जरासन्धबलमानीतास्त्रयोविंशति
सम्मिताः। अक्षौहिण्योहतास्तेन कृष्णेनतस्यसंगरे १
हतास्सप्तदशावृत्ता वेतादृश्यःपुनःपुनः। महदाश्चर्यमे
तद्धि वीरमर्य्यादनाशनम्। मर्यादारक्षणार्थाय तस्या
विर्भावउच्यते २ वाचक उवाच ॥ अक्षौहिणीनाम्नि
र्माणे जरादत्तवरोहिसः। यथेच्छारचितुंशक्तस्ता
स्समादायचागतः ३ ज्ञात्वातांभगवान्कृष्णश्शूरवीर

होगई तौभी सात द्वीप पृथ्वीकी रानीथी हे श्रोताहो इसवास्ते
कुंतीको वसुदेव अपनेघर में नहीं लेआये २ इति भा० द०पू०
शं०मं०एकोनपंचाशत्तमे०एकोनपंचाशद्वेणी॥४६॥श्लोक७॥
श्रोता पूछते भये तेईस अक्षौहिणी सेनाको जरासंध अपने
संग लेके श्रीकृष्ण के संग युद्ध करनेको आता भया तब जरा-
संधकी तेईस अक्षौहिणी सेनाको कृष्ण युद्ध में मारिडालते
भये १ बड़े आश्चर्य की बात मालूम परती है कि इतनी
सेना जरासंध किधर से लेआया पृथ्वी में सेनातो बहुत थी
परन्तु दुष्ट सेना इतनी किधरथी जिस को जरासंध १७ दफे
बटोरि २ लेआया तथा २३ तेईस अक्षौहिणी सेना १७ दफे
कृष्ण ने मारिडाले यभी बड़े आश्चर्यकी बातहै इतनी फौज
में कोई एक भी शूरवीर नहीं थे इस को मारने से तो क्या
मालूम परा कि फौज में शूरवीर रहे होयेंगे परन्तु सब वीरों
की मर्यादा कृष्णने नाश करिदिया और मर्यादा पालन करने
वास्ते श्रीकृष्णका अवतारभी भयाथा फिरि वीरोंकी मर्यादा
क्यों नाश करते भये गुरुजी बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले
जरानाम राक्षसी जरासंधको वरदान दियाथा कि तू जितनी
सेना बनाया चाहेगा तितनी सेना बनाय लेगा इस वास्ते

विवर्जिताः । चक्रेविनाशनंतासाम्मर्यादारक्षकोहरिः ४ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचाशत्तमेऽध्याये पंचाशद्वेणी ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथन्दृष्ट्वाप्रदुद्राव यवनंभगवान् हरिः । एषामहीयसीशंका तांछिन्धिभ्रमदांचनः १ वाचक उवाच ॥ यादवानाम्विनाशाय यदुभिर्हसिते नच । गर्गेणोत्पाद्यतनयन्ददौतस्मैवरम्मुनिः २ स्थास्यन्तियादवायुद्धे यदातेपुरतस्सुतः । तदाभस्म

जरासन्ध तेईस तेईसअक्षौहिणी सेनावनायकै लेआया कृष्ण से युद्ध करने वास्ते ३ मर्यादाके पालन करनेवाले जो श्रीकृष्ण सो विचारिलिया कि इस सेना में वीर शूर नहीं हैं इसवास्ते जरासंध की सेनाको नाश करते भये मर्यादा को नाश नहीं किये ४ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचाशत्तमेऽध्याये पंचाशत्वेणी ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ४३ ॥

श्रोता पूछते भये यवन को देखिकै भगवान् क्यों भागते भये यह बड़ी शंका हमारे सबके मनको भ्रम दुःख देती है इस शंकाको आप काटो १ वाचक बोले यदुवंशी सब अपनी सभा में गर्ग मुनिको हँसते भये आपने कुलकी लड़िकी के वचन सुनिकै कि गर्ग मुनि नपुंसक हैं यदुवंशीकी कन्या गर्ग की स्त्रीथी सोई स्त्री यदुवंशियों से कहती भई गर्ग भगवान् के पूजन में राति दिन रहेथे स्त्री से प्रीति कम करतेथे इसवास्ते गर्ग की स्त्री कहती भई तब यदुवंशियों करिकै हँसे हुये जो गर्ग सो यादवों को नाश करने वास्ते एक पुत्र उत्पन्न करिकै उसी पुत्रको वरदान देते भये २ कि हे पुत्र युद्धमें यदुवंशी तेरे कुल के सामने तथा तेरे सामने जो खड़े होवैंगे तो उसी

ि ्यन्तिसत्यमेतन्मयोदितम्। एतद्ज्ञात्वासुदुद्राव
ः ०ष्टुघ्रुं ्नः ३ इति भा० द० उ० शं०मं० एक
े . ध्ये एकपंचाशत्तमवेणी ॥ ५१ ॥

श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्त्यलोकेस्थितेकृष्णे कथंत्वद्राद्रिरव
रणाः। पृथिव्यांसमवर्तन्तमहत्कौतूहलन्त्विदम् १
वाचक उवाच ॥ यत्प्रमाणाःप्रजास्तस्मिन्द्वापरेविधि
नाकृताः। तत्तथावर्तितास्सर्वा न न्यूनानाधिकास्तथा
२ कृष्णदर्शनप्रेम्णैव हर्षितोनृपसत्तमः। पर्वतानप्य

षखत भस्म होजावेंगे हे श्रोताहो इस बातको श्रीकृष्णजी
जानिकै भागते भये कुछ डरिकै नहीं भागे ३ इति भा० द०
उ० शं० मं० एकपंचाशत्तमेऽध्याये एकपंचाशत्तम वेणी॥५१॥

श्लोक ॥ ६॥

श्रोता पूछतेभये श्रीकृष्ण जी मर्त्यलोकमें विराजेथे फिरि
पृथ्वीमें मानुष्य पशु वृक्ष पर्वत आदिलेकै जोसब वस्तु पेश्तर
वड़ी वड़ी थीं सो वस्तु छोटी २ क्यों होगई यह वडा आश्च-
र्य होता है क्योंकि कृष्ण भगवान् मर्त्यलोक से वैकुंठ को
गये होते तब पेश्तरकी वड़ी २ वस्तु छोटी २ होजाती
तब शंका नहोजाती परन्तु कृष्णके सास्ने विपरीत होनेलगा
यहवड़ी शंका होती है १ वाचक वोले द्वापर युगमें जैसी
प्रजा ब्रह्मा वनायेथे तैसी प्रजा मृत्युलोक में उस वखत थी
नतो तिलप्रमाण कम और न तिलप्रमाण ज्यादा२परन्तुराजा
मुचकुंदने श्रीकृष्णके दर्शन के प्रेम करिकै खुशीहोके पर्वतको
भी छोटाजानि लेतेभये और चीज की तोक्यावात है इसका
यह अर्थ है कि कृष्णके दर्शन से सब वस्तुको राजा थोरी

णान्ज्ञात्वा चान्येषांचैवकाकथा ३ इति भा० द० उ० शं० मं० द्विपंचाशत्तमेऽध्याये द्विपंचाशत्तमवेणी ॥ ५२ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नापश्यद्रुक्मिणीब्रह्मन् नमस्कारा दृतेतदा । ब्राह्मणायचदातुम्वै नमुनिश्चैवसोद्विजः १ धनादिवाञ्छासततं तस्यचेतसिवर्तते । साकथन्नददौ बित्तन्नमश्चक्रेचकेवलम् २ वाचक उवाच ॥ तत्पिता सागरःपीतस्तत्पतिःपदताडितः । तदातस्यानुजोविप्रै श्छेदितःपूजनायच ३ ब्राह्मणेनकृतानेतान् ज्ञात्वा

जानता भया एक कृष्ण के प्रेमको वड़ा मानता भया ॥ ३॥ इति भा०द०उ०शं०मं० द्विपंचाशत्तमेऽध्यायेद्विपंचाशत्तमवेणी ॥५२॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ब्राह्मण को देनेयोग्य वस्तु तीनलोकमें रुक्मिणी नहीं दखीकि यह वस्तु ब्राह्मण को देना चाहिये इसवास्ते हारिमानिके कोरानमस्कार करतीभई वड़ी शंका इसमें होती है किवो ब्राह्मण मुनितौ रहा नहीं उसको तो जोई वस्तुदेती सोईलेता फिर क्यों नहींदी १ उसब्राह्मण के तौ धनआदिलेके जो वस्तु संसारमें है सव चीजको लेनेकी मनमें इच्छाथी फिरि रुक्मिणी धन आदि वस्तु क्यों नहींदिई कोरानमस्कार करिलिया है २ वाचक वोले लक्ष्मी को वाप जोसमुद्र तिसको ब्राह्मण ने पीलिया तथा लक्ष्मीके पति जो भगवान् तिनको ब्राह्मण ने लात से मारा लक्ष्मी को छोटा भाई कमल तिसको ब्राह्मण देवतों के पूजन वास्ते तोड़ते भये ३ ब्राह्मणों को किया ऐसा कर्म को समुझिके लक्ष्मी ब्राह्मणोंसे रूठिगई ब्राह्मणोंको धन आदि पदार्थ नहीं देती

रुष्टाचसिंधुजा । नददातिधनन्तेभ्यश्चातश्चक्रेनमस्तु
। ४ इति भा० द० उ० शं० मं० त्रयःपंचाशत्तमेऽ
त्रयःपंचाशत्तमवेणी ॥ ५३ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंबभूवसाबाला रुक्मिणीदुःख
संयुता । प्रभावज्ञाभगवतः कृष्णस्यपरमात्मनः १
वाचक उवाच ॥ आत्मनःकारणंज्ञात्वा युद्धेवीरवर
क्षयम् । कलंकाज्जन्मतोभीता बभूवदुःखितासती २
इति भा० द० उ० शं० मं० चतुःपंचाशत्तमेऽध्याये चतुः
पंचाशत्तमवेणी ॥ ५४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ यदुप्रवीरेणसुपालितांपुरीन्दुर्गम्य

हे श्रोताहो इसवास्ते लक्ष्मीको रूप रुक्मिणी ब्राह्मणको धन
नहीं दिया नमस्कार करि लेती भई ४ इति भा० द० उ०
शं० मं० त्रयःपंचाशत्तमेऽध्याये त्रयः पंचाशत्तमवेणी॥ ५३ ॥
श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछतेभये कि श्रीकृष्णकीस्त्री तथा कृष्णके प्रभावको
जाननेवाली फिरि रुक्मिणी युद्ध देखिकै दुःखी क्यों होगई
यह बड़ीशंका होती है १ वाचक बोले युद्ध में बड़े बड़े शूरों
को तथा वीरोंको नाश हुआ रुक्मिणी के स्वयंवर मेंतो रुक्मि
णी विचार कियाकि यह कलंक मेरेको जन्म जन्म तक होग-
या कि रुक्मिणी के विवाह में बहुत से शूरवीरोंको नाशहुआ
हे श्रोता हो ऐसा कलंक अपने ऊपर विचारिकै रुक्मिणी
बहुत दुःखी होगई ॥२॥ इतिभा० द० उ० शं० मं०चतुःपंचा
शत्तमेऽध्यायेचतुःपंचाशत्तमवेणी ॥ ५४ ॥श्लो० ॥४॥
श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण करिकै पालना हुई द्वारका

भावापरिभिस्सवंचनैः । अहर्निशंचैवसुदर्शनेनवै वि
भ्रामितांचैवचतुर्दिशस्सदा । कथम्प्रविश्यासुचतांच
शम्बरो जहारशीघ्रंतनयंरमापतेः १ वाचक उवाच॥
पणःकृतश्श्रीयदुनंदनेनवै द्विजस्समायातिसवंचनोय
दि । कुशस्थलीम्मेति प्रियाम्मनोहरान्निवारणीयश्च
त्वयासुदर्शन २ इतिज्ञात्वासुरश्शीघ्रन्धृत्वारूपंद्विज
स्यवै। प्रविश्यसंजहाराशु प्रद्युम्नंभयवर्जितः ३ इति
भा० द० उ० शं० मं० पंचपंचाशत्तमेऽध्याये पंचपंचाश
त्तमवेणी ॥ ५५ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथान्निवेशयामास सत्राजिद्दैव

पुरी तथा कपट करिके द्वारका के भीतर कोईभी जावे तौ
भस्म होजावै यथा २ में द्वारका पुरीके चारों तरफ सुदर्शन-
चक्र रच्छा करि रहाथा ऐसी कठिन द्वारका पुरीमें शंबरनाम
दैत्य कैसा प्रवेश करिगया तथा भगवान् के पुत्र को कैसा
हरिलेगया गुरुजी बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले कृष्णने
द्वारका को वसायेथे तब ऐसी प्रतिज्ञा लियेथे कि हे सुदर्शन-
चक्र तुम राति दिन द्वारका पुरी के चारों तरफ रच्छा करने
वास्ते भ्रमण करो परन्तु ब्राह्मण वंश चाहै तौ असिल आवै
द्वारकाको तौ उसको मनानहीं करना जो कभी कोई कपट
करिकै द्वारकाको ब्राह्मण को रूप धरिकै आवै तौउसकोभी
मति मनाकरना २ एसी कृष्णकी प्रतिज्ञा को शंबरासुर जानि
कै ब्राह्मणको रूप धरिकै द्वारका में प्रवेश करिकै श्रीकृष्ण के
पुत्र को हरिलेगया ३ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचपंचाश
त्तमेऽध्यायेपंचपंचाशत्तमवेणी ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी सत्राजित यादव देवता के

मंदिरे। मणिं विप्रैस्स्वयंकस्मान्नचस्थापितवान्सुधीः १ वाचक उवाच ॥ सूर्योवाचमणिन्दत्वानायन्धार्य्यस्त्वया सदा । स्थाप्योयन्देवसदने पावकार्च्चासमन्विते २ इत्युक्तश्चमणिंगृह्य चाजगामनिजालयं। स्नानंकर्त्तुंसमुद्युक्तो यावत्तावद्द्विजैर्मणिम् ३ स्थापयित्वाजगामाशु कृतस्नानस्तदालयम्। एतदर्थंमणिंविप्रैः स्थापयामासतद्गृहे ४ इति भा०द०उ० शं० मं० षट्पंचाशत्तमेऽध्याये षट्पंचाशत्तमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदाश्चर्य्यमेतद्धितत्रतत्रैववर्षति।

मंदिर में ब्राह्मणों करिकै मणिको क्यों स्थापना करते भये आपु क्यों नहीं रखिदिया देवमंदिर में मणिको यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले सूर्यसत्राजितको मणिदेकै पीछेसे सत्राजित से कहेकि, इस मणिको रातिदिन धारण मति करना जो तुमारी अग्निहोत्र की कोठरी है उसमें इस मणिको रखिदेना २ सत्राजित सूर्यके ऐसे वचन सुनिकै अपने घर को आया विचार कियाकि विनादूसरास्नान किये देवमंदिर में कैसा जावों ऐसा विचारि कै जब तक स्नान करने की तयारी किया तब ब्राह्मणलोगोंसे मणिको रखायके आपुस्नान करिकै तब अग्नि होत्रकी कोठरी में होम करने वास्ते गया है ३ हे श्रोता हो इसवास्ते ब्राह्मणों करिकै देवमंदिर में सत्राजित मणिको रखाता भया दोश्लोक को अर्थ एक में मिला है यम है ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ० शं मं० षट्पंचाशत्तमेऽध्यायेषट्पंचाशत्तमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

... पूछने भये गुरुजी बड़ी बड़ी आश्चर्य की बात

यत्रयत्रैवसोक्रूरो नोपतापानमारिका १ सप्तद्वीपेनचाक्रूरो द्वारिकायांसदासते। कथम्वर्षतिदेवेशश्शंकेयम्बह्वेतेघनः २ वाचक उवाच ॥ तपःकृत्वावरंलब्ध्वा गान्दिनीवैपितामहात्। यत्रत्वन्तवभर्ता चत्वत्सुतोपिचवर्त्तते ३ मनसाचेच्छतेयत्र तत्रवृष्टिर्महीयसी। अतोऽक्रूरोमहाबुद्धिः प्रजासौख्यप्रकारकः ४ इति भा० द० उत्तरार्द्धशं० मं० सप्तपंचाशत्तमेऽध्यायेसप्तपंचाशत्तमवेणी ॥५७॥श्लो०॥३३॥

भागवतमें सुनि परतीहै कि जिस जिस गांवमें अक्रूर बास करतेहैं उसी उसी गांवमें इन्द्र जलकी बर्षा करताहै तथा उस गावोंमें कोई उत्पात तथा महामारी की बीमारी नहीं होती १ तब अक्रूर तो मथुरामें जन्मे मथुरा छोड़िके दूसरे गांवको नहीं गये मथुरा छोड़िके द्वारकामें वास करतेभये दूसरे ग्राममें वास नही किये फिरि सातद्वीपमें तो अक्रूर नहींहै तब सातद्वीपमें इन्द्र जलकी बर्षा क्यों करताहै यह बड़ी शंकाहै २ वाचकबोले अक्रूर की माता गांदिनी ब्रह्माके तप करिके ब्रह्मासे वरदान लेती भई ब्रह्मा कहे हे गांदिनी जिस स्थानपर तूतथा तेरापति तथा पुत्र टिकेरहैंगे ३ और मन करिके बर्षा होनेकी इच्छा करैंगे उस स्थान पर बर्षा बहुत होगी और मनमें अभिमान करिके प्रजाकी बुराई विचारैंगे बर्षा होनेकी इच्छा नहीं करैंगे तब उसीवखत प्राणभी तुमारा छूटि जावैगा हे श्रोताहो इस वास्ते बड़े बुद्धिमान् अक्रूर रातिदिन प्रजाको सुख होने वास्ते अपने मनमें राति दिन बर्षा होनेकी इच्छा करतेहैं४ इति भा० द० उत्तरार्द्ध शंकानिवारण मंज० सप्तपंचा शत्तमेऽध्याये सप्तपंचाशत्तम वेणी ॥ ५७ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुतापितृस्वसुर्ब्रह्मन् भगिनीसानि चते। धर्म्मशास्त्रेषुगदितातामुवाहकथंहरिः १ वाचक उवाच ॥ पूर्वेतपस्थितेशौरौ तस्ययापरिचारिकाः। विष्णुर्वरन्ददौतस्मै भविष्यहन्तवात्मजः २ रमयापिवरो दत्तो दासीभ्योऽपिशुभस्तदा। युष्माकंतनुजाचाहं भविष्यामित्वनेकधा ३ शौरेस्सहोदरास्तास्तु बभूवुःपरिचारिकाः। तासुयक्षेतदालक्ष्मीः प्रमाणेनयथाक्रमम् ४ हरिंविनानचान्येन ताश्चोद्वाह्याःकथंचन। कृष्णेनोद्वाहिताःसर्वाश्चातोज्ञात्वापिपातकम् ५ इति भा० द० शं० मं० अष्टपंचाशत्तमेऽध्यायेअष्टपंचाशत्तमवेणी ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी, धर्मशास्त्रमें लिखाहैकि, बुवाकी लड़की बहिनिहै फिरि कृष्णने बुवाकी लड़कीको क्यों विवाहि लेतेभये १ वाचक बोले पहिले जन्ममें वसुदेव तप करतेथे तब वसुदेवकी जो दासीथी सो सब वसुदेवकी सेवन में लगीरही जब भगवान् वसुदेवको वरदान दियेकि हम तुमारे लड़िका होवेंगे २ तबलक्ष्मीजी भी वसुदेवकी दासियोंको वरदान देती भई हेदासियो तुमारी सबकी हम बहुतसी कन्या होवेंगी ३ हे श्रोताहो ऐसे भगवान्के तथा लक्ष्मीके बाक्यसे पेश्तरकी जो दासी वसुदेवकी थीं सो सब इस जन्ममें वसुदेवकी बहिनि होती भई उन्ह वसुदेव की बहिनीकी पुत्री लक्ष्मी भई अपनेवचनके प्रमाण करिके ४ हे श्रोताहो लक्ष्मी रूपजो वसुदेवके बहिनकी लड़िकी उनका भगवान् बिना दूसरा मानुष्य कैसा विवाह करेगा इस वास्ते भगवान् जानेकि ये हमारी बहिनिहै इनको हम

श्रोतार ऊचुः ॥ किमर्थंहरणंचक्रे बुद्धिमान्। कुमारिकानामुद्वाहवर्जि . वाचक उवाच ॥ नृपाणाम्माननाशाय . रताः । भविष्यज्ञेनमुनिनावारितोनारदे . . . यदाभौम त्वमुद्वाहंकरिष्यसि । त . . . ननैवचकारसः ३ स्वोद्वाहंराजकन्. . . घातितः ४ इतिभा० द०उ० शं० मं० . . ध्यायेएकोनषष्टितमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लो० ॥

व्याह लेवैंगे तौ बड़ा पाप होवैगा ऐसा जानिकै विवाह करते भये ५ इ० भा० द० उ० शं० मं० त्तमेऽध्यायेअष्टपंचाशत्तमवेणी ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भये भौमासुर तौ बड़ाबुद्धिमान फिरि कुमारी कन्योंकोक्यों हरिलाता भया वेतो लड़िकी थीं उनको तो विवाह नहीं हुआथा कि कर्म करने वासते हरि लेआया यह बड़ी शंका वाचक बोले राजों को अभिमान नाश करने वास्ते सब की लड़िकियों को हरिले आया तथा अपना वास्ते राजे लोग कुछभी नहीं करिसके तब चारेकि येसब कन्यातौ भगवान्की स्त्रीहोवैंगी ऐसा कै भौमासुरको मनाकरि दिये २ नारदकहे हे भौ हमारी आज्ञा लिये इन्ह लड़िकियों के संग अप करना नहीं हे श्रोताहो ऐसा कहिकै भौमासुर के करनेकी आज्ञा नारद नहीं दिये न भौमासुर बिवा व्याह करने की इच्छा करते करते श्रीकृष्ण भौम डाले कन्यों को अपनीस्त्री करिलिया इसवास्ते

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचरुक्मिणींकृष्णो भजस्वान्यं
ुभे। कदापीत्थंवचोलक्ष्मीन्नोवाचकमलापतिः १
: ।न ि न तथापिनकृतस्तया। मानोमगवत
ः कदापीत्थंभ्रमश्यनः २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वा
ुां ः कृष्णोलोकहितायच। योषिताम्मानना
कलिजानामिदंवचः ३ उवाचरुक्मिणींकृष्णो
न ुव नन ः। मेवचोयोषितश्चापि द्वयोस्त्रा
हरण भौमनाम राक्षस किया ॥ ३ ॥ इति भा० द० उ०
मं० एकोनषष्टितमेऽध्यायेएकोनषष्टितमवेणी ॥ ५९ ॥
० ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण रुक्मिणी को कहेकि तुमहम
छोड़िकै दूसरापति करिलेवो हे गुरु जी ऐसी महागँवार
वचनतौ भगवान् लक्ष्मी को कभीभी नहीं कहेथे इस
में क्यों कहे १ जो कोई कहे कि रुक्मिणी को मान
करने वास्ते ऐसे वचन कृष्ण कहेहैं तौभी गुरुजी कृष्ण
तो रुक्मिणी कभी मानभी नहीं किही ऐसा खोटा
भगवान् क्यों कहे बड़ीशंका हमारे सबके मनमें है २
बोले श्रीकृष्णने कलियुगको राज थोरेही दिनमें होवे
ऐसा जानिकै संसार को कल्याण होनेवास्ते तथा कलि-
स्त्रियों को माननाश करने वास्ते रुक्मिणी से ऐसा
कहेथे ३ कृष्ण विचार किहेकि स्त्रीको अभिमान नाश
नेवाले इस हमारे वाक्य को कलियुग में जो कोई स्त्री
सुनैंगे स्त्रीभी डरेगी तथा पुरुषभी डरेगा कि भाई स्त्री
प्रेमसब से बड़ा है देखो जरासे रुक्मिणीको भगवान्
हसी किये हैं तौभी रुक्मिणी प्राणत्यागने लगी
भाइयो ऐसा विचारिकै स्त्रीतो अपनेपतिसे प्रेमकरै और

संपरस्परम्। करिष्यंतीत्यतोवाक्यमुवाचजगदीश्वरः
इति भा० द० उ० शं० मं० षष्टि... वेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञात्वाप्यधर्म्मंकुर्वीतद्विगुणम्पाप भागभवेत्।तद्ज्ञा वाचकथंरुक्मीददौपौत्रींमहामतिः१ अनिरुद्धायमुनयो नप्रशंसन्तिरौरवे। तस्नेहंयेनजीव स्य पातोऽस्तिलोकनिन्दनम् २ वाचक उवाच॥ कृष्ण स्नेहवलंस्वस्य ज्ञात्वादृष्ट्वाचतत्कृतम् । द्वयोर्भीतिं
पुरुष अपनी स्त्रीसे प्रेमकरै इसधर्म से दूसरा कोईभी बड़ाधर्म नहीं है कलियुग के जीव ऐसा मानिलवेंगे इसवास्ते . वतार में लक्ष्मी को खोटावाक्य भगवान् कहे हैं कुछ छल से नहीं कहे ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ०शं०मं० षष्टितमेऽध्याये षष्टितमवेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये भागवत में लिखा है कि रुक्मी राजा जानता थाकि बुआकी लड़िकी बिआहने वालेको तथा मामा की लड़िकी बिआहने वालेको तथा इन्हदुन्हों लड़िकी को ऐसी जगह विवाह करिदेवैं तौ दोनोंको बड़ापाप होताहै तथा ऐसा धर्म बिनाजाने विवाह करैगातौ पापहोगा और जानि के करैगातौ दूनाहोगातौ जानिके अधर्म फिरि अपने पुत्रकी लड़िकी को विवाह अनिरुद्धके संग क्यों करिदिया क्योंकि वह लड़िकी अनिरुद्ध के मामाकी भी १ जो कोईऐसा कहैकि श्रीकृष्णजीकेस्नेह करिकै अधर्मरूप कन्या दान कियाहै रुक्मीने तो ठीकहै जिस स्नेह करिकै संसारमें निंदा होवै तथा मृत्यु भयेपर जीवको रौरव नरक में वास करना पड़ैगा ऐसे स्नेहकी मनि लोग तारीफ नहीं करते २ वाचक बोले रुक्मी राजा विचार कियाकि मैंने

दद्दौपौत्रींचभोजराट् ३ इति भा० द० उ०
० मं० एकषष्टितमेऽध्याये एकषष्टितमवेणी ॥ ६१ ॥
॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कुशस्थलीकृष्णप्रतापपालिता
.तितञ्चतुर्दिशः । अहोनिशंवैविधिकल्प
णिनां शक्तिर्नकेषामपितत्प्रवेशने १ आज्ञाविना
कथम्प्रविष्टाखलुचित्रिणीचतां ।

आपने लड़िकेकीलड़िकी को श्रीकृष्णके पोतेको व्याहिदऊंगा तब कृष्ण मेरे ऊपर बहुत प्रसन्न होवैंगे ऐसा विचारिकै अपने ऊपर कृष्णको स्नेह जानिकै अधर्म रूप व्याहसे भई जो लोकमें निंदाकी त्रास तथा रौरव नरकमें पड़नेका डर दोनों को त्यागिकै अपनी पोतीको व्याह कृष्णके पोताके संग करि देता भया रुक्मी विचार किया जो मेरे ऊपर कृष्ण प्रसन्न रहैंगे तब लोकमें मेरी निंदा कौन करैगा तथा नरकमें भी मेरेको न पटकैगा हे श्रोता हो ऐसा विचारिकै अधर्मरूप व्याह जानिकै रुक्मी करता भया ॥ १॥ इति भा० द० उ० शं० मं० एकषष्टितमेऽध्याये एकषष्टितमवेणी ॥ ६१ ॥

श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्णके तेजकरिकै पालना हुई ऐसी द्वारका पुरी तथा द्वारका के चारों तरफ रातिदिन सुदर्शनचक्र भ्रमण करिरहा है ऐसी द्वारकापुरीमें कपट करि कै कोई जाया चाहै तौ ब्रह्मदेव के बनाये जो जीव तिनकी सामर्थ्य तौ नहींथी कि कपट करि कै द्वारका के दरवाजे भीतर जायसकै १ तब हे गुरुजी चित्रलेखा रक्षा करने वाले प्राणियोंकी आज्ञा नहीं लिई बिनापूछे कपट करिकै द्वारका में जायकै सोतेभये जो अनिरुद्ध तिनको पलँग सहित उठाय

सुप्तंसमादायसुखेनसाययौ पौत्रंसपर्य्यंकयुतंरमापतेः २ वाचक उवाच ॥ विचिन्त्यबाणस्यवधंरमापतिस्तदात्म जोद्वाहस्वपौत्रकारणम् । आज्ञापयामाससुदर्शनंहरि स्साचित्रलेखास्वपुरीम्प्रयास्यति ३ प्रवेशनेनिर्गमने सकृत्त्वया नवारणीयाखलुचित्रकारिणी । पुर्य्येतिज्ञप्तः परमेश्वरेणवै नवारयामाससुदर्शनश्चताम् ४ इति भा० द० उ० शं० मं० द्विषष्टितमेऽध्यायेद्विषष्टितमवेणी ६२ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ पुत्रस्यप्राणरक्षार्थं बाणमातारमा

के बड़ेसुख से लेकेचली गई कोई दूसरा भी यादवको नहीं श्रीकृष्णके खुद पोताको हरि लेगई दूसरा यादवको लेजाती तो थोरी शंका होती कि कोटके बाहर सोता रहा होगा ऐसो खुदको लेगई यह बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले बाणासुरकी मृत्युको भगवान् विचारिके तथा बाणासुरकी कन्याके संग अपने पौत्रको विवाहभी विचारिके सुदर्शन चक्र को आज्ञादेते भये कि द्वारिकापुरीको चित्रलेखा राक्षसी आवैगी उसको तुम द्वारिका के भीतर जाने देना एकदफे तथा भीतरसे द्वारकाके बाहरको जाने लगे तब जाने देना जो चाहेसो लेजावे एकदफे द्वारकाके भीतर जाने वास्ते तथा भीतरसे कुछ चीज लेके बाहेर जाने वास्ते तुम मना मत करना हे श्रोताहो कृष्णकी ऐसी आज्ञाको मानिके सुदर्शन चक्र चित्रलेखाको मनानहीं किया इस वास्ते अनिरुद्धको हरि लेगई ४ इति भा० द० उ० शं० मं० द्विषष्टित मेऽध्याये द्विषष्टितम वेणी ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी अपने पुत्रकी रक्षा करने वास्ते

।नग्नाकथम्पुरस्तस्थौमोहितुंकामिनंयथा१वाचक
॥ लपस्तप्त्वावरंलब्ध्वा कोटराविधिनासती ।
नग्नांचत्वांकोपिद्रक्ष्यति । पुरुषो
भविष्यतितदाऽशुभे २ एवन्नग्नापुरस्त
कृष्णनाशायतस्यसा ३ इतिश्रीभा० द० उ०
मं० त्रिषष्टितमेऽध्यायेत्रिषष्टितमवेणी ॥ ६३ ॥
॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नृगवाक्यमयोग्यंच श्रुत्वानोकम्पि
।उन्मत्तवत्कथम्प्रोक्तं नृगेनाचार्य्ययादवम् १
माता नग्न होके कृष्णके सामने क्यों खड़ी
भई नग्नहोके खड़ी होनेसे क्या मालूम परताहै जैसा किसी
कामी के सामने स्त्री नग्न होके खड़ी होवैतो वह कामी स्त्री
कोदेखिकै मोहि जावै तौ स्त्री जो जो हुकुम करै सो सो हुकुम
वह कामी प्राणी किया करै तैसा काम वाणासुरकी माता
किया यह बड़ी शंका होतीहै १ वाचक बोले ब्रह्माने कोटरा
को बरदान दियेथे कि हे कोटरे तीन लोकमें जोपुरुषहैं ब्रह्मा
विष्णु शिवभी तथा चौरासी लाख योनि के पुरुषमात्र सब
तेरेको नंगी देखैंगे तब उसी वखत भस्म होजावैंगे अकेले
तेरेपतिको त्यागिकै तेरा पति नहीं भस्म होगा और सब
जल्दी भस्म होवैंगे २ हे श्रोताहो कोटरा ऐसा जानिकै श्री
कृष्णको भस्म करने वास्ते श्री कृष्णके सामने खड़ी भई है
३ इतिभा० द० उ० शं० मं० त्रिषष्टितमेऽध्यायेत्रिषष्टितम
वेणी ॥ ६३ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जो वचन कृष्णसे राजा नृग
ने कहेथे गोदान देने वास्ते उस वचनको सुनिके हमारा
सबको मनकांपने लगा कि पागल सरीके वचन नृग क्यों कहे

वाचक उवाच ॥ सिकताभूमिमर्य्यादा ६ . . .
अयते । प्रोक्ताःकमंडलौकोशेतारकास्सरितास्स्मृताः
आदिवम्मर्त्यलोकंच तत्रापिभारतन्तदा। वर्षधाराश्चगि
रयो नृगवासेचभारते ३ एकोनविंशऽध्यायस्यपंचम
स्कंधमानतः । गिरयस्सप्तविंशाश्च नद्यःपंचचतुस्तथा।
पंचमेप्रथमाऽध्यायेद्वीपास्सप्तप्रकीर्तिताः४सिकतास्सर
द्वीपाश्चवाणाब्धि४५तारकास्तथा।वर्षधारासप्तविंशा२७

क्योंकि गुरुजी रेतीकी कणको क्या प्रमाण एक मूठी भरि
रेती हाथमें लेवै तो दस बीस कोटिकण मूठीभरि रेतमेंहोवैं
फिरि गंगा आदि नदियोंमें तथा रेती वाले देशोंमें रेतसिवा
दूसरी माटी नहीं तहां कणकी क्या गनतीहै फिरि ताराभी
गनतीसे हीनहै वर्षाकी धारा पृथिवीमें पड़तीहै तिसकी गनती
नहींहै ऐसा वचन बड़ा अयोग्यहै हर३ वाचक बोले कमंडलु
कोश हजार ३०००० श्लोकहै तिसमें ५७३ मेदिनीमें श्लो
१७ से ४२ तक भूमिकी द्वीप आदि पर्वतोंको नाम लिखा
सिकता ७ द्वीपको नाम लिखाहै तथा तारका बड़ी २ नदिये
को नामलिखाहै २ आदिव मर्त्य लोकको नाम लिखाहै मर्त्य
लोक में भी भारतखंडको भी आदिव नाम है वर्षधार पर्वत
को नाम लिखाहै तथा राजा नृग भारत खंडमें बसता था
इसवास्ते भरतखंडकी नदियोंके पर्वतोंके तथा सात द्वीपोंके
मिसकरिकै गोदान देनेकी गनती कृष्णसे गुप्त करिकै बताय
हैकि सबको मालूम परनेसे पुण्यका नाश होजाताहै ३ पंचम
स्कंधकी वोनइसअध्याय १६ में लिखाहै कि मर्त्यलोकमें भा
रत खंडमें पर्वतोंमें श्रेष्ठ पर्वत २७ हैं तथा नदियोंमें श्रेष्ठ नदी
४५ हैं तथा पंचम स्कंध के प्रथमऽध्यायमें लिखाहै कि पृथ्वी

श्चैषाप्रोक्तानृगेनैवै ५ दत्ताश्चधेनवस्तेनब्राह्मणेभ्योनृपे नवै ६ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुष्षष्टितमेऽध्याये चतुष्षष्टितमवेणी ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंचकर्षयमुनाम्बलश्शेषश्चकथ्यते। मर्यादानाशनंतस्याश्चक्रेकामातुरोयथा १ वाचक उवाच ॥ यदाकालियनिर्म्मुक्ता तदाभून्मानगर्विता। जलेनापिविनापूर्णा मुनीनामवरोधिनी २ एतद्‌ज्ञात्वा

में ७ सात द्वीप हैं ४ हे श्रोताहो इस प्रकार गुप्त करिके राजा नृग कृष्णसे कहैथेकि महाराजजितनीभूमिकी सिकता कहे द्वीपहैं तितनी गाय मैं दियाहूँ तथा भारत खंडमें जितनी तारका कहे गंगा आदि लेकै बड़ी बड़ी नदीहैं तितनी गाय मैं दियाहूं तथा जितना वर्षधार कहे पर्वत मर्त्यलोकके भारत खंडमें हैं तितनी गायमैं दियाहूं सब गौकी संख्या यह भई विद्वान् लोग विचारि लेना अंककी उलटी रीतिसे प्रथम ७ दूसरो४५तीसरा२७जोड़सबका॰७४५७सत्ताईसहजार२७००० चारिसौ ४०० सत्तावन ५७ गायदेनेको नृग कृष्ण से कहैथे रेताकी कण आकाशको तारा जल वृष्टि वास्ते नहीं कहैथे ६ इतिभा०द० उ० शं० मं० चतुष्षष्टितमध्याये चतुष्षष्टितमे वेणी ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये शेषको अवतार बलदेव को मुनियों ने वर्णन किया है सोई बलदेव बड़ा कामी सरिके यमुना को क्यों खैंचते भये यमुना की मर्यादा भी नाशकरते भये बड़ी शंकाहोती है १ वाचक बोले कृष्ण जी जब यमुनासे कालिय को निकासि दिया तब यमुना बहुत अभिमान करने लगी वर्षाबिना पूरआने लगी मुनिजन मथुरा कोतथा वृंदावनको आनेलगें तो रातिदिन जल से भरी रहैं नांवचलने न देवैं

निमित्तेन बलस्तान्दंडमादधे ३ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचषष्टितमेऽध्यायेपंचषष्टितम वेणी ॥ ६५ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥ से २४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः॥पौंड्रकेनकथंप्राप्तंस्वरूपम्परमेशितुः। महदाश्चर्य्यमेतद्धियोगज्ञैरपिदुर्लभम्१वाचकउवाच॥ तपस्सुदुष्करंकृत्वापूर्वजन्मनिपौंड्रकः।रमेशस्यवरंलब्धं तेनतद्रूपकल्पने। स्ववधंचापियाचित्वा प्राप्तोभूमिंच दैत्यराट् २ इतिश्रीभा० द०उ० शं० मं० षट्षष्टितमेऽध्यायेषट्षष्टितमवेणी ६६ श्लोक १३ से १४ तक॥

मुनियों की रस्ता रोकिदेती भई ऐसी यमुना को उन्मत्त जानिकै जल क्रीड़ाके मिस करिकै यमुना को दंडबलदेव करते भये ॥ २ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचषष्टितमेऽध्यायेपंचषष्टितमवेणी ॥ ६५ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥ से २४ तक ॥

श्रोता पूछने भये योगियों करिकै बडे दुःख सो प्राप्तहोने लायक जो भगवान् को रूप तिस रूपको पौंड्रक नाम राजा क्यों करिकै प्राप्त भया गुरुजी बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले पूर्व जन्म में पौंड्रक राजा भगवान् का वड़ा कठिन तप करता भया जब भगवान् प्रसन्न होके वरदान देनेको आये तब यह वरदान मांगा कि आपुको स्वरूप बनाने की बुद्धि मो को दीजिये तथा पृथ्वीमें जन्म धारण करिकै आपु के हाथ से मेरी मृत्यु होवैगी तब भगवान् ऐसा वरदान देते भये हे श्रोताहो इस वास्ते पौंड्रक भगवान् को रूप बनाया था ॥ २ ॥ इति भा० द० उ० शं०म० षट्षष्टितमे०षट्षष्टितम वेणी ॥ ६६ ॥ श्लोक॥ १३ से १४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्राणप्रियोरघुपतेर्द्विविदो वानरो त्तमः। कथम्विशेषितस्स्वर्गं सर्वेप्राप्ताःकपीश्वराः १ वाचक उवाच॥ रामरावणयोर्युद्धे चापृष्ट्वारघुनन्दनम्। निशीथेसैनिकैस्स्वीयैः प्रविश्यरावणालयं २ अनेकरा क्षसीर्गृह्य वस्त्रहीनास्स्त्रकारयत्। पश्चाद्ज्ञातंचरामेन कर्म्मतस्यविनिंद्दितम् ३ निःकासितश्चसेनायाः प्रार्थि तस्तेनराघवः। स्वतारणायतेनोक्तोद्वापरेमुक्तिमाप्स्यसि ४ नाहंतवाननन्दुष्ट द्रक्ष्याम्यद्यकदापिच। हतःशेषेन

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी द्विविद नाम वानर श्रीरघुनं-दन को बड़ा प्यारा था तब सब वानर तो त्रेता में स्वर्ग को जाते भये द्विविद को श्रीराघवजी क्यों स्वर्ग को नहीं लेगये यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले रामचन्द्र का तथा रावण का युद्ध होताथा उस वखत अर्धरात्रि के समय में द्विविदनाम वानर रामचन्द्र से पूंछाभी नहीं आपनी फौज लेके रावण के महलमें प्रवेश करिके २ बहुतसी रावण की रानियों को पकड़ि के नग्नकरि देता भया तथा मारता भी भया कुछ देर पीछे श्रीमर्यादा पुरूषोत्तम जो रघुनाथ जी तिनको यह खोटाकर्म द्विविदने किया ऐसा मालूम पड़ा ३ तब उसी वखत श्रीरघुनंदनजी ने अपनी फौजमे से निकालि दिया द्विविदको पीछेसे द्विविदने अपनी मुक्ति होने वास्ते राघवजी की बिनती किया तब रामचन्द्र जी कहे कि द्वापर में तेरी मुक्ति होगी रामचन्द्र कहे हे दुष्ट आज से तेरामुख हमतो देखैंगे नहीं परन्तु शेषजी तेरेको द्वापर में मारैंगे तब तेरी मुक्ति होगी हे श्रोता हो इसवास्ते द्विविद को बलदेव मारते

भविता चातःसंकर्षणाहतः ५ इतिभा० द०उ०शं० मं० सप्तषष्टितमेऽध्यायेसप्तषष्टितमवेणी॥ ६७ ॥श्लो० २॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नानाजन्तुसमाकीर्णं चतुर्वर्णैरधिष्ठितम् । साधुभिर्यतिभिश्चैव गवादिपशुपक्षिभिः १युतं गजाव्हयन्तोये सम्मज्जयितुमुद्यतः । जीवनाशकृताख्या पाद्भयंचक्रेकथंनसः । केवलंकौरवान्हंतुं कथंनैच्छदद्रुहः२वाचक उवाच ॥ महापापंचज्ञात्वापि गुरुनिंदानक्रोधतः । बभूवव्याकुलोवीरो नास्मरत्तच्चपातकम्३ इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टषष्टितमेऽध्याये अष्टषष्टितमवेणी ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

भये तथा त्रेतामें स्वर्ग को नहीं गयाथा ॥ ५ ॥ इति भा०द० उ० शं० मं० सप्तषष्टितमेऽध्यायेसप्तषष्टितमवेणी ॥ ६७ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हस्तिनापुर में अनेक प्रकार के जीव तथा ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र साधु सन्यासी गाय और बहुत जातिके पशु पक्षी बसते थे ऐसे हस्तिना पुरको जल में डुबानेवास्ते बलदेव तैयार भये १ ऐसे पाप को नहीं डरते भयेकि हस्तिना पुरको जल में डुबावैंगे तौ असंख्यजीव की हत्या हमको लगैगी ऐसीभय नहीं मानते भये तथा अकेले कौरवों को नाश करने वास्ते क्यों नहीं इच्छा किये तमाम पुरतौ कुछ अपराध किया नहीं रहा अपराधतौ कौरव लोग कियेथे यह बड़ाभ्रम है दोश्लोक को अर्थ मिला है युग्म है २ वाचक बोले कौरवों ने उग्रसेन की तथा यदुवंशकी निंदा किये तब बलदेव को आपने बड़ोंकी तथा सब कुलकी निंदा सुनिकैबड़ाक्रोध भया उसी क्रोधसे व्याकुल होकै जीवोंकी

श्रोतार ऊचुः ॥ दुष्टाबुद्धिःकथंजाता नारदस्यमुनी श्वर। षोडशस्त्रीसहस्त्रैश्च रमणंवैरमापतेः १ शंकितो भूद्विनाकार्यं साधूनांनोचितन्त्विदं। असकृन्नमहात्मा नम्मायाग्रसतिकालतः २ वाचकउवाच ॥ प्राणिभि दैवयोगाच्च कृतेन्यूनेपिपातके। शापन्ददौबहुभ्यश्च प्राणिभ्योनारदोमुनिः ३ भूरिशस्तापिताजीवास्तेन पापेनमाधवे। दुष्टबुद्धिम्मुनिश्चक्रे श्रीकृष्णेभक्तवत्सले ४ इति भा० द० उ० शं० मं० एकोनसप्ततमेऽध्याये एकोनसप्ततमवेणी ॥ ६९ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

हत्याको भूलिगये ॥ ३ ॥इ० भा०द० उ०शं०मं०अष्टषष्टितमेऽ ध्यायेअष्टषष्टितमवेणी ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये हे मुनीश्वर नारद की बुद्धि क्यों भ्रष्ट होगई कि त्रिलोक नाथकी षोड़श १६००० सहस्र स्त्रियोंके संगक्रीड़ा सुनिके बड़ा आश्चर्य मानते भये बिनाकाज प्रयोजन दुःखी होना यह कामसाधू जनोंका नहीं है यह कामतो मूर्खों का है जो कोई कहैकि नारद को माया ग्रसित करिलिई रही है तो यहबात खिलाफ है माया तौ बारंबार नहीं ग्रसित करती है एकदफे समयपायकै ग्रसित करती है २ वाचकयोंसे जो कोई जीवभूलिकै थोराभी पाप करिलेता था दैवयोग से अपनी इच्छा पाप करने की नहीं रही तब ऐसे ३ बहुत जीवों को बिना विचार किहे नारद शापदेते भये इसी प्रकार से बहुतसे जीवोंको नारद शापदेके दुःखदेते भये उन्हपापोंकरिके भक्तवत्सल जो कृष्ण तिन्ह भगवान् में दुष्टबुद्धि नारद करते भये पाप करिकै बिलकुलपागल होगये॥ ४ ॥ इतिभा०द०उ० शं०मं० एकोनसप्ततित०एकोनसप्ततितमवेणी॥६९ ॥श्लो०॥१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ...

पिड्डि । हृदयेशत्रवस्सन्ति कामाद्याष्वएमहाबलाः १ तत्कथंवासुदेवस्य चोत्पन्नास्तेऽरयस्तदा । यानूगृह्णीत्वादुराचारान् जघानपरमेश्वरः २ वाचक उवाच ॥ ऐहिकम्पारिकंकार्य्यं विनाकामादिसेवनात्।नसिद्ध्यंति कदापीत्थं तस्मात्सेव्याश्चतेसदा ३ सदसत्सुप्रवर्तंते कामाद्यास्तेविचार्य्यच । सत्सुगाह्याःपरित्यज्ज्याश्चा सत्सुकुशलैर्नरैः ४ नासज्जाश्वसुधर्मायांसज्जास्ति ष्टंतिसर्वदा । सज्जागृहीताःकृष्णेन चासज्जादूरता

श्रोता पूछते भये सुधर्म्मा सभा में बैठने वाले जीवों के हृदयमें काम क्रोध लोभ मद मोह मत्सर ये छ बैरी उत्पन्न नहीं होतेथे १ फिरि श्रीकृष्णके हृदयमें वोई छवो बैरी क्यों उत्पन्न होतेभये जिन छ बैरियोंको गृहण करिकै कृष्णजी बड़े बड़े दुष्टोंको मारते भये यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले तीन लोक में यह लोकको काम तथा परलोकको काम विना काम आदि छवों बैरियोंको सेवन किये कभी भी नहीं सिद्ध होवैंगे इस वास्ते कामआदि छःबैरीको सेवन करना चाहिये३परन्तु विचारिकैसेवन करना क्योंकि ये छवों वैरी सुंदर काममें भीहैं तथा बुरे काममें भी हैं सुंदर काममें छवोंको गृहण करना जैसा सुंदर कामकी इच्छा में लोभ इसी प्रकारसे जान लेना चाहिये तथा बुरे काम में त्यागना चाहिये ४ सुधर्मा सभामें बुरेकाम वाले छबैरी नहींथे सुंदरकाम वाले काम आदि छबैरी रहैथे इसवास्ते सुंदर कामोंके छवों बैरियों को कृष्ण गृहण करते भये बुरेकामवालों को त्यागि दिये क्योंकि ये कामआदिछबैरी सुंदर कर्ममें सुंदरफल देतेहैं बुरे कर्ममें बुराफलदेतेहैं

भ्भिताः ५ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्ततितमेऽध्याये सप्ततितमवेणी ॥ ७० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णपांडवसंयोगे नगरेगजसाह्वये। शूद्राश्चान्त्यजकर्म्माणो म्लेच्छाश्चसर्वयोनयः१ सर्वेषांशृण्वताम्ब्रह्मन् ब्रह्मघोषस्तदाकथम् । बभूव महदाश्चर्य्यं शंकेयम्महतीचनः २ वाचक उवाच ॥ वेदपाठोनश्रोतव्यस्त्रिवर्णरहितैर्नरैः । एषोदोषोनचान्यश्च तत्रकेनापिनोश्रुतम् ३ शब्दंचापिशतघ्नीनान्नकैश्चापितदाश्रुतम् । ब्रह्मघोषस्यकावार्ता कृष्णपाण्डव

हे श्रोताहो इस वास्ते कृष्ण सुधर्मा सभा में बैठिकै छवों बैरियोंको ग्रहण करिकैदुष्टोंको मारतेभये ५ इति भा०द०उ० शं० मं० सप्ततितमे०सप्ततितमवेणी ॥ ७० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हस्तिनापुरमें श्रीकृष्णको तथा पांडवों को मिलाप हुआ तब उस वखत शूद्र तथा अंत्यज चर्मकार आदि और सब नीच जाति तथा म्लेच्छ तमाशा देखने वास्ते तथा अनेक प्रकार को काम संसार को करने वास्ते उस सेना में रहेथे १ इन सबको सुनायकै ब्राह्मणों ने ब्रह्म घोष कहे वेद पाठ क्यों करते भये यह हमारे मनमें वड़ी शंका होतीहै क्योंकि वेदको श्रवण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सिवाय दूसरी जाति को वेदका श्रवण करना नहीं चाहिये २ वाचक बोले वेदको श्रवण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सिवाय दूसरेको नहीं करना चाहिये यह दोषहै दूसरा कोई भी दोष नहीं सो वेद को पाठ कोई भी नहीं उस वखत सुनते भये क्योंकि ३ हे श्रोता हो जब श्रीकृष्ण की तथा पांडवोंकी मुलाकाति भई तब ऐसा आदमी को शब्द आपस में होने लगा कि आद-

संगमे ४ इति भा० द० उ० शं० मं० ऽध्याये एकसप्ततितमवेणी ॥ ७१ ॥ श्लो० ॥ २४

श्रोतार ऊचुः ॥

सत्तम । तत्त्वणे सः कथम्मृत्युम्प्रापामंगलकारणम् १ वाचक उवाच ॥ कदापिनैवजानन्ति वीरामृत्युममंगलम् । संगरेमरणंस्तेषां तैर्ज्ञातोमंगलंमहत् २ तत्प्राप्तंमागधे नैव भद्रंश्रीकृष्णवाक्यतः ३ इति० भा० द० उ० शं० मं० द्विसप्ततितमेऽध्यायेद्विसप्ततितमवेणी ॥ ७२ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

मियों के शब्द करि कै तोपकी अवाज तौ किसी को सुनी नहीं परी ऐसा शोर हुआ तब वेद पाठ क्यों करिकै लोगों को सुनि परै किसीको कुछ नहीं सुनिपरा इस वास्ते ब्राह्मण वेद पाठ करते भये ॥ ४ ॥ इति भा० द०उ०शं०मं०एकसप्ततितमेऽध्यायेएकसप्ततितमवेणीश्लोक ॥ २४ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जरासंधको कहे थे हे तुमारा कल्याण होवैगा फिरि उसी समयमें युद्ध करिकै कुछ दिन पीछे अमंगल रूप मरण को क्यों प्राप्तहुआ यह बड़ी शंका है कि भगवान् आपने मुख से मंगल होना कहे फिरि वह जल्दी मारि क्यों गया १ वाचक बोले शूरबीर जोहैं सो युद्धमें मरण होने को अशुभ कभी भीनहींमानते युद्ध में अपना मरण होने को बड़ा कल्याण मानते हैं इस वास्ते कृष्णकी वाक्य के प्रमाणसे युद्धमें मरण रूप कल्याण जरासन्ध को प्राप्त होगया २ इ० भा० द० उ० शं० मं० तितमेऽध्यायेद्विसप्ततितम वेणी ७२ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यदाविमुक्तास्तेभूपाः कथंकृष्णेति । । चक्रुश्चरुत्वात्मवत्तुल्यंमह्यायोग्यमितीरितम् १ वाचक उवाच ॥ सत्संगवर्जिताःपूर्वम्मूर्खाग्राम्याश्चमानिनः । इदानींदुःखिताश्चासन् वाक्यकौशलता कुतः । अतोविनिर्गतन्तेषा माननाद्यत्तथैवतत् २ इ० भा० द०उ० शं० मं० त्रिसप्ततितमेऽध्याये त्रिसप्ततितम वेणी ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नकेवलमभूद्यज्ञन्धर्म्मस्यपृथिवी

श्रोता पूछते भये जरासन्ध को बधन करिकै कृष्ण ने बीस हजार राजों को बंदीघर से छुड़ाये तब वो सब राजा भगवान् को हे कृष्ण कहिकै क्यों बुलाते भये जैसा कोई आदमी अपनी बरोबरि वाले को बुलावै तैसा क्यों बुलाते भये बड़ी अयोग्य बात राजोंने कहेहैं राजोंको करुणा चाहता था हे महराज हे त्रिलोकनाथ हे दीन पालक हे दया सागर इन्ह आदि ओर अनेक प्रकारको दुलार करिकै श्रीकृष्णको बुलाना चाहता था १ वाचक बोले वोराजालोग पेश्तरजो अपनी २ राजगद्दी पर बैठे थे तवतो अभिमान से सत्संग किहे नहीं इसी वास्ते गंवार तथा मूर्ख होगए पीछे से जरासंध पकरिकै बेरी भरिकै जेहल खाने में करिदिया तब दुःखी होगये ऐसे दूनो तरहसे भ्रष्ट जो राजा उनको वचन बोलने की चतुराई क्यों होवै वोतो पशु हैं विना सींग पूछको इसी वास्ते उनराजों के मुख से जो वचन निकले सोई अच्छा है इसवास्ते भगवानको अपने बरोबरी सरीके बोलेहैं २ इतिभा०द०उ०शं० मं० त्रिसप्ततितमेऽध्यायेत्रिसप्त ती ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी पृथवीमें कुछ पहिले युधिष्ठिर यज्ञ

तले । नापितेनूतनाविप्रास्तेपियज्ञाहकोविदाः १ विचारयांचक्रुर्यज्ञेधर्मस्यतेतदा । प्रथमार्हंसुरंचैतन्म हत्कौतूहलन्तदा२वाचक उवाच । नविस्मृतोजगन्नाथ स्सर्वैर्ज्ञातस्सएवच । सर्वत्रापिचयज्ञेचपूजनीयोरमाप तिः ३ एवंसर्वेपिजानन्तस्तथापिदैवयोगतः । प्रमोह यत्सभास्थान्तान् चैद्यकालोमुनीनपि । बालवच्चरितं चक्रुस्तेसर्वेमोहितास्तदा ४ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुस्सप्ततितमेऽध्याये चतुस्सप्ततितमवेणी ॥ ७४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

नहीं करते भये यज्ञ तौ सतयुग से अनेक राजा किहे हैं तथा युधिष्ठिर के यज्ञ कराने वाले ब्राह्मण भी प्रथमहीं यज्ञ कराने के वास्ते नहीं आये थे ब्राह्मणभी सतयुग से यज्ञ गनती से हीन कराये रहे हैं १ फिर धर्म राजकी यज्ञ में पहिले पूजन करने वास्ते देवता को विचार क्यों करते भये कि पहिले पूजन किसका करना जो वात प्रथम होती है उस बात को विचार करना चाहिये जो हजारों वर्ष से बात होती आती है उसको क्या विचार करना यह बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले सब ब्राह्मण भगवान् को भूलि नहीं गयेथे सब जानते थे कि सब कामोंमें तथा यज्ञमें भी भगवान्‌को पूजन करना चाहिये ३ ऐसा जानते थे परन्तु दैवयोग से शिशुपालको काल सब मुनियोंको तथा यज्ञ की सभा में बैठने वाले प्राणियों को मोहिलेता भया काल करिके मोहित मुनि जन सब भये और सब मानुष्य बालक सरीके कर्म करते भये क्योंकि जोयज्ञमें पहिले पूजनकरने लायककौनहै ऐसा विवाद नहोता तौ शिशुपाल कृष्णकी निन्दा क्यों करता विना निन्दा किये

श्रोतार ऊचुः ॥ एकपत्नीव्रतोस्माभिश्श्रुतोराजा
ि..ः । स्वपत्नीभिःकथंयज्ञे शुशोभधर्मनंदनः १
· ·उवाच ॥ दृष्ट्वापतिव्रतन्तस्या द्रौपद्याधर्म्मनं
,ः। आत्मानंसततंमेने प्रमदानेकसंयुतम् २ ज्ञात्वा
तन्मानसम्भावं मुनिनोक्तस्तथापिच। इति० भा० द०
० शं० मं० पंचसप्ततितमेऽध्यायेपंचसप्ततितमवेणी
७५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

ं मारिजाता है श्रोताहो इस वास्ते शिशुपाल के काल
करिके मोहित जो मुनि तथा और सब सभा में बैठनेवाले
प्रथम पूजन करने लायक को विचार करते भए ४ इ०
भा० द० उ०शं० मं०चतुस्सप्ततित० चतुस्सप्ततितमवेणी॥
७४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भए शास्त्र में तथा लोक में भी ऐसा सुना
है हम सब कि युधिष्ठिर राजा एक स्त्री सिवाय दूसरी
स्त्री के संग अपना विवाह नहीं किए कारण युधिष्ठिर
के एक स्त्री थी फिरि यज्ञ में बहुत स्त्रियों करिके
शोभायमान युधिष्ठिर क्यों होते भए यह बड़ी शंका होती
है १ वाचक बोले द्रौपदी ने युधिष्ठिर की सेवा ऐसी किया
कि जो सेवा कोटियों स्त्री के किये से कभी नहीं बनेगी
ऐसे द्रौपदी के पतिव्रतको युधिष्ठिर देखिके मनमें जानते
भए कि हमारे कोटियों स्त्री हैं तथा व्यासजी भी युधिष्ठिर
के मनकी बात जानिके कहते भए युधिष्ठिर अपनी बहुत
सी स्त्रियों करिके सहित अपनी यज्ञ में शोभित होते भए
इतिभा० द० उ० शं० मं० पंचसप्ततितमेऽध्याये पंचसप्त-
ततम वेणी ॥ ७५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्रद्युम्नश्चशरैर्जघ्ने - ।७५
नपि।मेनिरेपरमाश्चर्यन्तन्दृष्ट्वाचकथम्मुने।सैनि
स्यतस्यापि किमिदंकर्म्मनूतनम् १ वाचक उवाच
कृष्णाद्दतेनकस्यापि ब्रह्मणोवरदानतः। शाल्वंससैन्य
कंयुद्धे शक्तिरस्तिविमर्दितुम् २ प्रद्युम्नेनार्दितश्शाल्वो
युद्धेसैन्यसमन्वितः। ब्रह्माद्यामेनिरेश्चर्य्य मन्येषांचैव
काकथा ३ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्सप्ततितमे
ऽध्यायेषट्सप्ततितमवेणी॥ ७६॥ श्लो०॥ २०॥
श्रोतार ऊचुः॥ माययाकल्पयच्छाल्वो वसुदेवंकथ
न्तदा। एषामहीयसीशंका बुद्धिन्नोभ्रामयेत्सदा १

श्रोता पूछते भए कि प्रद्युम्नने बाण करिकै शाल्व को तथा शाल्व की फौजको मूर्छित करि दिए तब प्रद्युम्न के ऐसे पराक्रमको देखिकै शाल्वकी फौज तथा प्रद्युम्न की आश्चर्य क्यों मानती भई प्रद्युम्न को क्या यह नवा कर्म है ऐसा कर्म तौ अनेक दफे प्रद्युम्न किए थे गुरुजी यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले शाल्व को ब्रह्माने वर दिए थे कि तेरे को तथा तेरी सेना को युद्ध में श्री कृष्णजी मूर्छित करैंगे और तीन लोकमें कोई प्राणी तेरेको तथा तेरी सेना को दुःखित नहीं करि सकैगा २ जब प्रद्युम्न शाल्व को सेना सहित मूर्छित किया तब ब्रह्मा आदि सब देवता आश्चर्य मानतेभये तथा दूसरा प्राणी आश्चर्य मानि लिये तब क्या बड़ी बात हुई ३ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्सप्ततितमेऽध्याये षट्सप्ततितमवेणी ७६॥ श्लोक॥ २०॥

श्रोता पूछते भये शाल्व माया करि कै बसुदेव की मूर्ति बनाय लिया गुरुजी यह शंका रातोदिन हम सबकी बुद्धि

क उवाच ॥ शाल्वायब्रह्मणादत्तो वरोमायाचशि
। ऋतेत्रिदेवास्सर्वेषाम्प्राणिनांकल्पनाव्रलिः २
... ल्वे यदात्वंकल्पयिष्यसि । वसुदेव
... ध्रुवम्प्राप्स्यसिदानव ३ एवमुक्तोपिविधिना
... तः । कल्पयामासवैशौरिं कृष्णेन
... हतः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्तसप्ततित
मेऽध्यायेसप्तसप्ततितमवेणी ॥ ७७ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ संकर्षणस्स्वयंशेषस्तस्यभाव्यंकुतः
प्रभो । बलाद्यस्यतदाजघ्ने सूतंसंकर्षणोविभुः १

भ्रमाती है क्योंकि राक्षस माया करिकै अनेक प्रकारकी वस्तु
बनाय लेते हैं शास्त्रों में लिखाहै परन्तु वसुदेव सरीके तपस्वी
कि जिन के वैकुंठनाथ पुत्र होते भये तिनकी मूर्ति को माया
करिकै राक्षस बनाय लिया यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले
ब्रह्मा ने शाल्व को वरदान दिये थे कि ब्रह्मा विष्णु शिव इन
की मूर्ति तेरी बनाई नहीं बनैगी और तीन लोक में जिसकी
मूर्ति बनाया चाहैगा तिसकी मूर्ति बनाय लेवैगा २ तथा ब्रह्मा
शाल्व को ऐसा भी कहे थे जब तू वसुदेव की मूर्ति बनावेगा
तब तेरी मृत्यु होवैगी ऐसे ब्रह्मा के वचनको कालकी घरि
होकै भूलि गया वसुदेव की मूर्ति बनाया तब श्रीकृष्ण शाल्व
को मारिडाले हे श्रोताहो इस वास्ते शाल्व वसुदेवकी मूर्ति
बनाता भया ॥४॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० सप्तसप्ततितमेऽ
ध्याये सप्तसप्ततितमवेणी ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥
श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भावी प्राकृति जीवों के वास्ते
है उन से भला बुरा कर्म कराय सकती है कुछ भगवान् के
ऊपर भावी को जोर नहीं चलता तो फिरि बलदेवजी शेष

वाचकउवाच॥किंचित्कर्तुंनवैशक्तश्चेश्वराण ..
भाव्यन्तथापिमर्यादा पालितुंतस्यतेत्रयः।तद्वशा
कुर्वंतिलोकेभाव्याहंकारणात् २॥इति भा० द० उ०
मं० अष्टसप्ततितमेऽध्याये अष्टसप्ततितमवेणी ॥
श्लोक ॥ २८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगामसर्वतीर्थानि । ।
बलस्तदा । वाराणशीमवन्तीचनेयायकारणंकिमु
सेविताश्चद्वयोःपार्श्वे येतीर्थास्तेनसर्वशः १ ।
उवाच ॥ काश्यवन्त्योःफलंचार्द्धं पत्नीहीनेनप्राप्यते
एकाकिनाकृतास्सर्वे तीर्थारामेनतेतदा २ : . .

भगवान् थे सो भावी की बशि होके सूत जी को क्यों मार
भये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले हे सज्जनों ब्रह्मा विष्
महेश्वर के ऊपर कुछभी भावी नहीं करसकती तथापि भावि
की मर्यादा पालना करने वास्ते तीनों देव संसार में भावी क
बशि होके अनेक प्रकार को काम करते हैं इस वास्ते श
रूप जो बलदेव सोभावी की बशि होके सूतको मारते भये
इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टसप्ततितमेऽध्यायेअष्टसप्तति
तमवेणी ॥ ७८ ॥ श्लो० ॥ २८ ॥

श्रोता पूछते भये बलदेव जी सब तीर्थ को जाते भ
काशी को तथा उज्जैन को क्यों नहीं गये और काशी
तथा उज्जैन के आसपास जो तीर्थ थे उनकोतो गये परन्तु
एदोनों बड़ेतीर्थ तिनको क्यों छोड़िदिये यह बड़ी शंका है
वाचक बोले शास्त्र में ऐसालिखा है कि स्त्रीबिना अकेला
मानुष्य काशी तथा उज्जैन इन दूनों तीर्थों को दर्शन
करता है तब उस को आधा फलप्राप्त होता है और बलदेव

मिपुनस्तौहि काश्यवन्त्यौसुपुण्यदे। सपत्नीकश्चैतदर्थं न पुर्यौद्धौजगामसः ३ इति भा०द० उ० शं० मं० एकोन अशीतितमेऽध्यायेएकोनअशीतितमवेणी ॥ ७६ ॥ श्लोकनियमोनास्तिसमस्ताऽध्यायेशंका ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णस्यांतःपुरेब्रह्मन् किमज्ञाश्चा पिसंस्थिताः। येपूजितंचतन्दृष्ट्वा कृष्णेनचकिताभवन् १ वाचक उवाच ॥ कृष्णस्यान्तःपुरेनाज्ञा किंतुगोलोक वासिनः। कृष्णादन्न्यन्नजानन्ति श्रेष्ठकमपिसर्वदा २

अकेले तीर्थों को गये स्त्रीसंग नहीं रही इसवास्ते आधाफल होना बिचारिकै काशी तथा उज्जैन को नहींगये बलदेव जी ऐसा बिचारकिये कि स्त्रीको संगलेकै फिरि काशी को तथा उज्जैन को आवैंगे हे श्रोताहो इसवास्ते काशी तथा उज्जैन को नहीं गये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं०एकोनअशीतमेऽध्यायेएकोनअशीतमवेणी ॥ ७६ ॥ श्लोक को नेम नहीं ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी कृष्ण भगवान् के महलों के दरवाजेपर मूर्ख लोगवसे थे क्योंकि जो मूर्ख लोग नहीं पहरा देतेहोते तौ भगवान् सुदामाको पूजन कियातौ वोलोग आश्चर्य क्यों मानते क्योंकि सज्जन लोगतो जानतेहैं कि भगवान्‌तो ब्राह्मणको पूजन सदा करतेथे वोआश्चर्य क्यों मानते यहबड़ी शंका होती है १ वाचक बोले कृष्णके हवेलीमें मूर्ख नहीं रहे थे गोलोक वासिथे उनलोगोंकी यह प्रतिज्ञाथी कि श्रीकृष्णसे बड़ा तीनलोकमें किसी को नहीं जानतेथे२ब्रह्मा आदि देवतों को तथा योगियोंकोब्राह्मणोंको भी कृष्णसे बड़ानहीं जानतेथे

टीप॥इसअध्याय में श्लोक को नियम नहीं सब अध्यायमें शंका है॥

ब्रह्मादिसुरवर्गांश्चद्विजान्योगकरानपि।एतदर्थंचचाक्रि
तास्तंदृष्ट्वाकृष्णपूजितं ३ इति भा० द० उ० शं० मं०
अशीतितमेऽध्यायेअशीतितमवेणी ८० ॥श्लो०॥२४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंश्रीर्जगृहेहस्तं जग्धुकामस्य
तंडुलम् । द्वितीयमुष्टिमाचार्य वदेदंभ्रमवारिधिं १
वाचक उवाच ॥ निरीक्ष्यब्राह्मणेप्रीतिं कृष्णस्यदुर्बले
ऽचलाम्। विचार्यरुक्मिणीभीता कुरुतेमत्पतिंद्विजम्२
स्वयंचब्राह्मणीभर्ता भविष्यन्स्यद्ध्वैहरिः।पतिव्रतश्चमे
शीघ्रं नाशमेष्यतिनिश्चितम्। अतोजग्राहहस्तं सात

इसवास्तेसुदामाके पूजनको कृष्णकिये तौसब आश्चर्यमानते भये कि इन्हसे वड़ा यह कौन आया जिसका पूजन भगवान करतेभये ॥ ३ ॥ इति भा०द०उ०शं० मं० अशीतितमेऽध्याये अशीतितम वेणी ॥ ८० ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोता पूछते भये हे वाचक जी महाराज सुदामा के हाथ से छीनिकै एकमूठी चावल कृष्ण चाविलेते भये दूसरी मूठी फिरि चावने लगे तब रुक्मिणीजी कृष्णकोहाथपकाड़िलिया यह वड़ीशंका को समुद्र है तिसको आपुहम सब को पारकरो १ वाचक बोले रुक्मिणीने श्रीकृष्णकी प्रीति सुदामामें बहुत देखिकै डरिगईं कि लक्ष्मी जोमैंहूंसो मेरेको ब्राह्मणको देवैंगे चावल के बदले में २ तब मेराब्राह्मण पति होवैगा तथा आपु ब्राह्मण की स्त्री जोअलक्ष्मी तिसकेपति होवैंगे तब :१ ५ धर्मभीनाश होजावैगा ऐसा विचारिकै रुक्मिणी न भगवानको हाथ पकाड़ि लिया है चावल नहीं चावने दिया इन सबको अर्थ यहहै कि प्रेमसे चावल चाविकै भगवान ब्राह्मण कोतौ लक्ष्मीपति करते आपु दरिद्र पति होते ऐसा

त्पराकमलापतेः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एका
शीतितमेध्यायेएकाशीतितमवेणी ८१॥श्लो०॥१०॥

श्रोतार ऊचुः ॥ धर्मराजाश्रयाभूपा बभूवुर्विस्मिताः
कथम्। श्रीकृष्णंचसमालोक्य सभार्यंमुनिसत्तम १
वाचक उवाच ॥ सर्वत्रकृष्णवाक्यंच श्रुतम्भूपैस्तुस
वंदा। वर्णितम्मुनिभिश्शास्त्रे स्त्रियश्चनरकार्तिदाः २
निरीक्ष्यातोयुतंताभिस्संस्मृत्यमुनिभाषितम्। सशं
काश्चाभवन्भूपास्ताशामपिचशानुगम्३ इतिभा० द०
उत्तरार्द्ध शं० मं० द्वैशीतितमेऽध्यायेद्वैशीतितमवेणी॥
८२॥ श्लो०॥ २६॥

सुदामासे कृष्ण को प्रेमथा॥ ३॥ इति भा० द० उ० शं०मं०
एकाशीतितमेऽध्यायेएकाशीतितमवेणी॥८१॥ श्लो०॥ १०॥

श्रोता पूछते भये हे मुनि सत्तम युधिष्ठिर की आज्ञा करने
वाले राजों ने श्रीकृष्ण को स्त्री सहित देखिकै विस्मयको क्यों
प्राप्त भये यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले सब शास्त्रों
में कृष्ण के वचन को राजा लोग मुनियों के मुख से सुने थे
कि भगवान् कहे थे सब शास्त्रों में कि स्त्री लोग नरक की देने
वालीहैं जो कोई जीव मोक्ष चाहैसो जीव स्त्री लोगोंकी संगति
नकरे २ फिरि स्त्रियों करिकै सहित कृष्णको राजों ने देखिकै
तथा जो जो काम करने को स्त्री लोग कहती हैं उस काम को
जल्दी कृष्ण करते हैं ऐसा स्त्रियों की वशि भये कृष्णको
देखिकै राजा लोगविस्मयकोप्राप्तभये कि और जीवों को स्त्रीकी
वशि होनामना करतेहैं और आपु स्त्रियोंकी वशिहोगये हैं है
श्रोताहो इस वास्तेराजालोग विस्मयको प्राप्तभये३इति०भा०
द०उ०शं०मं०द्वैशीतितमेऽध्याये द्वैशीतितमवेणी८२श्लोक॥२६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदशास्त्रप्रमाणोयं सर्वेषांभगवान् गुरुः । चराचराणांलोकानां जीवानांगतिरच्युतः १ तान्सर्वान्वैपरित्यज्य कथंगोपीगतिर्गुरुःव्यासेनोक्तश्च श्रीकृष्णः शंकांछिंधिगुरोचनः २ वाचक उवाच ॥ अत्रगोप्योनताःप्रोक्ता व्यासेनकृष्णवल्लभाः। गोपश्च भगवान्प्रोक्तो गोपीमायाथसिंधुजा ३ तयोःपतौरमा नाथे सम्भूतेजगताम्पतौ। गतिर्गुरुश्चविज्ञेयो यतःश क्तिमयंजगत् । अतोगोपीपतिःप्रोक्तोगुरुश्चापियदूत्त मः ४ इतिभा० द० उ० शं० मं० त्र्यशीतितमे ऽध्याये त्र्यशीतितमवेणी ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये वेदको शास्त्रको ऐसा प्रमाण है कि तीन लोक में जो चर अचर जीव हैं तिन सब जीवों के भगवान् गुरु हैं तथा गतिभी हैं १ फिरि व्यासजी सब जीवोंको त्यागि के भगवान् के गोपियों को गुरु तथा गति क्यों कहेथे यह बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले गोपीनां सगुरुर्गतिः इस श्लोकको अर्थ व्यास जी व्रजकी गोपी जो श्रीकृष्णकी प्यारी थीं उन गोपियों को गोपी न कहेथे उस श्लोकको अर्थ व्यास जी ऐसा किये हैं कि गो शब्दको संसारभी कहते हैं शास्त्रों में ऐसा गो कहे चर अचर संसार उस को जो रक्षा करें तिसको नाम गोप है गोप भगवान् हैं तथा गोपी भगवान्की माया है सोई मायारूप लक्ष्मीहै ऐसाअर्थ गोपी को व्यासमुनि कियेहैं ३मायाके तथा लक्ष्मीके तथा जगत्के पतिजो भगवान् सो कृष्ण होके पृथ्वी में विराजमान रहेथे इसवास्ते माया के पति तथा गुरुभी भगवान् हैं क्योंकि माया रूप संसारहै इसवास्ते कृष्णको गोपीपति तथा गुरु व्यास जी

श्रोतार ऊचुः ॥ कथम्प्रोक्तोभगवता भौमेपूजकधीः
पुमान् । गोखरस्सस्तुविख्यातो तोयेतीर्थमतिस्तथा १
वाचक उवाच ॥ वेदशास्त्रेपद्वौमार्गौ प्रोक्तौविधिविधान
तः । कर्ममार्गोमोक्षमार्गौ द्वाविमौजीवसेवितौ २
कर्ममार्गाश्रयोजीवो भवेत्पूजकधीर्यदा । भौमेजलेऽ
तुलंसौख्यम्प्राप्नुयादितिनिश्चितम् ३ मोक्षमार्गरताजी
वा भौमेपूजकबुद्धिमान् । जलेतीर्थमतिश्चापि गो खर

कहिये बृजवासी गोपियों को पति गुरु अकेला नहीं कहिये॥४॥
इति भा० द० उ०शं० मं०त्र्यशीतितमेऽध्यायेत्र्यशीतितमवेणी
८३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णजी ब्राह्मणसे कुरुक्षेत्र में कहेकि भौम जो प्रतिमा देवतों की होती है उस प्रतिमा में जोप्राणी देवता मानते हैं कि यह प्रतिमामें भगवान् बसे हैं सो प्राणी मानुष्य नहीं है ऐसा मानने वाले प्राणी बैल तथा गदहाहो हैं तथा जल में तीर्थ मानते हैं कि इस तीर्थ में स्नानकिये से मोक्ष होवेगा योभी बैलगदहा हैं हेगुरुजी ऐसा वचन क्यों कहे प्रतिमाकी तथा गंगा आदि तीर्थों की निंदा भगवान् करते भये हैं यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले वेद में तथा शास्त्र में दो मार्ग लिखेहैं एक कर्म मार्ग दूसरा मोक्षमार्ग संसारी जीव दोनों रस्ताको सेवन करताहै २ जो जीव कर्म मार्ग को सेवन करताहै जैसा गृहस्थ आदि वासना और प्रतिमा में देवता मानैगा तथा जल में स्नान कि॰ से मोक्ष होना मानैगा तब निश्चय से कर्म करने वाले जीव को मानसी से हीन सुख प्राप्त होवैगा ३ और जो जीव मोक्ष मार्ग को सेवन करते हैं सो और प्रतिमा में देवता मानैंगे तथा

स्सस्तुकथ्यते४भगवद्वचनन्त्वेतज्जीवस्यकर्मिणोनहि।
सन्न्यस्तस्यविजानीयान्नान्यथाभ्रममावहेत्५इतिभा०
द० उ० शं० मं० चतुरशीतितमेऽध्यायेचतुरशीतितम
वेणी ॥ ८४ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नपीतम्वासुदेवेन देवकीस्तनज
म्पयः। पीतशेषंकथम्प्रोक्तं तत्पयोयत्पपुश्च्यते१वाचक
उवाच ॥ त्रिविधंकर्म्मसंप्रोक्तं वेदेशास्त्रेचलौकिके

वाङ्मनःकायजंकर्म्म न्यूनाधिकविवर्जितम् २ प्रपीतन्ते नमनसा देवकीस्तनजम्पयः । कृष्णेनसर्वदातश्च पीतशेषम्प्रभाषितम् ३ इति० भा० द० उ० शं० मं० पंचाशीतितमेऽध्यायेपंचाशीतितमवेणी८५श्लो०५५

श्रोतार ऊचुः॥विदेहनगरेब्रह्मन् गमनंमुनयस्तदा। कुर्वन्तश्चानिशन्तस्मान्निर्यातास्स्वस्वमाश्रमम् १ आलोकिताःपुरजनैस्सुज्ञैरपिमुनीश्वराः । श्रुतपूर्वाबभूवुस्ते कथन्तैश्चमुनीश्वराः २॥वाचक उवाच॥ नसर्वकालिकः पूर्वोग्राह्योत्रातिसुकोशलैः।यदापश्यन्पुरजनाःप्राप्तान्

कोई कर्म बड़ाभी नहीं है येतीनों कर्म बराबरि हैं २ देवकीके स्तनके दूधको भगवान्सबदिन मनकरिकै पीतेभये जोमनसे दूधपियेतौ वचन तथा शरीर से दूधको पीनासत्य होगया इस वास्ते व्यास जीने कहे हैं कि कृष्णजी के पीनेसे जो दूध बाकी देवकीके स्तनमें था उस को वो सब बालक पीतेभये ॥ ३ ॥ इ०भा०द०उ०शं०मं० पंचाशीतितमेऽध्यायेपंचाशीतितम वेणी ८५ ॥ श्लोक ॥ ५५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी मुनिलोग विदेह राजाके नगर को सदा आतेथे तथा नगरमें कुछदिन बासकरिकै अपने अपने आश्रमको जातेथे १ तब जनकपुरीमें बड़े बड़े महात्मा तथा और प्रजा बसेथे तब वह पुरवासी प्रजा तथामहात्मा जन मुनियोंको देखतेथे पहिंचानतेथे फिरि क्यों व्यास जी कहेहैंकि पेश्तर जिन मुनियोंको ब्राह्मण सुनि रक्खाथा उन मुनियोंको पूजनकरता भया गुरुजी इस वाक्यसे मालूम परताहैकि नारदादि मुनिजनक पुरीको कभीभी नहीं गये नये २ कृष्णकेसाथ गये हैं इसवास्ते व्यासजी कहेहैंकि जनक

मुनिवरांश्चते ३ तत्पूर्वग्रहणंचात्र ज्ञातव्योतिवि चणैः। आयातिमुनिभिस्सार्द्ध मेतैःकृष्णश्चतैश्श्रुता। श्रुतपूर्वास्ततःख्याता मुनयःपुरवासिभिः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्अशीतितमेऽध्यायेषट्अशीतितम वेणी॥ ८६ ॥श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नृणांक्षेमायचाकल्पान्मुनिर्नाराय णोहरिः। तपस्यतिष्ठदित्युक्तं तत्किंस्वस्तिनृणामिह १

पुरवासी प्रजा देखेनहींथे परंतु सुने तौथे कि अमुक २ मुनि पृथ्वीमेंहैं यह शंका हम सबके मनमेंहै २ वाचक बोले(श्रुत पूर्वान्मुनीश्वरान्)इस श्लोकमें विद्वान्जन सब दिन तथा वर्ष को तथा वहुतदिन को पहिले नहीं मानते बहुत दिन तथा वर्ष से तो पुरवासी प्रजा सब मुनियों को जानते थे परंतु जब श्रीकृष्णके साथ सब मुनि आये तब सब मुनियों को पुरवासी प्रजा देखते भये ३ उसवखतसे पहिले सुनि राखेथ मुनियोंको पुरवासी ऐसा अर्थहै क्यों जनकपुरमें बड़ा शोर मचिगयाथा कि श्रीकृष्ण जनकपुरीको आतेहैं तिनके साथ अमुक २ मुनिजनभी आतेहैं ऐसा पुरवासी सुनेथे तब जिनको २ आनेका सुनेथे सो सब आयगये तिन सबको पूजन करतेभये हेश्रोताहो (श्रुतपूर्वान्मुनीश्वरान्)को अर्थ व्यास मुनि ऐसा कियेहैं और ऐसा नहीं किये कि कभीदेखे नहींथे सुनेथे ४ इतिभा० द० उ० शं०मं०षडशीतितमेऽध्याये षडशीतितम वेणी ॥ ८६॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये गुरुजी बद्रिकाश्रम में नारायणनाम मुनि मानुष्योंके कल्याण होनेवास्ते बहुत युग कल्प कल्पांतसे तप करतेहैं सो उस तपकारिके मानुष्योंको कल्याण क्या होता

वाचक उवाच ॥ विषयेन्द्रियजाःसौख्यास्सर्वत्रसर्वयो
निषु। ज्ञानमेवपरंसौख्यम्भारतेष्ववर्तते २ प्रभावात्त
स्यतपसोज्ञानान्नान्यंनृणामिह।सौख्यन्तस्मान्मुनिश्च
क्रेनृणांक्षेमायवैतपः ३ इति भा० द० उ०शं० मं०सप्ता
शीत्यऽध्यायेसप्ताशीतिवेणी ॥ ८७ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ वृकस्यवंचनेविष्णुर्ब्रह्मचारीबभू
वह।कथन्नभगवान्दध्रे चान्यरूपंसुचंचलम् । बटोरयो
ग्यंसम्प्रोक्तम्वेदेचानृतभाषणम् १ वाचक उवाच ॥
नकेषामपिविश्वासस्त्रिलोकेष्वपिमन्यते । वृकोमहाबली

यह शंकाहै।वाचकबोलेसब जीवोंको इन्द्रियोंको जुदा जुदा
षय सुखसबलोकमेंहैं परंतु नारायण नाम मुनि भारतखण्ड
तपकरते हैं इसवास्ते मनुष्यों को ज्ञानको सुख तथा मोक्ष
पकल्याण ज्ञान से होना भरतखंड सिवाय दूसराद्वीप तथा
वड तथा और लोकमें ज्ञाननहींहै हेश्रोता हो ज्ञानसे दूसरा
कल्याण मनुष्यों को कोईभी नहीं है इसवास्ते मनुष्यों के
कल्याण होनेवास्ते नारायण मुनि तपकरतेहैं ऐसा लिखाहै ३
इति भा० द०उ०शं०मं० सप्ताशीतितमेऽध्याये सप्ताशीतितम
वेणी ८७ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये वृकासुरको छलने वास्ते परमेश्वर ब्रह्म-
चारीको रूप क्यों धारण करते भये क्योंकि वेदमें ब्रह्मचारी
को झूठ बोलना खोटी बात लिखीहै इसवास्ते और अनेक
रूप भगवान्के बनाये संसारमेंहैं दूसरा रूप धारण करिके
छल करना योग्यथा यह बड़ी शंका हमारे सब के मनमें
होती है सो आप कृपाकरि कै उसका छेदनकरो १ वाचक
बोले वृकनाम दैत्य तीन लोक में किसी को विश्वास

धूर्तौद्वयोश्चमन्यतेसदा २ नारदस्यचभेषस्य ब्रह्मचारिणएवच । नारदेनोपदिष्टंतं ज्ञात्वानोभगवांस्तदा। ब्रह्मचारिवपुर्धृत्वा कार्य्यंचक्रेजगत्पतिः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टाशीतितमेऽध्यायेअष्टाशीतितमवेणी ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिषुदेवेषुकःश्रेष्ठो विचारोयमनर्थकः । अज्ञानांचैववालानां मूर्खेशानाम्पुनःपुनः १ महदद्भुतमेतद्धिऋषयश्चक्रिरेकथम्।वाचक उवाच॥

नहीं मानता था क्योंकि वह बड़ाधूर्तथा सबदिन बड़ामानी था२परन्तु तीनलोक में दोजने को बिश्वास मानताथा एक तो नारद को दूसरा ब्रह्मचारी के भेषको भगवान् विचार कियेकि यह दैत्य नारद की आज्ञा मानिके यह कर्म किया है इसवास्ते वृह्मचारी को रूप धरिके सब काम भगवान् करते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० अष्टाशीतितमेऽध्याये अष्टाशीतितमवेणी ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी तीनदेवतोंमें बड़ादेवताकौनहै ब्रह्मावड़ा है कि विष्णु वड़ाहै किशिववड़ाहै ऐसा विचार मुनि जन क्यों करते भये क्योंकि ऐसा विचारतो बड़े बड़े अज्ञानी तथा बालक तथा बड़े बड़े मूर्ख करतेहैं मुनिलोग ऐसा विचार कभी नहीं करते यह बड़ीशंकाहै१वाचक बोले किसारस्वत मुनिके वंश में जन्मलिये जो ब्राह्मण सो सब वृह्मकर्म में बड़े निपुण होतेथे ऐसा वृह्मकर्म के अभिमान करि के सब देवतों को तथा मुनिजन को अनादर करते भये वचन करिके भी किसीका आदर नहीं करते थे २ ऐसा सारस्वत ब्राह्मणों का अभिमान भगवान् जानि के बिचार कियेकि ऐसा अभिमान

सारस्वतकुलेजातास्तेविप्राःकर्म्मगर्विताः।मुनीन्सुरान् तिरश्चक्रुर्नादरंवचनैरपि २ ज्ञात्वैतान्ब्राह्मणान् विष्णु र्नरकंगन्तुकामुकान्। कृपयाबुद्धिसम्मोहन्तेषांचक्रेमखे हरिः ३ अतोविस्मृतज्ञानास्ते बभूवुर्भ्रमतापिताः।भृगु प्रवर्णितंश्रुत्वा मानहीनाबभूविरे ४ इति भा०द० उ० शं० मं० एकोननवतितमेऽध्यायेएकोननवतितमवर्णी ८६॥श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मानुष्यवत्कथंचक्रे महाक्रीडांजग पतिः। कृष्णःस्त्रीभिश्च स्वीयाभिर्द्वारकायाम्मुनेवद१ ॥चक उवाच ॥ ज्ञात्वाकलियुगम्प्राप्तं भविष्यन्ति करिकै येसब सारस्वत ब्राह्मणनरकमें पड़ेंगे क्योंकि हमै आदि लेकै ज्यतने देवता तथा ब्राह्मणहैं तिन्ह सबको येब्राह्मण कुछ भी नहीं जानते ऐसा भगवान् विचारि कै उन्हहीं ब्राह्मणों की यज्ञमें कृपा करिकै उन्हहीं ब्राह्मणोंकी बुद्धिको भ्रष्टकरि देतेभये तबवो सब ब्राह्मण ज्ञानको भूलिगये पागल विक-कुल होगये मूर्खता से भस्महोने लगे कुछदेरपीछे भगवान् को चरित्र भृगुवर्णन किये तब सब सारस्वत ब्राह्मण अभिमान से रहित होगये हे श्रोताहो इसवास्ते सारस्वतब्राह्मण बुद्धिभ्रष्ट होगये ॥३।४इति भा० द० उ०शं० मं०एकोननवतितमेऽध्याये एकोननवतितमवर्णी ॥ ८६ ॥ श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी श्रीकृष्ण अपनी स्त्रियों के संग मानुष्यके सरीके क्रीड़ा क्यों करते भये द्वारका पुरीमें हे मुनिजी इसशंका को उत्तर आपु कहो १ वाचक बोले श्री कृष्ण जी विचार कियेकि अब थोरेही दिनमें कलियुग आवे-गा कलियुग मेंबड़े बड़े दुष्ट अधर्मी ऐसे मनुष्य जन्मैंगे अपनी

नराधमाः । परस्त्रीशक्तमनसस्स्वस्त्रीताडनकारकाः
विनंदयातितदाधर्म्मः स्त्रीपुंसोर्वेदानिर्म्मितः ।
नानराणाम्वे शित्तणायरमापतिः३चक्रे ।
कलिस्त्रीरत्तणायच । ममेदंक्रीडनंश्रुत्वा जारंसंत्यज्ज्य
मानवाः । सर्वोपायैःस्वस्त्रियस्ते पूजयिष्यन्तिवैकलौ४
इति भा० द० उ० शं० मं० नवतितमेऽध्यायेनवतितम
वेणी ॥९०॥ श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

स्त्रीको छोड़ि कै दूसरेकी स्त्रीसे मन लगावैंगे अपनीस्त्री को अन्नवस्त्र नहीं देवैंगे जो स्त्री कुछ बोलैगी तौ मारैंगे २ तब वेदमें जो विवाह हुये स्त्रीपुरुषको धर्मलिखाहै सो नष्ट होजैगा तब सनातन धर्म नष्ट हुये पर वर्णसंकर प्रजा होवैगी तब पृथ्वी रसातलको जावैगी और जल्दी हमको अवतार लेना पड़ैगा ऐसा भगवान् विचारिकै कलियुगमें उत्पन्नजो मनुष्य होवैंगे उनमानुष्योंको सिखानेवास्ते ३ तथा कलियुगमें स्त्रियोंकी रत्ताकरने वास्ते अपनी स्त्रियोंके साथ बड़ी क्रीड़ा कृष्ण करते भये कृष्ण विचारि कियेकि हमारी अपनी स्त्रियोंके साथ क्रीड़ाको कलियुगके मानुष्य सुनिकै जारकर्म छोड़िकै अपनी अपनी स्त्रियोंको आदर पूजन करैंगे जानैंगे कि अपनी स्त्री गृहस्थी में-बड़ी चीजहै जो उत्तम चीज न होती तौ भगवान् बड़ा बड़ा आदर पूजन अपनी स्त्रियोंको क्यों करते हेश्रोताहो इसवास्ते द्वारकापुरी में मानुष्य सरीकअपनी स्त्रियोंके साथ श्रीकृष्ण क्रीड़ा करते भये कामकी वशिहोकै नहीं किये ४ इतिश्रीभागवत द० उ० शं० मं० नवतितमेऽध्याये नवतितमवेणी ॥ ९० श्लो० १ से २ तक ॥

इ०भा०द०शं०मं०सुधामयीटीकासहितासमाप्ता॥

श्रीगणेशायनमः ॥

एकादशस्कन्ध ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगत्कर्ताजगत्स्वामी वेदमार्गप्रर्वतकः । स्वयमुत्पाद्यस्वकुलं कथंजह्रेरमापतिः १ परावरज्ञोभगवान् कथम्पूर्वमजीजनत् । हलाहलस्यचेद्वृक्षं स्वयमारोप्ययत्नतः । पश्चाच्छेत्तुमयोग्यं च स्वहस्तेनेतिनःश्रुतम् २ वाचक उवाच ॥ स्वांशभूतान्यदून्

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण तीनलोकों के मालिक होकेअपने शरीरसे अनेकप्रकारको पुत्रपौत्र प्रपौत्र उत्पन्न करिकै फिरि उनको नाश क्यों करते भये१जो कोई कहै कि कृष्णने विचार किये कि इन यदुवंशियोंको छोड़िके हम वैकुंठको जावैंगे तौ ये सब पृथ्वीको दुःख देवैंगे तौ ऐसा कहनेवाला बिलकुल पागलहै क्योंकि श्रीकृष्ण महाराज घट२ की बात जानने वालेथे कुछ मानुष्य नहींथे ईश्वर थे जानतेथे किहम वैकुंठको जावैंगे तब हमारे अंशसे जन्म लिये जो यादवसो पृथ्वीको दुःख देवैंगे ऐसा जानतेथे फिर उनसबको उत्पन्नक्यों करते भये क्योंकि आपुउत्पन्न करिकै आपुई नाशकरनायहबड़ा अयोग्य है क्योंकि शास्त्रमें ऐसा लिखा है कि जहर के खायेसे प्राणी मरिजाते हैं ऐसीबुरी चीज है परन्तु जो अपने हाथसे

ज्ञात्वा कलिंचागतमच्युतः । निमित्तंभूमिभारस्य जह्रेकुलम्विभुः ३ युगश्चायम्महाघोरोनति . . वः । औषधाशस्त्रणच्छेद मिवसौख्यंभविष्यति । ज्ञात्वाचश्रीकृष्णस्संजह्रेस्वकुलम्विभुः ॥४॥ इति भा० ए० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

जहरको वृक्षभी लगाना तो फिरि अपने हाथ से उस को काटना बड़ा अयोग्य है और चेतन शरीरको उत्पन्न करिकै आपुसे फिरि आपुई उसको नाशकरना यह बड़ा खोटाकाम है गुरुजी कृष्णने अयोग्य कर्म क्यों किये यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले श्रीकृष्णने ऐसा बिचारकिहैकि जिसदिनहमइस लोकसे बैकुण्ठलोकको जावैंगेउसीदिन कलियुगबड़ाघोरमर्त्य लोककोराजाहोवैगा और एसब यादवहमारेअंशकारिकै उत्पन्न होतेभयेहैं३कलियुग में येसबयादवरहैंगे तबदुःखपावैंगे क्योंकि कलियुग में भूमिमें साधु नहीं रहैंगे और जोकोई साध रहैंगे तो भ्रष्टहोकै दुःख पावैंगे इसवास्ते इन सबयादवों को पेश्तर अपने लोक को भेजिके पीछेसे हम जावैंगे यादवों को नाश भयेपर दुखतो होवैगा लेकिन् पीछे सुख होवैगा कैसा कि जैसा दवाई खातेवखत कड़ूमालूम पड़ती है परन्तु पीछे से सुख होता है फोड़ाको चिरते वखत जीव दुखपाता है परन्तु पीछेसे सुख होता है हेश्रोताहो ऐसा कृष्णने विचा- रिकै पृथ्वी के भार को कारण करिकै अपने अंशसे भये जो यादव तिन सब को नाश करिकै आपने अंश को संगलेकै चलेगये कछु निर्दयपनासे यादवों को नाश नहीं किये दो श्लोक को अर्थ मिलाहै यग्म है ॥४॥ इतिश्री भा० एका० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सस्सद्धर्मश्चकःप्रोक्तोयस्सद्यःप्र पुनातिहि । देवविश्वद्रुहश्चापि महदाश्चर्यमेवतत् १ एकस्यापिनरस्यैव कृतघ्नत्वंकरोतियः । तस्यापिदुर्लभापूतिर्देवविश्वद्रुहःकथम् २ दयायुक्तोहरेर्नामजप स्सद्धर्मइष्यते । दाहयेत्सर्वपापानितूलराशिमिवानलः ३ इति भा० एकादशस्कंध शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भक्त्योत्पन्नातुयाभक्तिस्तयोत्पुल

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा बड़ा सुंदर धर्म क्या है कि जो धर्म जलदी ऐसे दुष्टों को पवित्र करता है कैसे दुष्टों को जो तीनलोककी तथा देवतों की बुराई करते हैं तिनको पवित्र करना बड़ा कठिन है क्योंकि १ शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि जो प्राणी किसी दूसरे प्राणी की एककी भी बुराई करैगा तो वह बुराई करनेवाला प्राणी कभी नहीं पवित्र होगा वोतो चांडाल सरीके बनारहैगा और जो तीनलोक की तथा सब देवतों की बुराई करैगा सो क्यों करिके पवित्र होगा यहबड़ी शंका है २ वाचक बोले हे श्रोता हो जो धर्म तीनलोक तथासबदेवतोंकी बुराईकरनेवाले प्राणी को पवित्र करता है सोधर्म यह है कि मनमें दया करिके भगवान् को नाम जपना यह ऐसा सुंदरधर्म है कि सब पाप को नाश करता है जेसा रुईके समूह को एक सरिसो प्रमाण अग्नि भस्मकरि देता है तेसा भगवान् के नामका जप थोराभी करै गातो अनेक जन्म के पाप को वह जप नाश करैगा ॥ ३ ॥ इतिभा०ए०शं०मं०द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी॥२॥श्लो०॥१२॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी भक्ति करिके उत्पन्न जो भक्ति

कितान्तनुं॥विभ्रद्देवम्भजेद्भक्तस्साभक्ति
१ वाचक उवाच ॥ भ ं थ ि
र्निगद्यते । तयानिर्भरयाविष्णुं जि
२ इति श्रीमद्भागवतएकादशस्कंधशंकानिवारणमं
जर्य्यां तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक॥३१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मज्ञोजनकोराजा ब्रह्मवार्तांवि
हायच । कथम्पप्रच्छ योगेशमवतारकथाःशुभाः १
वाचक उवाच॥वीजंविनाजनिर्नास्ति केषामपिचराचरे।
ब्रह्मज्ञानस्यबीजंच सगुणब्रह्मकीर्तनम् । अतःपप्रच्छ

तिस भक्ति करिकै भगवान् के भक्तों को रोम २ खड़ा होजाता है ऐसी रोमांच हुई देहको धारण करिकै भक्तजन भगवान् को भजन करते हैं ऐसी उत्तम भक्ति क्या कहाती है यह बड़ीशंका हमारे मनमें है १ वाचक बोले भगवान् में बड़ीभक्ति जैसी अंबरीष आदिभक्त भक्ति करतेथे ऐसी भक्ति करिकै प्रभु के चरणों में प्रीति उत्पत्ति होवै उसी प्रीति करने को नाम भक्तिसे उत्पत्ति भई भक्ति है ऐसी भक्ति करिकै भगवान् को भजन करैगा तब जीवमोक्ष को जावैगा ॥ २॥ इतिभा०ए०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी॥३॥श्लो०॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी राजा जनक बड़े ब्रह्म के जानने वाले थे ऐसे ब्रह्मज्ञानी होकै ब्रह्मकी कथाको त्यागिकै मुनिराज से सगुण अवतारकी कथा क्यों पूछते भए क्योंकि ब्रह्मज्ञानी सज्जन सगुण में प्रीति नहीं करते यह शंका है १ वाचक बोले तीनलोक में जो चर अचर जीव हैं तिन सबको बीज बिना जन्म नहीं हो सक्ता किसी को भी जन्म बीज बिना नहीं होता तैसे ब्रह्मज्ञानको बीज सगुण

वैदेहो हरेराविर्भवंशुभम् २ इति भा० ए० शं० मं०
चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ सेवनंभजनंविष्णोःराज्ञापृष्टोयुगे
युगे । अयोग्यमिदमाख्यातं योगीशेनापितत्कथम् १
वाचक उवाच । भिन्नंभिन्नंनतस्यास्ति भगवान्दीन
वत्सलः । भिन्नतासर्वजीवेषु भक्तिरेवसदानृणाम् २
असंख्यातंहरेर्नामयेभजन्तियथायुगे । तथाजगत्पति

ब्रह्मको कीर्तनहै सगुण के कीर्तन से ब्रह्मज्ञान होता है हे
श्रोता हो इसवास्ते राजाजनक ब्रह्मज्ञानी होके सगुण
भगवान् के अवतारकी कथा पूछे हैं २ इतिभा० ए० शं०
मं०चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥
श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा जनक मुनिसे भगवान्
को भजन तथा सेवन आदि सब कर्म युग २ को जुदा जुदा
पूछे कि सतयुग में कैसा भजन सेवन होता है तथा त्रेतामें
कैसे भजन सेवन होता है द्वापरमें कैसे कलियुगमें कैसे और
मुनिभी चारोंयुगों को जुदा २ पूजन आदि सब भगवान् की
सेवन वर्णन करते भये यह बड़ा अनुचित कर्म है जुदा जुदा
क्यों वर्णन किये क्योंकि शास्त्र में भगवान् सर्वव्यापी निरं-
जन लिखे हैं जुदा जुदा कामतो जीव के होता है ईश्वर के
नहीं होता यह बड़ीशंका है १ वाचक बोले हे श्रोताहो भग-
वान्तो दीनदयालु हैं तीनलोक में जो चर अचर प्राणी हैं
तिन सब प्राणियों में भगवान् किसी युगमें भी भिन्नभाव
नहीं राखते सबको एक समान जानते हैं ऐसे दयासागर हैं
परन्तु मानुष्यों में अनेक प्रकार के जीव हैं ज्यतनी मानुष्य
की देहहै त्यतने जीव हैं इसवास्ते सब जीवों में भगवान्की

विष्णुर्गौर्वत्समिवरक्षति ३ भक्तिलीलारसोन्म...
प्रवर्द्धनायच । नामवर्णपृथग्विष्णोः प्र...
नृपः ४ इति भा० एका० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंच
मवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिंसर्वावतारेषुवैकुण्ठगमनम्प्रति।
विरंचिःप्रार्थयामास कथंकृष्णंययाचवै १ वैकुण्ठगम
नार्थायससुरेशद्विजैर्वृतः २ वाचक उवाच ॥ अवतारा

भक्ति जुदी २ होती है सब युगोंमें कोई कैसी भक्ति करता है
२ तथा भगवान् के नाम तथा चरित्र कोभी पारनहीं जिस
नामपर जिसजीवकी भक्तिभई उसीनामको जपनेलगा युग२
में भगवान् उस नाम जपने वाले जीवकी रक्षाकैसा करते हैं
जैसी गाय अपने वत्सकी रक्षा करती है ३ तथा राजा जनक
भी भगवान् के भक्तिकी लीला करिकै मस्त होरहे हैं भग-
वान् की भक्ति की वृद्धि होनेवास्ते युग २ में जुदा२ भगवान्
को नाम तथा वर्ण तथा पूजन सेवन पूंछते भये भिन्नभाव
मानिकै नहीं पूंछे ॥ ४ ॥ इ० भा० ए० शं० मं० पंचमेऽध्याये
पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् अनेक अवतार
धरिकै पृथ्वी में अनेक प्रकारको चरित्र करते भये परंतु पृथ्वी
से भगवान्को वैकुंठ जानेवास्ते किसी अवतारों में ब्रह्मा
प्रार्थना नहीं किए कि महाराज अब आपु वैकुंठ को चलो
तो फिरि इंद्रको तथा ब्राह्मणों को ब्रह्मा अपने संग लेकै
वैकुंठ चलने वास्ते श्रीकृष्णकी याचना क्योंकिए कि अब
आप वैकुंठको चलो यह शंका है १ वाचक बोले भगवान्
अनेक अवतार धारण करते भये संसारको सुख होने वास्ते

ण्यनेकानिहरिणासन्धृतानिवै। कार्यार्थभगवान्कृष्णो मानुषत्वमुपागतः ३ शून्यंवैकुंठमालोक्य तारकोभगव त्पुरीम्। यद्दिनेपीडितुंशक्तस्त्रासितश्चक्रतेजसा॥ ह्यावि तस्तद्दिनेब्रह्मा प्रार्थयामासयादवम् ४ इतिभा०ए० शं० मं० षष्ठाऽध्याये षष्ठवेणी॥ ६॥ श्लो०॥ २७॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्रोवाचाङ्गोद्धवम्प्रीत्या श्रीकृष्णो भक्तवल्लभः। नवस्तव्यन्त्वयातात मयात्यक्तेमहीतले १ सकथंकृतवान्वासं बद्रिकाश्रममंडले २ वाचक

तैसेई पृथ्वी को भार उतारने वास्ते श्रीकृष्ण मानुष्यहोकै मर्त्यलोक में आते भये २ जब श्रीकृष्ण मर्त्यलोक में आए तब तारक नाम राक्षस वैकुंठ पुरीको भगवान्से हीन देखि कै भगवान् की पुरीको दुःख देने को विचार करता भया ३ आजु दुःख देवै कालि देवै एसा विचारकरते करते तारक को वर्ष १२४ महीना १० दशवीति गया परन्तु जिस दिन निश्चय करिकै दुख देने को चला कुछ थोरा२ उत्पात वैकुंठ में कि या तव सुदर्शनचक्र भस्म करनेको तारक के वास्ते दौड़ते भये तव सुदर्शनके डरसे तारक भागिगया तव उसीदिन ब्रह्मा विचार कियेकि आज दुष्ट वैकुंठ में उपद्रव करने को प्रारंभ किया है आजुतो भागिगया चक्रसे डरिकै परन्तु अब जो भगवान् वैकुंठ को नहीं आवैंगेतो कभी तारकदैत्य वैकुंठ की नाश करिदेवैगा हे श्रोताहो एसा ब्रह्मा विचारिकै श्रीकृष्ण को वैकुंठ चलने वास्ते विनती करते भये ॥४॥ इति भा० ए० शं० मं० षष्ठाऽध्यायेषष्ठवेणी॥ ६ श्लो०॥ २७॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी श्रीकृष्ण उद्धव को कहेथे कि हे उद्धव पृथ्वी को हम त्यागिकै वैकुंठ को जावैंगे तब तुम

उवाच ॥ वृन्दावनंहरिक्षेत्रं यत्रगंगायमानुजा।
द्वारिकाकाशी बद्रिकाश्रममेवच। ते
क्षैतेमोक्षमंडलाः ३ इति भा० ए० शं० मं० सप्तमेऽ
ध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञानाप्त्यैमुनयश्चक्रुर्जन्मभिर्बहुभि
र्गुरो। यल्लन्नाप्तन्तुतैर्ज्ञानंक्षणेनापकथंचतत् १ पिंगला
नकदाचक्रे सत्कर्म्मंहरितुष्टिदम् २ वाचक उवाच ॥
यदर्थंविधिनासृष्टा पिंगलातत्प्रकुर्वती २ विदेहनगरेस
र्वैस्वधर्मंहरितत्पराः। नरानार्य्यश्चश्रोतारस्तथेयमपि

पृथ्वी में वास मति करना तो फिरि कृष्णको बैकुंठ गये पीछे बद्रिकाश्रम में उद्धवक्यों टिकते भये क्या बद्रिका-श्रम पृथ्वी में नहीं है यह शंका होती है १ वाचक बोले वृंदावन अयोध्या प्रयाग नैमिषारण्य द्वारिका काशी बद्रिका श्रम इन्ह सब क्षेत्रों को सात द्वीपपृथ्वीमें गिनतीनहीं है ऐसा शास्त्रों में लिखा है कि ये सब मोक्ष भूमि है सात द्वीप सरी के भूमि नहीं है हे श्रोता इसवास्ते बद्रिका श्रम में उद्धव टिके हैं २ इतिभा० ए० शं० मं० सप्तमे ऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी ज्ञान प्राप्ति होने वास्ते मुनियों ने अनेक जन्म तथा अनंत युग तप करते भये परंतु ज्ञानकी प्राप्ति मुनि लोगों को नहीं होती ऐसा कठिन ज्ञान है और पिंगला वेश्या कभी भी सुंदर कर्म नहीं किये कि जिस कर्म करिके ईश्वर प्रसन्न होवै ऐसी पतित रंडी पिंगला एक क्षण में ज्ञान को क्यों प्राप्त हुई यह शंका है १ वाचक बोले जो काम करने वास्ते ब्रह्मा जिस योनि को बनाया है वह प्राणी

कामिनी ३ स्त्यन्तेस्नानमाकृत्यहरिञ्चिन्तयतीसदा।
तद्दिनेग्लानिमार्गेण ज्ञानमाप्तंतयास्त्वतः ४ इति भा०
ए० शं०मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥८॥श्लो०॥२७॥
श्रोतार ऊचुः ॥ श्रीकृष्णोवाचबालश्च चिन्तामुक्तो
द्ध्वंकथम्। यदिचिन्ताविमुक्तश्च जन्मतोरोदनंकथम् १
तदापतितमात्रोपिकोंकरोतिससत्वरम्। चिंतयाचविमु

उसी काम को करैगा तोपाप नहीं लगैगा परन्तु अपने कुल को कर्म करिकै कुछ देर भगवान्‌की प्रीति करैगा तब जैसा भारत में धर्म व्याध आदि जीव हैं इसी प्रकारसे ब्रह्मा जो कर्म करने वास्ते पिंगलाको भी बनायेथे सोकर्म पिंगला भी करती थी क्योंकि जनकपुरीमें सब जीव अपने २ कुलके धर्म को करिकै पीछेसे भगवान्‌में प्रीतिकरतेथे ईश्वरको भूलि नहीं गये थे स्त्री पुरुष सब भगवान् को नाम जपतेथे हेश्रोताहो तैसे पिंगला ३ पुरुषोंके संगराति करिकै पीछेसे स्नान करिकै दूसरा वस्त्रपहिरिकै भगवान्‌को नामजपती थीतथा ईश्वरकीप्रार्थना करिकै अपनी देहसे किया जो पाप तिसकी क्षमा करातीथी नित्य उसदिन भगवान्‌की कृपाहोगई तव बुरेकर्म में ग्लानि उत्पत्ति भई पिंगलाके उसी ग्लानि करिकै ज्ञान प्राप्त होगया हे श्रोताहो इस प्रकार से एक क्षण में ज्ञानप्राप्त पिंगलाको भया कुछ बिलकुल भ्रष्ट नहीं थी कि ईश्वर को नहीं जानना वोतो जानतीथी ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये उद्धव से श्रीकृष्ण कहेथे कि बालकों के मनमें चितानहीं रहती है हे गुरुजी इसमें यह शंका होती है कि जो बालक चितासे छूटेहोवैं तोफिरि जन्महीसे रोतेहैं क्यों माता के उदर से भूमिमें पड़े तब भूमिमें पड़े२ जल्दी

क्रस्यरोदनन्नैवश्रूयते २ वाल्यावस्थाशिशोर्यावतुता वत्तद्रुदनंसदा । वाचक उवाच ॥ ज्ञानेषुगृह्यतेनैव शिशुर्बालश्चसज्जनैः । लज्जाश्रमविहीनश्चसबालः प्रोच्यतेवुधैः ३ इति भा० ए० शं० मं० नवमेऽध्याये नवम वेणी ॥ ९ ॥ श्लो० ॥ ४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्पर्द्धासूयादिभिर्नष्टंश्रुतमुद्धवनिश्चितम् । इतिप्रोक्तंभगवताकिन्त्वेतेऽपियुगत्रये १ वाचक उवाच ॥ विष्णुर्देहेषुवर्त्तंते धर्म्माऽधर्मादिसंचयाः ।

रोते हैं जो प्राणी चिंतासेती छूटिगया है वो प्राणीको रोना कभी नहीं सुनि परैगा और बालकी कीतौ जबतक बालपन रहता है तवतक रोते हैं यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले ज्ञानकी वार्ता में सज्जनलोग बालक को बालक नहीं कहते पण्डित लोग बालक उसको कहते हैं कि जोप्राणी संसारकी तथा अपने कुलकी लाजको तथा डरको त्यागिदेवै हे श्रोता हो ऐसे पंडितों के बचन के प्रमाण से कृष्णभी उसी बालक को चिंतासे दूरिभया कहे हैं जन्मलिये हुये बालक को नहीं कहेथे ॥ ३ ॥ इति भा० ए०शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण भगवान् उद्धव से कहेथेकि ईर्षा निंदा आदि लकै और जो खराब कर्म हैं तिन्ह खराब कर्मों करिकै वेदोंके वचन नष्ट होगये इसमें यहशंका होती है कि ईर्षा आदि जो बुरेकर्म सो सतयुग त्रेता द्वापरमें भीथे १ वाचक बोले शास्त्रों में लिखा हैकि भगवान् की देह में धर्म तथा अधर्मदूनों रहते हैं सवयुग में किसी युगमें थोरा खराब कर्म भगवान् की देहमें रहता है किसी युगमें बहुत

युगत्रयेकिमाश्चर्यंक्वचिदल्पंक्वचिद्बहु२इति भा०ए० शं०मं० दशमे ऽध्याये दशम वेणी ॥१०॥श्लो०॥२१॥

श्रोतार ऊचुः॥ पोषणीयास्सदागावस्तृणतोयान्नमोदकैः। दंशादिसर्वोत्पातैश्चसप्रसूर्विप्रसूरपि १ सदुग्धावाविदुग्धावाकृष्णोवाचोद्धवंकथम्। दुग्धदोहांचगांरक्षन्नरोवैदुःखदुःखभाक् २ वाचक उवाच॥ गांदुग्धदोहांयोज्ञात्वातामरक्षति कुर्वति। सनरोदुःखदुःखं

रहता है क्योंकि युगोंकी मर्यादा पालन करने वास्ते दूसरी बात नहीं जानना चाहिये हे श्रोताहो इसवास्ते कृष्ण कहेथे के वरेकर्म करिके वेदोंकी मार्ग नष्ट होगई॥२॥ इति भा० ए० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी॥१०॥ श्लो०॥२१॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी शास्त्रमें तथा वेदोंमें ऐसा लिखा है कि गायचाहे तो व्यातीहोवे चाहे न व्यातीहोवे चाहे व्याने परभी दूध न देती होवै लातमारतीहोवे परन्तुगायको तोचारा मोदक जल अन्न और अनेक प्रकार की सुंदरचीज मिलाय के गायकी सेवन करना दंशमच्छर आदि अनेक दुःखसे गाय की सेवन करना १ दूधदेवै तौभी नदूध देवै तौभी गायकी सेवन तोकरना चाहिये तोफिर उद्धव से श्रीकृष्ण क्यों कहेथे कि जोगाय दूधदेनाबंद करिदेवै अथवा बांझहोवै जनेन ऐसी गायकी जोमानुष्य पालनाकरैगा सोमानुष्य दुःखसे दुःखबड़ा दुःखभोगेगा गुरुजी ऐसेकृष्णकेवाक्य सुनिकेहमसबको शंका खायलेतीहै २ वाचकबोले हेश्रोताहो (गांदुग्धदोहां) इसश्लोक में भगवान्नीति वर्णन किये हैं सो सुनो हम कहतेहैं श्रीकृष्ण भगवान्कहे थे कि जो प्राणी गाय को ऐसा जानिके कि यह गाय अब दूध नहींदेती अथवाबांझहै व्यातीनहीं ऐसाजानिके

वैभुनक्षीतिविनिश्चितम्।एवंपंचकलत्रादीनप्यरक्षनृस दुःखभाक् ३ इति भा०ए०शं० मं० एकादशाऽध्याये एकादश वेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

उस गाय की रक्षा करना छोड़ देवैगा मतलब खाने पीनेको नहीं देवैगा भूखी प्यासी गौ रहैगी तब यह लोकमें तौ गाय को दाम डुबिजायगा क्योंकि पालना करता तौफिरि ब्याती अथवा बांझ होती तौ भी गोवर होता और मरे पर रौरव नरक परैगा गायको भूखी प्यासी राखिवेकेपापसे इसी प्रकार से दुष्ट स्त्री होगई उसकीभी पालन करना प्राणीछोड़ि देवैगा तो वह स्त्री संसार में बुरा कर्म करैगी तो वह प्राणी को यह लोक में निंदा और परलोकमें नरक परैगा और जो पालन करैगा तौ धीरे धीरे सुंदरि रस्ता में आयजायगा ऐसे पराये आधीन देह जानिकै हानि मानिकै देहको पालन करना छोड़ि देवैगा तौदेहको नाश होजावैगा औरजोपालनाकरैगा तौकभी तौ कभी सुख होवैगा ऐसे धनको मानिलेवै कि इस धन से मैं पुण्य नहीं करताहूं किस काम आवैगा ऐसा जानिकै धन की रक्षा करना छोड़ि देवैगा तौ चोर लेजावैंगे और जो धन की रक्षा करता रहैगा तौ कभी पुण्य होवई करैगी ऐसे वचन से भगवान्को नाम नहीं लिया ऐसा खराब वचन को जानिकै सत्संग छोड़ि दिया तौ भ्रष्ट होजावैगा और जो वचन बिगड़ा है पण सत्संग से बन्दोवस्त करैगा तौ कभी भगवान् को नाम वचन से निकलैगा हे श्रोताहो ऐसा नीति युक्त अर्थ भगवान् उस श्लोकको अर्थ कियहैं यह नहीं किये किगाय दूध देना बंद करिदेवै तौउसकी पालना नहीं करना (मयाऽरक्षति) श्लोकमें ऐसा अर्थ निकसैगा ३ इति भा० ए० शं० नि० मं० एकादशाऽध्यायेएकादशवेणी॥११॥श्लोक॥१६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सत्संगेनपदम्प्राप्ताममोद्धवखगास्त
। नगाश्चैतद्वचः प्रोक्तस्तैनेषामभवत्कथम् १ सत्सं
[illegible] मलन्मुनीशैरपिनोमतः। वाचक उवाच ॥ वा-
[illegible] ।२५२ सत्संगफलमाप्नुयुः। मृगाः खगाश्चसा
[illegible] ।तेषां [illegible] । श्रोत्रादिभिस्समापुस्तेस
[illegible] दुर्लभम् २ इतिभा० ए० शं० मं० द्वादशेऽ
ध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥
श्रोतारऊचुः॥नददावुत्तरम्ब्रह्मापृष्ठोपिसनकादिभिः।
कथमेतन्महाबाहोकारणंमौनताविधे १ वाचक उवाच॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण उद्धवसे कहे कि हेउद्धव पर्वत पक्षी मृग एसब सत्संग से हमारे लोक को प्राप्त भये हे गुरु जी सत्संग तौ बड़े २ मुनिराजों करिकै बड़ा दुर्लभ है इन तुच्छ जीवोंको सत्संग क्यों करिकैभया यह शंकाहे १ वाचक बोले मुनिलोग पर्वतों पर बसते थे सो मुनियों के टिके के प्रभाव से तौ पर्वतों को सत्संग प्राप्त हुआ तथा मुनियों के सामने रोज राति दिन पक्षी तथा मृग बसते थे मुनियों को रोज दर्शन करते थे कुछ सत्संग की बात कानों से सुनि लिये कुछ भगवान् के पूजन आदि सामग्री नेत्रों से देखि लिये इस प्रकार से योगियों से दुर्लभ जो सत्संग सो पर्वतों को पशुवों को मृगों को प्राप्त हुआ ऐसा कृष्ण कहेथे ॥ २ ॥ इतिभा०ए०शं०मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥१२॥श्लो० ॥८॥

श्रोता पूछते भये सनकादिकोंने ब्रह्मासे ज्ञानपूंछे तौ ब्रह्माने उत्तर क्योंनहींदिहे हेगुरुजी ब्रह्माको मौनहोनेको कारण क्या हे यह शंका है १ वाचक बोले ब्रह्माने सनकादिकों के प्रश्न के पेश्तर अपनी कन्यासे रमण करनेकी इच्छा कियेरहे उसी

पूर्वस्वतनुजांरन्तुम्मनश्चक्रेपितामहः । त
हीतांगोनोत्तरन्दत्तवांस्तदा २ इ० भा० ए० शं० मं
त्रयोदशो० त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुमुक्षूण
तत्सखा । वर्णयामासतत्यक्त्वाकथंकृष्णोगुणात्मकम् १
वाचकउवाच ॥ शीघ्रन्नज्ञायतेध्यानंमुमुक्षूणांकदापि
हि । श्रुतेनवर्णनेनापिविनासत्संगसेवनात् २ तमपक्व
हृदंज्ञात्वास्वप्रयाणंचकेशवः । ध्यानम्प्रोवाचस्वस्यैव
शनैराप्स्यत्ययंचतम् ३ इति० भा०ए० शं० मं० चतु-
र्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ श्लो० ॥ ३१ ॥

लज्जा करिके ब्रह्माकी देहको तेजनष्ट होगया हाानिमाानि कै
नहीं बोले ब्रह्मा विचार कियेकि क्यामुख देखाय केबोलें ॥२॥
इतिभा०ए०शं०मं०त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी१३ श्लो० १८॥

श्रोता पूछते भये कृष्ण से उद्धव पूछे कि मुक्तिकी इच्छा
करने वाले योगी भगवान्को ध्यानकैसा करतेहैं तब श्रीकृष्ण
उद्धवके प्रश्नकी बातको त्यागिकै सगुणको ध्यान वर्णन किये
यह शंका होती है १ वाचक बोले कृष्ण विचार किये किब्रह्म
को ध्यान मुक्तिकी इच्छा करने वाले योगी करतेहैं सो ध्यान
सुने से तथा कहे से नहीं प्राप्त होता वह ध्यान तौबहुत दिनों
तक सत्संग करै तौ प्राप्त होता है २ और उद्धव का हृदय
ज्ञान में कच्चा है और हमारी भी तयारी जाने की होरही है
जो कुछ दिन हमको मृत्युलोक में रहना होता तौभी
उद्धव ब्रह्मज्ञान में पक्का होजाता ऐसा विचारि कै सगुण
को ध्यानकहे हैं कि धीरे२ सगुण को ध्यान करते २ ब्रह्म
के ध्यान को उद्धवप्राप्त होवैंगे इसवास्ते ब्रह्मको ध्यान त्यागि

श्रोतार ऊचुः ॥ योगिनोयोगनिरतावासुदेवपराय
ः।अग्न्यर्कविषतोयानांस्तंभनेकिम्प्रयोजनम्। तेषां
थैकृष्णेनसिद्धिरुक्ताचयोगिनाम् १ वाचक उवाच॥
ोपिद्विधाप्रोक्तायोगशास्त्रविचक्षणैः २ विरक्ताश्च
ि.द्धिरेषापुरातनी। गृहस्थानांहितायोक्ताकृ-
१९　। ३ आतुरत्वान्ननियमं च कारयोगिनां
ः ४ इति भा० ए० शं० मं० पंचदशे ऽध्याये पंच
ो ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

सगुणध्यान कृष्ण वर्णन किये हैं ॥ ३ ॥ इति भा० ए०शं०
० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥
श्रोतापूछतभये आगिसूर्यजहर जलइन्ह आदिऔर बड़ी२
को तजरोकने वास्ते कृष्ण सिद्धि वर्णनकिये कि ऐसी
करके योगीलोग आगि सूर्य जहर जल इन्ह सबके
तेजको रोकिलेते हैं इसमें यह शंका है कि भगवान्में
जो योगीजन तिन्हको इनसब चीजों के तेजरोक
क्या प्रयोजनथा १ वाचकबोले योगशास्त्र के जाननेवाले
ज　दोप्रकार को योगी कहेथे एकतो गृहस्थयोगी जो
में बैठे २ योग करते हैं दूसरा विरक्त योगी जो घर
त्यागिके योग करते हैं और आठ सिद्धिभी आदि से चली
आतीहैं२तब गृहस्थ योगियोंकेवास्ते श्रीकृष्ण इनसिद्धियोंको
कहे थे आगि सूर्य विष जल का तेज रोकने वास्ते जो कोई
कहे कि ऐसा भेदतो नहीं किये कि गृहस्थ योगियों के वास्ते
ये सिद्धि हैं तो ठीकहे भगवान्को वैकुण्ठको जानेकी तैयारी
रही उसी आतुरता से योगियों को नेम नहीं किये ३ इति
भा०ए०शं०मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥१५॥श्लोक ॥ ८॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चतुर्वर्णैस्सदापूज्ये
त्सलः। नब्राह्मणानान्नियमः केवलंहरिपूजने
नोक्तमाचार्यन्तत्कथंद्विजसत्तम। १ ।
न्तेयथावदतथाप्रभो २ वाचक उवाच ॥
न्दृष्ट्वाविप्रशापसमुद्भवम्।
जान्मेनेसईश्वरान् ३ अतः
न्तिकथम्बिभो ४ इति० भा० ए० शं० मं०
ध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ यो

श्रोता पूछते भये भक्तों के प्यारे जो भगवान् तिसक
पूजन भजन ध्यान और जो भगवान्की सेवा सोब्राह्मणक्षत्रि
वैश्य शूद्र सबकोकरना लिखाहै ऐसा नहींलिखाहै कि ब्राह्मण
अकेला भगवान्को पूजन करै और कोई वर्णन करै १ है
ब्राह्मणोंमें उत्तम बाचकतौ फिरि श्रीकृष्णसे उद्धव क्यों कहे
कि हे भगवन् जिसविधि से ब्राह्मण आपको पूजन करतेहै
सो विधि कहो यह शंकाहै क्योंकि वेदकी विधिके पूजनेमें
तौ एकविधि है शूद्र की जुदा है और भक्तिमार्गमें सबकी
एक विधिहै सोउद्धव भक्तथेभक्तिमार्गकी पूजनबात पूछते थे
इसवास्ते भ्रमहै२वाचकबोले उद्धवने ब्राह्मणकी शाप करिकै
यदुवंशियों की क्षय देखिकै ब्राह्मणोंको भगवान् मानते
क्योंकि श्रीकृष्णके देखते देखते ब्राह्मणके शापसे
नाश होगया श्रीकृष्ण कुछ भी सहाय नहीं किया
उद्धव जीने कि ब्राह्मणोंकेऊपर भगवान्को कुछभी अक
नहीं चलता ३ इतिभा० ए० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषो
१६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

दुःख्यउद्धरेत्।तमुद्धरिष्येसद्योहमापद्भ्यश्चकथन्नतम् १ वैश्यवत्कथमित्थन्तुकृष्णेनोक्तमिदम्वचः २ वाचक उवाच॥ ब्राह्मणानाम्महापापैरापदस्संभवन्तिच।इतरे षांतथान्यूनैरेतद्ज्ञात्वाप्युवाचसः ३ यावत्पापविनिर्मु क्तोनभवेद्ब्राह्मणोहरिः। तावदन्येनतद्दुःखशान्तिकार

श्रोता पूछते भए श्रीकृष्ण उद्धवसे कहे कि हमारे भजन करने वाले ब्राह्मण को दुःखदारिद्र आदि लेकै अनेक संकट से जोकोई मनुष्य छुड़ाताहै तो उस छुड़ाने वाले मनुष्य को हम बहुत जल्दी से दुःख दारिद्रसे कष्टसे छुड़ाय देतेहैं इस में यह शंका होतीहै कि अपने भजन करने वाले ब्राह्मण को आप क्योंनहींजल्दी दुःख दारिद्रसेछुड़ाते दूसरेको लोभ क्यों खाते हैं १ जैसा वाणियां आढ़ते लोगोंसे काम करतेहैं ऐसा चन कृष्ण क्यों कहे २ वाचक बोले बड़ा बड़ा पाप ब्राह्मण रते हैं तो उन्ह बड़े २ पापों करिके ब्राह्मणको दुःख दारिद्र कष्ट होताहै और क्षत्री वैश्य शूद्र को थोरेही पापले दुःख ारिद्र होताहै इस वास्ते भगवान् विचार किये कि हम ल्दी ब्राह्मणों को अपना भजन करनेवाला जानिके दुःख ारिद्रसेछुड़ाय देवैंगे तो ब्राह्मण और मान करिकै पाप करेंगे जानि लेयँगे कि भजनके प्रतापसे दुःख नाश होजाता है जल्दी फिर संसारको सुख क्यों नहीं भोगना हमारा पाप क्या करेगा २ ऐसा विचारिके ब्राह्मणों को मान नाश करने वास्ते कृपा करिके जब तक ब्राह्मण पापसे छुटता नहीं तब तक उस ब्राह्मणके दुःख दारिद्रको दूसरे मनुष्यसे दूर करान हैं कि ब्राह्मण को मालूम पर जावे कि हम भगवान्को ऐसा बड़ा भजन करतेहैं तोभी हमको यहा पापी जानिके हमारा दुःख दारिद्रको नाश नहीं किये जो हमारे पास पाप न होता

यतेऽनिशम् ३ इति० भा०ए०शं० मं० सप्त०
सप्तदश वेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जिघृक्षोर्ब्राह्मणस्यैवसंन्यासंप्रमदादयः। विघ्नंकथम्प्रकुर्वन्तिवैराग्यमनसोद्विज १ वाचक उवाच॥कलत्रादिभवःपाशोदुश्छेद्यःसर्वजन्तुभिः। नराणांचैवकावार्तातद्वशाः पशुपक्षिणः। अतश्चोक्तंप्रकुर्वतिविघ्नान्दारादिरूपिणः २ इति भा० ए० शं० मं० अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

तो जल्दी भजन के प्रतापसे हमारे दुःख को नाश कर देते अब पाप कभी नहीं करेंगे ऐसा विचारिके ब्राह्मण पापबुद्धि त्याग देवैंगे हे श्रोताहो इस वास्ते दूसरेसे ब्राह्मणको दुःख नाश करने वास्ते कृष्ण कहेहैं ३ इतिभा० ए० शं० मं० सप्त दशे ऽध्याये सप्तदश वेणी ॥ १७ श्लो० ॥ ४३ ॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी जो ब्राह्मण वैरागमें मन लगाय के संन्यास लेनेकी इच्छा करतेहैं उनके विघ्नको स्त्री आदि परिवार कैसे करेंगे क्योंकि मन कच्चा होवै तबतो जो चाहै सो विघ्न करि देवै और जो मन पक्का होके वैराग में लागि गया तौ किसीको किया विघ्न नहीं होसकैगा यह शंकाहै १ वाचक बोले भाई स्त्री पुत्र कुटुंब करिके उत्पत्ति भई जो फांसी उससे सब चर अचर जीवकाटा चाहैं तो किसी की काटी नहीं कटैगी जो कोई महात्मा काटने को मन करेंगे तब बड़े कठिनसे काटि सकेंगे क्योंकि स्त्री पुत्रके मोह में पशु पक्षी बँधि गयेहैं तौ मनुष्य बंधिगया तौ क्या आश्चर्यकी बात हुई इस वास्ते भगवान् कहेहैं कि ब्राह्मण को मन वैरागमें लगा है तोभी स्त्री पुत्र आदि परिवार संन्यासमें विघ्न करते हैं २

श्रोतार ऊचुः ॥ तपस्तीर्थजपोदानमन्याश्चापि सुसक्रियाः। विहायभगवान्ज्ञानं कथंश्रेष्ठमुवाचह १ वाचक उवाच॥फलदाश्चिरकालेन सर्वाश्चैश्वर्यक्रियादयः। सद्यःफलतिसंसारे ज्ञानमेकंसुखप्रदम् २ दृष्ट्वाचिरमुवा चेदमुद्धवस्य रमापतिः ३ इति भा० ए० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥श्लो०॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञानवैराग्यकर्मादि तथातपजपौ

इति भा० ए० शं० मं० अष्टादशे ऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये तपस्या तीर्थ जप दान आदि और जो अनेक सुन्दर २ क्रिया हैं तिन सब को त्यागिकै अकेले ज्ञान को बड़ा श्रीकृष्ण क्यों कहे यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले जितनी संसार में सुंदरि २ क्रिया कर्म हैं जप तीर्थ आदि ए सब बहुत जन्म में फल देतेहैं क्योंकि तप जलदी फल नहीं देवैगा तीर्थमें स्नान करतमात्र स्वर्ग नहीं होवैगा और जिस वखत शरीरमें ज्ञान उत्पन्न होवैगा उसी वखत अनेक जन्म को दुःख नष्ट होकै जलदी सुख प्राप्त होवैगा २ लक्ष्मीके पति जो श्रीकृष्ण सो अपना तथा उद्धवको एकठा रहना बहुत दिन तक नहींदिखे घरी आधघरीको देखिकै जलदी उद्धवको सुख होने वास्ते ज्ञानकी उपासना उद्धव को बताये हैं क्यों कि श्रीकृष्ण के वियोग को दुःख जप तप तीर्थों करिकै दूर न हो सकता और ज्ञान उस दुःखको जलदी दूरि करि दिया है श्रोताहो इस वास्ते तप जप तीर्थको त्यागिकै श्रीकृष्ण ज्ञान को श्रेष्ठ कहेहैं ३ इति भा० ए० शं० मं० एकोनविंशतितमे एकोनविंशतितमवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

रपिसुदुर्लभ्या सातस्तेऽत्रनसंतिवै २ इतिभा०एका०शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो०॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुनिभिश्चापिदुर्लभ्यं ज्ञानंलेभे द्विजःकथम् । दुष्टःक्रूरमतिर्लुब्धो कृपणोविमुखोहरौ १ वाचक उवाच ॥ धनक्षीणोभ्रमन्विप्रः काननेस्तेदिवाकरे । पंकमग्नांचगान्दृष्ट्वा तस्मात्तामुद्धारह२ तत्प्रीत्यापद्द्रुतंज्ञानं ब्राह्मणःकर्म्मतापितः ३ इति भा० ए०

नाम है कि जो प्राणी मोक्ष विद्या को जाने मोक्ष विद्या कैसी हैकि जिस मोक्षविद्या की प्राप्तिहोनेवास्ते बड़ेबड़े चतुर योगी जन उपाय करि करि हारिगये परंतु मोक्ष विद्यानहीं प्राप्तभई और जो किसी योगीको प्राप्त भई तो बड़े कठिन से ऐसी विद्या जानने वाले विद्वान् पृथ्वी में नहींहैं इस वास्ते उद्धव कहेहैं शास्त्र पढ़ने वाले विद्वानोंकेवास्तेनहींकहेथे २इतिभा० ए० शं०मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंश वेणी ॥ २२ ॥श्लो०॥३५॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजीबड़ा दुष्ट खोटी बुद्धि कृपिण भगवान् में प्रीति नहीं ऐसा दुष्ट ब्राह्मण मुनियों करिके बड़े दुःख से प्राप्त होने लायक जो ज्ञान तिस ज्ञानको क्यों प्राप्त भया यह शंका है १ वाचक बोले धनको नाश होगया तो ब्राह्मण दुःखी होके बनमें भ्रमता भ्रमता शाम होगई तो क्या देखताहै कि एक गाय गारामें धसिगईहै गारासे निकसिनहीं सक्की बाहर आनेको उस गायको यह ब्राह्मण देखिकै बड़ी दया से हाय हाय शब्द करिकै कीचड़से निकालिकै बाहर करि दिया गाय खुशी होकै धीरे धीरे चली गई २ गाय की कृपा से बहुत जल्दी ब्राह्मणको ज्ञान प्राप्त भया जो ज्ञान मुनिजन को बड़े कठिनसे प्राप्त होताहै गृहस्थीमें जो खराब कर्म ब्राह्मण

शं० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ममेतिकृष्णःप्रोवाच कथम्ब्रह्मन् पुनःपुनः । ईश्वरस्यतदाश्चर्य्यं ममिमानयुतंवचः १ वाचक उवाच ॥ प्रार्थितश्चोद्धवेनादौ श्रीकृष्णोममस न्निधौ । कदाप्यन्यचरित्रस्य मावदिष्यसित्वंकथाम् २ त्वन्नामरसमग्नोहं मतोमाधवभाषितम् ३ इतिभा० ए० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ६ से १० तक ॥

ने दिया था उन्ह कर्मों करिके धनको नाश भये पर जलि रहा ज्ञानको पायके आनन्द होगया हे श्रोता हो इस उपायसे दुष्ट ब्राह्मण को ज्ञान मिलताभया ३० इति भा ए० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लो० ॥ १३॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण बारम्बार मम ऐसा वचन क्यों कहते भये क्योंकि ईश्वर होके अभिमान युक्त वचन बोलना यह बड़े आश्चर्य की बात है मूर्ख मानुष्य तो ऐसी बात बोलते हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले पहिले ही उद्धव श्रीकृष्णकी प्रार्थना किये थे हे कृष्ण महाराज मेरे सामने आपु किसी दूसरे देवताकी और अपने दूसरे अवतारों की कथा मतिकहना कभी भी आपनी एककथा तो कहना२ उद्धव कहे हे भगवन् आपु के नाम के रस के सुख में मैं मस्त होगयाहों दूसरे को चरित्र मेरेको नहीं अच्छा लगता है श्रोताहो ऐसी उद्धवकी प्रार्थनाको मानिकै श्रीकृष्ण मम२ कहे थे कुछ अभिमान से नहीं कहेथे ३ इति भा० ए० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥ से १० ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोजीवोयस्तुजीवेन मुक्तोभवति भोगुरो। एषानोमहतीशंका तांछिन्द्भ्रमदायिनीम् १ वाचक उवाच ॥ जीवोब्रह्मस्वरूपश्च अजीवोदेहमुच्यते। तन्मुक्त्वासुखमाप्नोति नान्यथादुःखभाग्भवेत् २ इति भा०ए०शं० मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी॥ २५ ॥ श्लोक॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदादिसर्वशास्त्रेषु भगवान्जगदीश्वरः । कथितस्त्वहमार्तानामुवाचशरणन्त्वहम् १ वाचक उवाच ॥ भवताम्वचनंसत्य मुन्मत्ताःकामिनः

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जीव क्या है जो जीवसे छूटि जाता है यह हमारे सब के मन में बड़ी शंका है इस शंका को आप काटो १ वाचक बोले जीव ब्रह्म को रूप है अजीव देह है जब तक देह के सुखकी इच्छा जीव करता है तब तक दुःख भोगता है और देह में बँधा भी रहता है और जब देह के सुखकी इच्छाको छोड़ देताहै तब देहकोभी त्यागिके ब्रह्म सुखको प्राप्त होता है यह अर्थ (जीदोऽजीवो विहायमां) इस श्लोक में है २ इति भा० ए० शं० मं० पंचविंशेऽध्याये पंच विंश वेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोता पूछते भए वेद शास्त्र सब में लिखा है कि भगवान् तीन लोक चौदह भुवन चर अचर प्राणी को मालिक है तो फिरि श्रीकृष्ण अपने मुख से क्यों कहेकि दुःखी प्राणी की शरण हम हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले तुमारे सबके वाक्य सत्य है परंतु अभिमानी कामी दुष्ट ये सब प्रभुको

ः। नैवजानन्तितेविष्णुन्दीनाश्चाहोऽनिशम्प्रभु २
० ए० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी२६
श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ क्रियायोगं च सर्वेषामाश्रमाणां च सम्मतम्। आश्रमेष्वपिसन्यासश्श्रेष्ठस्तस्यकथन्त्विदम् १ वाचक उवाच ॥ आदौकृत्वाक्रियायोगम्पश्चात्संन्यासमाश्रिताः। नतेषांसम्मतन्तद्धै परैःपृष्टावदन्ति

नहीं जानते और गरीब राति दिन प्रभुको जानताहै इसवास्ते गरीब प्रभुको प्यारे हैं अभिमानी द्रोही हैं इसवास्ते कृष्ण कहैथे किमैं गरीबों को मालिक हौं ॥ २ ॥ इति भा० ए० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी छवोंशास्त्रों का चारों वर्णोंका चारिआश्रमों का मतयहहै स्नान चंदन पुष्प धूपदीप नीराजन और अनेक सामग्री करिकै ईश्वरको पूजन करना योग्य है परन्तु तीन आश्रम जैसा ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ एतो भगवान् को पूजन करना मानते हैं परन्तु इन्ह तीन्हों से बड़ाजो संन्यासी वोलोग पूजन करना क्यों मानेंगे वोतोसब कर्म्मत्यागि दिहेहैं तौफिरि उद्धव क्योंकहैथे कि भगवान् को पूजन करना चारों आश्रम को मतहै यह शंका है ? वाचक बोले मुनिजन पेश्तरतो बड़ी बड़ी विधि से वैकुंठनाथको पूजन करिकै पीछेसे संन्यास लेते हैं संन्यास लिहेपर फिरि उनको मत यह नहीं है कि अभीभी पेश्तर मरीके सामग्री करि कै भगवान् को पूजन करना परन्तु जो कोई सज्जन भगवान् को पूजन करनेकी विधि पूछना है तौउनसे बतावे हैं इसवास्ते उद्धव कहै कि संन्यासी देहसे पूजन नहीं करते

हि २ एतस्मादुद्धवेनोक्त माश्रमाणां च सम्मतम्३६०
भा० ए० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी२७॥
श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ कृष्णवाक्यमिदंशुद्धन्न प्रशंसेन्ननिंदयेत्। परेषांकर्म्मणोभावं कस्यार्थमिदमीरितम् १ वाचक उवाच ॥ विरक्तानामिदंकर्म्म विरक्तेष्वपि न्यासिनाम्। न्यासिनामपिश्रोतारस्सर्प्परवृत्तिधियान्ध्रुवम् २ इति० भा० ए० शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ ॥
श्लो० ॥ १ ॥

लेकिन मनमें तौ जानते हैं कि पूजनको भूले नहीं जो भूलिगयेहोतेतौ दूसरे को क्यों बताते २ इसवास्ते चारिआश्रम को मत पूजन करने में उद्धव कहे थे॥ ३ ॥ इति भा० ए०शं० मं० सप्तविंशेऽध्यायेसप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जी कहेकि कोई सुन्दर कर्म करै तौ उसकी तारीफ़ नहीं करना और कोई बुरा कर्म करै तौ उसकी निन्दा भी नहीं करना क्योंकि जो स्वभाव जिस जीव को होता है सो तैसा कर्म करता है तौ हे गुरुजी ऐसा सुन्दर वचन श्री कृष्ण जी किसके वास्ते कहे थे गृहस्थ किसी की निंदा स्तुति न करै कि विरक्त न करै यह शंका है १ वाचक बोले हे श्रोता हो यह वचन भगवान् विरक्त को कहेहैं तथा विरक्तों में जो कोई संन्यासी होता है उसके वास्ते भी कहे हैं और संन्यासियों में जो कोई परम हंस होजाते हैं उन के वास्ते तो निश्चय से कहेहैं यह अर्थ है कि साधु भरे को किसी जीवकी निंदा स्तुति नहीं करना चाहिये ऐसे कृष्ण के वचन गृहस्थ के वास्ते नहीं कहे हैं॥ २ ॥ इति भा० ए०

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रोक्तवानुद्धवःकृष्णम्मोहोविह्लावि तश्चमे । अभवन्मोहसंयुक्तः तत्रापृष्टःपुनःकथम् १ वाचक उवाच ॥ नरस्वभावादभवद्गलमोहोऽपिचोद्धवः। मोहग्रस्तःत्तणंभूत्वा कृष्णंस्मृत्यजहौ पुनः २ ॥ इति० भा०ए० शं० मं० एकोनात्रिंशे०एकोनात्रिंशवेणी २९ ॥ श्लो० ॥ ३७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंभ्रांतिसमापेदेऽव्याधः कृष्णपदे

शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंश वेणी ॥ २८ ॥

श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण से उद्धव कहे कि महाराज मेरामोह अब मेरी देहको त्यागिके भागि गया मोह से अब मैं छूटि गया तौ फिर यमुना के तट पर विदुर उद्धव से कृष्ण का हाल पूछे तौ क्यों मोह ग्रसित होगये ईश्वर का हालभी नहीं कहि सके कुछ देर पीछे हाल कहे जो कोई कहे कि ज्ञान पाये पीछे फिरि मोह घेर लिया होगा तो सत्य है जो बहुत दिन होगया होगा तौ आश्चर्य नहीं था परन्तु ज्ञान पायके कृष्णके पास से दिन तौ दो तथा तीन भया था विदुर की उद्धव की मुलाकाति भई तब यह शंका है १ वाचक बोले उद्धव का मोह नाश भया था तौ मनुष्य के स्वभाव करिके क्षण१मोहके वश होके श्रीकृष्णको स्मरणकरिके फिरि मोहको त्यागिदेतेभयेहेश्रोताहोइसवास्तेयमुनाकेतटपरउद्धव को मोह भया कुछ अज्ञानी सरीके मोह नहीं भया२इतिभा० ए० शं० मं० एकोनात्रिंशे ऽध्याये एकोनात्रिंश वेणी ॥ २९ ॥

श्लो० ॥ ३७ ॥

श्रोता पूछते भये व्याधा को मनुष्य को तथा मृगा के

तदा । मृगमानुष्ययोश्चिन्हेयोजघ्नेचरणेहरेः
वाचक उवाच ॥ अंगदश्चगतःस्वर्गंरामपदाब्जसेवया
रामदत्तवरश्चैवस्वपितुर्ऋणमोचने २ नि...
र्वीरस्स्वर्गादागत्यकानने । ... न
णेकमलापतेः ३ इति भा० ए० शं० मं० त्रिंशेऽध्याये
त्रिंशवेणी ३० ॥ श्लो० ३३ ॥

पहिचानने भ्रम क्यों भया जिस भ्रम करिकै श्रीकृष्णके चरणा रविंद को मृग मानिकै महाराज के चरण में बाण मारता भया निशाना लगाने वाले मनुष्य कभी भी नहीं चूकते छोटी भी चीज होती है तौभी दृष्टि से देखि लेतेहैं और त्रिलोकनाथकी देह तो बड़ी रही होगी व्याधा कैसा पागल हो गया मृग और मानुष्य उसको नहीं मालूमपरा यह शंका है १ वाचक बोले अंगद रघुनन्दन के कमल चरणों की सेवा करिकै स्वर्ग को जाने लगा तौ रघुनाथ जी अंगद से कहेकि जो वरदान तेरेको चाहै सो मांगु तब अंगद बोला हे महाराज मेरे पिता को आपु मारि डाले हो सो दांव में लिया चाहता हूं आपुसे तब रघुनाथ जी कहेकि हम कुछ युग बीते द्वापर में कृष्ण अवतार धरेंगे तब तुमारे पिता के ऋण से तुमको छुड़ा वेंगे तुमारे हाथ के बाणसे हम प्राण त्यागिकै वैकुंठ को जावैंगे २ श्रीरघुनन्दन जो समय कहि गयेथे उसी समय को देखि कै वीर अंगद स्वर्ग लोक से उसी वनमें आयकै व्याध होकै लक्ष्मी के पति जो भगवान् तिनके चरण में बाण मारता भया हे श्रोता हो इस वास्ते व्याध को मनुष्य को तथा मृग को पहिचान भूलि गया क्योंकि बहुत दिनको व्याध नहींथा वो तो जल्दी आया पिताका दांव लेके चलागया ॥ ३ ॥
इति भा० ए० शं० मं० त्रिंशेऽध्यायेत्रिंशवेणी॥३०॥श्लो०३३॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योगाग्निनाशरीरं च दग्ध्वादेहमगा
. . । सदेहोनजगत्कर्ताशंकैषाभ्रान्तिदाचनः १ वाच
क उवाच ॥ नशोभानरदेहेनवैकुंठगमनेमम । यद्देहामु
म्परित्यज्यधृत्वापौर्वस्व्रजाम्यहम् २ मृतावशेषायदव
स्सस्त्रियः पितरौ च मे । आगत्यमेतनुन्दष्टाभविष्यन्त्य
तिविह्वलाः । मरिष्यन्तेपितेषाम्वैदुःखंबहुतरंभवेत् ३
अतोयोगाग्निनादग्ध्वाशरीरंगतवान्पदम् ॥ ४ ॥
इति भा० ए० शं० मं० एकात्रिंशे० एकात्रिंशवेणी
३१ ॥ श्लो० ६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण योग अग्निसे अपनी देहको भस्म करिके अपने स्थानको जाते भये परन्तु देहसहित क्यों नहींगये देह जलाना पामर जीवों के वास्ते है कुछ ईश्वरके वास्ते नहीं है यह शंका होती है १ वाचक बोले श्रीकृष्ण विचार किये कि मानुष्य की देह सहित वैकुंठ को जावें तब तो शोभा नहींहोगी क्योंकि वैकुंठ लोकवाली देह तो हमारी दूसरी है यह देहतो मानुष्य लीला करने वास्ते धारण कियाथा और जो इसदेह को इसस्थानपर त्यागि के अपना पेश्तरको स्वरूप धारण करिके वैकुंठको चलेजावें तो भी अच्छा नहीं क्योंकि २ जोयदुवंशी मरिगये सोतो मरिगये परन्तु जोकोई थोरे २ स्त्री सहित नहीं मरेजीतेहैं जैसे हमारे माता पिता तथा रुक्मिणी आदि लेकै स्त्रियाँसो सब इसस्थान पर आयकै हमारी देहको जीवरहित देखिके बहुत दुःखी होवेंगे मरेंगे तोसही परन्तु मरण समय में भी हमारी देहको देखि देखि बहुत दुःखसे प्राण छोड़ेंगे ३ हे श्रोताहो श्रीकृष्ण

ऐसा बिचारिकै योगअग्निसे अपने शरीरको भस्म गोलोक को पधारते भये ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं० त्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशत्तमी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्भागवतैकादशस्कंधशंकानिवारण मंजरी शिवसहायबुधविरचितासमुधामयी टीकासमाप्ता ॥

..द्वादशस्कंध

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वलोकंगमितेकृष्णेवंशंकौसूर्यसो
मयोः। प्रवर्तितंस्वयंराजादृश्यापिपृष्टवान्कथम् १ वंशः
कस्याभवद्भूमावाश्चार्यमिदमद्भुतम्।समीचीनमिद
म्प्रश्नंविनष्टेचद्वयोःकुले । कस्यवंशोभवेद्भूमौक्षिती
शोमुनिसत्तम २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वासन्निधिमाप
न्नंमृत्युंसर्पोद्भवन्नृपः। प्रयाणंशुकदेवस्यशीघ्रवीच्छया

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्णको वैकुंठ गयेके पीछे पृथ्वी में सूर्य वंशके राजा तथा चंद्रवंश के राजा बहुतथे तिन राजों को परीक्षित् राजा देखताथा कि दोनोवंश के राजा भूमिमें राज करिरहे हैं परन्तु राजा देखि के फिरि शुकदेव-जीसे क्यों पूछाकि महाराज कृष्णको गोलोकगये पीछे पृथ्वी में किसवंश के राजा होतेभये १ हे गुरुजी जब सूर्यवंश के तथा चंद्रवंश के राजोंको नाश होगया होता तब तो परीक्षित्को ऐसा पूंछना योग्यथा हे शुकजी महाराज श्रीकृष्ण तो अपने लोकको गये अब भूमिमें किसके वंश के राजा होवेंगे यह शंका है २ वाचक बोले राजा परीक्षित् ज्ञानतो पायगया बड़ाज्ञानी होगया तोभी मानुष्य देहके स्वभावसेती अपना मरण सर्प करिकै साम्ने जानिकै कि अब मेरा शरीर थोरेही

तुरोभवत् ३ द्वयोर्विरहसंतप्तःप्राप्तज्ञानोपिभूपतिः।
च्छातुरभावेनकस्यवंशोऽभवत्क्षितौ ४ इति भा०
शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक १

श्रोतार ऊचुः ॥ द्वितीयेद्वादशस्यैववसुश्लो
श्वरः । क्षत्रशब्दम धश्चक्रेछन्दभंगोऽपिनोकथम् १
वाचक उ०
विनष्टंक्षत्रधर्मस्थंविशमन्योन्यविग्रहम् । त्र
मधश्चक्रएतदर्थंकलौमुनिः २ इति भा० द्वा० शं० मं०
द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥८॥

देरमें छूटैगा तथा शुकदेव कोभी जानिलिया कि अब विदा होजावैंगे दोनों विरहसेती राजा भसम होरहा है ऐसी आतुरसे पूछता भया महाराज कृष्ण के गयेपीछे भूमि में किस बंशके राजा होतेभये हेश्रोताहो चौरासी लाख योनिमें ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिस को अपनी देहके वियोग को दुःख तथा गुरुकी देहके वियोग को दुःख नहोवै ॥ ४ ॥ इति भा० द्वा० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी॥१॥श्लो०१॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी द्वादश के दूसरे अध्याय के श्लोक ८ में व्यासजी ने क्षत्रीको नीचे पदमें लिखे हैं और वाणियों को ऊपर के पदमें लिखेहैं ब्राह्मण के नीचे क्षत्री लिखे जातेहैं क्षत्री के नीचे वैश्य वैश्यके नीचे शूद्र ऐसा शास्त्रमें प्रमाण लिखा है फिरि उलटा क्यों व्यास जी लिखे जो कोई विद्वान् कहै कि क्षत्री को पहिले लिखेसे श्लोक को छंद भ्रष्ट होता रहा होगा इस वास्ते उलटा लिखे हैं सो श्लोक को छन्द भी नहीं नष्ट होता क्यों उलटा पद लिखे यह बड़ी शंका है १ वाचकबोले व्यास मुनि भूत भविष्य वर्तमान तीनों

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रुतभागवतोऽथोपिशुकशिष्यो विशेषतः। प्राप्तसन्निधिकालश्चतथापिकलिजस्यवै। कथ म्पप्रच्छदोषस्यशान्त्युपायन्नृपोत्तमः १ वाचक उवाच विचार्य्यमानसेस्वीयेकलौकौरवसत्तमः। समाजोदुर्लभ श्चेदृग्भवितामोक्षसूचकः २ पप्रच्छकलिदोषस्यकलि

कालके जानने वाले थे ऐसे व्यासजी देखिके कि कलियुग में कुकर्म करिके क्षत्रियों का वंश नष्ट होजावैगा क्षत्री आपुस में बिगाड़ करैंगे चोरी तथा अन्याय करैंगे जनेऊ पहिरना त्याग देवैंगे इन्हैं आदि और अनेक बुराकर्म करैंगे नीचकी स्त्रीको दुग्धपान करैंगे और जो शास्त्रों में क्षत्रियोंको धर्म लिखता है धर्मकी रक्षा करना आदिलेके और अनेक प्रकारको सुंदर २ कर्म वैश्य करैंगे इसवासते वैश्य के नीचे क्षत्री को लिखे हैं वैश्य को क्षत्रीके ऊपर लिखे हैं ॥ १ ॥ इति भा० द्वा० शं०मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये राजा परीक्षित् भागवत समस्त सुनि लिये तथा शुकदेव जीके शिष्यभी थे मरणभी जल्दी होना था उस समय ज्ञानमें चित्त देना था ऐसे ज्ञानी भी तथा दुःखी भी परीक्षित्‌राजा कलियुग के दोषकी शान्ति होने के उपाय क्यों पूछे जानते नहींथे मैं तो थोरेही देर में मरोंगा भगवान् में चित्त देवों कलियुग के दोषको मेरे को क्या डर है जीते तबतो डरथा,अब शान्त होनेका उपाय क्यों पूछौं ऐसा विचार त्यागि के क्यों पूछे यह शंका है १ वाचकबोले राजा परीक्षित् आप- ने मनमें विचार किये कि कलियुग में मोक्ष देने वाली ऐसी समाज कभी नहीं होवैगी पेट भरने वास्ते कथा वार्ता होवे गी २ इसवास्ते दूसरे जीवों को दुःख करिके दुःखी जो

जानासुखायच।
तः ३ इति भा० द्वा० शं० मं०
वेणी ३ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शतवर्षाधिकोवायुर्वातिवर्षतिवारि दाः। शतवर्षाणिमुनिनाप्रमाणंप्रलयेप्रभो १ किमभिप्रायमाश्रित्यनन्यूनंनाधिकंकृतम् २ वाचक उवाच ॥ क्षमाबलंसमाश्रित्यसंस्थितापृथिवीजले। क्षमाशत

परीक्षित् सो कलियुगमें जन्मैंगे जो प्राणी तिनको सुख होने वास्ते कलियुगके दोष की शान्ति होनेका उपाय राजा पूछते भये कि मुनि जो उपाय कहैंगे तो उसी उपाय करिकै कलियुगमें जीवोंका उद्धार होवैगा हे श्रोता हो ऐसा उपकार करने वास्ते राजा दुःखी भी था तौभी पूछाहै कुछ मूर्खता से नहीं पूछा ४ इति भा० द्वा० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये प्रलय होनेवास्ते व्यासजीने शत १०० वर्ष को प्रमाण क्यों करिदिया सौ वर्ष से दोचारि एक वर्ष तथा मास ऊपर प्रमाण करते अथवा सौवर्षके नीचे दोतीन पांच छ वर्ष तथा महीना तथा दिनप्रमाण करते परन्तु ऐसा प्रमाण क्यों लिखेकि एक वर्ष से सौ १०० वर्ष को अधिक करिकै कि सौवर्ष अन्ततक वायु चलती है फिरि सौवर्ष मेघा जल वर्षते हैं ऐसा सौवर्ष को प्रमाण क्यों लिखे यहशंका है१ वाचक बोले पृथ्वी में क्षमा बहुत है उसी क्षमाके जोरकरिकै जलके ऊपर टिकी पृथ्वी को जल डुबोय नहीं सकता क्षमा के प्रताप सेती क्षमा के सौ १०० गुण हैं भगवान् भी क्षमाको जीता चाहैं तौ भगवान् के जीते क्षमा नहीं जीती

गुणाप्रोक्तानजेयाहरिणापिसा। एकैकगुणनाशार्थंशत वर्षावधिःकृता ३ इति भा० द्वा० शं० मं० चतुर्थे० चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वर्ण्यतेऽत्रभृशंविष्णुर्मुनिवाक्य मिदंगुरो। नत्वत्रदृश्यतेभीक्ष्णंहरिवर्णनमण्वपि १ वाचक उवाच ॥ पश्यन्तिब्रह्मवेत्तारोविश्वमेतच्चरा चरम्। ब्रह्मरूपंचश्रोतारश्चातोभीक्ष्णम्प्रकीर्तितम् २ इति भा० द्वा०शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥५॥ श्लो० ॥ १ ॥

जावैगी ऐसी बलवान् चमा है २ इसीवास्ते चमाके सौ १०० गुणोंका एक २ वर्ष में नाश करने वास्ते सौ वर्ष १०० किये हैं एक एक वर्ष में एक २ गुणको नाश होवै सौवर्ष १०० में सौगुण को नाश भयेपर प्रलय होवैगा हे श्रोताहो इसवास्ते सौवर्ष प्रलय होने को प्रमाण किये हैं ॥३॥ इति भा० द्वा० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी शुकदेव जी कहेकि हे राजन् इस भागवत में वारंवार भगवान्को नाम तथा चरित्र वर्णन भया है ऐसे भागवत में वारंवार भगवान् को नाम चरित्र थोराभी नहीं वर्णन भया समय पायके सब कथा वर्णन भई तथा भगवान् कोभी चरित्र वर्णन भयाहै तो फिरि वारंवार वर्णन होनेवास्ते मुनिजी क्यों कहे यह शंका है १ वाचक बोले ब्रह्मके जाननेवाले मुनिजी हैं सो चर अचर को ब्रह्मरूप देखते हैं शुकजी ब्रह्मके जानने वाले हैं चर अचर को ब्रह्म रूप जानिकै चर अचर को वर्णन वारंवार भयातो भगवान्

श्रोतार ऊचुः ॥ :च ३८

तितत्तकः । प्रेरितोद्विजवाक्येनसर्पोराजर्षिसतम १
त्वामित्युवाचकंहंसोचेज्जीवंसमुवाचसः । त ।
ग्यंकेनापिनजीवोदह्यतेकदा २ लौकिकेदेहप्राधान्यंदे
हंत्वामित्युवाचसः । दृष्टवालोकेनकैर्ज्ञातोजीवोविधिवि
निर्म्मिते । बभूवतत्कथम्भस्मसर्पदंष्ट्रोनृपस्यसः ३

को वर्णन जानिलिये इसवास्ते भगवान् को चरित्र बारंबार वर्णन होनेको कहते भये ॥ २ ॥ इतिभा० द्वा०शं०मं०पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये द्वादशस्कंध के पांचवें अध्याय में शुकजी कहे हेराजन ब्राह्मण के शापकी आज्ञा को पाये जो सर्प सो तुमको भस्म नहीं करेगा१भागवत के श्लोक में (त्वां)लिखा है तब शुकदेव जीने त्वां किसको कहेथे परीक्षित् की देहको कहेथे कि जीवको कहेथे जो जीवको(त्वां)कहेथे तौभी अयोग्य है क्यों जीव किसी के जलाने से जलि नहीं सकता २ जो कदापि ऐसा देखिके कि संसार में देहईकी तारीफ़ है *जीवको कोई नहीं जानता देहको(त्वां)कहे थे तब फिरि सर्प* के काटेसे देह भस्म क्यों होगई मुनितो कहेथेकि भस्म नहीं होगी यहशंका होती है३वाचक बोले जो प्रश्न तुमसबजनोंने किया सो प्रश्न सत्य है संसार में देहकी तारीफ देखिके कि देह सिवाय जीवको कोईभी नहींजानता इसवास्ते मुनिजी देहको(त्वां)कहेथे अबदेह भस्म होनेको कारण सुनो शुकके वचन सत्यथे राजाकी देह सर्पकेकाटे से भस्म न होती परन्तु परीक्षित् के मरण के समय में भगवान् विचार किये शुकदेव जीसे राजा भागवत सुना ७ दिन सेसर्पके काटेसे मरते

उवाच ॥ भवद्भिश्चैवसत्योक्तन्देहन्वामिति सोऽब्रवीत्। श्रीभागवतमर्यादापालितुंतत्तकस्यच ४ ब्रह्मर्षेश्चापिसंचक्रेहरिर्निरयमोक्षणम्। वैकुंठंप्रेष्यराजानंतदेहंभस्मसात्कृतम् ५ इति भाग० द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुरेशम्पातितुंशक्ताद्विजायस्तुसुधाशिपः। यज्ञेसुरगुरुःप्रोचेनायम्बध्यस्त्वयानृप १ अने

हैं प्राणी तव उनको नरक होताहै भागवत के प्रताप से इसको अब नरक में नहीं जाना चाहिये जोऐसा करेंगे तो सर्प की मर्यादा नाश होवैगी इसवास्ते भागवत की सर्पकी शुकजी की इन तीनोंकी मर्यादा राखनेवास्ते भगवान् परीक्षित् को तीन कर्म करिके तीनों की मर्यादा राखते भये ४ सर्प काटे से मृत्यु होवै तो उस प्राणी को नरक वास करना परता है सो भागवत के श्रवण के प्रताप से परीक्षित् को भगवान् ने नरकवास से छुड़ाय लिये तथा शुक जी को राजा शिष्य था इस वास्ते वैकुंठ को राजाको प्राप्त किये सर्पकी मर्यादा रक्षा वास्ते राजा की देहको भस्म करि दिये हे श्रोता हो इस कारण से राजा की देह भस्म हो गईहै कुछ शुक का वाक्य झूठा नहीं है जो सर्पकी मर्यादा भगवान् रक्षा न करते तो कभी भी राजा की देह भस्मनहोती ५ इतिभा० द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

हे गुरुजी जनमेजयकी यज्ञमें वृहस्पति जनमे जय राजा से कहे कि हे राजन् तक्षक अमृतको पीलियाहै अब तुमारे मारेसे नहीं मरेगा क्योंकि अमृत को जो प्राणी पीलेते हैं सो किसी के मारेसे नहीं मरते इसमें यह शंका होतीहै कि

श्रोतार ऊचुः ॥ पंचा- ये
तितत्तकः । प्रेरितोद्विजवाक्येनसर्प्पोराजर्षिसतम
त्वामित्युवाचकंह्यंसोचेज्जीवंसमुवाचसः । १
ग्यंकेनापिनजीवोदह्यतेकदा २ लौकिकेदेहप्राधान्यंदे
हंत्वामित्युवाचसः । दृष्ट्वालोकेनकैर्ज्ञातोजीवोविधिवि
निर्म्मिते । बभूवतत्कथम्भस्मसर्पदंष्ट्रोनृपस्यसः ३

को वर्णन जानिलिये इसवास्ते भगवान् को चरित्र बारंबार वर्णन होनेको कहते भये ॥ २ ॥ इतिभा० द्वा०शं०मं०पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये द्वादशस्कंध के पांचवें अध्याय में शुकजी कहे हेराजन ब्राह्मण के शापकी आज्ञा को पाये जो सर्प सो तुमको भस्म नहीं करेगा१भागवत के श्लोक में (त्वां)लिखा है तब शुकदेव जीने त्वां किसको कहेथे परीक्षित् की देहको कहेथे कि जीवको कहेथे जो जीवको(त्वां)कहेथे तौभी अयोग्य है क्यों जीव किसी के जलाने से जलि नहीं सकता २ जो कदापि ऐसा देखिके कि संसार में देहईकी तारीफ़ है जीवको कोई नहीं जानता देहको(त्वां)कहे थे तब फिरि सर्प के काटेसे देह भस्म क्यों होगई मुनितो कहेथेकि भस्म नहीं होगी यहशंका होती है३वाचक बोले जो प्रश्न तुमसबजनोंने किया सो प्रश्न सत्य है संसार में देहकी तारीफ देखिके कि देह सिवाय जीवको कोईभी नहीं जानता इसवास्ते मुनिजी देहको(त्वां)कहेथे अबदेह भस्म होनेको कारण सुनो शुकके वचन सत्यथे राजाकी देह सर्पकेकाटे से भस्म न होती परन्तु परीक्षित् के मरण के समय में भगवान् विचार किये शुकदेव जीसे राजा भागवत सुना ७ दिन सेसर्पके काटेसे मरते

उवाच ॥ भवद्भिश्चैवसत्योक्तन्देहन्वामिति ब्रवीत्। श्रीभागवतमर्यादापालितुंतत्तकस्यच ४ ब्रह्मर्षेश्चापिसंचक्रेहरिर्निरयमोत्तणम्। वैकुंठंप्रेष्यराजानंतद्देहंभस्मसात्कृतम् ५ इति भाग० द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुरेशम्पातितुंशक्ताद्विजायस्तुसुधाधिपः। यज्ञेसुरगुरुःप्रोचेनायम्वध्यस्त्व यानृप १ अने

हैं प्राणी तब उनको नरक होताहै भागवत के प्रताप से इसको अब नरक में नहीं जाना चाहिये जोऐसा करेंगे तो सर्प की मर्यादा नाश होवैगी इसवास्ते भागवत की सर्पकी शुकजी की इन तीनोंकी मर्यादा राखनेवास्ते भगवान् परीक्षित् को तीन कर्म करिके तीनों की मर्यादा राखते भये ४ सर्प काटे से मृत्यु होवै तो उस प्राणी को नरक वास करना परता है सो भागवत के श्रवण के प्रताप से परीक्षित् को भगवान् ने नरकवास से छुड़ाय लिये तथा शुक जी को राजा शिष्य था इस वास्ते वैकुंठ को राजाको प्राप्त किये सर्पकी मर्यादा रक्षा वास्ते राजा की देहको भस्म करि दिये हे श्रोता हो इस कारण से राजा की देह भस्म हो गईहै कुछ शुक का वाक्य झूठा नहीं है जो सर्पकी मर्यादा भगवान् रक्षा न करते तो कभी भी राजा की देह भस्मनहोती ५ इतिभा० द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

हे गुरुजी जनमेजयकी यज्ञमें बृहस्पति जनमे जय राजा से कहे कि हे राजन् तक्षक अमृतको पीलियाहै अब तुमारे मारेसे नहीं मरेगा क्योंकि अमृत को जो प्राणी पीलेते हैं सो किसी के मारेसे नहीं मरते इसमें यह शंका होतीहै कि

नापीतममृतमित्ययोग्यंकथंगुरो। वाचकउवाच ॥
रेणहरेर्नामसकृदुच्चरितंयदि । तदासं
मितिज्ञात्वातुतत्तकः २ कैर्नापिरक्षि
नेस्थितः ३ उच्चचारहरेर्नामआतुरोश्रुपरिप्लुतः।
न्तदमृतन्तेनगुप्तोगुरुरुवाचह ४ इतिश्री भा०
शं०नि०मंजर्य्यां षष्ठाऽध्यायेसप्तमवेणी ७॥

अमृत को मालिक इन्द्र जो राति दिन अमृत पीता
अमृत पीते २ अनेक युग बीति गये ऐसे इन्द्रको
से गिरायके राजाकी यज्ञके कुंडमें भस्म करने की
तो ब्राह्मणों की थी और जो राई भरि अमृत पीलिया सर्प
सो ब्राह्मण के मन्त्रसे भस्म न हो सकता १ वाचक बोले
बहुत दुःखी होके भगवान् को नाम एको भी दफे जपेतो अ-
संख्य नामके जपका फल होताहै ऐसा शास्त्रोंमें लिखाहै ऐसा
तक्षक जानिके २ विचार कियाकि मैंने बड़े बड़े देवतों के
पास गया कोई भी मेरी रक्षा नहीं किये ऐसा विचारिके
इन्द्रके मकान में टिकिके बहुत दुःखी होरहाहै आंखों से
आंसू पड़रहाहै बहुत आतुर होके हे भगवन् हे नारायण हे
त्रिलोक नाथ इस प्रकारसे बड़े आदर प्रेम प्रीति से भगवान
को नाम जपता भया ३ भगवान् को नाम सोई अमृतभया
उसी अमृतको जप करना सोई अमृत तक्षक पीता भया
इस वास्ते गुप्तकरिके बृहस्पति कहेथे कि तक्षकने अमृत पी-
लिया तुमारे बधन किये नहीं मरेगा कुछ इन्द्र वाले अमृत
के वास्ते नहीं कहेथे ४ इति भा० द्रा० शं० मं० षष्टेऽध्याये
सप्तम वेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मर्षयःकथंचक्रुर्विद्याध्ययनमद्
भुतम् । सूतात्तदाद्विजानष्टामहाश्चर्य्यमिदंगुरो १
वाचक उवाच ॥ व्यासस्यसेवनंचक्रेसुतो विनयनम्रतः
चिरकालमतस्तेनसंस्कृतः पुत्रवत्सुधीः २ तवाननाच्च
येविप्राश्शृण्वन्तिभगवत्कथाम् । पठिष्यंतिचयेविद्यांते
प्राप्स्यंतिसहस्रधाफलंचातोद्विजास्सर्वेसूताद्विद्याम्प्रपे
ठिरे३इ०भा०द्वा०शं०मं०सप्तमे०अष्टमवेणी ८श्लो० ६

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भागवत द्वादश स्कंधके अष्ट
माऽध्याय में लिखाहै कि सूतके मुख से ब्राह्मणलोग विद्या
पढ़ते भये तो इसमें यह शंका होतीहै कि क्या उस वखत
ब्राह्मणोंको विद्या पढ़ाने वास्ते ब्राह्मण वंश नहींथे सब ब्राह्म-
णों को नाश होगया था इस वास्ते सूतके मुखसे विद्या पढ़ते
भये बड़ा आश्चर्य होताहै १ वाचक बोले सूत व्यास की
सेवन बहुत बर्षों तक करता भया तब अपना पुत्र सरीके
मानिकै व्यासजी शास्त्रके तथा तपके जोरसे और भगवान्को
अवतार भी थे सूतको यज्ञोपवीत आदि जो कर्म सो सबकरते
भये २ संस्कार करिकै सूतको वरदान दिहे हैं हेपुत्र सूततुमारे
मुखसे भगवान्की कथाको जो कोई ब्राह्मणअभिमान त्यागि
कै सुनैंगे तथा विद्या पढ़ैंगे तब उनसुननेवाले पढ़नेवाले ब्राह्म-
णोंको हजार गुण कथा को फल तथा हजार गुण विद्यापढ़े
को फलप्राप्त होगा हे श्रोताहो इसवास्ते सब ब्राह्मण तथा
सनकादिक अभिमान को छोड़ि २ सूतसे कथा सुनते भये
तथा विद्याभी पढ़ते भये और ब्राह्मण को वंश नष्ट नहीं हुआ
लोभ करिकै सब पढ़ेसुने हैं ॥ ३ ॥ इति भा० द्वा० शं० मं०
सप्तमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८ ॥ शूलोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुनीनांतपसोभंगमप्सराः रयेत्। सर्वशास्त्रेश्रुतज्ञश्चशचीभर्ताऽतिवंचकः। मुनयः कस्मात्तस्मैदंडंविकोपिताः १ वाचक उवाच शताश्वमेधजंपुण्यंयावत्तस्यप्रवर्तते। पन्दातुमिच्छन्तिकर्हिचित्। मुनीनामुपतापेनदु. तिराक्षसात् ३ इति भाग० द्वा० शं० मं० ध्यायेनवमवेणी ६ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चि स्मयम्। गच्छन्नुतिष्ठन्परस्थान

श्रोतापूछतेभयेहे गुरुजी इन्द्रवड़ाकपटीहे में सुना है असुरों को भेजिकेमुनियोंको तप भ्रष्ट करि देता तो मुनिजनक्रोध करिके इन्द्रको शाप क्यों नहीं देते युग२ मुनि लोगोंके तपको भंग डारिकै न करै यह शंकाबड़ीक्रूरहै १ वाचकबोलेसौ अश्वमेधकी पुण्य जब तकइन्द्रके पास रहती है तबतक मुनिजन भी शाप देने की इच्छा नहीं क्योंकि जानतेहैं कि पुण्य के प्रभाव सेती भगवान्की कृपा इसके ऊपर है हम शाप देवैंगे तो ईश्वर भी हमारे ऊपर नाराज होवैंगे ऐसा विचारिकै क्षमा करिकै मुनि दुःख सहि लेतेहैं परन्तु मुनियों के दुःख से इन्द्रको तेज दिन दिन नष्ट होता है तब राक्षस लोग इन्द्रको ऐसा दुःख देतेहैं कि अनेक युगों तक इन्द्र दुःख भोगता हैहे श्रोताहो इस कारण से मुनिजन इन्द्र के अपराध को क्षमा करिके शाप नहीं देते १ इतिभा० द्वा०शं०मं०अष्टमेऽध्याये नवम वेणी।।६॥श्लो०॥१५

श्रोता पूछते भये दुष्ट मानुष्यों का लक्षण यहहै कि करते करते मुसिकि आते हैं तथा कोई मानुष्य उन

१ मार्कंडेयाश्रमाद्गच्छन्स्मयन्वैधर्म्मनंदनः।
: २ वाचक उवाच॥
। मोहितुंतस्म
इति भाग० द्वा० शं०
मंजर्य्यांनवमेऽध्यायेदशमवेणी १०॥ श्लोक ७॥
श्रोतार ऊचुः ॥ अनापृष्टश्चमुनिनामार्कंडेयेनशं
करः। ब्रह्मविष्णुमहेशाना मेकत्वंकथमुक्तवान् १वाचक

पर आवैतो उस को आता देखिकै मुसिकिआयँगे तथा वो मानुष्य उनदुष्टों के मकान से चलने लगैंगे तौभी मुसिकिआयँगे अथवा आपु किसी सज्जन के मकानपर जावैंगे तो जातेवखत वैठैंगेतो मुसिकिआयँगें चलनेलगैंगेतो मुसिकिआयँगेएदुष्ट जीवोंकीपहिंचान करनेकोलक्षणहै१तवहे गुरुजी मार्कंडेय मुनि के आश्रम से नारायण मुनि चलने लगे अपने स्थान को तव मुसिकिआते २ क्योंगये वड़े मुनिहोके ऐसा वुराकर्म्म करना यह वड़ी शंका होती है २ वाचकवोले नारायण मुनि विचार कियेकि मार्कंडेयमुनि माया को प्रभाव देखा चाहते हैं इन के मनमें ऐसा अभिमान है कि मैंने माया को तप करिकै जीतिलिया है ऐसा मायाकरिकै इन्हको मोह करवावौंगा कि युग २ भूलैंगे नहीं हे श्रोताहोऐसाविचारिकै अपने मनमें नारायणमुनि मुसिकिआते२चलेगये कुछदुष्टकर्म से नहीं मुसिकि आने३इतिभा०द्वा०शं०मं०नवमेऽध्यायेदशम वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछते भये मार्कंडेय मुनि ब्रह्मा विष्णु महादेवसे पूछे नहीं कि तुमतीन देवतों में कौन वड़ा है कौन छोटा है कि तीनोंजनों वरोवरिहो तो विना पूछेभी महादेव क्यों

उवाच ॥ मुनेर्हार्दंसमाज्ञाय त्रिषुदेवेषुकोवरः ।
स्यास्याशुशान्त्यर्थं मनापृष्टोप्युवाचसः २ इति
द्वा० शं० मं० दशमेऽध्याये एकादशवेणी ॥ १
श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वक्ष्येऽथस्स्वगुरुंनत्वा
व्याधीरपि । सूतोक्तिरद्भुतेयम्बै पूर्वोक्ता.
वाचक उवाच ॥ सर्वंविष्णुमयंविश्वमुक्ता.

कहथ मार्कंडेय से ब्रह्मामें विष्णु में और हमारेमें
हमतीनोंदेव एकहीहैं यह हमको बड़ी शंकाहोती है १
बोले मार्कंडेय मुनि के मनमें ऐसा विचारथा कि तीनों
में कौनश्रेष्ठ है परन्तु लज्जा करिकै पूछिनहीं सकतेथे
महादेव ऐसी मार्कंडेय के हृदयकी बातको जानिकै
डेय मुनि पूंछेभी नहीं तौभी मार्कंडेय मुनिके भ्रम की
होनेवास्ते ब्रह्मा विष्णु और शिवकी एक स्वरूप की
कहते भये ॥ २ ॥ इति भा० द्वा० शं० मंजर्य्यां .
एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बातहै कि सूतकहे
अब अपने गरुको नमस्कार करिकै विष्णुकी विभूति
वर्णन करताहों गुरुजी प्रथमस्कंधसे द्वादश स्कंधकी ११
तक विष्णुकी बिभूति को वर्णन नहीं हुआ किरि
विभूति को वर्णन पेश्तर हुआथा यहशंका है १ वाचक
पेश्तर ऐसा वर्णन भया है कि तीनलोक चौदह भुवन
अचर येसब ईश्वर को स्वरूप हैं इसवास्ते ।
संपूर्ण संसार तिसकी बिभूति को वर्णन भया है और
अकेले भगवान् की महिमा चारत्र को वर्णन होगा .

।मिदानींकेवलंहरेः २ इति भा०द्वा०
मं० एकादशेऽध्याये द्वादशवेणी॥१२॥श्लो० ॥४॥
श्रोतार ऊचुः ॥ सूतेनोक्तम्मुनिभ्यश्च धर्मान्वक्ष्ये
। । ।इतिनोमहतीशंका पूर्वोक्तानसनातनाः १
उवाच ॥ श्रीमद्भागवतेधर्म्मा येसर्वेमुनिवर्णि
: ।सनातनाश्चतेसर्वे कारणैकन्निबोधत २ प्रथम
ःप्रोक्ताधर्म्मास्सूक्ष्मपथानिशम् । तेपश्चात्क
: प्रोक्ताविस्तृतंश्लोकसंचयैः ३ उपक्रमणिकेऽ
ये द्वादशस्कंधजाकथा । सर्वाःप्रोक्ताश्चव्यासेन
सूतकहेथे कि अबहम भगवान् की विभूति को वर्णन करते
हैं॥ २ ॥ इति भा० द्वा० शं० नि०मंजर्याएकादशेऽध्यायेद्वा
दशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये सूतने मुनियों से कहेकि हमअब सना-
तन धर्मको कहेंगे आपु मनलगाय के सुनो हे गुरुजी इस
में यहशंका होती हैकि पेश्तर जो धर्म वर्णन भयेसो सनातन
नहीं हे जलदीकी बनाये हैं १ वाचक बोले श्रीमद्भागवत में
जोजो धर्म वर्णन भये हैं सोसब सनातन धर्म हैं जलदी बना
ये एकभी नहीं हैं परन्तु एक कारण है तिसको श्रोताजनो
श्रवणकरो २ मुनियोंने प्रथम इस धर्मको बहुत थोरे करिकै
वर्णन कियेरहे बारंबार कछु दिनपीछेउन्हींको थोरासा वर्णन
हुआ धर्मों को विस्तार से बहुत श्लोक करिकै कवि वर्णन
करते भये ३ इस अध्याय में बारहस्कंधोंकी कथा व्यास जी
थोरीरस्ता से वर्णन किए हैं जैसापश्नर मुनिजन थोरे थोरे
श्लोक में संपूर्ण धर्म वर्णन कियेथे इसनासते सूतजी कहेथे
अब में सनातन धर्म वर्णन करताहों क्योंकि सन तन धर्मतो

न्यूनेनास्मिन्यथाशुभाः। अतस्सनातनाधर्मो मिदंवचः ४ इति भा० द्वा० शं० मं० त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रीम[illegible] सौसूतसत्तमः। स्वगुरुंसर्व[illegible] १ सर्वावताराणिहरेर्विहायकथमद्भुतं। वीरंशंकेयम्महतीचनः २ वाचक उवाच ॥ समाश्रित्यदेवास्सिन्धुममन्थिरे। [illegible] फलितंचमनोरथं ३ त [illegible] तार्णवे। पारस्तंस्मृत्यकूर्म्मंवैप्रणामाशुविप्लुतः

वोई है जो मुनिलोग थोरे श्लोकों करिके वर्णन कियेथे बहुत विस्तार तौ पीछेसे कवियोंने कियाहै सूत ऐसेनहीं विचारिके कहेथे कि अबतक सनातन धर्म नहीं वर्णन भया सनातन धर्म अब कहताहों ४ इति भा० द्वा० शं०मं० द्वादशाऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीमद् भागवतकी समाप्ति में सूतजी अपने गुरुको तथा सब देवतोंको ब्रह्मा विष्णु शिवको १ भगवान् केसब औतारोंको इन सबको त्यागिके कच्छप भगवान् को नमस्कार क्यों किये यह शंका होतीहै २ वाचक बोले कच्छप भगवान्की कृपा करिके देवतोंने समुद्रको मथिके देवता लोग अमृत पाते भये अमृत पायके देवतोंका मनोरथ सिद्ध होगया ३ तैसे सूतभी समुद्ररूप भागवत के पार कोगये कूर्मको स्मरण करिके इसवास्ते प्रेमसे सूतकी आंखों से अश्रु पड़रहीहै सबको त्यागिके कूर्मको नमस्कार करते

नभेदस्तेषुसर्वेषुहरेराविर्भवेषुच ४ इति भा० द्वा० शं० मं० त्रयोदशाऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

भये तथा भगवान्के अवतारों में भेद भी नहीं है४इतिभा० द्वा० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

इति श्रीमद्भागवतद्वादशस्कंधशंकानिवारण-
मंजरी शिवसहायबुधविरचिताससुधामयी
टीकासमाप्ता ॥ श्रीरस्तुशुभम् ॥

समाप्तेयंश्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥
श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥



श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरीकल्पनेकारणमिदं विद्वाद्भिर्ज्ञातव्यम्मम ॥

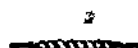
श्रीमद्भागवत शंकानिवारण मंजरी बनानेका मेरा यह कारण है सो कारण विद्वान् जनोंको जानना चाहिये ॥

श्लोक ॥

विद्वांसस्सुधियोऽर्थबोधनपराजानंत्विमंकारणंजैनेर्यै र्य्यवनेशपूजिततरैर्म्लेच्छैस्तथान्यैरपि ॥ श्रीमद्भागवतार्थवंचनपरैस्संक्लेशितोऽहंसदाचातस्तन्मुखत्रोटनायहिमयासंकल्पितेयम्प्रभा ॥ १ ॥

हेविद्वज्जनाहो आपुसबजनोंकी शास्त्रोंमें बुद्धिबड़ीनिपुणहै तथा व्याकरण पढ़ेहो इस वास्ते सब शास्त्रोंके अर्थोंको जानतेहो श्रीमद्भागवत शंका निवारण मंजरी मैंने बनाया है तिसका कारण यहहै इस श्लोक से आप जन मालूम करना कि यती ढूंढ़ि आसमबेगी तथा मौलवी आदि लेके और जो म्लेच्छ हिन्दुस्तानमें वर्तमानहैं कैसेहैं भागवतकी निंदा राति दिन करते हैं येसब लोग मेरेको जिसी देश में मैं गया उसी देशमें बड़ा दुःख देते भये कि तुमारे भागवत में ऐसा २ अनर्थ लिखाहै इस वास्ते वो जो निंदा करने वाले पीछे लिखहुयेहैं उन लोगोंके मुख भंजन करने वास्ते यह भागवत शंका निवारण मंजरी मैंने बनाया है इसको पढ़ने वाले सुननेवाले विद्वान्के सामने निंदक लोग नहीं खड़ेरहैंगे॥१॥

इतिभागवतशंकानिवारणकल्पनेसूचना १ समाप्ता ॥



अथस्वापराधक्षान्त्यैविद्वान्सोमयाप्रार्थ्यन्ते ॥
ग्रन्थस्याऽस्यसकृद्बभूवरचनालेखावलिर्लेखकाद्य
न्त्रांकांकितशोधनादिनिचयंरोगोऽपिमामगृहीत्एतस्मा
द्यदशुद्धवर्णबहुलंतत्क्षम्यताम्भोबुधा दासोहंनितरांच
शब्दविदुषांय्यूयंकृपासागराः ॥ १ ॥

इस ग्रन्थके बनानेमें जो मुझसे भूल चूक होवै सो अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते व्याकरण पढ़ने वाले विद्वानों की प्रार्थना मैं करताहूं प्रथम तो इस ग्रन्थको बनाने वास्ते भागवत में शंका को विचार मैंने किया फिरि उत्तर देनेको विचार किया फिरि श्लोक बनाना फिरि भाषा टीका बनाना फिरि लेखकसे लिखानाशोधना छपाना यह सब काम एकई साथ महीना ४ चार में भया इसी बीच में मैं बीमार भी होगया इस वास्ते जो कोई अक्षर अशुद्ध होवै उसको आपु सबमेरे ऊपर कृपा करिकै विचारिकै पठन करना मेरे अपराध को क्षमा करना क्योंकि व्याकरणपाठी विद्वानोंका मैं किंकर हौं आप सब कृपाके समुद्रहो ॥

बाण ५ ऽिध ४ अङ्क ६ पृथिवी १ युतवत्सरेवै शुभ्रे
खौयमतिथौ १० शुभवैक्रमीये ॥ मासाश्विनस्य कृपया
गिरिजापतेर्वैसम्यक् समाप्तिमगमच्छुभमंजरीयम् ॥१ ॥

इस ग्रंथके बनाने वाले पण्डित शिवसहायको देशांतर में पण्डित अयोध्या वासी जी कहतेहैं ॥

किताबों की फ़ेहरिस्त ॥

	क़ीमत	डा०म०
भागवत भाषाटीका	१२)	२)
पद्मपुराण	१८)	३)
वाल्मीकीय भाषाटीका	२१)	२॥)
वाल्मीकीय संस्कृत टी०	८)	१)
हरिवंश मय माहात्म्य	६)	।॥)
देवी भागवत	७)	।॥)
अध्यात्मरामायणभा० टी०	४)	॥=)
रामाश्वमेध भा० टी०	४)	॥)
भागवत शंका निवारण मञ्जरी	१॥)	।)
नन्दमहोत्सव	॥)	=)
दृष्टान्तप्रदीपिनी	॥)	=)
भागवत लीला कल्पद्रुम	१॥)	≡)
भागवत माहात्म्य भा० टी०	।=)	=)
सत्यनारायण भाषाटीका	।)	-)
वासिष्ठी	।)	-)
गरुडपुराण भाषाटी०	१)	=)
कार्त्तिक माहात्म्य भा० टी०	१)	=)
एकादशी माहात्म्य भा० टी०	१)	=)
निर्णयसिन्धु भा० टी०	५)	१)
धर्मसिन्धु भा० टी०	६)	।॥)
भावप्रकाश भा० टी०	८)	१)
वाग्भट	१०)	१॥)

	कीमत	ड०म०
रसराज महार्णव	१)	=)
चिकित्साचक्रवर्ती भा०	१)	=)
रामायण बड़ी	६)	||)
रामायण मध्य	१|||)	|=)
रामायण गुटका	२)	|)
रामायण सटीक ज्वालाप्रसाद	७)	१||)
रामायण रामश्यामकृत	८)	१||)
रामायण रामबख्श टी०	४)	|||)
रामायण रामचरण टी० सांची सफेद	७)	१||)
रघुवंश भाषाटी	३)	||)
शिशुपालवध भा० टी०	३)	||)
रघुवंश छोटा	२)	=)
रघुवंश बड़ा	२।)	≈)
सुखसागर	७)	१||)
सुखसागर छोटा	३)	|=)
निघंटरत्नाकर भा०	६)	|||=)

द: छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द बुकसेलर

बम्बई पुस्तकालय अयोध्याजी ॥



अयोध्याप्रसाद कम्पनी
जिला लखनऊ पो० काकोरी
मौंदा